UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180977
UNIVERSAL
LIBRARY

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—सुलभ-साहित्य माला—१६

मलिक मुहम्मद जायसी

कृत

पद्मावत

(पूर्वार्द्ध)

१ से ३३वें खण्ड तक

सम्पादक

लाला भगवानदीन

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

द्वितीय वार
१०००

मूल्य सजिल्द १)
" साधारण १)

संवत् १६८५

१६२८

बड़ौदा नरेश

श्रीमान् महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़,

कृतज्ञता-प्रकाश

श्रीमान् बड़ौदा नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ महोदय ने बम्बई के सम्मेलन में स्वयं उपस्थित होकर जो पांच सहस्र रुपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी उसी सहायता से सम्मेलन इस "सुलभ-साहित्य-माला" के प्रकाशन का कार्य कर रहा है। इस "माला" में जिन सुन्दर और मनोरम ग्रन्थ-पुष्पों का ग्रन्थन किया जा रहा है उनकी सुरभि से समस्त हिन्दी-संसार सुवासित हो रहा है। इस "माला" के द्वारा जो हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि हो रही है उसका मुख्य श्रेय श्रीमान् बड़ौदा-नरेश महोदय को है। श्रीमान् का यह हिन्दी-प्रम भारत के अन्य हिन्दी-प्रेमी श्रीमानों के लिये अनुकरणीय है।

निवेदक—

मन्त्री,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

प्रयाग।

विषय सूची

विषय		पृष्ठ
१ मंगलाचरण	...	१
२ मुहम्मद साहब की तारीफ़	...	७
३ चार यार का वर्णन	...	८
४ सामयिक राजा शेरशाह सूर की तारीफ़	...	८
५ गुरु परंपरा का वर्णन	...	११
६ कवि परिचय	...	१३
७ कवि वास स्थान वर्णन	...	१४
८ समय और कथा-मूल वर्णन	...	१४
९ सिंघल द्वीप वर्णन	...	१५
१० पद्मावती जन्म वर्णन	...	२९
११ मानसरोवर जलविहार वर्णन	...	३४
१२ सुवा-उड़ान वर्णन	...	३९
१३ रतनसेन-जन्म वर्णन	...	४५
१४ बनजारा सिंहल गमन वर्णन	...	४६
१५ धाय-सुवा-संवाद	...	५१
१६ नागमती-सुवा-संवाद	...	५३
१७ राजा-सुवा-संवाद	...	५८
१८ सिख-नख-वर्णन	...	६१
१९ पूर्वानुराग वर्णन	...	७२
२० जोगी होना	...	७६

२१ राजा रतनसेन-गजपति संवाद ... ८३
२२ बोहित खंड ... ८६
२३ सात समुद्र वर्णन ... ८९
२४ सिंहलद्वीप दृश्य वर्णन ... ९४
२५ मंडप गमन वर्णन ... ९७
२६ पद्मावत का पूर्वानुराग वर्णन ... ९९
२७ पद्मावत हीरामनि भेंट वर्णन ... १०३
२८ बसन्त क्रीड़ा वर्णन ... १०८
२९ राजा रतनसेन का जलने को तैयार होना... ११७
३० राजा रतनसेन महादेव संवाद ... १२१
३१ रतनसेन ने सिंघलगढ़ छेंका ... १२६
३२ मंत्रियों की सलाह ... १३७
३३ पद्मावत-मूर्च्छा वर्णन ... १४१
३४ शूली वर्णन ... १४८
३५ हीरामनि-राजा-संवाद वर्णन ... १५७
३६ विवाह वर्णन ... १६१
३७ धौराहर वर्णन ... १६८
३८ सेज वर्णन ... १७०
३९ सोहाग वर्णन ... १९०
४० षड् ऋतु वर्णन ... १९८
४१ शब्दकोश ... २०१

सुभर = पूरे, बड़े, पूर्ण ।
सुरखुरू = (सुर्खरू) मान्य, आदरणीय
सुलतान = बादशाह, सम्राट ।
सुलैमाँ = (सुलैमान) एक प्राचीन यहूदी राजा जो बड़ा प्रतापी और दानी था
सुहेला = एक सितारा जो अरब देश के यमन प्रांत से दिखलाई पड़ता है। लोग मानते हैं कि इसके उदय से कीड़े मकोड़े मर जाते हैं और ऊटों के चमड़े सुगंधित हो जाते हैं।
सूक = शुक्र (ग्रह)
सूतना = सोना, निद्रा लेना ।
सूरनवाई = शूर बीरों को (झुकाना) जीत लेना ।
सेतीं = से ।
सेवरा = जैनी साधु विशेष ।
सैंतना = संचित करना ।
सोंटिया = चोबदार, नकीब ।
सोंधा = (१) सुगंध ।
(२) सुगंध द्रव्य ।
सोग = शोक ।
सोत = (स्रोत) रोमकूप ।
सोधु = पता, खोज ।
सोने फूल फूलना = धन संपन्न रहना ।
सौंर
सार } = चादर, रजाई, ओढ़ना ।
सौंह = (१) सामने ।
(२) सौगंद, कसम ।
स्याल = (शृगाल) सियार, गीदड़ ।
स्यौं = सहित, समेत ।
स्वैं = स्वयम्, खुद ।

[ह]

हँकारना = बोलाना ।
हड़ावरि = शरीर का अस्थि समूह ।
हनुवँत = (हनुमंत) बंदर ।
हनिवत = बंदर ।
हरि = बंदर ।
हरियर = हरा, सब्ज ।
हरिहित = (सर्प का प्यारा) चंदन ।
हरुम = हलका ।
हय = घोड़ा ।
हस्ती = हाथी ।
हांसुल = हंसवत् सफेद रंग का घोड़ा ।
हाट = (१) बाजार । (२) दूकान ।
हातिम = अरब देश का एक प्रसिद्ध दाता ।
हाथी देना = (१) सहारा देना ।
(२) हाथ मिलाना ।
हारिल = हरे रंग का एक पक्षी विशेष जो सदैव चंगुल में लकड़ी पकड़े रहता है
हियाउ = हिम्मत, साहस ।
हिरकाना = निकट रखना ।
हिलगाना = उलझाना ।
हीर = (१) हीरा (रत्न) ।
(२) सार भाग ।
हुत = द्वारा, जरिया ।
हेहरि = हहरना, भयभीत होना ।
हौर = हौरा, शोर ।

बाबू विश्वम्भरनाथ भार्गव के प्रबन्ध से स्टैंडर्ड प्रेस
इलाहाबाद में छपी ।

पद्मावत

१—पहला खण्ड

सँवरउँ आदि एक करतारू। जेइं जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू॥
कीन्हेसि प्रथम जोति[1] परगासू। कीन्हेसि तिनहिं प्रीति कयलासू[2]॥
कीन्हेसि अगिन पवन जल खेहा[3]। कीन्हेसि बहुतै रंग उरेहा॥
कीन्हेसि धरती सरग पतारू। कीन्हेसि बरन बरन अवतारू॥
कीन्हेसि दिन दिनअर[4] ससि राती। कीन्हेसि नखत तराइन पाँती॥
कीन्हेसि धूप सीउ[5] औ छाँहाँ। कीन्हेसि मेघ बीजु[6] तेहि माहाँ॥
कीन्हेसि सात दीप नव खंडा। कीन्हेसि चौदह भुवन अखंडा॥

दोहा—कीन्ह सबै असजाकर दूसर छाज न काहु।
पहिले ताकर नाउँ लै करौं कथा अवगाहु॥ १॥

---

१ जोति=मुसलमानी मत मे ईश्वर ने अपनी ज्योति से सर्व प्रथम मुहम्मद साहेब को पैदा किया और उन्हीं के लिए सारी सृष्टि पैदा की। इस अर्द्धाली में जायसी ने इसी घटना की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया है। मुसलमानों की 'हदीस' में लिखा है—"अव्वलो मा खलक अल्लाहोनूरी" अर्थात् पहले ईश्वर ने अपनी ज्योति को प्रकाशित किया। फिर लिखा है—"लौ लाक लमा खलकतुल अफलाक"—अर्थात् अगर तू न होता तो सारे संसार और आकाश की सृष्टि भी न होती। (मुहम्मद साहेब की तारीफ में दूसरी अर्द्धाली देखो) २ कयलासू=अति ऊंचा स्थान, स्वर्ग, आकाश। ३ खेहा=धूल। ४ दिनअर=(दिनकर) सूर्य। ५ सीउ=शीत, सरदी। ६ बीजु=बिजली।

चौपाई

कीन्हेसि सात समुन्द्र अपारा । कीन्हेसि मेरु खिखिंड[1] पहारा ॥
कीन्हेसि नदी नार औ झरना । कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना ॥
कीन्हेसि सीप मोति तेहिं भरे । कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे[2] ॥
कीन्हेसि बनखँड औ जर मूरी । कीन्हेसि तरवर तार खजूरी ॥
कीन्हेसि साउज[3] आरन[4] रहहीं । कीन्हेसि पंखि[5] उड़ँ जहँ चहहीं ॥
कीन्हेसि बरन सेत औ स्यामा । कीन्हेसि नींद भूख बिसरामा ॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू । कीन्हेसि बहु ओषद बहु रोगू ॥

दोहा—निमिष न लाग करत ओहि सबै कीन्ह पल एक ।
गगन अंतरिंख[6] राखा बाज[7] खाँभ बिन टेक ॥ २ ॥

चौपाई

कीन्हेसि अगर कस्तुरी बेना[8] । कीन्हेसि भीमसेनि कपुरेना[9] ॥
कीन्हेसि नाग जो मुख विष बसा । कीन्हेसि मंत्र हरै जेहि डसा ॥
कीन्हेसि अमिरितु जियै जो पाई । कीन्हेसि विष जो मीचु जेहि खाई ॥
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी । कीन्हेसि करुअ बेलि भुइँ फरी[10] ॥
कीन्हेसि मधु लाव लै माँखी । कीन्हेसि भँवर पंख औ पाँखी ॥
कीन्हेसि लोवा[11] इंदुर[12] चाँटी[13] । कीन्हेसि बहुत रहहिं खनि माँटी ॥
कीन्हेसि राकस[14] भूत परेता । कीन्हेसि भौकस[15] देव दयेता[16] ॥

---

१ खिखिंड=(किष्किंध)=बीहड़ बन । २ निरमरे=निर्मल । ३ साउज=बनजंतु । ४ आरन=(अरण्य)=बन । ५ पंखि=पक्षी । ६ अंतरिख=अंतरिक्ष=(खाली स्थान) ७ बाज=बिना, बगैर । ८ बेना=खस । ९ कपुरेना=कपूर (सभा की प्रति) १० भुइँफरी=भूमिफली नाम की एक लता विशेष जिसके फल कटु होते हैं । ११ लोवा=लोमड़ी । १२ इँदुर=मूस, चूहा । १३ चांटी=चींटी । १४ राकस=राक्षस । १५ भौकस=(भुवौकस)=भूमि पर रहने वाले, थलचर । १६ दयेता=दैत्य ।

दोहा—कीन्हेसि सहस अठारह[1] बरन बरनउपराजि[2]।
भुगुति दिहिस पुनि सब कहँ सकल साजना[3] साजि ॥३॥

चौपाई

कीन्हेसि मानुस दिहिस बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुगुति तेहिंपाई॥
कीन्हेसि राजा भूजहि[4] राजू। कीन्हेसि हस्ति घोर तिन्ह साजू॥
कीन्हेसि तिनकहँ बहुत बिरासू[5]। कीन्हेसि कोइ ठाकुर[6] कोइ दासू॥
कीन्हेसि दरब[7] गरब जेहि होई। कीन्हेसि लोभ अघाय न कोई॥
कीन्हेसि जियन[8] सदा सब चहा। कीन्हेसि मीचु न कोऊ रहा॥
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू। कीन्हेसि दुख चिंता औ दंदू[9]॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी। कीन्हेसि बिपति संपदा घनी॥

दोहा—कीन्हेसि कोइ निभरोसी[10] कीन्हेसि कोइ बरियार[11]।
छारहिं तें सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि सब छार ॥४॥

चौपाई

धनपति[12] वहै जेहि क संसारू। सबै देय नित घट न भँडारू॥
जाँवत जगत हस्ति औ चाँटा[13]। सबकहँभुगुति[14] रातदिन बाँटा॥
ताकर दृष्टि जो सब उपराहीं। मित्र सत्रु कोउ बिसरै नाहीं॥
पंखि पतंग न बिसरै कोई। परगट गुपुत जहाँ लग होई॥
भोग भुगुति बहु भाँति उपाई[15]। सबहिं खवावै आपु न खाई॥

---

१ अठारह=मुसलमान लोग सब सृष्टि के जीवों की संख्या १८००० ही मानते हैं। २ उपराजना=पैदा करना। ३ साजना=साज सामान। ४ भूजहिँ=भोगते हैं। ५ बिरासू=बिलास। ६ ठाकुर=मालिक। ७ दरब=द्रव्य, धन। ८ जियन=जीवन, ज़िन्दगी। ९ द्वन्दू=(द्वन्द) दो विरोधी वस्तुओं का जोड़ा, जैसे—दुःख और सुख, सर्दी और गर्मी, रात और दिन, भला और बुरा इत्यादि। १० निभरोसी=(निर्बलीयसी) दुर्बल, =कमज़ोर। ११ बरियार=बलवान। १२ धनपति=भंडारी, खजाञ्ची। १३ चांटा=चींटी। १४ भुगुति=(भुक्ति)=भोजन, खूराक। १५ उपाई=पैदा की।

ताकर वहै जो खाना पियना। सबकहँ देयभुगुति औ जियना[१]॥
सबहिं आस ताकर हर स्वासा। वह न काहु की आस निरासा॥

दोहा—जुग जुग देत घटा नहिं उभै हाथ अस कीन्ह।
औ जो दीन्ह जगत महँ सो सब ताकर दीन्ह॥ ५॥

चौपाई

आदि एक बरनों सो राजा। आदिहु अंत राज जेहि छाजा॥
सदा सरबदा राज करेई। औ जेहि चहै राज तेहि देई॥
छत्रहि अछत[२] निछत्रहि छावा। दूसर नाहिँ जो सरवरि पावा॥
परबत ढाह देख सब लोगू। चाँटहिं करै हस्ति सरि[३]जोगू॥
बज्रहि तिनुका मारि उड़ाई। तिनहिं बज्रकरि देइ बड़ाई॥
काहुइ भोग भुगुति सुखसारा। काहुइ भीख-भवन-दुख[४]मारा॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई। करै सोइ मन चिंत[५] न होई॥

दोहा—सबै नास्ति[६] वह इस्थिर[७]ऐस साज जेहि केर।
एक साजै एक भाँजै[८] चहै सँवारै फेरि॥ ६॥

चौपाई

अलख रूप अबरन[९] सो करता। सबओहि सोँ वह सबसों बरता॥
परगट गुपुत सो सरब-बियापी[१०]। धरमी चीन्ह चीन्ह नहिँ पापी॥
ना ओहि पूत पिता नहिं माता। ना ओहि कुटुंब न कोइ सँग नाता॥

---

१ जियना=जीवन, ज़िन्दगी। २ अछत=छत्रधारी को अछत्र बना देता है और छत्ररहित (रंक) के सिर पर छत्र छा देता है (राजा बनाता है)। ३ सरि=बराबरी। ४ भीख-भवन=(भिक्षा-भ्रमण) भीख के वास्ते इधर उधर घूमने के दुख से मारता है। ५ चिंत=वह ईश्वर ऐसा काम कर डालता है जो किसी के चिंतवन में भी न आया हो। ६ नास्ति =नाशवान्। ७ इस्थिर=(स्थिर)=सदा एक सा रहने वाला। ८ भाँजै =भंग करता है, तोड़ डालता है, बिगाड़ देता है। ९ अबरन=जिसका कोई रंग न हो, रंग रहित। १० सरब-ब्यापी=सर्व-व्यापी।

जना न काहु न कोउ ओहि जना। जहँ लग सब ताकर सिरजना[1]॥
वैं[2] सब कीन्ह जहाँ लग कोई। वह नहिँ कीन्ह काहु कर होई॥
हुत[3] पहले औ अब है सोई। पुनि सो रहै रहै नहिं कोई॥
और जो होय सो बाउर अंधा। दिन दुइ चारि मरै करि धंधा[4]॥
दोहा—जो वैं चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्ह।
बरजनहार न कोऊ सबै चाहि[5] जिउ दीन्ह॥७॥

चौपाई

यहि बिधि चीन्हहु करौ गियानू। जस पुरान महँ लिखा बखानू[6]॥
जीव नाहि पै जिय गोसाईं। कर नाहीं पै करै सबाईं[7]॥
*जीभ नाहिं पै सब कुछ बोला। तन नाहीँ सब ठाहर[8] डोला॥
स्रवन नाहि पै सब कुछ सुना। हिया नाहिँ पै सब कुछ गुना[9]॥
नैन नाहिँ पै सब कुछ देखा। कौन[10] भांति अस जाय बिसेखा॥
ना कोऊ है ओहि के रूपा। ना ओहि सों कोउ आय अनूपा॥
ना ओहि ठांउ न ओहि बिन ठाऊँ। रूप[11] रेख बिन निरमल नाऊँ॥
दोहा—ना वह मिला न बीहर[12] ऐस रहा भरिपूर।
दिष्टिवंत कहँ नियरे अंध मुरुख कहँ दूर॥८॥

---

१ सिरजना=सृष्टि, बनाई हुई वस्तु। २ वैं=वह। ३ हुत=था। ४ धंधा=कामकाज। ५ सबै चाहि=सब से बढ़कर। ६ बखानू=,(व्याख्यान)=वर्णन। ७ सबाईं=सब कुछ। ८ ठाहर=ठौर, स्थान, जगह। ९ गुना=सोचा और समझा। १० कौन······बिसेखा=ऐसे ईश्वर का विशेष वर्णन कैसे किया जा सकता है। ११ रूप रेख=आकार और मूर्ति कुछ भी नहीं है, पर पवित्र नाम है। १२ बीहर=बीरर, बिरल, (जो घना न हो), जुदा जुदा, दूर दूर पर।

* मिलान के लिये :—

बिनु पद चलै सुनै बिन काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी।

(तुलसीदास)

चौपाई

और जो दीन्हेसि रतन अमोला। ताकर मरम न जानै भोला[1]॥
दीन्हेसि रसना औ रस भोगू। दीन्हेसि दसन जो बिहसै जोगू॥
दीन्हेसि जग देखन कहँ नैना। दीन्हेसि स्रवन सुनै कहँ बैना॥
दीन्हेसि कंठ बोल जेहि माहाँ। दीन्हेसि कर-पल्लव बर बाहाँ॥
दीन्हेसि चरन अनूप चलाहीँ। सो पै मरम जानु जेहि नाहीँ॥
जोबन[2] मरम[3] जान पै बूढ़ा। मिलै न तरुनापा[4] जग ढूंढ़ा॥
सुख कर मरम न जानै राजा। दुखी जान जा कहँ दुख बाजा[5]॥

दोहा—मरम जान पै रोगी भोगी रहै निचिंत।
सब कर मरम सो जानै जो घट घट रह नित[6] ॥८॥

चौपाई

अति अपार करता के करना[7]। बरनि न कोऊ पावै बरना॥
*सात सरग जो कागद करई। धरती सात समुँद मसि[8] भरई॥
जाँवत जग साखा बन ढाँका[9]। जाँवत केस रोम पँखि पाँखा॥
जाँवत खेह रेह दुनियाई। मेघ बूंद औ गगन तराई॥
सब लिखनी[10] करि लिख संसारू। लिखि न जायँ गुनसमुँद अपारू॥

---

१ भोला=मूर्ख। २ जोबन=जवानी। ३ मरम=भेद। ४ तरुनापा=जवानी। ५ बाजना=लड़ना। (सुख का मर्म राजा नहीं जानता, क्योंकि वह तो सदा सुख में ही रहता है, अतएव सुख का मर्म दुखी मनुष्य ही जानता है जिससे दुःख आकर लड़ाई करता है अर्थात् सुखी मनुष्य सुख की कदर नहीं जानता; जो बहुत दुःख उठाता है वही सुख की कदर जानता है)। ६ नित=नित्य, सदा। ७ करना=कार्य। ८ मसि=स्याही। ९ ढांख=पलास वृक्ष। १० लिखनी=कलम।

* देखो महिम्नस्तोत्र का—"असित गिरि समंस्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रं सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्र मुर्वीम्। लिखति यदि ग्रहीत्वा शारदा सर्व कालं तदपि तवगुणाना मीश पारं न याति।

एत[1] कीन्ह सब गुन परगटा। वहि समुंद ते बूंद न घटा॥
ऐस जानि मन गरब न होई। गरब करै मन बाउर सोई॥

दोहा—बड़ गुनवंत गोसाईं चहै होय सो बेग।
औ अस गुनी सँवारै जो गुन करै अनेग[2] ॥१०॥

मुहम्मद साहेब की तारीफ

चौपाई

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा। नाउँ मुहम्मद पून्योकरा[3]॥
प्रथम[4] जोति विधि तिनहिक साजी। औ तेहि प्रीतिसिष्टि उपराजी॥
दीपक ऐस जगत कहँ दीन्हा। भा निर्मल जग मारग चीन्हा॥
जो न होत अस पुरुष उज्यारा। सूझि न परत पंथ अँधियारा॥
दूसर[5] ठाउँ दई ओहि लिखे। भए धरमी जे पाढ़त[6] सिखे॥
जिन्ह नहिँ लीन्ह जनम बहनाऊँ। तिनकहँ दीन्ह नरक महँठाऊँ॥
जगत बसीठ[7] दई[8] ओहि कीन्हा। दोउ जग तरा नाउँ जेइ लीन्हा॥

दोहा—गुन औगुन बिधि[9] पूछत होय लेख औ जोख।
वहि बिनवत आगे ह्वै करै जगत कर मोख[10] ॥११॥

---

१ एत=इतना। २ अनेग=(अनेक) बहुत से। ३ पून्योकरा=पूर्णमासी का सम्पूर्ण कला संयुक्त चंद्रमा। ४ प्रथम=(मिलान कीजिये—कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू। कीन्हेसि तिन्हि प्रीति कयलासू।" ५ दूसर=मुसलमानी मुख्य मंत्र में (कलमा शरीफ में) ईश्वर के नाम के बाद दूसरे स्थान पर मुहम्मद ही का नाम लिखा गया है। कलमा यों है:—"लाइलाह इल लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह"। ६ पाढ़त=वह पढंत अर्थात् वह कलमा की शिक्षा। ७ बसीठ=पैगंबर, ईश्वर दूत। ८,९ 'दई विधि' शब्दों का प्रयोग जायसी ने 'ईश्वर' के अर्थ में बहुधा किया है। १० मोख=क़यामत के दिन मुहम्मद साहेब की सिफारिश से मुसलमानों को मोक्ष मिलेगी।

चार यार का वर्णन

चौपाई

चारि मीत जो मुहम्मद ठाऊँ। चहूँ क दुहूँ जग निर्मल नाऊँ॥
अबाबकर सिद्दीक़ सयाने। पहले सिदिक[1] दीन[2] वेइ आने॥
पुनि सो उमर खताब[3] सोहाये। भा जग अदल[4] दीन ओहि आये॥
पुनि उसमान जो पंडित गुनी। लिखा पुरान[5] जो आयत सुनी॥
चौथे अली सिंह बरियारू। जिन्ह डर कांपै सरग पतारू॥
चारो एक मते एक बाता। एक पंथ औ एक सँघाता[6]॥
बचन एक जो सुनावहिं साँचा। भा परवान[7] दुहूँ जग बाचा॥
दोहा—जो पुरान बिधि पठवा सोई पढ़त गिरंथ।
औ जो भूले आवत सो सुनि लागत पंथ॥१२॥

सामयिक राजा शेरशाह सूर की तारीफ

चौपाई

सेर साह देहली सुलतानू। चारहु खूँट[8] तपै जस भानू॥
ओही छाज छात औ पाटू[9]। सब राजन भुइँ धरा लिलाटू॥
जाति सूर औ खाँड़े सूरा। औ बुधिवंत सबै गुन पूरा॥
सूर-नवाई[10] नव खँड भई। सातौ दीप दुनी सब नई॥
तहँलगराजखड़गबर[11]लीन्हा। इसकंदर[12]जुलकरनजोकीन्हा॥

---

१ सिदिक = दृढ़ विश्वास। २ दीन = मुसलमानीय। ३ खताब = खताब के पुत्र। ४ अदल = न्याय। ५ पुरान = मुहम्मद साहेब से सुनी हुई आयतें (कोरान शरीफ के मंत्र) यही महाशय लिखते जाया करते थे। ६ संघात = समूह, जमाअत। ७ परवान = लोग उनका बचन प्रमाण मानते थे वे दोनों लोकों के कष्टों से बच जाते थे। ८ खूंट = (छोर) दिशा। ९ पाट = सिंहासन। १० सूर-नवाई = शूरवीरों के झुकाने (विजित करने) की क्रिया। ११ बर = बल। १२ इसकंदर = सिकंदर जुलकर्नेन।

हाथ सुलैमां[1] केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी॥
औ अतिगरुअ पुहुमिपति भारी। टेकिपुहुमि सब सिष्टिसँभारी॥

दो०—दीन्ह असीस मुहम्मद करहु जुगहि जुग राज।
पातसाह तुम जग के जग तुम्हार मुहताज[2] ॥१३॥

चौपाई

बरनौ सूर भूमिपति राजा। भूमि न भार सहै जेहि साजा॥
हय गय सैन चलै जग पूरी। परबत टूटि उड़हि ह्वै धूरी॥
रेनु रइनि ह्वै रबिहि गरासा। मानुस पंखि लेहिं फिरि बासा॥
*सतखँड धरती भइ खटखंडा। ऊपर अष्ट होहिं ब्रह्मंडा॥
डोलै गगन इँद्र डरि काँपा। बासुकि जाय पतारहिं चापा॥
मेरु धसमसै समुंद सुखाई। बनखँड टूटि खेह मिलि जाई॥
अगिलन कहँ पानी खर[3]बाँटा। पछिलन कहँ नहिं काँदौ[4]आँटा[5]॥

दोहा—जे गढ़ नए न काहुइ चलत[6] होहिं ते चूर।
जो वह चढ़ै पुहुमिपति सेर साह जग सूर ॥१४॥

चौपाई

अदल कहौं जस पृथमीँ होई। चाँटा चलत न दुखवै कोई॥
नौशेरवाँ[7] जो आदिल[8] कहा। साह अदल सरि सो नहि अहा॥

---

१ सुलैमान=एक प्राचीन यहूदी राजा जो बड़ा प्रतापी और दानी था। इसकी अंगुठी में यह सिद्धि थी कि ज्यों ज्यों दान देता त्यों त्यों धन बढ़ता था। २ मुहताज=मुखापेक्षी। * यह उक्ति जायसी ने फिरदौसी के शाहनामा से ली है। फिरदौसी ने लिखा है :—

* زسم ستوران دراں پہن دشت
زمین شش شدر آسماں گشت هشت (فردوسی)

३ खर=लकड़ी घास। ४ कांदौ=कीचड़। ५ आंटा=(अटना) काफी होना। ६ इसमें चपलातिशयोक्ति है। ७ नौशेरवां=फारिस देश का एक राजा जो न्याय करने में प्रसिद्ध था। ८ आदिल=न्यायी।

अदल कीन्ह उम्मर[1] की नाईं । फिरी अहान[2] सकल दुनियाईं ॥
परी नाथ[3] कोउ छुवै न पारा । मारग मानुस सों उजियारा ॥
गाय सिंह रेंगहि एक बाटा । दोनों पानि पियें एक घाटा ॥
नीर खीर छानै दरबारा । हंस करै ज्यौं नीर निनारा ॥
धरम नियाउ चलै, सत भाषा । दूबर बरी एक सम राखा ॥

दोहा—पुहुमी सबै असीसै, जोरि जोरि कै हाथ ।
गंग जमुन जौ लहि जल, तौ लहि अमर सो नाथ ॥१५॥

चौपाई

पुनि रूपवंत बखानौं काहा । जाँवत जगत सबै सुख चाहा[4]॥
ससि चौदस जो दई संवारा । तेहू चाहि[5] रूप उजियारा ॥
पाप जाय जो दरसन दीसा । जग जोहारि[6] कै देइ असीसा ॥
जैस भानु जग ऊपर तपा । सबै रूप ओहि आगे छपा[7] ॥
अस भा सूर पुरुष निरमरा । सूर चाहि ओहि आगर[8] करा ॥
सौंह दिष्टि कै हेरि न जाई । जेइँ देखा सो रह सिर नाई ॥
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा । बिधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा ॥

दोहा—रूपवंत मनिमाथा[9], चंद्र घाटि वह बाढ़ ।
दरसन मदन लोभाना, अस्तुति बिनवै ठाढ़ ॥१६॥

चौपाई

पुनि दातार दई बड़ कीन्हा । अस जग दान न काहू दीन्हा ॥
बलि बिक्रम दानी बड़ कहे । हातिम[10] करन तियागी[11] अहे ॥

---

१ उम्मर=हज़रत उमर (चार यारों में से एक) २ अहान=आख्यान, कथा गाथा, कहावत, प्रसिद्ध, नेकनामी। ३ नाथ=नथ, नासाभूषण। ४ चाहना=देखना। ५ चाहि=बढ़ कर। ६ जोहारना=प्रणाम करना। ७ छपा=छिप गया, रात्रि। ८ आगर=सुन्दर, अच्छी। ९ मनिमाथा=शिर मणि, सिरताज। १० हातिम=अरब देश का एक प्रसिद्ध परोपकारी और दानी महात्मा। ११ तियागी=त्यागी।

सेरसाह सरि पूज न कोऊ। समुंद सुमेरु घटहिँ नित दोऊ॥
दान डाँक[1] बाजै दरबारा। कीरति गई समुंदर पारा॥
परसि सूर कंचन जग भयऊ। दारिद भागि दिसंतर[2] गयऊ॥
जो कोइ जाय एक बेर माँगा। जनमहु भयो न भूखा नाँगा॥
दस असुमेध जग्य जेइँ कीन्हा। दान[3]पुन्य सरि सौंह न चीन्हा॥
दोहा—अस दानी जग उपजा सेरसाह सुलतान।
ना अस भयो न होई ना कोइ देइ अस दान॥१७॥

गुरुपरंपरा वर्णन

चौपाई

सैयद अशरफ़[4]पीर पियारा। जिन्ह मोहिँ पंथ दीन्ह उजियारा॥
लेसा[5] हिये प्रेम कर दीया। उठी जोति भा निरमल हीया॥
मारग हुत जो अँधेर असूझा। भा उजेर सब जाना बूझा॥
खार समुंद पाप मोर मेला। बोहित[6] धरम लीन्ह कै चेला॥
उन कर मोर पोढ़[7] कै गहा। पायों तीर घाट जेहिं रहा॥
जाकर ऐस होय कनहारा[8]। तुरत बाँह गहि लावै पारा॥
दस्तगीर[9] गाढ़े के साथी। जहँ अवगाह[10] देहिँ तहँ हाथी[11]॥
दोहा—जहाँगीर[12] वै चिश्ती निःकलंक जस चांद।
वै मखदूम[13] जगत के हौं उनके घर बांद[14]॥१८॥

---

१ डांक=डंका। २ दिसन्तर=देशान्तर। ३ दान······न चीन्हा=दान पुन्य में किसी को अपने बराबर नहीं समझा। ४ अशरफ़=सैयद अशरफ जहांगीर चिश्ती। ५ लेसा=जलाया (दिया के लिये) ६ बोहित=जहाज। ७ पोढ़ कै=(पुष्ट) मज़बूती से। ८ कनहार=(कर्णधार) केवट, खेने वाला। ९ दस्तगीर=हाथ पकड़ने वाला (फारसी)। १० अवगाह=अथाह। ११ हाथी=हाथ का सहारा। १२ 'जहांगीर'=सैयद अशरफ़ का लक़ब था और "चिश्ती" उनकी वंशपरंपरा थी। १३ मखदूम=सेव्य, पूजनीय। १४ बांध=बंदा, चेरा, दास।

चौपाई

तिन्ह घर रतन एक निरमरा। हाजी सेख सबै गुन भरा ॥
तिन्ह घर दुइ दीपक उजियारे। पंथ देन कहँ दई सँवारे ॥
सेख मुबारक पून्यो करा। सेख कमाल जगत निरमरा ॥
दोउ अचल ध्रुव डोलैं नाहीं। मेरु खिखिंड तिन्हहु उपराहीं ॥
दीन्ह रूप औ जोति गोसाईं। कीन्ह खाँभ दुइ जग के ताँईं ॥
दुहू खाँभ टेके सब मही। औ तिन्ह भार सिष्टि थिर रही ॥
जिन्ह दरसे औ परसे पाया। पाप हरे निरमल भइ काया ॥

दोहा—मुहम्मद सो निहचिंत पथ जेहि सँग मुरशिद[1] पीर[2]।
जेहिक नाव वै खेवक[3] बेगि लाग सो तीर ॥१९॥

चौपाई

गुरु मुहिदीं[4] खेवक मैं सेवा। चलै उतायल[5] जिन्ह कर खेवा ॥
अगुवा भयो सेख बुरहानू। पंथ लाय तिन्ह दीन्ह गियानू ॥
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू। दीन दुनी रोसन[6] सुरुखुरू[7] ॥
सैयद मुहमद के वै चेला। भया सिद्धि जो उन्ह सँग खेला ॥
दानियाल गुरु पंथ लखाई। दरसन ख्वाज खिजिर जिन्ह पाई ॥
भये प्रसन्न उन हजरत ख्वाजे। लै मेरये[8] जिन्ह सैयद राजे ॥
उन्ह सों मैं पाई जप[9] करनी[10]। उघरी जीभ प्रेम-कवि[11] बरनी ॥

दोहा—वै सु गुरू हैं। चेला नित बिनवों भा चेर।
उन्ह हुत[12] देखे पायौं दरस गोसाईं[13] केर ॥२०॥

---

१ मुरसिद=सीधा रास्ता दिखाने वाला। २ पीर=गुरु। ३ खेवक=खेनेवाला। ४ मुहिंदीं=सैयद मुहीउद्दीन (जायसी के मंत्र गुरु)। ५ उतायल=वेग से। ६ रोसन=प्रसिद्ध। ७ सुरुखुरु=सर्वमान्य। ८ मेरये=मिला दिया। ९ जप=ईश्वर स्मरण की युक्ति। १० करनी=नित्य कृत्य की विधि। ११ प्रेम-कवि=प्रेम काव्य, प्रेममय कथा। १२ हुत=द्वारा, जरिये से। १३ गोसाईं=ईश्वर।

कवि परिचय

चौपाई

*एक नयन कवि मुहमद गुनी । सोइ बिमोहा जेइँ कवि[1] सुनी ॥
चाँद जैस जग बिधि अवतारा । दीन्ह कलंक कीन्ह उजियारा ॥
जग सूझा एकै नयनाँहाँ । उआ सूक[2] जस नखतन माँहाँ ॥
जौलहि आँबहि डाभ[3] न होई । तौलहि सुगँध बसाइ न कोई ॥
कीन्ह समुंदर पानि जो खारा । तौ अस भयो असूझ अपारा ॥
जो सुमेर तिरसूल बिनासा । भा कंचन कर लागु अकासा ॥
जौलहि घरी[4] कलंक[5] न परा । तौलहि होय न कंचन खरा ॥

दोहा—एक नयन जस दरपन औ निरमल तेहिं भाउ ।
सब रुपवंते पाउँ गहि मुख देखै कर चाउ ॥२१॥

चौपाई

चारि मीत कवि मुहमद पाये । जोरि मिताई सरि[6] पहुँचाये ॥
यूसुफ मालिक पंडित औ ज्ञानी । पहिले बात भेद उन्ह जानी ॥
पुनि सलार कादिम मति माँहाँ । खाँड़े दान उभै नत[7] बाँहाँ ॥
मियाँ सलोने सिंह बरियारू । बीर खेतरण खरग जुझारू ॥
सेख बड़े बुधसिंधु बखाना । किय अदेस[8] बड़ सिद्धन माना ॥

---

* जायसी बाईं आंख के काने और बाऐं कान के बहरे थे—(देखो उत्तरार्द्ध दोहा २८)

१ कवि = काव्य, कविता । २ सूक = शुक्र (ग्रह) ३ डाभ = दाग़ (जैसा कोइली में काला दाग़ होता है ।) ४ घरी = घरिया जिसमें रखकर सुनार लोग सोना चांदी गलाते हैं । ५ कलंक = पारे और गंधक की कजली । ६ सरि = बराबरी । ७ नत (उन्नत) = ऊंचा (यहां कवि ने "ऊ' उपसर्ग का लोप किया है) । ८ अदेस (आदेश) = आज्ञा ।

चारिउ चतुरदशा[1] गुन पढ़े। औ सँग जोग, गुसाईं गढ़े॥
बिरिछ जो आछहि[2] चंदन पासा। चंदन होय भेदि तेहि बासा॥
दोहा—मुहमद चारो मीत मिलि भये जो एकहि चित्त।
यहि जग साथ जो निबहा ओहि जग बिछुरन कित्त॥२२॥

कवि वासस्थान वर्णन

चौपाई

जायस नगर धरम अस्थानू। तहाँ आय कवि कीन्ह बखानू॥
औ बिनती पंडितन सों भाषा। टूटि सँवारहु मेरवहु साखा॥
हौं सब कवियन कर पछलगा। तिन्हबल कछुक चलौं दै डगा[3]॥
हिय भँडार नग आहि जो पूँजी। खोली जीभ तार की कूँजी[4]॥
रतन पदारथ बोले बोला। सुरस[5] प्रेम मधु भरे अमोला॥
जेहि के बोल बिरह के घाया[6]। का तेहिं रूप सो का तेहिं माया[7]॥
फेरे[8] भेस रहै भा तपा[9]। धूर लपेटा मानिक छपा[10]॥
दोहा—मुहमद कवि[11] जो प्रेम कीना तेहिँ रकत न माँसु।
जेइँ मुख देखा सो हँसा सुनी तेहिँ आये आँसु॥२३॥

समय और कथा-मूल वर्णन

चौपाई

सन नौ सै सैंतालिस अहै। कथा उरेहि[12] बैन कवि कहै॥
सिंघल दीप पदुमिनी रानी। रतन सेन चितउर[13] गढ़ आनी॥

---

१ चतुरदशा=चौदह। २ आछहि=होता है। ३ डगा=डग, पैग। ४ कूंजी=कुंजी, ताली, ग्रह्णी। ५ सुरस=स्वादिष्ट। ६ घाया=घाव, जखम। ७ माया=धन। ८ फेरे=बदले हुए। ९ तपा=तपस्वी। १० छपा=छिपा हुआ। (मिलाओ—"मानुष सहूर भरे धूर भरे हीरा है"—ठाकुर कवि)। ११ कांव=काव्य। १२ उरेहु=चित्रित करके, (ढांचा बनाकर)। १३ चितउर=चित्तौर।

अलउद्दीन[1] दिहली सुलतानू। राघौचेतन[2] कीन्ह बखानू॥
सुनि पदुमिनि गढ़ छेंका आई। हिन्दू तुरकन भई लराई॥
आदि अंत जस गाथा अही। कइ चौपाई भाषा कही॥
*कबि बियास[3] रस कँवल अपूरे। दूरन्ह नेरे नेरेन्ह दूरे॥
नियरें दूर फूल जस काँटा। दूरहिं नियर सो जस गुरुचाँटा॥

दोहा—भँवर आय बनखण्ड सों लेय कमल रस बास।
दादुर[4] बास न पावई फुलहिं जो आछे[5] पास॥२४॥

दूसरा खण्ड

सिंघलदीप वर्णन

चौपाई

सिंहलदीप कथा अब गाऊँ। औ सो पदुमिनि बरनि सुनाऊँ॥
बरनक[6] दरपन भाँति विसेषा। जेहि जस रूप सो तैसहिं देखा॥
धनि सो दीप जहँ दीपक नारी। पदुमिनि दिव्य[7] दई अवतारी॥
सात दीप बरनैं सब लोगू। एको दीप न ओहि सरि जोगू॥
दिया-दीप नहिं तस उजियारा। सरन्दीप सरि होइ न पारा॥

---

१ अलउद्दीन=अलाउद्दीन खिलजी। २ 'राघौचेतन' नामक व्यक्ति ने अलाउद्दीन से रानी पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन किया था। ३ व्यास=बियास कथा बांचने वाला ब्राह्मण।

* कविजन और व्यास लोग रस से भरे हुए कमल हैं। (गुणग्राही) दूर निवासियों के लिये निकट बासी ही के समान हैं, और अगुणग्राही निकट निवासियों के लिये दूर निवासी के समान हैं।

४ दादुर=मेढ़क। ५ आछे=है, रहता है। ६ बरनक=वर्णन। ७ दिव्य=देवतारूप (अति सुन्दर)

जंबू दीप कहौं तस नाहीं। लंक दीप पूज[1] न परछाहीं॥
दीप कुँभस्थल आरन[2] परा। दीप महुस्थल मानुष हरा॥
दोहा—सब संसार पिरथमी[3] आयँ सो सातो दोप।
एको दीप न उत्तिम सिंघल दीप समीप॥ २५॥

चौपाई

गंध्रप सेन सो खंड नरेसू। सो राजा वह तह ताकर देसू॥
लंक सुना जो रावन राजू। तेहू चाहि[4] बड़ ताकर साजू॥
छप्पन कोटि कटक दल साजा। सबै छत्रपति औ गढ़ राजा॥
सोरह सहस घोर घोरसारा[5]। साँवकरन[6] जस बाँक तुखारा[7]॥
सात सहस हस्ती सिँहली। जनु कैलास[8] ऐरावत बली॥
अश्वपतिक[9] सिरमौर[10] कहावै। गजपतीक आँकुस गज नावै[11]॥
नरपतीक कहु[12] और नरिंदू। भूपतीक जग दूसर इन्दू[13]॥
दोहा—ऐस चक्कवै[14] राजा चहूँखंड भव[15] होय।
सबै आय सिर नावैं सरवरि[16] करै न कोय॥२६॥

चौपाई

जो ओहि दीप नियर भा जाई। जनु कैलास तीर भा आई॥
घन अँवराउ[17] लाग चहुँ पासा। उठी पुहुमि हुति लागि अकासा॥
तरवर[18] सबै मलयगिर[19] लाये। भइ जग छाँह रैनि है आये॥

---

१ पूज न=बराबरी नहीं कर सकता। २ आरन (अरण्य)=जंगल। ३ पिरथमी=पृथ्वी। ४ चाहि=बढ़कर। ५ घोरसारा=अस्तबल, पैंडा। ६ सांवकरन=श्याम कर्ण। ७ तुखारा=सपेद रंग का घोड़ा। ८ कैलास =इन्द्रलोक, स्वर्ग। ९ अश्वपतिक=शहसवार (अच्छा घोड़सवार)। १० सिरमौर=सरदार। ११ नावै=अंकुश से हाथी को झुका देता है। १२ कहु=गोया, मानो। १३ इन्दू=इन्द्र। १४ चक्कवै=चक्रवर्ती। १५ भव=भय, डर। १६ सरवरि=बराबरी। १७ अँवराउ=आम का बगीचा। १८ तरवर=पेड़। १९ मलयगिर लाये=चंदनलगाये हुए हैं, सुगध पूर्ण

मलय समीर सोहाई छाँहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहिं माँहाँ॥
ओही छाँह रइनि है आवै। हरियर सबै अकास दिखावै॥
पथिक[1] जो पहुंचै सहिकै घामा। दुखबिसरै सुखहोयबिसरामा॥
जेइँ वह पाई छाँह अनूपा। बहुरि न आय सहै यह धूपा॥

दोहा—अस अँबराउ सघन घन, बरनि न पारौं अंत।
फूलै फरै छहूं रितु, जानौ सदा बसंत ॥२७॥

चौपाई

फरे आँब अति सघन सोहाये। औ जस फरे अधिक सिर नाये॥
कटहर डार पेड़ सों पाके। बड़हर सो अनूप अति ताके॥
खिरनी पाकि खाँड़ अस मीठी। जामुनि पाकि भँवर अस दीठी॥
नरियर फरे जो फरी खजूरी। फरी जानु इँदरासनपूरी[2]॥
महुआ चुवैं सो अधिक मिठासू। मधु जस मीट पुहुप जस बासू॥
और खजहजा[3] आव न नाऊँ। देखा सब रावन[4] अँबराऊ॥
लाग सबै जस अमिरित साखा। रहै लोभाइ सोइ जो चाखा॥

दोहा—लौंग सुपारी जायफर, सब फर फरे अपूर।
आसपास घन इँविली, औ घन तार[5] खजूर ॥२८॥

चौपाई

बसहिँ पंख बोलहिँ बहु भाषा। करहिँ हुलास देखि कै साखा॥
भोर होत बोलहिँ चुहँचूँहीं[6]। बोलहिँ पंडुक[7] एकै तूहीं॥
सारो सुवा सो रहचह[8] करहीं। घुरहिँ[9] परेवा[10] औकरबहीं[11]॥

---

१ पथिक=मुसाफिर। २ इदरासनपूरी=अमरावती। ३ खजहजा=अनेक प्रकार के छोटे मोटे मेवे। ४ रावन=राजाओं के। ५ तार=ताल। ६ चुहँचूँही=एक पक्षी विशेष जो बड़े सवेरे "चुहचुह" शब्द बोलता है। ७ पंडुक='पंडुकी' जो "एकतुही, एकतुही" शब्द बोलता है। ८ रहचह=बोलचाल, संभाषण। ९ घुरहिं='घुटुरगूं' शब्द करते हैं। १० परेवा=कबूतर। ११ करबरहीं=कलबल करते हैं, सुंदर शब्द करते हैं (कलरव करते हैं)।

जंबू दीप कहौं तस नाहीं। लंक दीप पूज[1] न परछाहीं॥
दीप कुँभस्थल आरन[2] परा। दीप महुस्थल मानुष हरा॥

दोहा—सब संसार पिरथमी[3] आयँ सो सातो दीप।
एको दीप न उत्तिम सिंघल दीप समीप॥ २५॥

चौपाई

गंध्रप सेन सो खंड नरेसू। सो राजा वह तह ताकर देसू॥
लंक सुना जो रावन राजू। तेहू चाहि[4] वड़ ताकर साजू॥
छप्पन कोटि कटक दल साजा। सबै छत्रपति औ गढ़ राजा॥
सोरह सहस घोर घोरसारा[5]। साँवकरन[6] जस बाँक तुखारा[7]॥
सात सहस हस्ती सिँहली। जनु कैलास[8] ऐरावत बली॥
अश्वपतिक[9] सिरमौर[10] कहावै। गजपतीक आँकुस गज नावै[11]॥
नरपतीक कहु[12] और नरिंदू। भूपतीक जग दूसर इन्दू[13]॥

दोहा—ऐस चक्कवै[14] राजा चहूँखंड भव[15] होय।
सबै आय सिर नावैं सरवरि[16] करै न कोय॥२६॥

चौपाई

जो ओहि दीप नियर भा जाई। जनु कैलास तीर भा आई॥
घन अँवराउ[17] लाग चहुँ पासा। उठी पुहुमि हुति लागि अकासा॥
तरवर[18] सबै मलयगिर[19] लाये। भइ जग छाँह रैनि है आये॥

---

१ पूज न=बराबरी नहीं कर सकता। २ आरन (अरण्य)=जंगल। ३ पिरथमी=पृथ्वी। ४ चाहि=बढ़कर। ५ घोरसारा=अस्तबल, पैंडा। ६ सांवकरन=श्याम कर्ण। ७ तुखारा=सपेद रंग का घोड़ा। ८ कैलास =इन्द्रलोक, स्वर्ग। ६ अश्वपतिक=शहसवार (अच्छा घोड़सवार)। १० सिरमौर=सरदार। ११ नावै=अंकुश से हाथी को झुका देता है। १२ कहु=गोया, मानो। १३ इन्दू=इन्द्र। १४ चक्कवै=चक्रवर्ती। १५ भव=भय, डर। १६ सरवरि=बराबरी। १७ अँवराउ=आम का बगीचा। १८ तरवर=पेड़। १६ मलयगिर लाये=चंदनलगाये हुए हैं, सुगध पूर्ण है।

मलय समीर सोहाई छाँहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहिं माँहाँ॥
ओही छाँह रइनि है आवै। हरियर सबै अकास दिखावै॥
पथिक[1] जो पहुंचै सहिकै घामा। दुखबिसरै सुखहोयबिसरामा॥
जेइँ वह पाई छाँह अनूपा। बहुरि न आय सहै यह धूपा॥
दोहा—अस अँबराउ सघन घन, बरनि न पारौ अंत।
फूलै फरै छहूं रितु, जानौ सदा बसंत ॥२७॥

चौपाई

फरे आँब अति सघन सोहाये। औ जस फरे अधिक सिर नाये॥
कटहर डार पेड़ सों पाके। बड़हर सो अनूप अति ताके॥
खिरनी पाकि खाँड़ अस मीठी। जामुनि पाकि भंवर अस दीठी॥
नरियर फरे जो फरी खजूरी। फरी जानु इँदरासनपूरी[2]॥
महुआ चुवै सो अधिक मिठासू। मधु जस मीट पुहुप जस बासू॥
और खजहजा[3] आव न नाऊँ। देखा सब रावन[4] अँबराऊ॥
लाग सबै जस अमिरित साखा। रहै लोभाइ सोइ जो चाखा॥
दोहा—लौंग सुपारी जायफर, सब फर फरे अपूर।
आसपास घन इँविली, औ घन तार[5] खजूर ॥२८॥

चौपाई

बसहिँ पंख बोलहिँ बहु भाषा। करहिँ हुलास देखि कै साखा॥
भोर होत बोलहिँ चुहँचूँहीं[6]। बोलहिँ पंडुक[7] एकै तूहीं॥
सारो सुवा सो रहचह[8] करहीं। घुरहिँ[9]परेवा[10] औकरबहीं[11]॥

१ पथिक=मुसाफिर। २ इँदरासनपूरी=अमरावती। ३ खजहजा=अनेक प्रकार के छोटे मोटे मेवे। ४ रावन=राजाओं के। ५ तार=ताल। ६ चुहँचूँही=एक पक्षी विशेष जो बड़े सबेरे "चुहचुह" शब्द बोलता है। ७ पंडुक='पेंडुकी' जो "एकतुही, एकतुही" शब्द बोलता है। ८ रहचह=बोलचाल, संभाषण। ९ घुरहिं='घुटुरगूं' शब्द करते हैं। १० परेवा=कबूतर। ११ करबरहीं=कलबल करते हैं, सुंदर शब्द करते हैं (कलरव करते हैं)।

पिउ पिउ लागै करै पपीहा। तुहीं तुहीं कर गड़रूखोहा[१] ॥
कुहु कुहू कोयल कै राखा। औ भृँगराज[२] बोल बहु भाषा ॥
दही दही कै महर[३] पुकारा। हारिल[४] बिनवै आपन हारा ॥
कुहु कहिँ मोर सुहावन लागा। होइ कुराहर[५] बोलहिँ कागा ॥

दोहा—जाँवत पंखि कहे सब, बैठे भरि अँबराउ।
आपन आपन भाषा, लेहिँ दइउ[६] कर नाउँ ॥२९॥

चौपाई

पैग पैग पर कुँवा बावरी। साजे बैठक और पाँवरी[७] ॥
और कुंड बहु ठावैं ठाऊँ। सब तीरथ औ तिनके नाऊँ ॥
मठ मंडफ चहुँ पास सँवारे। जपा तपा सब आसन मारे ॥
कोइ रिषीसुर कोइ सन्यासी। कोइ रामजन कोइ मसबासी[८] ॥
कोई महेसुर जंगम जती। कोई पूजै देवी कोई सती ॥
कोइ बरमचर्ज पथ लागे। कोइ दिगंबर आछहिँ नाँगे ॥
कोइ मुनि संत सिद्ध कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बैठ वियोगी ॥

दोहा—सेवरा[९] खेवरा[१०] पारथी[११], सिध साधक अवधूत।
आसन मारे बैठि सब, जारैं आतमभूत[१२] ॥३०॥

चौपाई

मानसरोवर बरनौं काहा। भरा समुँद अस अति अवगाहा[१३] ॥
पानि मोति अस निरमल तासू। अमिरित बरन कपूर सुबासू ॥
लंकदीप की सिला अनाई[१४]। बाँधे सरवर घाट बनाई ॥

---

१ खोहा=(खीझा) बोलता है, गड़रू नामक पक्षी "तुही तुही" शब्द इस प्रकार बोलता है, मानो किसी पर क्रुद्ध हो रहा है। २ भृंगराज=भुजङ्गा नामक पक्षी जिसे 'करचोटिया' भी कहते हैं, यहपक्षी अनेक प्रकार की बोली बोलता है। ३, ४ महर हारिल=पक्षी विशेष। ५ कुराहर=कोलाहल। ६ दइउ=(देव) ईश्वर। ७ पांवरी=सीढ़ी। ८ मसबासी=वे साधु जो एक स्थान पर एक ही मास ठहरते हैं। ९, १०, ११ सेवरा, खेवरा, पारथी=जैन मतावलम्बी साधु विशेष। १२ आतमभूत=वासनायें। १३ अवगाह=अथाह। १४ अनाई=मँगवाकर।

खँड खँड सीढ़ी भूमि गरेरो[1]। उतरहिँ चढ़हिँ लोग चहुँफेरी॥
फूले कँवल रहा होइ राता। सहस सहस पँखुरिन के छाता॥
उथलेहिं[2] सीप मोति उतराहीं। चुगहिँ हँस औ केलि कराहीँ॥
कनक[3] पँखुरि पैरहिं अति लोने। जानो छतर सँवारे सोने॥

दो०—ऊपर पारि[4] चहूँ दिस, अमृत फर सब रूख।
देखि रूप सरवर कर, गइ पियास औ भूख॥३१॥

चौपाई

पानि भरन आवैं पनिहारी। रूप सुरूप पद्मिनी नारी॥
पदुम गंध तिन अंग बसाहीँ। भँवर लाग तिन संग फिराहीँ॥
लंक सिंहिनी सारँग नैनी। हंसगामिनी कोकिल बैनी॥
आवहिं चहुँ दिसि पाँतिहिँ पाँती। गवनसोहायसो भाँतिहिं भाँती॥
केस मेघावर[5] सिरता[6] पाईं। चमकैं दसन बोजु की नाईं॥
कनक कलस मुख चंद दिपाहीं[7]। रहस केलि सों आवहिँ जाहीँ॥
जा सोहैं[8] हेर चखु[9] नारी। बाँक नयन जनु हनै कटारी॥

दो०—मानो मयन-मुरति सब, अपछर[10] बरन अनूप।
जेहि की अस पनिहारीँ, ते रानी कस रूप॥३२॥

चौपाई

ताल तलाब सो बरनि न जाहीं। सूझै वार पार तिन्ह नाहीँ॥
फूले कँवल* कुमुद उजियारे। जानो उये गगन मँह तारे॥

---

१ गरेरी=चारों ओर घूमी हुई। २ उथलेहिं=कम गहरे पानी में। ३ कनक पँखुरि=वह कमल जिसकी पँखुरी सोने के से रङ्ग की थीं। ४ पारि=सरोवर के गिर्द का बांध। ५ मेघावरि=मेघावली, मेघसमूह। ६ सिरतापाईं=सिर से पैर तक। ७ दिपाहीं=चमकते हैं। ८ सौहैं=सन्मुख। ९ चखु=नेत्र। १० अच्छर=अपसरा।

* कँवल कुमुद उजियारे=वे कमल जो कुईं की तरह सफेद थे (पुंडरीक)।

उतरहिँ मेघ चढ़हिँ लै पानी। चमकहिँ मच्छ बीजु[1] की बानी॥
पैरहिँ पंखि सो संगहि संगा। सेत पियर राते[2] बहुरंगा॥
चकई चकवा केलि कराहीँ। निसि के बिछुरे दिनहिँ मिलाहीँ॥
कुरलैं[3] सारस भरे हुलासा। जीवन मरन सु एकहि पासा॥
बोलहिँ सोनढेंक[4] बक लेदी[5]। रहे अबोल[6] मीन जलभेदी॥

दोहा—नग[7] अमोल तहँ ऊपजैं, दिनहिँ बरैं जस दीप।
जो मरजीया[8] होय तहँ, सो पावै वे सीप॥ ३३॥

चौपाई

आस पास बहु अमिरित बारी[9]। फरीं अपूर[10] होइ रखवारी॥
नौरँग नीबू तुरँज जँभीरी। औ बदाम बहु बेद—अँजीरी[11]॥
गलगल[12] तुरँज सदाफर[13] फरे। औ अनार राते रसभरे॥
किसमिस सेब फरे नौपाता[14]। दारयौं दाख देखि मन राता॥
लागि सोहाई हरफारयौरी। उनै रही केरा की घौरी[15]॥
फरे तूत कमरख औ न्यौजी[16]। राय करौंदा बेर चिरौंजी॥
संगतरा औ छुहारा डीठे। और खजहजा[17] खाटे मीटे॥

दोहा—पानि देहिँ खँडवानी[18], कुंवहिँ खाँड़ बहु मेलि।
लागी घरी[19] रहँट की, सीँचैं अमृत बेलि॥३४॥

---

१ बीजु की बानी=बिजली की तरह। २ राते=लाल। ३ कुरलैं=कुर्र कुर्र करते हैं। ४ सोनढेंक=लंबी गर्दनवाला एक जलपक्षी। ५ लेदी=एक छोटी मछलीखोर चिड़िया। ६ अबोल=चुपचाप, ख़ामोश। ७ नग=मोती। ८ मरजीया=गोताखोर। ९ बारी=वाटिका। १० अपूर=आपूर्ण, बहुत अधिक। ११ बेद अंजीरी=बेद अंजीर (एक फल) १२ गलगल=एक प्रकार का नीबू। १३ सदाफर=शरीफा। १४ नौपाता=नाशपाती। १५ घौरी=गौद, फलों का गुच्छा। १६ न्यौजी=चिलगोजा। १७ खजहजा=अनेक प्रकार के मेवा। १८ खँडवानी=(खांड+पानी) शरबत। १९ घरी=रहँट की थैली।

चौपाई

बहु फुलवारि लागि चहुँ पासा। बिरिछ बेधि चंदन भइ बासा॥
बहुत फूल फूले घनबेली[1]। क्यौड़ा चंपा कुंद चँबेली॥
सुरँग गुलाब कदम औ कूजा[2]। सुगँध-बकौरी[3] गँधरप[4] पूजा॥
नागेसर सदबरग[5] नेवारी। और सिंगार-हार फुलवारी॥
सोनजरद[6] फूली सेवती। रूप-मंजरी[7] और मालती॥
जाहीजूही बकुचन[8] लावा। पुहुप सुदरसन[9] लागु सोहावा॥
मौलसिरी बेला औ करना[10]। सबै फूल फूले बहु बरना॥

दोहा—तिन्ह सिर फूल चढ़ैं वे, जिन्ह माथे भल भाग।
आछे सदा सुगंध भइ, जनु बसंत औ फाग॥35॥

चौपाई

सिंघल नगर देखि पुनि बेसा[11]। धनि राजा अस जाकर देसा॥
ऊँची पँवरी[12] ऊँच अबासा[13]। जनु कैलास इंद्र कर बासा॥
राउ राँक सब घरघर सुखी। जेहि देखा सो हँसतामुखी॥
रचि रचि साजे चंदन चउरा। पोते अगर मेद[14] औ क्यौरा॥
सब चौपारिन चंदन खँभा। ओठँगि[15] सभापति बैठे सभा॥
जनउँ सभा देउतन कैजुरी। परै दिष्टि इन्दरासन पुरी॥
सबै गुनी पंडित औ ज्ञाता। संसकिरित सब के मुख बाता॥

दोहा—अह निसि[16] पंथ सँवारे, जनु शिवलोक अनूप।
घर घर नारी पदुमिनी, सब अप्छर के रूप॥36॥

---

१ घनबेलि=मोंगरा। २ कूजा=कुब्जक (एक पुष्प विशेष) ३ सुगँध-बकौरी=सुगंधित बकावली। ४ गँधरप=राजा गंधर्वसेन की पूजा के फूल। ५ सदबरग=हजारा गेंदा। ६ सोनजरद=सोने के समान पीली। ७ रूपमंजरी=पुष्प विशेष। ८ बकुचन=(बकुचा भर) बहुत अधिक। ९, १० सुदरसन, करना पुष्प विशेष। ११ बेस=(बेश) बहुत सुंदर। १२ पँवरी=दहलीज, ड्योढ़ी। १३ अबासा=महल। १४ मेद=कस्तूरी। १५ ओठँगि=सहारा लेकर बैठना। १६ अहनिसि=रातो दिन।

चौपाई

पुनि देखी सिंघल की हाटा। नौ निधि लछिमी चमकै बाटा॥
कनक हाट सब कुंकुहि[1] लीपी। बैठ महाजन सिंघल दीपी॥
रचे चौहटा रूपे ढारे। चित्र कटाव अनेक सँवारे॥
सोन रूप भल भयो पसारा। धवलसिरी[2] पोते घर बारा॥
रतन पदारथ मानिक मोती। हीरा पन्ना सरस सु जोती॥
औ कपूर बेना[3] कस्तूरी। चंदन अगर रहा भरपूरी॥
जेइ न हाट यहि लीन्ह बेसाहा[4]। ता कहँ आन हाट कित लाहा॥

दोहा—कोऊ करै बेसाहनी, काहू केर बिकाय।
कोऊ चलै लाभ सों, कोऊ मूर[5] गँवाय॥३७॥

चौपाई

पुनि सिंगारहाट[6] भल देसा। किय सिँगार बैठीं जहँ बेस्या॥
मुख तँबोल[7] तन चीर कुसुंभी। कानन कनक जराऊ खुंभी[8]॥
हाथ बीन सुनि मिरिग भुलाहीं। नर मोहहिं सुनि पैग न जाहीं॥
भौंहँ धनुष तिन नैन अहेरी[9]। मारहिं बान सैन सों फेरी॥
अलक कपोल डोल हँसि देहीं। लाय कटाच्छ मारि जिउ लेहीं॥
कुच कंचुकि जानहु जुग सारी[10]। अंचर देहिं सुभायहि ढारी॥
केत[11] खेलार हार तिन्ह पाँसा। हाथ झारि ह्वै चलहिँ निरासा॥

दोहा—चेटक[12] लाय हरहिं मन जौ लग है गथ[13] फेंट[14]।
साँठ[15] नाठि उठि भागहिं ना पहिचान न भेंट॥३८॥

---

१ कुंकुहि=कुमकुम (केसर। २ धवलसिरी=सफ़ेद रंग (चूना वा रिया मिट्टी)। ३ बेना=खस। ४ बेसाहा=खरीद, सौदा। ५ मूर=मूलधन। ६ सिंगारहाट=वेश्याओं का बाज़ार, चकला। ७ तंबोल=पान। ८ खुंभी=करनफूल, कर्ण भूषण। ९ अहेरी=शिकारी। १० सारी=चौपड़ की गोट। ११ केत=कितने। १२ चेटक=चालाकी। १३ गथ=पूंजी, धन। १४ फेंट=फेंटा, कमरबंद। १५ सांठ=धन, पूंजी।

चौपाई

लै के फूल बैठि फुलहारी[1]। पान अपूरब धरे सँवारी ॥
सोंधा[2] सबै बैठु लै गाँधी[3]। मेलि कपूर खिरौरी[4] बाँधी ॥
कतहूँ पंडित पढ़ै पुरानू। धरम पंथ कर करहिं बखानू ॥
कतहूँ कथा कहै कछु कोई। कतहूँ नाच कूद भल होई ॥
कतहुँ चिरहँटा[5] पंखी लावा। कतहुँ पखंडी[6] काठ[7] नचावा ॥
कतहूँ नाद[8] सबद है भला। कतहूँ नाटक चेटक कला ॥
कतहूँ ठगैं ठग-विद्या लाई। कतहुँ लेहिं मानुष बौराई ॥
दोहा—लोभी धूरत चोर ठग, गठछोरा ये पाँच ।
जो यहि हाट सजग भा, ताकर गथ पै बाँच ॥३९॥

चौपाई

पुनि आये सिंघलगढ़ पासा। का बरनौं जनु लाग अकासा ॥
तरेहिं कुरुम बासुकि की पीठो। ऊपर इन्द्र लोक पर डीठी ॥
परा खाँव[9] चहुँदिस तस बाँका। काँपै जाँघ जाय नहिं झाँका ॥
अगम असूझ देखि डर खाई। परै सो सपत पतारै जाई ॥
नौ पँवरी बाँके नव खंडा। नवौ जो चढ़ै जाय ब्रहमंडा[10] ॥
कंचन कोट जड़े नग सीसा। नखतन भरा गगन जनु दीसा ॥
लंका चाहि[11] ऊंच गढ़ ताका। निरखि न जाय दिष्ट मन थाका ॥
दोहा—हिय न समाय न दिष्टि गति, जानहु ठाढ़ सुमेरु ।
कहँ लग कहौं उँचाई, कहँ लग बरनौं फेरु[12] ॥४०॥

---

१ फुलहारी=मालिन। २ सोंधा=सुगंधित द्रव्य। ३ गांधी=गंधीगर, अतर फुलेल; बेचने वाला। ४ खिरौरी=(खैरौरी) खैर की गोलियां। ५ चिरहँटा=चिड़िया पकड़ने वाला। ६ पखंडी=तमाशे वाला। ७ काठ=कठपुतरी। ८ नादसबद=गान वाद्य, गाना बजाना। ९ खांव=खंदक। १० ब्रहमंडा=आकाश। ११ चाहि=बहुत अधिक। १२ फेरु=घेरा।

चौपाई

नित गढ़ बाँचि चलैं ससि सूरू। नाहिं त बाजि[1] होय रथ चूरू॥
पँवरी नवौ बज्र की साजे। सहस सहस तहँ बैठे पाजे[2]॥
फिरैं पाँच कोतवार[3] सो भँवरी[4]। कँपै पाँउ चाँपत वै पँवरी॥
पँवरिहि पँवरि सिंह गढ़ि काढ़े। डरपहि राउ देखि तिन्ह ठाढ़े॥
बहु बनाव वे नाहर गढ़े। जनु गाजहिं चाहहिं सिर चढ़े॥
टारहिं पूँछि पसारहिं जीहा। कुंजर डरहिं कि गंजहिं लीहा[5]॥
कनक सिला गढ़ि सीढ़ी लाई। जगमगाहि गढ़ ऊपर ताई॥

दो०—नवौ खण्ड नव पँवरीं, औ तिन्ह बज्र केंवार।
चारि बसेरे सों चढ़ै, सत सों चढ़ै सो पार॥४१॥

चौपाई

नौ पँवरीं पर दसौं दुवारू। तेहि पर बाज राज घरियारू॥
घरी सो बठि गनैं घरियारी। पहर पहर पर फेरैं पारी॥
जबहिं घरी पूजै ओहि मारा। घरी घरी घरियार पुकारा॥
परा जो डाँड़[6] जगत सब डाँड़ा[7]। "का निचिंत माटीके भाँड़ा"॥
तुम तेहि चाक चढ़े होइ काँचे। आऊ[8] भरै न थिर ह्वै बाँचे॥
घरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ। का निचिंत भा सोवै बटाऊ॥
पहरहिं पहर गजर नित होई। हिया बज्र भा जागु न कोई॥

दो०—मुहमद जीवन जल भरन, घरी रहँट की रीति।
घरी आई जीवन[9] भरी ढरी जनम[10] गा बीति॥ ४२॥

---

१ बाजि=भिड़ककर, टक्कर खाकर (बाजना=लड़ना, भिड़ना) २ पाजे=प्यादे, पदचर सिपाही। ३ कोतवार=कोतवाल (कोटपाल) ४ भौंरी फिरना=गश्त लगाना, रौंद पर फिरना। ५ गंजहिं लीहा=गंजन कर डाला, मार डाला। ६ डांड़=घंटा बजाने का डंडा। ७ डांडा=डांटा, दपट कर कहा। ८ आऊ=आयु (जीवनकाल)। ९ जीवन=(क) पानी (ख) जिन्दगी। १० जनम=जीवनकाल।

चौपाई

गढ़पर नीर खीर[1] दुइ नदी। पानी भरैं मानहु दुरपदी[2] ॥
और कुण्ड एक मोती चूरू[3]। पानी अमिरितु कीच कपूरू ॥
ओहिक पानि राजा पै पिया। वृद्ध होय नहिँ जौलहिजिया ॥
कंचन बिरिछ एक तेहि पासा। कलपबिरिछजसइन्द्रबिलासा[4] ॥
मूल पतार सरग ओहि साखा। अमरबेलि को पाउको चाखा ॥
चाँद पात औ फूल तराई। है उजियार नगर जहँ ताई ॥
वै फर पावै तप कै कोई। वृद्ध खाय तौ जोबन होई ॥

दोहा—राजा भये भिखारी, सुनि ओहि अमिरित भोग।
जेइ पावा से अमर भा, न कुछ वियाधि न रोग ॥४३॥

चौपाई

गढ़ पर बसैं चारि गढ़पती। असुपति गजपति औनरपती ॥
सब क धौरहर[5] सोने साजा। सब अपने अपने घर राजा ॥
रूपवंत धनवंत सुभागे[6]। पारस पाहन पँवरिन[7] लागे ॥
भोग विलास सदा मनमाना। दुखचिंताकोउजनम[8] नजाना ॥
मँदिर मँदिर सब के चौपारी[9]। बैठिकुंवरसबखेलहिँ सारी[10] ॥
पाँसा ढरैं खेल भल होई। खरग[11] दानसरि पूज न कोई ॥
भाट पढ़हिं सब कीरति भली। पावहिँ घोर हस्ति सिंघली ॥

दोहा—मँदिर मँदिर फुलवारी, चोवा चंदन बास।
निस दिन रहै बसंत तहँ, छहु रितु बारा मास ॥४४॥

---

१ खीर=(क्षीर) दूध। २ दुरपदी=द्रौपदी। ३ मोतीचूर=स्वच्छ और निर्मल जल वाला। ४ इन्द्रबिलास=इन्द्रपुरी। ५ धौरहर=ऊंचे महल। ६ सुभागे=सौभाग्यमान। ७ पँवरिन=पांवरिन, सीढ़ियों में। ८ जनम=आजीवन जीवन पर्यंत। ९ चौपार=द्वार पर की दालान, बैठक। १० सारी=चौपड़। ११ खरग ·······कोई=खड्ग (युद्ध) में दान में कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता था।

चौपाई

पुनि चलि देखा राज-दुवारू। महि घूमियपाइय नहिं बारू[१]॥
हस्ति सिंघली बाँधे बारा[२]। जनु सजीव सब ठाढ़ पहारा॥
कवन्यौ सेत पीत रतनारे। कवन्यौ हरे धूम औ कारे॥
बरनहि बरन गगन जस मेघा। उठे गगन बैठे जनु ठेघा[३]॥
सिंघल के बरनौं सिंघली[४]। एक एकचाहिसोएकएकबली॥
गिरि पहार परबत सब पेलहिं। बिरिछउचारिफारिमुखमेलहिं॥
मात निमत[५] सब गरजहिं बाँधे। निसदिनरहहिं महावत काँधे॥

दोहा—धरती भार क अंगवै[६], पाँउ धरत उठु हाल।
कुरुम[७] टूट फन[८] फाटै, तिन हस्तिनकी चाल॥४५॥

चौपाई

पुनि बाँधे रजबार[९] तुरंगा। का बरनौं जस उनके रंगा॥
नीलेसमँद[१०] चालजग जाने। हाँसुल[११] भँवर[१२] कियाह[१३] बखाने
हरे सुरंग महुव[१४] बहु भाँती। गरर[१५]कोकाह[१६] बोलाह[१७]सुपाँती॥
मन ते अगमन[१८] डोले बागा। लेत उसास गगन सिरलागा॥
पवन समान समुँद पर धावहिं। पाउन बूड़ पार होइ आवहिं॥

---

१ बारु=(बार) दरवाजा। २ बारा=द्वार। ३ ठेघा=पहाड़। ४ सिंघली=सिंहलद्वीप के हाथी। ५ निमत=अन माते, जो मते न हों। ६ भार न अँगवै=बोझा नहीं सह सकती। ७ कुरुम=कछुवा। ८ फन=शेष नाग का फण। ९ रजबार=(राजा+बार) राजद्वार। १० समन्द=समंद रंग का। ११ हांसुल=कुम्मैत रंग का। १२ भँवर=काले, धुरही। १३ कियाह=जिस घोड़े का रंग ताड़ के पके फल के समान हो (पक्व ताल निभी बाजी कियाहः परिकीर्तितः)। १४ महु=महुवा के रङ्ग का। १५ गरर=गर्रा। १६ कोकाह=स्वेत रंग का। १७ बोलाह=वह घोड़ा जिसकी पूँछ और गर्दन के बाल पीले हों (बोलाहस्त्वय मेश्वस्यात् पांडु केशर बालधिः) १८ अगमन=आगे।

थिर न रहहिं रिसलोह चबाहीं । भाजहिं पूंछि सीस उपराहीं ॥
ीख तुखार[1] चाँड़[2] श्रौ बाँके । तरपहिं तबहिं[3] चलहिं बिनहाँके ॥
दोहा—श्रस तुखार सब देखे, जनु मन के रथवाह[4] ।
नवत पलक पहुंचावहीं, जहँ पहुँचा कोउचाह ॥४६॥

चौपाई

राज सभा पुनि दीख बईठी । इन्द्र सभा जनु परिगइ डीठी ॥
गनि राजा श्रस सभा सँवारी । जानहु फूलि रही फुलवारी ॥
मुकुट बाँधि सब बैठे राजा । दर[5] निसानसब जिनकेसाजा ॥
रूपवंत-मनि दिपै लिलाटा । माथे छात[6] बैठ सब पाटा[7] ॥
जानहु कमल सरोवर फूले । सभा क रूप देखि मन भूले ॥
पान कपूर मेद[8] कसतूरी । सुगँध बास सब रही श्रपूरी[9] ॥
माँझ ऊंच इन्द्रासन[10] साजा । गंध्रबसेन बैठ तहँ राजा ॥
दोहा—छतर गगन लग ताकर, सूर तबै[11] जस श्राप
सभा कँवल श्रस बिकसी, माथे बड़ परताप ॥४७॥

चौपाई

राजा राजमँदिर कैलासू[12] । सोने कर सब पुहुमि श्रकासू ॥
सात खंड धौराहर साजा । वहै सँवारि सकै श्रस राजा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा[13] । श्रौ नग लाइ सरग लौं लावा ॥
जाँवत सबै उरेह[14] उरेहे । भाँति भाँति नग लाग उबेहे[15] ॥
भा कटाव सब श्रनुपम भाँती । चित्र कटावसो पाँतिहिं पाँती ॥

---

१ तुखार=सफेद रङ्ग का घोड़ा । २ चांड=प्रचंड, बलवान । ३ तवहिं=तपते हैं, तेज दिखलाते हैं । ४ रथवाह=रथबान, सूत । ५ दर=दल सेना । ६ छात=छत्र । ७ पाटा=सिंहासन । ८ मेद=इत्र । ९ श्रपूरी=श्रापूर्ण, भरपूर । १० इन्द्रासन=इन्द्र का सा सिंहासन । ११ तबै=तपै । १२ कैलासू=स्वर्ग के समान । १३ गिलावा=गारा । १४ उरेह=चित्र । १५ उबेहे=उभड़े हुए ।

लाग खाँभ मनि मानिक जरे। जनहु दिया दिन आछहि[1] धरे॥
देखि धौरहर कर उजियारा। छिपि गये चाँदसुरिजऔतारा॥
दोहा—सजे सात बैकुण्ठ[2] जस, तस साजे खँड सात।
बीहर[3] बीहर भाव तिन्ह, खँडखँड ऊपर छात॥४८॥

चौपाई

बरनौं राज मँदिर रनिवासू। अछरन[4] भरा जनहु कैलासू[5]॥
सोरह सहस पदुमिनी रानी। एक एक ते रूप बखानी॥
अति सुरूप औ अति सुकुवारा। पान फूल के रहहिं अधारा॥
तिन्ह ऊपर चंपावत रानी। महा सुरूप पाट परधानी[6]॥
पाट बैठि रह किहे सिँगारू। सब रानी ओहि करें जुहारू॥
नित नव रंग सुरंगम सोई। प्रथम वैस नहिं सरवरिकोई॥
सकल दीप महँ जेती रानी। तिन्हमहँकनकसोबारहबानी[7]॥
दोहा—कुँवरि वतीसौलच्छनी[8], औ सब चाहि अनूप।
जाँवत सिंघलदीप जन, सबै बखानैं रूप॥४९॥

॥ इति दूसरा खंड॥

---

१ दिन आछहिं=दिन ही में, दिन आछत। २ सात बैकुंठ=सातों स्वर्ग लोक (भूलोक भुवर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपो लोक, सत्य लोक)। ३ बीहर=अलग अलग उन सातों खंडो के अलग २ भाव अर्थात बनावट और सजावट के सामान हैं) ४ अछरन=अप्सरायें। ५ कैलासू=स्वर्ग। ६ पाट परधानी=पटरानी। ७ बारहबानी=बारहो सूर्य का रंग (नोट) कवि शिरोमणि 'सूरदास' जी ने भी इस मुहावरे का प्रयोग 'सोने' की प्रशंसा में किया किया है जिसका अर्थ "अत्यंतखरा" किया है। ८ बतीसौ लच्छनी=स्त्रियों के ३२ शुभ लक्षण ये हैं।

(१) नख-लाल। (२) पाद-पृष्ठ—कूर्म-पृष्ठवत्। (३) गुल्फ—गोल। (४) पदांगुली—अविरल। (५) पदतल (तरवा)—लाल और शुभ चिह्नयुत। (६) जंघा—गोल और गावदुम। (७) जानु—सुढार और बराबर। (८) ऊरु=अविरल (९) भग—पीपर पत्र के आकार। (१०) भग का मध्य

३—तीसरा खण्ड

पद्मावती जन्म वर्णन

चौपाई

चंपावति[1] जो रूप सँवारी। पदुमावति चाहै अवतारी॥
भइ चाहै अस कथा जा लोनी[2]। मेटि नजायलिखी जस होनी॥
सिंघल दीप भयो तब नाऊँ। जो अस दीप दिपा[3] तेहिँ ठाऊँ॥
प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सो पिता माथे मनि भई॥
पुनि सो जोति माता घट आई। तेहिँ ओदर[4] आदर बहुपाई॥
जस अंचल झीने महँ दिया। तस उजियार दिखावै हिया॥
जस अउधान[5] पूर होइ तासू। दिन दिन हियेँ होय परगासू॥

दो०—सोने मँदिर सँवारे, औ चन्दन सब लीप।
दिया जो मन सिव लोक महँ, उपना[6] सिंहलदीप॥५०॥

भाग—गुप्त। (११) पेड़ू—कूर्मपृष्ठवत्। (१२) नितंब—मांसल। (१३) नाभी—गंभीरऔर दाहिनी ओर की घूमी हुई। (१४) नाभी के ऊपर का भाग त्रिवलीयुक्त। (१५) स्तन—सम, गोल, घन और कठोर। (१६) पेट—मृदु और अलोम। (१७) ग्रीवा=शंखवत। (१८) ओंठ—लाल। (१९) दांत=कुन्दवत्। (२०) वाणी—मधुर। (२१) नासिका—सीधी ऊंची। (२२) नेत्र—कमलदलवत्। (२३) भौंह—वंक धनुषाकार। (२४) ललाट—अर्द्धचन्द्रवत्। (२५) कान—कोमल और सम। (२६) केश—नीले, चिकने और चमकीले। (२७) शीश—सुडौल। (२८) हथेली—लाल और शुभ रेखा युक्त। (२९) कलाई—कोमल और गोल। (३०) बाहु—सुढार। (३१) मणिबंध—नीचे को दबा हुआ। (३२) हस्तांगुली—पतली और सुडौल।

१ चम्पावति=रानी चंपावती में जो ऐसा रूप दिया गया था, उसका कारण यह था कि ब्रह्मा उसके गर्भ से पद्मावती का अवतार कराना चाहते थे। २ लोनी=सुन्दर, अच्छी। ३ दिपा प्रदीप्त हुआ, जला। ४ ओदर=उदर (पेट गर्भ)। ५ अउधान=अवधान, (गर्भ)। ६ उपना=उत्पन्न हुआ।

चौपाई

भे दस मास पूरि भइ .घरी। पदमावति कन्या अवतरी ॥
जानहु सुरिज किरन हुति काढ़ी। सूरज करा[१] घाटि वह बाढ़ी ॥
भा निसि महँ दिन कर परकासू। सब उजियार भयो कैलासू ॥
एते रूप मूरति परगटी। पून्यो ससि सों खीन ह्वै घटी ॥
घटतहिँ घटत अमावस भई। दिन दुइ लाज गाड़ि भुइँ गई ॥
पुनि जो उठी दुइज होइ नई[२]। निहकलंक ससि[३] विधिनिरमई ॥
पदुम गंध बेधा जग बासा। भँवर पतँग भँवहिँ चहुँ पासा ॥

दो०—एते रूप भइ कन्या, जेहि सरि पूज न कोइ।
धनि सो देस रुपवंता, जहां जनम अस होइ ॥५१॥

चौपाई

भइ छुठि राति छुठी सुख मानी। रहस कूद सों रैनि बिहानी[४] ॥
भा बिहान[५] पंडित सब आये। काढ़ि पुरान जनम अरथाये[६] ॥
उत्तिम घरी जनम भा तासू। चाँद उआ भुइं, दिपा[७] अकासू ॥
सूर[८] परस[९] सों भयो गुरीरा[१०]। किरनजामि उपना[११] नगहीरा ॥
कन्या रासि उदौ जस किया। पदमावती नाउँ जग दिया ॥
तेहि ते अधिक पदारथ[१२] करा[१३]। रतन जोग उपना निरमरा ॥
सिंहल दीप भयो अवतारू। जंबू दीप जाय जम बारू[१४] ॥

---

१ करा=कला। २ नई=टेढ़ी हो गई। ३ ससि='ससि' शब्द को जायसी स्त्रीलिंग मानता है। ४ बिहानी=व्यतीत हुई। ५ बिहान=सबेरा। ६ अरथाये=जन्म लग्न के अनुसार जातक का फल कहा। ७ दिपा=प्रकाशित हो गया। ८ सूर्य और पारस मणि से जब प्रेमयुक्त संयोग हुआ, तब सूर्य किरण अंकुर की तरह जमी और उससे हीरा नग पैदा हुआ। ९ परस=पारस पत्थर। १० गुरीरा=(गुरीला) गुड़ ऐसा मीठा प्रेम, संयोग। ११ उपना=उत्पन्न हुआ। १२ पदारथ=रत्न, जवाहिर। १३ करा=कला। १४ जम-बारू=जम का द्वार (यमपुरी)

दो०—रामा आये अजोध्या, लखन[1] बतीसौ संग।
रावन[2] रूप सब भूले, दीपक जैसे पतंग ॥५२॥

चौपाई

अहो[3] जनमपत्री जो लिखी। दई असीस फिरे जोतिषी ॥
पाँच बरिस महँ भइ सो बारी। दीन्ह पुरान पढ़ै बैसारी[4] ॥
भइ पदमावत पंडित गुनी। चहूँ खूँट के राजन सुनी ॥
सिंघल दीप राज घर वारी। महा सरूप दई अवतारी ॥
एक पदमिनि औ पंडित पढ़ी। दहुँ[5] केहि जोग दई अस गढ़ी ॥
जा कहँ लिखी लच्छि[6] घर होनी। सो असि पाउ पढ़ी औ लोनी॥
सात दीप के बर जे आवैं। फिरि फिरि जाहि न ऊतर पावैं ॥

दो०—राजा कहै गरब सों, हौं रे इन्द्र सिव लोक।
को सरि मों सों पावै, कासों करौं बरोक[7] ॥ ५ ॥

चौपाई

बारह बरिस माँह भइ रानी। राजैं सुना सँजोग सयानी ॥
सात खण्ड धौराहर तासू। सो पदमिनि कहँ दीन्ह निवासू ॥
औ दीन्ही सँग सखी सहेली। जे सँग करैं रहस[8] औ केली ॥
सबै नवलपिउ सँग न सोईं। कँवल पास जनु बिकसीं कोईं[9] ॥
सुवा एक पदमावति ठाऊँ। महा पँडित हीरामन नाऊँ ॥
दई दीन्ह पंखिहिँ अस जोती। नैन रतन मुख मानिक मोती ॥
कंचन बरन सुवा अति लोना। मानहु मिला सुहागहिँ सोना ॥

दो०—रहैं एक सङ्ग दोऊ, पढ़ैं सासतर[10] वेद।
ब्रह्मा[11] सीस डोलावै, सुनत लाग तस भेद ॥५४॥

---

१ लखन=लक्षण। २ रावन=राव राजा। ३ अही=(आसीत्) थी। ४ बैसारी=बैठाली। ५ दहु =धौं, न जाने। ६ लच्छि=लक्ष्मी। ७ बेरोक =बरेखी, विवाह सम्बन्ध। ८ रहस=एकांत के खेल। ९ कोईं= कुमुदिनी। १० सासतर=शास्त्र। ११ उनका वेद शास्त्र का मर्म युक्त पढ़ना सुनकर ब्रह्मा भी प्रशंसा सूचक मुद्रा से सिर हिलाते हैं।

चौपाई

भइ उतंत[1] पद्मावत बारी। धज[2] धौरी सब करैं सँवारी॥
जग बेधा तेहिँ अङ्ग सुवासा। भँबर आय लुबधे[3] चहुँ पासा॥
बेनी नाग मलयगिरि[4] पीठी। ससि माथे होइ दुइज[5] बईठी॥
नासिक कोर कँवल मुख सोहा। पदुमिनि रूप देखि जग मोहा॥
भौंहैं धनुष साधि सर फेरी। नैन कुरंगि[6] भूलि जनु हेरी॥
मानिक अधर दसन जनु हीरा। हिय हुलसैं कुच कनक जँभीरा॥
केहरि लंक गवन गज हारे। सुर नर देखि माथ भुँइँ धारे॥

दो०—जग कोउ दिष्टि न आवै, आछर[7] नहिन अकास।
जोगि जती सन्यासी, तप साधहिँ तेहिँ आस॥५५॥

चौपाई

पदुमावति भइ बैस सँजोगा[8]। कीन्हा चहै प्रेम रस भोगा॥
काम प्रबेस भयो तन आई। रतिपति हिये उदास जनाई॥
भा उतपात[9] काम के लागे। कहा हँकारि सुवा के आगे॥
सो पुनि कह सुनु राज कुँवारी। जो बिधि लिखा सकै को टारी।
आज्ञा देहु तो लेहुँ वियोगा। मेरवौं आनि तुम्हार सँयोगा[10]॥
पदुमावति सुनि कै सुख माना। जोग जानि के मेरौ सुजाना॥
तब हँसि कहा सुवा सज्ञानी। जगत हेरि नग मेरवहुँ आनी[11]॥

दो०—दुष्ट रहा कोउ सुनत सब, कहेसि राय सों जाय।
पदुमावति सँजोग भय, सुवहि मुकुति देउ राय॥५६॥

---

१ उतंत=(उत्+तंत्र) अधिकार व दवाव से बाहर (यौवनावस्था के कारण) २ धज=सफेद सजधज से सब तरह से बनी ठनी रहती थी। ३ लुबधे=मोहे, लुभाय रहें। ४ मलयगिरि=मलयागिरि चन्दन का वृक्ष। ५ दुइज=द्वितीय का चन्द्रमा। ६ कुरङ्गि=हिरनी। ७ आछर=अप्सरा। ८ बैस संयोग=पुरुष प्रसंग योग्य अवस्था वाली। ९ उतपात=उपद्रव। १० संयोगा=जोड़ा, वर। ११ मेरवहुँ=मिलाऊं।

चौपाई

राजैं सुना दिष्ट भइ आना[1]। बुधि जो दई सँग सुवा सयाना ॥
भया रजायसु मारहु सूवा। सूर न आव चाँद[2] जहँ ऊवा ॥
सत्र सुवा के नाऊ बारी। सुनि धाये जस धाव मँजारी[3] ॥
तब लगि रानी[4] सुवा छिपावा। जबलग आय मँजारिन पावा ॥
पिता के आयसु माथे मोरे। कहौ जाय बिनवै कर जोरे ॥
पंखि न कोऊ होइ सुजानू। जानहि भुगुति[5] कि जानु उड़ानू ॥
सुवा जो पढ़ै पढ़ाये बैना। तेहि कित बुधि जेहि हिये न नैना ॥
दो०—मानिक मोति दिखावहु, हिये न जान करेइ।
दारयों[6] दाख जानि कै, उभय ठोर[7] भरि लेइ ॥५७॥

चौपाई

वै तो फिरे उतरु अस पावा। बिनवा सुआ हिये डर खावा ॥
रानी तुम जुग जुग होइ आऊ[8]। हौं रे दास बिनवौं गहि पाऊ ॥
मोतिहिं जो मलीन भइ कला। पुनि सो पानि कहां निरमला ॥
ठाकुर[9] अन्त[10] चहै जेहि मारा। तेहि सेवक कहँ कहाँ उबारा ॥
जेहि घर काल मँजारी नाचा। पखीं नाउँ जीव नहिँ बाँचा ॥
मैं तुम राज बहुत सुख देखा। जो पूँछहुँ दै जाय न लेखा ॥
जो इच्छा मन कीन्ह सो जेँवा[11]। यह पछिताव चल्यौं बिन सेँवा ॥
दो०—मारै सोई निसोगा[12], डरै न अपने दोस।
केला[13] केलि करै का, जो भइ बेरि[14] परोस ॥५८॥

---

१ दिष्टि भइ आना=और ही नज़र होगई अर्थात् क्रोध हो आया। २ सूर·····ऊवा=जहां कलंकी जीव रहते हैं वहां विवेकी ज्ञानी आते ही नहीं। ३ मँजारी=बिल्ली। ४ रानी=पद्मावती ५ भुगुति=भोजन करना। ६ दार्यों=(दाड़िम) अनार (यहां अनार के दाने)। ७ ठोर=चोंच। ८ आऊ=आयु (जीवन)। ९ ठाकुर=मालिक। १० अंत=निदान, निश्चय। ११ जेंवा=खाया, भोजन किया। १२ निसोगा =बेगम, शोक रहित। १३ केला=कदली वृक्ष। १४ बेरि=बेरी का पेड़।

चौपाई

रानी उतरु दीन्ह कै मया[1]। जो जिउ जाय रहै किमि कया[2]॥
हीरामन तुइँ प्रान परेवा। धोख न लाग करत तुव सेवा॥
तोहिसुवनाबिछुरन का आखौं[3]। पिंजर हियेघालितोहि राखौं॥
हौं मानुस तूं पंखि पियारा। धरम पिरीति तहाँ को मारा॥
का पिरीतितनु[4]माँह बिलाई[5]। सो पिरीतिजिउसाथ जो जाई॥
पिरिति भार लै हिये न सोचू। ओहै पंथ भल होइ कि पोचू[6]॥
पिरिति पहार भार जो कांधा[7]। तब कित छूटलाय जिउबाँधा॥
दो०—सुवा न रहै खुरुक[8] जिय, अब हीँ काल सो आव।
सत्रु अहै जेहि करिया[9], कबहुँ सो बोरै नाव॥५६॥

४—चौथा खंड

मानसरोवर जल बिहार वर्णन

चौपाई

एक दिवस पून्यो तिथि आई। मानसरोवर चलीं अन्हाई॥
पद्मावत सब सखीं बोलाईं। जनु फुलवारि सबै चलि आईं॥
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेली। कोइ सुकेत[10] करना[11] रस बेली॥
कोइ सु गुलाब सुदरसनराती। कोइसुबकाउरि[12] बकुचन[13] भाँती॥
कोइ सु मौलसिरी पुहपावती। कोइ जाही जूही सेवती॥
कोई सोनजरद कोइ केसर। कोइ सिंगार हार नागेसर॥

---

१ मया=कृपा। २ कया=काया, तन। ३ आखौं=(अख्यान) कहूँ। ४ तनुमांह=तनक सी बात पर, तनक भय से। ५ बिलाई=बिलीन हो जायगी। ६ पोच=बुरा। ७ कांधना=कँधे पर लेना। ८ खुरुक=खटका, भय। ९ करिया=कर्णधार, केवट। १० केत=केतकी। ११ करना=नीबू की सुगंध वाला एक फूल। १२ बकाउरि=बकावली। १३ बकुचन भांती=बहुत प्रकार की।

कोइ कूजा[1] सतबरग[2] चँबेली। कोई कदम सुरस रस बेली॥
दो०—वलीं सबै मालति सँग, फूलीं कँवल कुमोद।
बेधि रहे गन गंधरब[3], बास परिमला मोद॥६०॥

चौपाई

खेलत मानसरोवर गईं। जाय पारि[4] पर ठाढ़ीं भईं॥
देखि सरोवर रहस[5] केली। पदुमावति सों कहैं सहेली॥
ए रानी मन देखु बिचारी। यहि नैहर[6] रहना दिन चारी॥
जौ लहि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलन आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम कित यह सरवर पाली॥
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि के खेलतएकसाथा॥
सासु ननँद बोलन जिउ लेई। दारुन[7] ससुर न आवन देई॥
दो०—पिउ पियार सब ऊपर, सोउ करै दहुँ काह।
दहुँ[8] सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह॥६१॥

चौपाई

मिलीं रहसि सब चढ़ो हिँडोरे। खेलि लेहु सखि बारे भोरे॥
पुनि सासुर लै राखीं तहाँ। नैहर चाह[9] न पाउब जहाँ॥
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। पुनि झूलन दीहैं नहिँ साईं॥
कित यह धूप कहाँ यह छाँहाँ। रहब सखिन बिन मंदिरमाँहाँ॥
गुन पुछिहैं औ लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू[10]॥
सासु ननँद की भौंहन ओरी। रहब सकोचि दोऊ कर जोरी॥
कित यह रहस जो आउबकरना। ससुरेउ अंत जनम दुखभरना॥

---

१ कूजा=गुलाब की भांति का एक फूल। २ सतवर्ग=गेंदा। ३ गन गंधरब=राजा गंधर्वसेन के सिपाही जो रक्षार्थ साथ में थे, अथवा गंधर्वों के गण। ४ पारि (पालि)=तालाब के गिर्द का भीटा (बांध)। ५ रहसना=खेलना। ६ नैहर=मातृगृह (मायका)। ७ दारुन=कठिन। ८ दहुँ=धौं, न जाने। ९ चाह=खबर, सँदेसा। १० मोख=मोक्ष, छुटकारा।

दो०—कित नैहर पुनि आउब, कित ससुरे यह केलि।
आपु आपु कहँ होइबे, परब पंखि जस डेलि[1] ॥६२॥

चौपाई

सरवर तीर जो पदुमिनी आई। खोंपा[2] खोलि केस बिखराई॥
ससिमुख अंग मलयगिरि बासा। नागन झाँपि लीन्ह चहुँपासा॥
उनए[3] मेघ परी जग छाँहा। चाँदै झाँपि लीन्ह जनु राहा॥
छिपि गई दिनहिँ भानु कै दसा। लै निसि नखत चाँद परगसा[4]॥
भूलि चकोर दिष्टि मुख लावा। मेघ घटा मुहँ चाँद दिखावा॥
दसन दामिनी कोकिल भाखी। भौंहैं धनुष गगन लै राखी॥
नैन खँजन दुइ केलि करेहीं। कुच नारँग मधुकर[5] रस लेहीं॥

दो०—सरवर रूप विमोहा, हिये हिलोर करेइ।
पाँव छुवैं मकु[6] पाँऊँ, यहि मिस[7] लहरै लेइ ॥६३॥

चौपाई

धरीं तीर सब कँचुकि सारीं। सरवर महँ पैठी सब बारीं॥
पानी तीर जानु सब बेलैं। हुलसैं करैं काम की केलैं॥
कुटिल केस बिसहर[8] बिस भरे। लहरा लेहिँ कँवल मुख धरे॥
नवल बसंत सँवारी करी[9]। होइ परगट चाहैं रस भरी॥
उठी कोंप ज्यों दारयों दाखा। भइँ उतपन्न प्रेम की साखा॥
सरवर नहिँ समाय संसारा। चाँद नहाय पैठि लिय तारा॥
धनि सु नीर ससि तरईं उईं। अब कित दिषि कँवलऔ कुईं[10]॥

दो०—चकई बिछुरि पुकारई, कहाँ मिलौं हो नाह।
एक चाँद निसि सरग पर, दिन दूसर जल माँह॥६४॥

---

१ डेलि=डेलैया (डलिया, झांपी) २ खोंपा=जूड़ा। ३ उनए=घुमड़कर झुक आये। ४ परगसा=प्रकाशित हुआ। ५ मधुकर=भौंरा (कुचाग्र की श्यामता)। ६ मकु=शायद। ७ मिस=बहाना। ८ बिसहर=(विषधर) सर्प। ९ करी=कली। १० कुंई=कुमुदिनी।

चौपाई

लागीं केलि करैं गँझ नीरा। हँस लजाय बैठ तेहि तीरा॥
*पदुमावति कौतुक कहँ राखी। तुम ससि होहु तराइन साखी॥
बाद[1] मेलि कै खेल पसारा। हार[2] देइ जो खेलत हारा॥
सँवरिहिँ साँवरि गोरहिँ गोरी। आपनि आपनि लीन्ह सो जोरी॥
बूझि खेल खेलहु एक साथा। हार न होय पराये हाथा॥
आजुहि खेल बहुरि कित होई। खेल गये पुनि खेल न कोई॥
धनि सो खेल खेलहि रस प्रेमा। रौताई[3] औ कूसल खेमा[4]॥

दो०—मुहमद बाजी प्रेम की, ज्यों चाहै त्यों खेल।
तिल फूलन कर सँग ज्यों, होय फलायल[5] तेल॥६५॥

चौपाई

सखी एक तेइ खेल न जाना। चित अचेत भइ हार गँवाना॥
कँवल डार[6] गहि भइ बिकरारा[7]। का सो पुकारै आपनि हारा[8]॥
कत खेलन आइउँ इन्ह साथा। हार गँवाय चलिउँ लै हाथा॥
घर पैठत पुँछिहै सब हारू। कौन उतर पाउब पैसारू[9]॥
नैन सीप आँसुन तस भरे। मानो मोति करहिँ कर[10] ढरे॥

---

*पदुमावति=पदमावती के खेल देख कर हार जीत बताने वाली बनाया और कहा कि हे शशि (पदमावती) तुम तरैयों (सब सहेलियों) की साक्षी बनो (कि कौन हारी, कौन जीती)। १ बाद मेलिकै=बाजी लगा कर। २ हार=गले की माला, हमेल। ३ रौताई=ठकुराई। ४ खेमा=तात्पर्य यह है कि ठकुराई करना और कुशल क्षेम से रहना असंभव बात है, परन्तु प्रेम के खेल में ये दोनों निभ जाती हैं अर्थात् ठकुराई भी करो और कुशल क्षेम से भी रहो। मिलाओ—"दानि कहाउब अरु कृपिनाई। होय कि खेम कुसल रौताई"। (तुलसी दास) ५ फुलायल=फूल की बास के समान वाली बास का। ६ डार=शाखा। ७ बिकरारा=बेकरार, अति दुखी। ८ हारा=हार, गफलत। ९ पैसार=पैठारी, घर के भीतर जाना। १० करहिं कर=क्रमक्रम से, धीरे धीरे।

सखिन कहा भोरी कोकिला । कौन पानि जेहि पवन न मिला ॥
हार गँवाय सो ऐसहिँ रोवा । हेरि हेराय लेव जो खोवा ॥

दो०—लगी सबै मिलि हेरन, बूड़ि बूड़ि एक साथ ।
कोइ उठै लै मोती, कोऊ घोंघी हाथ ॥ ६६ ॥

चौपाई

कहा मानसर चाह[1] सो पाई । पारस रूप इहाँ लगि आई ॥
भा निरमल तेहि पायन परसे । पावा रूप रूप के दरसे ॥
मलय समीर बास तन आई । भा सीतल गइ तपन बुझाई ॥
न जनौं कौन पुन्य लै आवा । पुन्य दसा भइ पाप गँवावा ॥
ततखन[2] हार बेगि उतराना । पावा सखिन चँद[3] बिहँसाना ॥
बिगसे कुमुद देखि ससिरेखा[4] । भइ तहँ ओप जहाँ जो देखा ॥
पावा रूप रूप जस चहे । ससि-मुख जनु दरपन ह्वै रहे ॥

दो०—नैन जो देखे कँवल भए, निरमल नीर सरीर ।
हँसत जो देखी हँस भए, दसन जोतिनग हीर[5] ॥६७॥

---

१ चाह=इच्छा । २ ततखन=तत्क्षण, फौरन, उसी समय । ३ चंद=यहां पदमावती से तात्पर्य है । ४ ससिरेखा=पदमावती की हँसी । ५ हीर=हीरा ।

५—पाँचवा खँड

सुवा-उड़ान वर्णन

चौपाई

पदुमावति तहँ खेलु धमारी[1] । सुवा मँदिर महँ परी मँजारी ॥
*चेरी कतहुँ जाय उरझानी । तहाँ सो जाय भोग रस मानी॥
लीन्हेसि रानि क फूल तँबोला । बोला सुवा तहाँ एक बोला ॥
तेहिकर पुहुप छुवसि री चेरी । जोहनहार[2] अहै जेहि केरी ॥
पान फूल तेहि सौंप न कोई । जो तो लोभी हिय को होई ॥
पान फूल लीजिय निज पाहीं[3] । ओ नहिँ दीजै हाथ पराहीं[4] ॥
†का जानै दहुँ हियकेहि मोखा । कौनहु पान फूल का धोखा ॥
दो०—सुवा कहै री चेरी, बौरी भई अकाज[5] ।
लिहे फूल रानी के, तोहि मन आव न लाज ॥ ६८ ॥

चौपाई

चेरी औ दूमन[6] बैरागा[7] । सुवा क बोल जानु विष लागा॥
बाउर अँध प्रीति कर लागू[8] । सौंहँ धसै नहिँ सूझै आगू ॥

---

१ धमारि=वह खेल जिसमें बहुत सा उछलकूद, हो हुल्लड़ करना पड़े ।

* एक चेरी की किसी जार से गुप्त प्रीति थी । पदमावती को मान-सरोवर पर गई हुई जानकर उस जार के साथ भोग विलास में रत हुई । २ जोहनहार=मुहँ जोहने वाली अर्थात चेरी । ३ निज पाहीं=अपने लिये । ४ पराहीं=पराये ।

† तू क्या जानती है कि उसका हृदय किस तरह का है । शायद पान फूल कोई धोखा दे । ५ अकाज=व्यर्थ । ६ दूमन=द्विविधा में पड़ा हुआ मन । ७ काम काज से उदासीन । ८ प्रीति कर लागू=जिसका मन किसी की प्रीत में फँसा हो ।

सुनतै हिये मानि अन[1] भाऊ। [2]यहि के घाल गया घर राऊ॥
भा निसि भोर कवन[3] मुख खोला। न तमचूर[4] रहे अनबोला॥
सुवा जो रहा पिंजर सुख भारी। धरेसि आय जस धरै मँजारी॥
चूरेसि पंख मरोरेसि गीवा[5]। यहि बिधि, बिधनै [6]राखा जीवा॥
सुवा पखी पै बुधि है ओछी। लीन्हेसि भाँड[7] घालि कै कोछी॥
दो०—सीस धुनै तस सुवटा[8] भा भोजन सुख ठाँउ।
रहौं एक तरवर चढ़ि, चरिहौं सब अँबराउ॥ ६६॥

चौपाई

कछु न बसाय[9] भूलि गा पढ़ा। बरहिँ[10] पाँव जो जोधा चढ़ा॥
सत्रुहि कोउ पाव जो बाँधा। छाँड़ि निरप[11]केइ कीन्ह न बाधा॥
बैरी दाउँ पाव जो कोई। लागा घात रहै पुनि सोई॥
जो रे सयान होय तौ बाँचै। होय अजान बिहँसि कै नाचै॥
अगमन[12] देखि करै जो काजा। ढरै वृथा अपने मन लाजा॥
बुधि चाँटो[13] परबत ले काँधा। बुधि का हीन हस्ति गा बाँधा॥
अब बुधि करो तो बाँचौ सुवा। जियत[14] जो मरै न मारे मुवा॥
दो०—मरै सो सोई निसोगा, डरै जो काज अकाज।
हरष न विषमौ[15] जानै, दुहूँ[16] निवारै लाज॥ ७०॥

---

१ अन=अन्य, बुरा। २ यहिके......राऊ=इसके कारण राजा का घर नष्ट हो रहा है। ३ कवन=कौवों ने। ४ तमचूर=मुर्गा। ५ गीवा=ग्रीवा। ६ विधना=ईश्वर ही ने। ७ भांड घालि=सुग्गे को एक हांडी में डालकर कोंछे में ले लिया। ८ सुवटा=सुग्गा। ९ बसाय=वश चलना। १० बरहिं=(सुग्गा का कुछ बस नहीं चलता) जैसे उस योद्धा का किया कुछ भी नहीं हो सकता जिसके पैर चढ़ाई करते समय ही जलने लगें। ११ निरप=नृप (राजा)। १२ अगमन=भविष्य। १३ चांटी=चींटी। १४ जियत·····मुवा=जो जीते ही मर जाता है। (अपने को तुच्छ समझता है व अहंकार छोड़ देता है) वह मारने से भी नहीं मरता। १५ बिसमौ=(विस्मय) संदेह। १६ दुहूं=दोनों दशाओं में अर्थात् हर्ष में तथा शोक में।

चौपाई

भाँड़ा आय खंड जहँ कुवा। कहेसि मारि मेलौं अब सुवा॥
देखत पाँइ सो अगमन[1] तानी। कुँआ मेलि कै बहुत रिसानी॥
पँखी न डोला एकौ नैना। परा कूप महँ कह तब बैना॥
कहेसि तोहि सँवरौं हौं एका। जिन महि मगन अंतरिख[2] टेका॥
अगिन माँझ राखा जिन सँउरा। कुँवा परे तैं रोवै बउरा॥
धरी जलंधर जोगी खाचा[3]। बिकरम स्वर्गहु ते गुरु बाचा॥
ओवहु नहीँ डयन[4] ना पाँखा। रहौं कूप महँ राकस[5] राखा॥

दो—जो प्रभु राखा चाहै, टूट न एकौ रूं[6]।
नाहीं तो का मो जुगुति, जो भाऊँ कोहूँ[7]॥ ७१॥

चौपाई

जो निसचय सँवरै बिधि[8] नाऊँ। तेहि कहँ टेक दुहूँ जग ठाऊँ॥
का[9] देखै तरवर कुँव माँहाँ। पिपर तीर औ सीतल छाँहा॥
परतै कहेसि डारतें सुवना[10]। भा कैलास बिसरि गा कुँवना[11]॥
फरी सो तरवर देखी साखा। भुगुति न मेटै जौलहि राखा॥
बिसरा दुख पङ्खन कर चूरा। गा सो सोग भोग भा पूरा॥
कुछु न बसाय भूलि गा पढ़ा। नैनन माँझ बहुरि दिन[12] चढ़ा॥
पाहन महँ न पतंग बिसारा। कस न कूदि मुँहँ प्रबिसै चारा॥

दो०—घरी एक के सुख महँ, बिसर गई सब झंख[13]।
फिरि गई दिष्टि सुवा कै, लखि कै आपन पङ्ख॥७२॥

---

१ अगमन=पहले ही से। २ अंतरिख=अंतरिक्ष। ३.........। ४ डयन=डैना, बाजू। ५ राकस=(सं० रक्षस्) रक्षक, रखवारा। ६ रूं=रोम। ७ कोहूं=किसी को। ८ बिधि=ईश्वर। ९ का=क्या देखता है कि कुंवां में एक पेड़ है। १० सुवना=सुवा। ११ कुंवना=कुंवा। १२ दिन चढ़ा=देख पड़ा कि मेरा ज़माना फिरा है। (दुःख के दिन गये और सुख का समय आया)। १३ झंख=दुख, मुसीबत।

चौपाई

कहेसि चलौं जौलहि तन पाँखा। जिउलैउड़ाताकि बनढाँखा[1]॥
जाइ परा बन खण्ड जिउ लीन्हे। मिले पङ्खि बहु आदर कीन्हे॥
आनि धरे आगे फल साखा। भुगुति न भेटै जौलहि राखा॥
पावा भुगुति सुखी मन भयऊ। अहा[2] जोदुःखबिसरिसबगयऊ॥
अइ गोसाइँ तू ऐस बिधाता[3]। जाँवत जिउ सबका भख[4]दाता॥
पाहन महँ न पतंग बिसारा। जेइँ तोहिँ सँवरा तेहि कहँ चारा॥

दो०—तौलहि सोग[5] बिछोह कर, भोजन परा न पेट।
पुनि बिसरा भा सँवरना, जनु सपने भइ भेंट॥७३॥

चौपाई

पद्मावति पहँ आइ भँटारी। कहेसि मँदिर महँ परी मँजारी॥
सुवा जो उतरु देत हा[6] पूँछा। उड़िगा पिँजर न बोलै छूँछा॥
रानी सुना सूखि जिउ गयऊ। जनु निसिपरी अस्त दिनभयऊ॥
गहने गही चाँद की करा[7]। आँसु गगन जस नखतन भरा॥
टूटि पालि[8] सरवर बहि लागे। कँवल बूड़ मधुकर उड़ि भागे॥
यहि बिधि आँसु नखत ह्वै चुए। गगन छाँड़ि सरवर भरिउए॥
झरहिँ चुवहिँ मोतिन की माला। अब सकेत[9]बाँधा चहुँपाला॥

दो०—उड़िगा सुवटा[10] कहँ बसा, खोजहु सखि सो बासु।
दुहुँ है धरती की सरग, पवन न आवै तासु॥७४॥

चौपाई

चहूँ पास समुझावैं सखी। कहाँ सो पाय सकैं अब पंखी॥
जौलहि पिँजरा अहा[11] परेवा। अहा बंदि कीन्हेसि नितसेवा॥

---

१ ढांखा=पलास। २ अहा=था। ३ विधाता=विधान करने वाला, व्यवस्था करने वाला। ४ भख=भोजन।
५ सोग=शोक। ६ हा=था। ७ करा=कला। ८ पालि=तालाब का बांध। ९ सकेत=तंग स्थान। १० सुवटा=सुग्गा। ११ अहा=था।

तेहि बँद ते जो छूटै पावा। पुनिफिरि बंदि होय कत आवा॥
वैं उड़ान-फर तहियैं[1] खाये। जब भा पंखि पाँसु तन पाये॥
पिंजर जेहि क सौंपि तेहि गयऊ। जो जाकर सो ताकरभयऊ॥
दस बाटैं[2] जेहि पिंजर माँहा। कैसे बाँच मँजारी पाँहा॥
यहि धरती अस केत[3] न लीले। पेटगाढ़[4] तस बहुरि न ढीले॥

दो०—जहाँ न राति न दिवस है, जहाँ न पान न खान।
तेहि बन होय सुवा बसा, कौन मिलावै आन॥७५॥

चौपाई

सुवैं तहाँ दिन दस कल काटी[5]। आय बियाध ढुका[6] लै टाटी॥
पैग पैग भुइँ चाँपत आवा। पंखिन दीख सबहिँ डर खावा॥
देखहु कछु अचरज अनभला। तरवर एक आवत है चला॥
यहि बन रहत गई हम आऊ[7]। तरवर चलत न देखा काऊ॥
आजु जो तरवर चल भल नाहीं। आवहु यह बन छाँड़िपराहीँ॥
वै तो उड़े आन बन ताका। पण्डित सुवा भूलि मन थाका॥
साखा देखि राज जनु पावा। रहा निचिंत चला वह आवा॥

दो०—पाँच बान कर खोँचा[8], लासा भरे सो पाँच।
पाँख भरे तन उरझा, कित मारे बिन बाँच॥७६॥

चौपाई

बँद भा सुवा करत सुख केली। चूरि पाँख धरि मेलिसि डेलीँ[9]॥
तहवाँ पंखि बहुत खर भरहीँ। आप आप महँ रोदन करहीं॥
विष दाना कित देइ अँगूरा। जेहि भा मरन डहन[10] धरिचूरा॥
जौ न होति चारा कै आसा। कित चिरहार[11] ढुकत[12] लैलासा॥

---

१ तहियैं=तभी, उसी समय। २ बाटैं=रास्ता। ३ केत=कितने। ४ गाढ़=तंग। ५ कलकाटी=सुख से समय व्यतीत किया। ६ ढुका=ताक लगाई। ७ आऊ=आयु, उमर। ८ खोँचा=कांपों का गुच्छा। ९ डेली=झांपी। १० डहन=डैना, बाजू। ११ चिरहार=पक्षी पकड़ने वाला, बहेलिया। १२ ढुकना=ताक लगाना।

यहि विष चारैं सब बुधि ठगी। औ भा काल हाथ लै लगी[1] ॥
यहि झूठी काया मन भूला। चूरै हाँख जैस तन फूला ॥
यह मन कठिन मरै नहिँ मारा। जार[2] न देखु देखु पै चारा ॥
दो०—हम तौ बुद्धि गँवाई, विष चारा अस खाय।
सुवटा[3] तूँ परिडत, हता तूँ कित फाँदा आय ॥७७॥

चौपाई

सुवैं कहा हमहूँ अस भूले। टूट हिँडोल गरब जेहिँ भूले ॥
केरा के बन लीन्ह बसेरा। परा साथ तहँ बेरी केरा ॥
सुखकुरुवार[4] फुरेहरो[5] खाना। विषभा जबहिँ वियाधतुलाना[6] ॥
काहे क भोग बिरिछ अस फरा। आडलाय पंखिन कहँ धरा ॥
होइ निचिँत तेहि आड़ा। तब जाना खोंचा हिय गाड़ा ॥
सुखी निचिंत जोरि धन करना[7]। यह न चिंत[8] आगे है मरना ॥
भूले हमहु गरब तेहि माँहाँ। सो बिसरा[9] पावा जेहि पाँहाँ ॥
दो०—चरत न खुरुक[10] कीन्ह त I, जब रे चरा सुख सोय।
अब जो फाँद परा गिव[11], तब रोये का होय ॥ ७८ ॥

चौपाई

सुनि कै उतर आँसु सब पोंछे। कौन[12] पंखि बाँधी बुधि ओछे ॥
पँखिन जो बुधि होइ उज्यारी। पढ़ा सुवा कत धरै मंजारी ॥

---

१ लगी=लग्गी, चिड़ोमारों का लंबा बांस जिसके सिरे पर लासा लगा खोंचा बांधा जाता है। २ जार=जाल। ३ सुवटा=सुवा। ४ कुरुवार =पक्षियों का आनंद में आकर पंख फड़-फड़ाना। ५ फुरेहरी खाना= आनंद से रोम फुलाना (पक्षियों का)। ६ तुलाना=निकट आया। ७ करना (करण)=सामग्री सामान। ८ चिंत=चिंता। ९ सो बिसरा... पांहां=उसी ईश्वर को भुला दिया जिससे सब सुख सामग्री पाई थी। १० खुरुक=खटका। ११ गिव=ग्रीवा, गला। १२ कौन...ओंछे=पक्षियों में ओछी बुद्धि किसने बांध दी है? अर्थात् पक्षियों को ओछी बुद्धि किसने दी है।

कत तीतर बन जीभ उघेला[१]। सो कत हँकारि फाँद गिव मेला॥
ता दिन ब्याध भयो जिउ लेवा। उठे पाँख भा नाम परेवा॥
भइ बियाधि तिसना सँग खाधू[२]। सूझै भुगुति न सूझ बियाधू॥
हमहिँ लोभ वैं मेला चारा। हमहिँ गरब वह चाहै मारा॥
हम निचिंत वह आव छिपाना। कौन बियाधहिँ दोष अपाना[३]॥
दो०—सो औगुन कत कीजै, जिउ दीजै जेहि काज।
अब कहना कुछ नाहीं, मष्ट[४] भली पँखिराज॥७६॥

६—छठा खंड

रतनसेन-जनम वर्णन

चौपाई

चित्रसेन चितउर गढ़ राजा। कै गढ़ कोट चित्र सम साजा॥
तेहि घर रतनसेन उजियारा। धनि जननी जनमा अस बारा[५]॥
पंडित गुनि सामुद्रिक[६] देखा। दीख रूप औ लखन[७] बिसेखा॥
रतन सेन यह नग[८] अवतरा। रतन जोति मनि माथे बरा॥
पदुम[९] पदारथ लिखी सोजोरी। चाँदसुरिज जसहोय अँजोरी[१०]॥

---

१ उघेला=खोली। २ खाधू=खाद्य पदार्थ। ३ अपाना=अपनाही। ४ मष्ट=मौन्य, खामोशी। ५ बारा=बालक। ६ सामुद्रिक=अंग लक्षणों से शुभाशुभ कहने का शास्त्र। ७ लखन=लक्षण। ८ नग=कुल में रत्न के समान, सर्व प्रधान, सर्वोत्तम। ९ पदुम=हीरा। पदारथ=रत्न। (अर्थात पदुमावती और रतन सेन की जोड़ी लिखी है)। १० अँजोरी=उजियारा, चांदनी।

जस मालतिगुन[1] भँवरबियोगी । तसओहि लागिचलैहोइजोगी॥
सिँघल दीप जाय ओहि पावा । सिद्ध[2] होय चितउर लै आवा॥

दो०—भोज भाग जस मानै, विकरम साका[3] कीन्ह ।
परखिसो रतन पारखी,सबै लखन लिखि दीन्ह ॥८०॥

७—सातवाँ खंड

बनजारा सिंहलगमन वर्णन

चौपाई

चितउर गढ़ का एक बनजारा[4] । सिंघल दीप चला बैपारा ॥
बाह्मन एक हुत निपट[5] भिखारी । सो पुनि चला चलत बैपारी॥
रिनु काहू कर लीन्हेसि काढ़ी । मकु[6] तहँ गये होय कछु बाढ़ी[7]॥
मारग कठिन बहुत दुख भये । नाँघि समुन्द्र दीप ओहि गये ॥
दीख हाट कछु सूझ न ओरा । सबै बहुत कुछ दीख न थोरा ॥
पै सुठि[8] ऊँच बनिज[9] तहँ केरा । धनो पाव निधनी मुख हेरा ॥
लाख करोरिन वस्तु बिकाई । सहसन केरि न कोउ ओनाई[10] ॥

दो०—सबही कीन्ह बिसाहना[11], औ घर कीन्ह बहोर[12] ।
बाह्मन तहाँ लेइ का, गाँठ साँठ[13] सुठि थोर ॥ ८१ ॥

---

१ गुन=लिये, वास्ते । २ सिद्ध=योगी । ३ साका=नाम का स्मारक । ४ बनजारा=बैपारी, सौदागर । ५ निपट=अत्यन्त ६ मकु=शायद, कदाचित । ७ बाढ़ी=लाभ । ८ सुठि=बहुत । ९ बनिज=लेन देन, खरीद फरोख्त । १० ओनाना=बात सुनना । ११ बिसाहना=खरीद । १२ बहोर =लौट, वापसी । १३ सांठ=धन, पूंजी ।

चौपाई

झुरै ठाढ़ काहे क हौँ आवा। बनिज[1] न मिला रहा पछुतावा॥
लाभ जानि आयों यहि हाटा। मूर गँवाय चल्यों तेहि बाटा॥
का मैं मरब सिखावन[2] सिखी। आयौं मरैं मीचु हुति लिखी॥
अपने चलत सो कीन्ह कुबानी[3]। लाभ न दीख मूर भई हानी॥
का मैं बवा जनम ओहि भूँजी। खोय चल्यौँ घरहू कै पूँजी॥
घर कैसे पैठब मैं छूँछे। कौन उतर देबे तिन्ह पूँछे॥
जेहि व्यवहरिया[4] कर व्यवहारू। का लै देव जो छेंकै बारू[5]॥

दो०--साथि चला सत[6] बिचला, भये बिच समुँद पहार।
आस निरासा हौं फिरौं, तू बिधि[7] देइ अधार[8] ॥८२॥

चौपाई

तबहि बिधाय सुवा लै आवा। कँचन बरन अनूप सोहावा॥
बेंचै लाग हाट लै ओही। मोल[9] रतन मानिक जेहि होही॥
सुवहिँ[10] कोपूँछ पंखि मन डारे। चलन देख आछै मन मारे॥
बाह्मन आय सुवा सों पूँछा। दहुँ गुनवंत कि निरगुन पूँछा॥
कहु परबते[11] जोगुन तोहिँ पाँहाँ। गुनन छिपाइय हिरदेमाँहाँ॥
हम तुम जाति बराम्हन दोऊ। जातिहि जाति पूँछ सब कोऊ॥
पंडित हहु तो सुनाबहु बेदू। बिन पूँछे पाइय नहि भेंदू॥

---

१ बनिज=सौदा। २ सिखावन=शिक्षा। ३ कुबानी=(कु × बान्य), बान्यकर्म, बणिक कर्म जो ब्राह्मण का वर्ज्य है। ४ व्यवहारिया=धनी, ऋण दाता, महाजन। ५ बारू=द्वार। ६ सत=प्रतिज्ञा (ऋण चुकाने का वादा)। ७ बिधि=परमेश्वर। ८ अधार=आश्रय, टेक। ९ मोल= जिस बजार में रत्नादि बिकते थे। १० सुवहि=इस बाज़ार में मुझ जैसे तुच्छ पक्षी सुवा को कौन पूँछैगा, यह देख कर उदास होकर, अपने चलने का मार्ग देखने लगा कि देखें अब कहां जाना पड़े (किसके हाथ बेंचा जाऊं) अपने मन का मारे (सब्र किये हुए) बैठा है। ११ परबते= पर्वती सुग्गा।

दो०—हौं पंडित औ बाम्हन, कहु गुन आपन सोय।
पढ़े के आगे जो पढ़ै, दून लाभ तेहि होय ॥८३॥

चौपाई

तब गुन मोहि अहा[१] हो देवा। जब[२] पंखिन महँ हता परेवा॥
अब गुन कौन जो बँद जजमाना[३]। घालि मँजूसा[४] बेचै आना॥
पंडित होय सो हाट न चढ़ा। चाहौं बिकान भूलि गा पढ़ा॥
दुइ मारग देखौं यहि हाटा। दई चलावै दहुँ केहि बाटा॥
रोवत रकत भयो मुख राता। तन भा पियर कहौं का बाता॥
राता[५] स्याम कंठ दुइ गीवा। तिन्ह दुइ फाँद डरौं सुठि जीवा॥
अब[६] हौ कंठ फाँद दुइ चीन्हा। दहुँ गिव फाँद चाहका कीन्हा॥

दो०—पढ़ि गुनि देखा बहुत मैं, है आगे डरु सोय।
धुँध जगत सब जानि कै, भूलि रहा बुधि खोय ॥८४॥

चौपाई

सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू[७]। करु पँखी पर मया[८] न मारू॥
कत रे निठुर जिउ बधसि परावा। हत्या केरन तेहि डरु आवा॥
*कहेसि पँखी तैं व्याध मनावा[९]। निठुर सोई जोपर[१०]मसु खावा॥

---

१ अहा=था। २ जब=जब मैं पक्षियों के साथ था और स्वतंत्रता से उड़ता फिरता था। ३ जजमान=यज्ञ करने वाला, यहाँ व्याधा। ४ घालि मँजूसा=झांपी में डाल कर। ५ राता=लाल और काला जो दो कंठे मेरी गर्दन में पड़े हुए हैं, इन्हीं दोनों फंदों से मैं अपने जी में बहुत डरता हूं। ६ अब=मैंने इन कंठे रूपी दो फंदों को पहचाना कि यही मेरे दुःख का कारण हैं, अब देखूं कि ये फंदे और क्या करना चाहते हैं। ७ चिरिहारू=चिड़ीमार। ८ मया=दया। ९ मनावा=मनई, मनुष्य। *पंखी (सुवा) ने कहा कि हे व्याध तू मनुष्य है, (समझ ले, ब्राह्मण सत्य कहता है कि)। १० परमसु=पराया मांस।

*आवहिँ रोय जाहिँ कै रोना। तबहुँ न तजैं भोग सुख सोना॥
औ जानहिँ तन होइ है नासू। पोसैं माँस पराये माँसू॥
जो न होत अस पर मस खाधू। कत पँखिन कहँ धरत बियाधू॥
जो बियाध पँखिन नित धरई। सो बेंचत मन लोभ न करई" ॥

दो०—बाम्हन सुवा बिसाहा, सुनि मत बेद गिरंथ।
मिला आय साथिन सँग, भा चितउरके पंथ ॥ ८५ ॥

चौपाई

तौ लहि चित्रसेन सिव साजा[1]। रतनसेन चितउर भा राजा॥
आय बात तेहिँ आगे चली। राजा बनिज[2] आए सिँघली॥
हैं गजमोति भरो बहु सीपी। और बस्तु बहु सिँघलदीपी॥
बाम्हन एकु सुवा लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा॥
राता स्याम कँठ दुइ काँठा। राते दहन सिखा सब पाठा॥
औ दुइ नैन सुहावन राता। राती ठोर[3] अमीरस बाता॥
मस्तक टीका काँध जनेऊ। कबि[4] बियास पंडित सहदेऊ॥

दो०—बोल अरथ सों बोलै, सुनत सीस पै डोल।
राज मँदिर महँ चाहिय, असवह सुवा अमोल ॥८६॥

चौपाई

भयो रजायसु जन दौरावा। बाह्मन सुवा बेगि लै आवा॥
विप्र असीस बिनति अवधारा[5], सुवा जीउ नहिँ करौं निनारा[6]॥
पै यह पेट भयो बिसवासी[7]। जेइ सब नाये[8] तपा सन्यासी॥

---

* आवहिं=रोते हुए आते हैं (जन्म लेते हैं) और जाते समय (मरते समय) रोना पिटना कराके जाते हैं। (नोट) स्मरण रखना चाहिये कि "तैं व्याध मनावा" से लेकर "मन लोभ न करई" तक सब सुवा का वचन है। १ सिव साजा शिव हो गया कैलाशवासी हो गया मर गया। २ बनिज=व्यापारी। ३ ठोर=चोंच। ४ कबि=व्यास के समान कवि और सहदेव के समान पंडित है। ५ अवधारा=आरंभ किया। ६ निनोरा=न्यारा, अलग। ७ बिसवासी=(विश्वआशी) संसार भर के खा जाने वाला (बहुत खाने वाला)। ८ नाये=नवाये, नीचा दिखाया, अधीन किये।

दो०—हौं पंडित औ बाम्हन, कहु गुन आपन सोय।
पढ़े के आगे जो पढ़ै, दून लाभ तेहि होय ॥८३॥

चौपाई

तब गुन मोहि अहा[1] हो देवा। जब[2] पंखिन महँ हता परेवा॥
अब गुन कौन जो बँद जजमाना[3]। घालि मँजूसा[4] बेचै आना॥
पंडित होय सो हाट न चढ़ा। चाहौं बिकान भूलि गा पढ़ा॥
दुइ मारग देखौं यहि हाटा। दई चलावै दहुँ केहि बाटा॥
रोवत रकत भयो मुख राता। तन भा पियर कहौं का बाता॥
राता[5] स्याम कंठ दुइ गीवा। तिन्ह दुइ फाँद डरौं सुठि जीवा॥
अब[6] ही कंठ फाँद दुइ चीन्हा। दहुँ गिव फाँद चाहका कीन्हा॥

दो०—पढ़ि गुनि देखा बहुत मैं, है आगे डरु सोय।
धुँध जगत सब जानि कै, भूलि रहा बुधि खोय ॥८४॥

चौपाई

सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू[7]। करु पँखी पर मया[8] न मारू॥
कत रे निठुर जिउ बधसि परावा। हत्या केरन तेहि डरु आवा॥
*कहेसि पँखी तैं व्याध मनावा[9]। निठुर सोई जोपर[10]मसु खावा॥

---

१ अहा=था। २ जब=जब मैं पक्षियों के साथ था और स्वतंत्रता से उड़ता फिरता था। ३ जजमान=यज्ञ करने वाला, यहाँ व्याधा। ४ घालि मँजूसा=झांपी में डाल कर। ५ राता=लाल और काला जो दो कंठे मेरी गदन में पड़े हुए हैं, इन्हीं दोनों फंदों से मैं अपने जी में बहुत डरता हूं। ६ अब=मैंने इन कंठे रूपी दो फंदों को पहचाना कि यही मेरे दुःख का कारण हैं, अब देखूं कि ये फंदे और क्या करना चाहते हैं। ७ चिरिहारू=चिड़ीमार। ८ मया=दया। ९ मनावा=मनई, मनुष्य। *पंखी (सुवा) ने कहा कि हे व्याध तू मनुष्य है, (समझ ले, ब्राह्मण सत्य कहता है कि)। १० परमसु=पराया मांस।

*आवहिँ रोय जाहिँ कै रोना । तबहुँ न तजैं भोग सुख सोना ॥
औ जानहिँ तन होइ है नासू । पोसैं माँस पराये माँसू ॥
जो न होत अस पर मस खाधू । कत पँखिन कहँ धरत बियाधू ॥
जो बियाध पँखिन नित धरई । सो बेंचत मन लोभ न करई" ॥

दो०—बाम्हन सुवा बिसाहा, सुनि मत बेद गिरंथ ।
मिला आय साथिन सँग, भा चितउरके पंथ ॥ ८५ ॥

चौपाई

ौ लहि चित्रसेन सिव साजा[1] । रतनसेन चितउर भा राजा ॥
आय बात तेहिँ आगे चली । राजा बनिज[2] आए सिँघली ॥
ैं गजमोति भरी बहु सीपी । और बस्तु बहु सिँघलदीपी ॥
ाम्हन एकु सुवा लै आवा । कंचन बरन अनूप सोहावा ॥
ाता स्याम कँठ दुइ काँठा । राते दहन सिखा सब पाठा ॥
औ दुइ नैन सुहावन राता । राती ठोर[3] अमीरस बाता ॥
मस्तक टीका काँध जनेऊ । कबि[4] बियास पंडित सहदेऊ ॥

दो०—बोल अरथ सोँ बोलै, सुनत सीस पै डोल ।
राज मँदिर महँ चाहिय, असवह सुवा अमोल ॥८६॥

चौपाई

भयो रजायसु जन दौरावा । बाह्मन सुवा बेगि लै आवा ॥
बिप्र असीस बिनति अवधारा[5], सुवा जीउ नहिँ करौं निनारा[6] ॥
पै यह पेट भयो बिसवासी[7] । जेइ सब नाये[8] तपा सन्यासी ॥

---

* आवहिं=रोते हुए आते हैं (जन्म लेते हैं) और जाते समय (मरते समय) रोना पिटना कराके जाते हैं । (नोट) स्मरण रखना चाहिये कि "तैं ब्याध मनावा" से लेकर "मन लोभ न करई" तक सब सुवा का वचन है । १ सिव साजा शिव हो गया कैलाशवासी हो गया मर गया । २ बनिज=ब्यापारी । ३ ठोर=चोंच । ४ कबि=ब्यास के समान कवि और सहदेव के समान पंडित है । ५ अवधारा=आरंभ किया । ६ निनोरा=न्यारा, अलग । ७ बिसवासी=(विश्वआशी) संसार भर को खा जाने वाला (बहुत खाने वाला) । ८ नाये=नवाये, नीचा दिखाया, अधीन किये ।

दो०—हौं पंडित औ बाम्हन, कहु गुन आपन सोय।
पढ़े के आगे जो पढ़ै, दून लाभ तेहि होय ॥८३॥

चौपाई

तब गुन मोहि अहा[1] हो देवा। जब[2] पंखिन महँ हता परेवा ॥
अब गुन कौन जो बँद जजमाना[3]। घालि मँजूसा[4] बेंचै आना ॥
पंडित होय सो हाट न चढ़ा। चाहौं बिकान भूलि गा पढ़ा ॥
दुइ मारग देखौं यहि हाटा। दई चलावै दहुँ केहि बाटा ॥
रोवत रकत भयो मुख राता। तन भा पियर कहौं का बाता ॥
राता[5] स्याम कंठ दुइ गीवा। तिन्ह दुइ फाँद डरौं सुठि जीवा॥
अब[6] हौं कंट फाँद दुइ चीन्हा। दहुँ गिव फाँद चाहका कीन्हा॥

दो०—पढ़ि गुनि देखा बहुत मैं, है आगे डरु सोय।
धुँध जगत सब जानि कै, भूलि रहा बुधि खोय ॥८४॥

चौपाई

सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू[7]। करु पँखी पर मया[8] न मारू ॥
कत रे निठुर जिउ बधसि परावा। हत्या केरन तेहि डरु आवा ॥
*कहेसि पँखी तैं व्याध मनावा[9]। निठुर सोई जोपर[10] मसु खावा॥

---

१ अहा=था। २ जब=जब मैं पक्षियों के साथ था और स्वतंत्रता से उड़ता फिरता था। ३ जजमान=यज्ञ करने वाला, यहाँ व्याधा। ४ घालि मँजूसा=झांपी में डाल कर। ५ राता=लाल और काला जो दो कंठे मेरी गर्दन में पड़े हुए हैं, इन्हीं दोनों फंदों से मैं अपने जी में बहुत डरता हूं। ६ अब=मैंने इन कंठे रूपी दो फंदों को पहचाना कि यही मेरे दुःख का कारण हैं, अब देखूं कि ये फंदे और क्या करना चाहते हैं। ७ चिरिहारू=चिड़ीमार। ८ मया=दया। ९ मनावा=मनई, मनुष्य। *पंखी (सुवा) ने कहा कि हे व्याध तू मनुष्य है, (समझ ले, ब्राह्मण सत्य कहता है कि)। १० परमसु=पराया मांस।

*आवहिँ रोय जाहिँ कै रोना। तबहुँ न तजैं भोग सुख सोना॥
औ जानहिँ तन होइ है नासू। पोसैं माँस पराये माँसू॥
जो न होत अस पर मस खाधू। कत पँखिन कहँ धरत बियाधू॥
जो बियाध पँखिन नित धरई। सो बेंचत मन लोभ न करई" ॥

दो०—बाम्हन सुवा बिसाहा, सुनि मत बेद गिरंथ।
मिला आय साथिन सँग, भा चितउरके पंथ॥ ८५॥

चौपाई

तौ लहि चित्रसेन सिव साजा[1]। रतनसेन चितउर भा राजा॥
आय बात तेहिँ आगे चली। राजा बनिज[2] आए सिँघली॥
हैं गजमोति भरो बहु सीपी। और बस्तु बहु सिँघलदीपी॥
बाम्हन एकु सुवा लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा॥
राता स्याम कँठ दुइ काँठा। राते दहन सिखा सब पाठा॥
औ दुइ नैन सुहावन राता। राती ठोर[3] अमीरस बाता॥
मस्तक टीका काँध जनेऊ। कबि[4] बियास पंडित सहदेऊ॥

दो०—बोल अरथ सोँ बोलै, सुनत सीस पै डोल।
राज मँदिर महँ चाहिय, असवह सुवा अमोल॥८६॥

चौपाई

भयो रजायसु जन देौरावा। बाह्मन सुवा बेगि लै आवा॥
विप्र असीस बिनति अवधारा[5], सुवा जीउ नहिँ करौं निनारा[6]॥
पै यह पेट भयो बिसवासी[7]। जेइ सब नाये[8] तपा सन्यासी॥

---

* आवहिं=रोते हुए आते हैं (जन्म लेते हैं) और जाते समय (मरते समय) रोना पिटना कराके जाते हैं। (नोट) स्मरण रखना चाहिये कि "तैं ब्याध मनावा" से लेकर "मन लोभ न करई" तक सब सुवा का वचन है।
१ सिव साजा शिव हो गया कैलाशवासी हो गया मर गया। २ बनिज=ब्यापारी। ३ ठोर=चोंच। ४ कबि=ब्यास के समान कवि और सहदेव के समान पंडित है। ५ अवधारा=आरंभ किया। ६ निनोरा=न्यारा, अलग। ७ बिसवासी=(विश्वग्राशी) संसार भर को खा जाने वाला (बहुत खाने वाला)। ८ नाये=नवाये, नीचा दिखाया, अधीन किये।

दारा सेज जहाँ जेहि नाहीं । भुइँ परि रहै लाय गिउ बाहीं ॥
अँधहु रहै जो देख न नैना । गूँग रहै मुख आव न बैना ॥
बहिर रहै जो स्त्रवन न सुना । पै यह पेट न रह निरगुना[१] ॥
कै कै फेरा नित बहु दोखी । बारहिं[२] बार फिरै न सँतोखी ॥
दो—सो मोहि लिये[३] मँगावै, लावै भूख पियास ।
जो न होय अस बैरी, केहिं काहू की आस ॥८७॥

चौपाई

सुबैं असीस दीन्ह "बढ़साजू" । "बढ़ परताप अखंडित राजू" ॥
भागवंत बुध[४] बिधि अवतारा । जहाँ भाग तहँ रूप जोहारा[५] ॥
को केहि पास आस कै गवना । जो निरास दृढ़ आसन मौन ॥
कोउ बिन पूँछे बोल जो बोला । होइ सो बोल माँटी के मोला[६] ॥
पढ़ि गुनि जानि बेद मत भेऊ । पूँछे बात कहै सहदेऊ ॥
गुनी न कोऊ आप सराहा । सो जो बिकाय[७] कहा पै चाहा ॥
जौ लहि गुन परगट नहिं होई । तौ लहि मरम न जानै कोई ॥
दो०—चतुर वेद हौं पंडित, हीरामन मोहि नाउँ ।
मधु[८] मालति सो मेरवौं, सेव करौं तेहि ठाउँ ॥ ८८ ॥

चौपाई

रतन सेन हीरामन चीन्हा । टका[९] लाख बाह्मन कहँ दीन्हा ॥
विप्र असीसा कीन्ह पयाना । सुवा सो राज मँदिर महँ आना ॥

---

१ निरगुन=निकम्मा । २ बारहि बार=द्वार द्वार, दरवाजे दरवाजे । ३ लिये=वही पेट मुझको लिये हुए भिक्षा मंगवाता फिरता है और भूख तथा प्यास लगाता है । ४ बुध=पंडित, ज्ञानी । ५ जोहारना=प्रणाम करना । ६ मांटी के मोल=अत्यन्त तुच्छ । ७ बिकाय=परन्तु जो बिका चाहता है वह अपना गुण कहना ही चाहता है । ८ मधु मालति.........तेहि ठाउं=सुग्गा कहता है कि मुझ में विशेष गुण यह है और उसी ठौर मैं अच्छी सेवा करता हूं जहां मधु (चैतमास) को मालती से मिलाने का काम हो (प्रेमी को प्रेमिका से मिलाने का दूतत्व मैं अच्छी भांति कर सकता हूं) । ९ टका=रुपया ।

बरनौं काह सुवा कै भाषा। धनि सो नाउँ हीरामन राखा॥
जो बोलै सब मानिक मूँगा। नाहिँ त मौन बाँधि रह गूँगा॥
जो बोलै राजा मुख जोवा। जानहु मोतिन हार पिरोवा॥
जनहु मरे मुख अमृत मेला। गुरु होइ आप कीन्ह जग चेला॥
सुरिज चाँद कै कथा जो कहा। प्रेम की कहन लाइ जिउ गहा॥
दो०—ज्यौं ज्यौं सुनै धुनै सिर, राजा प्रीत अगाहि[1]।
अस गुनवंत नाहिँ भल, बाउर कीन्ह जो चाहि॥८९॥

८—आठवाँ खण्ड

धाय-सुवा-संवाद

चौपाई

लच्छ टका दै सुवटा लीन्हा। साज जराव नगन कर कीन्हा॥
रतन जराव क पिँजरा साजा। सुखि भा देखि सुवा कहँ राजा॥
हीरामनि है पंडित गुनी। बहुतै भाँति पंडतिन सुनी॥
अँबिरित भोजन सदा खवावा। अँबिरित वचन सुनत सचु[2] पावा॥
सुवा बचन जो अँबिरित कहा। नैन ओट राजा नहिँ चहा॥
सत्य भाव सुअटा सोँ लावा। सुवा छाँड़ि चित और न भावा॥
पंडित सुवा चतुर बड़ गुनी। गढ़ चितउर आये विधि बनी॥
दो०—सुवा सुपंडित जानि कै, अधिक प्रीति जिय कीन्ह।
कै मनुहारि[3] विप्र कै, लच्छ टका फिरि दीन्ह॥९०॥

चौपाई

सुरिज चाँद कै कथा कहानी। प्रेम कहनि हिय लाय बखानी॥
सुवा भयो राजा बिसरामी। तेहि आदर जेहि चाहै स्वामी॥

---
१ अगाहि=अगाध, अथाह २ सचु=सुख। ३ मनुहारि=खर ाति।

और न काहुहिँ राजा रतै[1]। जो कछु मंत्र सुवा सों मतै[2] ॥
धाय दामिनी सेवा लाई। पिँजरा तजि नहिँ पल कहुँ जाई ॥
पूँछ धाय हीरामन सुवा। सिँहल तजे कितक दिन हुवा ॥
कस छाँडेहु तुम सिंघल अपनी। तुम बिन कैसे रहै पदुमिनी ॥
का पूँछौ सिघल कै बाता। आवत भये मास मोहिँ साता ॥

दो०—राजा अनुचित माना, तहाँ बिरस[3] हम कीन्ह।
पदुमिनि गई सरोवरै। बनोबास हम लीन्ह ॥ ९१ ॥

चौपाई

पदुमावति पंडित पढ़ि भई। उन्ह कै गढ़नि दइउ असि दई ॥
तरुन बैस रस की विधि जाना। राजैं सुना बहुत दुख माना ॥
कछु राजा तब हमहिँ सुगाना[4] को बुधि देइ सुवा बिन आना ॥
क्रोध कीन्ह दुख जियमहँ भयऊ। हमकहँ मारन दूतहिँ कहेऊ ॥
तब पदुमावति हमहि छिपावा। बिनै दूत कहँ फेरि पठावा ॥
हम कहँ चिन्ता भौ तिन्ह पाहीं। गयउँ उदास होय बन माहीं ॥
तेहि बन मा पँछी सब मिले। आदर भाव कीन्ह अति हिले ॥

दो०—बहुत भाँति कै सेवा, साथ बसेरा कीन्ह।
बिहँसि हिरामनि बोले, धायहिँ उत्तर दीन्ह ॥९२॥

---

१ रतना प्रेम करना। २ मतना = सलाह करना। ३ बिरस = अनबन। ४ सुगाना = संदेह किया।

९—नवाँ खण्ड

नागमती-सुवा संवाद

चौपाई

दिन दस पाँच तहाँ जो भये। राजा कतहुँ अहेरहिँ[1] गये।
नागमती रूपवंती रानी। सब रनिवास पाट परधानी[2]॥
कै सिंगार कर दरपन लीन्हा। परसन देखि गरब जिय कीन्हा॥
हँसत सुवा पहँ आइ सो नारी। दिहें कसौटी[3] औ पनवारी॥
भले सुवा औ प्यारे[4] नाँहा। मोर रूप कै कोउ जग माँहाँ॥
सुवा बरन[5] दहुँ कस है सोना। सिंघल दीप तोर कस लोना॥
कौन रूप तोरी रुपमनी[6]। दहुँ हौं लोनि कि वा पदुमिनी॥

दो०—जो न कहसि सत सुवटा, तोही राजा कै आन।
है कोऊ यहि जगत महं, मोरे रूप समान॥ ६३॥

चौपाई

सँवरि रूप पदुमावति केरा। हँसा सुवा रानी मुख हेरा॥
जेहिँ सरवर महँ हँस न आवा। बगुलहि तेहिँ सर हंस कहावा॥
दई कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एक ते आगर[7] रूपा॥

---

१ अहेर=शिकार। २ पाटपरधानी=रानियों में प्रधान पटरानी। ३ दिहें...पनवारी=आंखों में काजल रेख और दातों में पान की धड़ी जमाये हुए॥ (कसौटी=काजलकी रेख, पनवारी=पान की धड़ी) ४ प्यारे नाहा=मेरे पति के प्यारे। ५ बरन=वर्णन कर। ६ रूपमणि=(जिसको तू रूपवती समझता है— पदमिनी)। ७ आगर=बढ़ कर।

कै मन गरब न छाजा काहू। चाँद घटा औ लागा राहू॥
लोनि बिलोनि[1] तहाँ को कहा। लोनी सोइ कंत जेहि चहा॥
का पूँछौ सिंघल कै नारी। दिनहि न पूजै निसि अँधियारी॥
पुहुप सुबास सु उनकै काया। जहाँ माथ का बरनौं पाया[2]॥
दो०—गढ़ी सो सोने सोंधे[3], भरीं सो रूपे[4] भाग।
सुनत रूखि भइ रानी, हिये लोन अस लाग॥ ६४॥

चौपाई

जो यह सुवा मँदिर महँ अहई। कबहुँ होय[5] राजा सों कहई॥
सुनि राजा पुनि होय बियोगी[6]। छाँड़ै राज चलै होइ जोगी॥
विष राखे नहिं होय अँगूरू। सबद न देइ बिरह तमचूरू[7]॥
धाय दामिनी बेगि हँकारी[8]। ओहि सौंपा हिय रिस न सँभारी॥
देखु सुवा यह है मँदचाला[9]। भयो न ताकर जाकर पाला॥
मुख कह आन पेट पै आना। तेहि औगुन दस हटा बिकाना॥
पंखि न राखिय होइ कुभाखी। लै तहँ मारु जहां नहिं साखी॥
दो०—जेहि दिन कहँ हौं नित डरौं, रैनि छिपाऊँ सूर।
लै चह दीन्ह कमल कहँ, मो कहँ होय मयूर[10]॥ ६५॥

चौपाई

धाय सुवा लै मारै गई। समुझि ज्ञान हिरदै मति भई॥
सुवा सो राजा कर बिसरामी[11]। मारि न जाइ चहै जेहि स्वामी॥

---

१ बिलोनी=कुरूप। २ पाया=पांव, पैर। ३ सोंधा=सुगंध। ४ रूपे का भाग्य=उज्ज्वल भाग्य। ५ होय=कभी ऐसा हो सकता है कि। ६ बियोगी=दूसरे का अनुरागी और प्रथम से उदासीन। ७ तमचूरु=मुर्गा। ८ हंकारी=बुलवाई। ९ मंदचाल=बुरी चाल वाला। १० मयूर=मोर (शत्रु) रानी का नाम 'नागमती' है, नाग का शत्रु मयूर है राजा को सूर्य कहा है इसी से पदमावती को कमल कहा (पद्म=कमल)। ११ बिसरामी =विश्राम देने वाला।

यह पंडित खंडित पै[1] रामू। दोष ताहि जेहि सूझ न आगू॥
जो तियान के काज न जाना। परै धोख पाछे पछताना॥
नागमती नागिनि-बुधि ताऊ। सुवा मयूर होय नहिं काऊ॥
जो न कंत के आयसु माँहाँ। कौन भरोस नारि तेहिं बाँहाँ[2]॥
मकु यहि खोज होय निसि आये। तुरी[3] रोगी हरि माँथे जाये॥

दो०—दुइ सो छिपाये ना छिपैं, एक हत्या औ पाप।
अंतहिं करहिं बिनास ये, सैं[4] साखी दै आप॥ ९६॥

चौपाई

राखा सुवा धाय मति साजा। भयो खोज निसि आये राजा॥
रानी उतर मान[5] सों दीन्हा। पंडित सुवा मँजारी लीन्हा॥
मैं पूछी सिंघल पदुमिनी। उतरु दीन्ह तुम को[6] नागिनी॥
वह जस दिन तुम निस अँधियारी। जहाँ बसंत करील[7] को बारी॥
का तोर पुरुष रैनि कर राऊ। उलू[8] न जान दिवस कर भाऊ॥
का वह पंखि कूट[9] मुहँ कूटी। अस बड़ बोल जीभ कहँ छोटी॥
जहर चुवै जो जो कह बाता। भोजन बिन भोजन मुख खाता॥

दो०—माथे नहिं बैसारिये, सुठि जो सुवा है लोन।
कान टूट जेहि आभरन, का लै करिय सो सोन॥ ९७॥

पै=द्वेष। खंडित पै रागू=राग और द्वेष से खंडित है (किसी से राग द्वेष नहीं रखता)। २ बांह=हिमायत, सहारा। ३ तुरी रोग—जाये=घोड़े की बला बंदर के सिर जाय (हरि=बंदर)। ४ सैं=निश्चय करके। ५ मान=घमंड। ६ तुमको नागिनी=हे नागमती तुम इसके सामने क्या हो। ७ करील=जहां बसंत ऋतु वर्तमान है वहां करील की वाटिका क्या है—अर्थात् तुच्छ है। ८ उलू=उल्लू। ९ कूट=एक अति कड़ुई जड़ी—वह पक्षी क्या है? उसके मुँह में तो कूट ही कूट कूट कर भरी है (बहुत कड़ुई बात बोलता है)।

चौपाई

राजैं सुनि बियोग[1] तस माना। जैस हिये बिकरम पछिताना॥
पंडित दुख खंडित निरदोखा। पंडित होइ तेहि परै न धोखा॥
पंडित केरि जीभ मुख सूधो। पंडित बात कहै न निबूधी[2]॥
पंडित सुमति देइ पँथ लावा। जो कुपंथ तेहिं पंडित न भावा॥
पंडित राते बदन सरेखा[3]। जो हत्यार रुहिर[4] तेइ देखा॥
यह हीरामनि पंडित सुवा। जो बोलै मुख अमिरितु चुवा॥
कै परान घट आनहु मती[5]। कै जरि होहु सुवा संग सती॥
दो०—जनि जानहु कइ औगुन, मँदिर होय सुख-राज।
आयसु मेटि कंथ[6] कर, का कर भा भल काज॥ ६८॥

चौपाई

चांद जैस धनि उजियर अही। भा पिउ रोस गहन अस गही॥
परम सोहाग निबाह न पारी। भा दोहाग[7] सेवा जब हारी॥
इतनिक दोस बिरच पिउ रूठा। जो पिउ आपन कहै सो भूठा॥
ऐसे गरब न भूलै कोई। जेहि डर बहुत पियारी सोई॥
रानी आइ धाय के पासा। सुवा भुवा सेंबर[8] की आसा॥
परा प्रीति कंचन मँह सीसा। बिथर न मिलै स्याम पै दीसा॥
कहाँ सोनार पास जेहिं जाऊँ। देइ सुहाग करै एक ठाऊँ॥
दो०—मैं पिउ पिरित भरोसे, गरब कीन्ह मन माँह।
तेहि रिस हौं परहेली[9], नागरि[10] रूसा नाह[11]॥ ६६॥

चौपाई

उतर धाय तब दीन्ह रिसाई। रिस आपुहि बुधि आनहिं खाई॥

---

१ वियोग=दुःख। २ निबूधी=निर्बुद्धि। ३ सरेख=श्रेष्ट। ४ रुहिर=रुधिर, खून। ५ मती=नागमती। ६ कंथ=पति। ७ दोहाग=दौर्भाग्य, अभागापन। ८ सेंवर=जैसे कोई सुवा फल की आशा से सेमर वृक्ष के पास जाता है, परन्तु केवल भुवा ही पाता है। ९ परहेली=(अवहेली) निरादरित। १० नागरि=हे चतुर धाय। ११ नाह=पति।

मैं जो कहा रिस करहि न घाला[1]। को न गवा यहि रिस कर घाला॥
तू रिस भरी न देखिसि आगू। रिस महँ का कहँ भयो सोहागू॥
बिरस बिरोध रिसहिँ ते होई। रिस मारै तेहिं मार न कोई॥
जहि रिस तेहि रस जोग न जाई। बिनु रस हरदि होय पियराई॥
जेहि के रिस मरिये रस जोजै। सो रस तजि रिस कैांहुँ न कीजै॥
कंत सोहाग कि पाइय साधा[2]। पावै सोइ जो ओहि चित बांधा॥

दो०—रहै जो पिय के आयसु, औ बरतै होइ हीन[3]।
सो धन चांद अस निरमल, जनम न होय मलीन॥१००॥

चौपाई

जुआ हार समझो मन रानी। सुवा दीन्ह राजा पहँ आनी॥
मान मती[4] होइ गरबु न कीन्हा। कंत तुम्हार मरम हैां लीन्हा॥
सेवा करै जो बरहैा मासा। एतनिक औगुन करहु बिनासा॥
जो तुम्ह देइ नाइ कै गीवा। छाँड़हु नहिं बिन मारे जीवा॥
मिलतहु महँ जनु अहहु निरारे। तुम सों आहि अँदेस पियारे॥
का रानी का चेरी कोई। जा कहँ मया करहु भल सोई॥
मैं जाना तुम मोंही माँहाँ। देखौं ताकि तो हैा सब माँहाँ॥

दो०—तुम सों कोउ न जीता, हारा बररुचि[5] भोज[6]।
पहले आपुहिँ खोवै, करै तुम्हार सो खोज॥१०१॥

---

१ घाला = नष्ट किया हुआ। २ साधा = (साध) = इच्छा। ३ हीन = तुच्छ, छोटा। ४ मानमती = अहंकार से मस्त हो कर। ५ बर रुचि = एक प्रसिद्ध पंडित, विशेष वा सुन्दर रुचि वाला कोई व्यक्ति। ६ भोज = प्रसिद्ध राजा विशेष।

१०—दसवाँ खंड

राजा-सुवा-संवाद

चौपाई

राजै कहा सत्त कहु सुवा। बिन सत कस जस सेंबर भुवा ॥
होइ मुख रात सत्त कहे बाता। जहाँ सत्त तहँ परम सँघाता ॥
बाँधी सिष्टि अहै सत केरी। लछिमी आहि सत्त कै चेरी ॥
सत्त जहाँ साहस सिधि पावा। औ सतबादी पुरुष कहावा ॥
सत गहि सती सँवारै सरा[1]। आगि लाइ चहुँदिस सत जरा ॥
दुउ जग तरा सत्त जेइँ राखा। और पियारि दइहिँ[2] सत भाखा ॥
सो सत छाँड़ि जो धरम बिनासा। का मति कीन्ह हियेसतनासा॥

दो०—तुम सयान औ पंडित, असत न भाखेहु काउ।
सत्त कहहु सो मो सों, दहुं काकर अनियाउ ॥१०२॥

चौपाई

सत्त कहत राजा जिउ जाऊ। पै मुख असत न भाखौं काऊ ॥
हौं सत लै निसरा यहि बूते[3]। सिंघल दीप राज घर हू ते ॥
पदुमावति राजा कै बारी। पदम सुगँध ससि दई सँवारी ॥
ससिमुख अँग मलयगिरि रानी। कनक सुगँध दुवादस[4] बानी ॥
हैं पदुमिनि जो सिँघल माँहाँ। सुगँध सरूप सो होहि कै छाँहाँ ॥
हीरामनि हौं तेहिक परेवा। काँठा फूट करत ओहि सेवा ॥
औ पायों मानुस कै भाखा। नाहिँ त पँखि मूँठि भर पाँखा ॥

दो०—जौलहि जिअउँ राति दिन, सँवरि मरौं ओहि नाँउँ।
मुख राता तन हरियरा, दुहूँ जगत लै जाउँ ॥१०३॥

---

१ सरा=चिता। २ दइहिँ=ईश्वर को। ३ बूते=बल। ४ दुवादस बानी=अत्यंत खरा सोना।

चौपाई

हीरामनि जो कँवल बखाना । सुनि राजा होइ भँवर लोभाना ॥
आगे आउ पँखि उजियारे । कहु सो दीप पतिंग कै मारे ॥
रहा जो कनक सुबासिक[1] ठाऊं । कस न होय हीरामनि नाऊं ॥
को राजा कस दीप उतंगू । जेहि रे सुनत मन भयो पतँगू ॥
सुनिसोसमुँदचखभयेकिलकिला[2]। कँवलहिँ चहैांभँवरहोइमिला ॥
कहु सौगँद[3] धन[4] कस निरमरी। दहुँ अलि संग कि अवहीकरी[5]॥
औ कहु तहाँ जो पदुमिनिलोनो । घरघरसबहिँकिहोइँ[6]जहँहोनो॥
दे।०—सबै बखानु[7] तहाँ कर, कहत सो मोसों आउ ।
चहैां दीप वह देखा, सुनत उठा तस चाउ ॥ १०४ ॥

चौपाई

का राजा हैाँ बरनैां तासू । सिंघल दीप आहि कैलासू ॥
जो गा तहाँ भुलाना सोई । गए जुग बीति न बहुरा कोई ॥
घर घर पदुमिनि छतिसौ जाती । सदा बसंत दिवस औ राती ॥
जेहि जेहि बरन फूलफुलवारी । तेहितेहि बरन सुगंधसो नारी ॥
गंध्रपसेन तहाँ कर राजा । अछरन[8] महँ इँदरासन साजा ॥
सो पदुमावति ताकर बारी । औ सब दीप माँहँ उजियारी ॥
चहूँ खूँट के बर जो ओनाहीं[9] । गरबहिँ राजा बोलै नाहीं ॥
दे।०—उदित सूर जस देखी, चाँद छिपै जेहिँ धूप ।
ऐसहि सबै जाहिँ छिपि, पदुमावति के रूप ॥ १०५ ॥

चौपाई

सुनि रबि नाउ रतन भा राता । पंडित फेरि यहै कहु बाता ॥

---

१ सुबासिक=सुगंधित । २ किलकिला=एक छोटा पक्षी जो पानी में गोता मारमार कर मछली पकड़ता है । ३ सौगंद=कसम खाकर । ४ धन=(धनिया) स्त्री । ५ करी=कली । ६ होइँ जहँ होनी=जहां कहीं होनी होती है अर्थात् कहीं कहीं । ७ बखानु=व्याख्यान । ८ अछरन=अप्सराओं । ९ ओनाहीं=झुकते हैं ।

तैं सुरंग मूरति वह कही । चित महँ लागि चित्र होइ रही ॥
जनु ह्वै सुरिज आइ मन बसी । सब घट पूरि हिये परगसी[1] ॥
अब हौं सुरिज चाँद वहि छाया । जलबिन मीन रकतबिनकाया ॥
किरन[2] करा भा पेम अँकूरू । जो ससि सरग चढ़ौं होइ सूरू ॥
सहसउ करा[3] रूप मन भूला । जहँजहँदिष्टि कँवल जनु फूला ॥
तहाँ भँवर जहँ कँवला[4] गंधो । भइ ससि[5] राहु केरिन-वंधी ॥

दो०—तीनि लोक खँड चौदह, सबै परै मोहिं सूझि ।
पेम छाँड़ि कुछ लोन[6] नहिँ, जो देखा मन बूझि ॥१०६॥

चौपाई

पम सुनत मन मूलु न राजा । कठिन पेम सिर देइ तो छाजा ॥
पेम फाँद जो परा न छूटा । जिउ दीन्हे वह फाँद न टूटा ॥
गिरगिट छंद[7] धरै दुख तेता । खिनखिन रात पीत खिन सेता ॥
जानि पुछारि[8] जो भइ बनवासी । रों रों फाँद परे नग-फाँसी[9] ॥
पाँखन फिरिफिर परा सो फाँदू । उड़ि न सकैउरझी भइ बाँदू[10]॥
मुयें मुयें अहनिसि चिल्लाई । ओही रोस नागन धरि खाई ॥
पाँडुक सुवा कँठ वहि चीन्हा । जेहि गिव परा चहै जिउ दीन्हा॥

दो०—तीतर गीव जो फाँद है, नितहि पुकारै दोख ।
मेले फाँद हँकारि कह, कत मारे बिन मोख ॥१०७॥

---

१ परगसी=प्रकाशित हुई । २ किरन=उसकी किरण की कला से प्रेम का अंकुर उगा है । ३ सहसउ करा=(राजा ने अपने को सूर्य कहा है) हज़ारों कला से (परिपूर्ण) उसके रूप पर मेरा मन भूल गया है । ४ कंवला=जहां कंवल। अर्थात् पदमावती की गन्ध है वहीं मेरा मन भंवर हो रहा है । ५ ससि=अब वह ससि (पदमावती) मेरे प्रेम रूपी राहु की ऋणी हो गई । अर्थात् मेरा प्रेम अवश्य कभी पदमावती शशि को ग्रसैगा । ६ लोन=अच्छा, सुन्दर । ७ छंद धरना=रूप बदलना । ८ पुछारि=लम्बी पूंछ वाला मोर । ९नगफांसी=नागफांस । १० बांदू=बंदी, बंधुवा, कैदी ।

चौपाई

राजैं लीन्ह ऊभि कै स्वाँसा। ऐस बोलु जिन बोलु निरासा॥
पहिल पेम है कठिन दुहेला[1]। दोउ जग तरा पेम जेइ खेला॥
दुख भीतर सो पेम मधु राखा। गंजन[2] मरन सहै सो चाखा॥
जेइ नहिँ सीस पेम पँथ लावा। सो पृथिमिहिँ काहे कहँ आवा॥
अब मैं पेम फाँद सिर मेला। पाँउ न ठेलु राखु कै चेला॥
पेम बार[3] सो कहै जो देखा। जेइँ न दीख का जान बिसेखा॥
तब लग दुख प्रीतम नहिँ भेंटा। जो भइ भेंट जनम दुख मेटा॥
दो०—जस अनूप तैं बरने, नख सिख बरनु सिंगार।
है मोहि आस मिलैं कै, जो मेरवै करतार॥ १०८॥

११—ग्याहरवाँ खंड

—:o:—

सिख-नख वर्णन

चौपाई

का सिँगार ओहि बरनउँ राजा। ओहि क सिँगारओहीपैछाजा॥
प्रथम सीस कसतूरी केसा[4]। बलि[5] बासुकि को अवर नरेसा॥
भंवर केस वह मालति रानी। बिसहर लुरहिं लेइ अरघानी[6]॥
बेनी छोरि झार जो बारा। सरग पतार होइ अँधियारा॥
कोंवल कुटिल केस नग[7] कारे। लहरैं भरहिँ भुवंग विसारे[8]॥

---

१ दुहेला=(दुहेला) बुरा खेल। २ गंजन=अपमान। ३ बार=दरवाज़ा। ४ कसतूरी केसा=(जुल्फमुश्कीं—यह फारसी कवियों की उपमा है)। ५ बलि=बलिहारी जाते हैं। ६ अरघानी=सुगंध। ७ नग कारे=काले नाग हैं। ८ भुवंग बिसारे=विषैले सांप।

तैं सुरंग मूरति वह कही । चित महँ लागि चित्र होइ रही ॥
जनु है सुरिज आइ मन बसी । सब घट पूरि हिये परगसी[1] ॥
अब हौँ सुरिज चाँद वहि छाया । जलबिन मीन रकतबिनकाया ॥
किरन[2] करा भा पेम अँकूरू । जो ससि सरग चढ़ौं होइ सूरू ॥
सहसउ करा [3]रूप मन भूला । जहँजहँदिष्टि कँवल जनु फूला ॥
तहाँ भँवर जहँ कँवला[4] गंधो । भइ ससि[5] राहु केरिन-बंधी ॥

दो०—तीनि लोक खँड चौदह, सबै परै मोहिँ सूझि ।
पेम छाँड़ि कुछ लोन[6] नहिँ, जो देखा मन बूझि ॥१०६॥

चौपाई

पम सुनत मन मूलु न राजा । कठिन पेम सिर देइ तो छाजा ॥
पेम फाँद जो परा न छूटा । जिउ दीन्हे वह फाँद न टूटा ॥
गिरगिट छंद[7] धरै दुख तेता । खिनखिन रात पीत खिन सेता ॥
जानि पुछारि[8] जो भइ बनवासी । रों रों फाँद परे नग-फाँसी[9] ॥
पाँखन फिरिफिर परा सो फाँदू । उड़ि न सकैउरझी भइ बाँदू[10]॥
मुयें मुयें अहनिसि चिल्लाई । ओही रोस नागन धरि खाई ॥
पाँडुक सुवा कँठ वहि चीन्हा । जेहि गिव परा चहै जिउ दीन्हा॥

दो०—तीतर गीव जो फाँद है, नितहि पुकारै दोख ।
मेले फाँद हँकारि कह, कत मारै बिन मोख ॥१०७॥

---

१ परगसी=प्रकाशित हुई । २ किरन=उसकी किरण की कला से प्रेम का अंकुर उगा है । ३ सहसउ करा=(राजा ने अपने को सूर्य कहा है) हज़ारों कला से (परिपूर्ण) उसके रूप पर मेरा मन भूल गया है । ४ कंवला=जहां कंवला अर्थात् पदमावती की गन्ध है वहीं मेरा मन भंवर हो रहा है । ५ ससि=अब वह ससि (पदमावती) मेरे प्रेम रूपी राहु की ऋणी हो गई । अर्थात् मेरा प्रेम अवश्य कभी पदमावती शशि को ग्रसैगा । ६ लोन=अच्छा, सुन्दर । ७ छंद धरना=रूप बदलना । ८ पुछारि=लम्बी पूंछ वाला मोर । ९नगफांसी=नागफांस । १० बांदू=बंदी, बंधुवा, कैदी ।

चौपाई

राजैं लीन्ह ऊभि कै स्वाँसा। ऐस बोलु जिन बोलु निरासा॥
पहिल पेम है कठिन दुहेला[1]। दोउ जग तरा पेम जेइ खेला॥
दुख भीतर सो पेम मधु राखा। गंजन[2] मरन सहै सो चाखा॥
जेइ नहिँ सीस पेम पँथ लावा। सो पृथिमिहिँ काहे कहँ आवा॥
अब मैं पेम फाँद सिर मेला। पाँउ न ठेलु राखु कै चेला॥
पेम बार[3] सो कहै जो देखा। जेइँ न दीख का जान विसेखा॥
तब लग दुख प्रीतम नहिँ भेंटा। जो भइ भेंट जनम दुख मेटा॥
दो०—जस अनूप तैं बरने, नख सिख बरनु सिंगार।
है मोहि आस मिलै कै, जो मेरवै करतार॥ १०८॥

११—ग्याहरवाँ खंड

—:o:—

सिख-नख वर्णन

चौपाई

का सिँगार ओहि बरनउँ राजा। ओहि क सिँगारओहीपैछाजा॥
प्रथम सीस कसतूरी केसा[4]। बलि[5] बासुकि को अवर नरेसा॥
भंवर केस वह मालति रानी। बिसहर लुरहिं लेइ अरघानी[6]॥
बेनी छोरि झार जो बारा। सरग पतार होइ अँधियारा॥
कोंवल कुटिल केस नग[7] कारे। लहरैं भरहिँ भुवंग विसारे[8]॥

---

१ दुहेला=(दुहेला) बुरा खेल। २ गजन=अपमान। ३ बार=दरवाज़ा। ४ कसतूरी केसा=(जुल्फमुश्कीं—यह फारसी कवियों की उपमा है)। ५ बलि=बलिहारी जाते हैं। ६ अरघानी=सुगंध। ७ नग कारे=काले नाग हैं। ८ भुवंग बिसारे=विषैले सांप।

बंधे जानु मलयगिरि बासा। सीस चढ़े लोटहिँ चहुँ पासा॥
घुंघरवार अलकैं बिष भरीं। सँकरै[1] पेम चहैं गिव परीं॥
दो०—अस फँदवार केस वै, परा सीस गिव फाँद।
आठौ कुरी पाग सब, भए केसन के बाँद[2]॥ १०९॥

चौपाई

बरनौं मांग सीस उपराहीं। सेंदुर अबहिँ चढ़ा तेहिँ नाहीं॥
बिन सेंदुर अस जानहु दिया। उजियर पंथ रैनि महँ किया॥
कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि परगसी॥
सुरिज किरनि जनु गगन बिसेषी। जमुना माँझ सरसुती देखी॥
खांड़े धार रुहिर[3] जनु भरा। करवत लै बेनी पर धरा॥
तेहि पर पूरि धरे जो मोती। जमुना माँझ गंग कै सोती॥
करवत तपा लेहिँ होइ चूरू। मकु[4] सो रुहिर लै देइ सिँदूरू॥
दो०—कनक दुवादस बानि होइ, चह सोहाग[5] वह माँग।
सेवा करहिँ नखत सब, उई गगन जस गाँग[6]॥११०॥

चौपाई

कहौँ लिलार[7] दुइज[8] कै जोती। दुइजहिँ जोति कहाँ जग ओती[9]॥
सहस करा जो सुरिजि दिपाहीं। देखि लिलार सोऊ छिपि जाहीं॥
का सरवरि तेहिँ देउँ मयंकू[10]। चाँद कलंकी वह निकलंकू॥

---

१ सँकरै=सांकरैं (श्रृंखला, जंजीरें)। २ बांद=बन्दी। ३ रुहिर=(पहले कहा है कि अभी सेन्दूर नहीं चढ़ा, मगर फिर मांग की ललाई का वर्णन है। तात्पर्य यह कि बिना सेन्दुर चढ़े ही उस मांग में ऐसी स्वाभाविक ललाई है कि) ४ मकु=शायद। ५ सोहाग=बारह-बानी (खरा) सोना हो कर वह मांग सोहाग (सोहागा) चाहती है—सोहागा से सोने का रङ्ग और अधिक निखरता है। वह चाहती है कि मुझे ऐसा पति मिलै जिससे मेरी शोभा और बढ़ै। ६ गांग=आकाश गङ्गा। ७ लिलार=ललाट। ८ दुइज=द्वितिया का चन्द्रमा। ९ ओती=उतनी। १० मयंकू=चन्द्रमा

ओहि चाँदहिँ पुनिराहु गरासा। ओहिपर राहु सदा गासा॥
तेहि लिलार पर तिलक वईठा। दुइज पास जानहु ध्रुव दीठा॥
कनक पाट जनु बैठा राजा। सबै सिँगार अत्र[1] लै साजा॥
वहि आगे थिर रहै न कोऊ। दहुं का कहँ अस जुरा संजोऊ[2]॥
दो०—खरग धनुष चक[3] बान औ, जग मारन तेहि नाउँ।
सुनि मुरछित भा राजा, मनो खुभे[4] एक ठाउँ॥१११॥

चौपाई

भौंहैं स्याम धनुष जनु ताना। जा सउँ[5] हेर मार विस वाना॥
स्याम धनुष ओहि भौंहन चढ़ा। केइँ हत्यार कालु अस गढ़ा॥
ओही धनुष किसुन पहँ अहा। ओही धनुष राघो कर गहा॥
ओही धनुष कसासुर मारा। ओही धनुष रावन संहारा॥
ओही धनुष बेधा हुत राहू[6]। मारा ओही सहसरा बाहू॥
ओही धनुष मैं ता पहँ चीन्हा। धानुक[7] आपु बेध[8] जग कीन्हा॥
उन्ह भौंहन सरि कोउ न जीता। अछरी[9] छिपीं छिपीं गोपीता[10]॥
दो०—भौंह धनुष धन[11] धानुक, दूसर सरि न कराइ।
गगन धनुष जो उगवै, लाजहिँ सो छिपि जाई॥११२॥

चौपाई

नैन बाँक सरि पूज न कोऊ। मानु समुँद अस उलथहिँ[12] दोऊ॥
राते कँवल करहिँ अलि भँवाँ[13]। घूमहिँ माति चहू उपसवाँ[14]॥

---

१ अत्र=अस्त्र। २ संजोउ=(संयोग। साज सामान, सामग्री। ३ चक=(चक्र) आंख की पुतली, खरग=नासा, धनुष=भौंह, बाण=कटाक्ष ४ खुभे=मानो चारो अस्त्र मर्मस्थान (एक ठाउँ) में खुभ गये। ५ सउँ=सामने। ६ राहू=रोहू मछली (अर्जुन कृत मत्स्यवेध से तात्पर्य है)। ७ धानुक=(धानुष्क) धनुषधारी। ८ बेध=लक्ष्य, निशाना। ९ अछरी=अप्सरायें। १० गोपीता=गोपियां। ११ धन=(धन्या) सुन्दर स्त्री। १२ उलथहिं=उलट पुलट कर देते हैं। १३ भँवां=भ्रमण। १४ उपसवां=(उप+पार्श्व) इर्द गिर्द, चारो ओर।

उठहि तुरंग लेहिँ नहिँ बागा। चाहहिँ उलथि गगन कहँ लागा॥
पवन झकोरहिँ देहिँ हिलोरा। सरग लाइ भुइँ लाइ बहोरा॥
जग डोलै डोलत नैनाहा[1]। उलटि अड़ार[2] जाहिँ पल माँहाँ॥
चहैं फिराय गगन कहँ बोरा। अस वै भँवैं चक्र[3] के जोरा॥
समुँद हिँडोल करहिँ जनु भूले। खंजन लरहिँ मिरिग बन भूले॥

दो०—भर समुंद अस नैन दुइ, मानिक भरे तरंग।
आवत तीर फिरावहीं, काल भँवर तेहि संग॥११३॥

चौपाई

बरुनी का बरनौं इमि बनी। साधे बान जानु दुइ अनी॥
जुरी राम रावन कै सैना। बीच समुंद्र भए दुइ नैना॥
वारहिँ पार बनाउरि[4] साधा। जा सउँ[5] हेर लाग बिष बाधा॥
उन बानन अस को जो न मारा। बेधि रहा सगरौ संसारा॥
गगन नखत जस जाहिँ न गने। वै सब बान ओही के हने॥
धरती बान बेधि कै राखी। साखी[6] ठाढ़ देहिँ सब साखी[7]॥
रोँव रोँव मानुस तन ठाढ़े। सोतहिँ सोत[8] बेधि अस काढ़े॥

दो०—बरुनि बान अस ओपहिँ[9] बेधे रन बन ढंख[10]।
साउज[11] तन सब रोँवाँ, पंखिन तन सब पंख॥११४॥

चौपाई

नासिक खरग देउँ किमि जोगू। खरग खीन वहि बदन सँयोगू॥
नासिक देखि लजान्यो सूवा। सूक[12] आय बेसर होइ ऊवा॥

---

१ नैनाहा=नयन। २ अड़ार=(अटाला) समूह, ढेर। ३ चक्र के जोरा =चाक के समान। ४ बनाउरि=बाणावली। ५ सउँ=सामने। ६ साखी =वृक्ष। ७ साखी=गवाही। ८ सोत=रोमकूप। ९ ओपहिं=ओपवान हैं, अर्थात तेज़ हैं। १० ढंख=ढाक, पलास (यहां वृक्षमात्र) ११ साउज =(शवज) शिकार वाले पशु (यहां पशु मात्र) १२ सूक=शुक्र।

सुवा सो पियर हिरामनि लाजा । और भाव का बरनौं राजा ॥
सुवा सो नाक कठोर पँवारी[1] । वह कौंवल तिल पुहुप सँवारी ॥
पुहुप सुगंध करहिँ सब आसा । मकु हिरकाई[2] लेइ हम बासा ॥
अधर दसन पर नासिक सोभा । दारिम देखि सुवा मन लोभा ॥
खंजन दुहु दिस केलि कराहीं । दहुँ ओहि रस को पाव को नाहीं ॥

दो०—देखि अमीरस अधरन, भयो नासिका कीर ।
पवन बास पहुंचावै, आस्रम[3] छाँड़ न तीर ॥ ११५ ॥

चौपाई

अधर सुरंग अमीरस भरे । बिंब सुरंग लाजि बन परे ॥
फूल दुपहरी जानहु राता । फूल झरहिँ जो जो कह बाता ॥
हीरा लिहे सु बिद्रुम धारा । बिहँसत जगत होइ उजियारा ॥
भइ[4] मँजीठ बातन रंग लागे । कुसुम रंग थिर रहै न आगे ॥
अस कै अधर अमी भरि राखे । अबहुँ अछूत[5] न काहू चाखे ॥
मुख तँबोल रँग ढारहि रसा[6] । केहिमुखजोगसोअमिरितु बसा ॥
राता जगत देखि रँग राते । रुहिर[7] भरे आछहिँ बिहँसाते ॥

दो०—अमी अधर अस राजा, सब जग आस करेइ ।
केहि कहँ कँवल बिकासा, को मधुकर रस लेइ ॥ ११६ ॥

चौपाई

दसन चौक[8] बैठे जनु हीरा । औ बिच बिच रँग श्याम गँभीरा ॥

---

१ पँवारी=पै+वारी=दोपवाली) टेढ़ी । २ हिरकाइ=निकट रख कर । ३ आस्रम=इसी आशा से निकट नहीं छोड़ता, आसय=आश्रय, आशा । ४ भइ मँजीठ=मजीठ ने उससे कुछ बातें कर ली हैं, इसी से उसकी बातों का कुछ रंग मजीठ में लग गया है, नव मजीठ ने ऐसा रंग पाया है । ५ अछूत=जिसे किसी ने छुआ न हो । ६ रसा=पृथ्वी । ७ रुहिर=हँसते समय खून में डूबे हुए देख पड़ते हैं । ८ दसन चौक=दांतों का चौका (सामने के चार दांत—दो नीचे के, दो ऊपर के)

जनु भादौं निसि दामिनि दीसी। चमकि उठै तस बिहँसबतीसी॥
वह सो जोति हीरा उपराहीं। हीरा दिपहिँ सो तेहि परछाहीं॥
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुतै जोति जोति वहि भई॥
रबि ससि नखत दिपहिँ तेहि जोती। रतनपदारथमानिकमोती॥
जहँ जहँ बिहँसि सुभावहिँ हँसै। तहँ तहँ छिटकि जोति परगसै॥
दामिनि चमक न सरवरि पूजी। पुनि वहि जोति होइ को दूजी॥

दो०—हँसत दसन तस चमकै, पाहन उठै झरक्कि[1]।
दारयौं सरि जो न कै सका, फाटा हिया दरक्कि॥११७॥

चौपाई

रसना कहौं जो कह रस बाता। अमिरित बचन सुनत मन राता॥
हारे सुर चातक कोकिला। बीन बंसि ओहि बैन न मिला॥
चातक कोकिल रहैं जो नाहीं। सुनि वेइ बैन लाज छिपि जाहीं॥
भरे पेम-मधु[2] बोलै बोला। सुनै सो माति घूमि कै डोला॥
चतुर वेद मत सब ओहि पाँहाँ। रिग जजु साम अथरबन माँहाँ॥
अमर[3] भागवत पिंगल गीता। अरथ बूझि[4] पंडित नहिँ जीता॥
एक एक बोल अरथ चौगुना। इन्द्र मोहि बरम्हा सिर धुना॥

दो०—भासवती[5] ब्याकरण सब, पूरन पढ़ै पुरान।
बेद भेद सौं बात कह, तस जनु लागहि बान॥११८॥

चौपाई

पुनि बरनौ का सुरँग कपोला। एक नारँग दुइ टूक अमोला॥
पुहुप सुरँग रस अमिरितु साधे[6]। केइँ ये सुढर खेरौरा[7] बाँधे॥
तेहि कपोल बायें तिल परा। जेइँ तिल दीख सो तिलतिल जरा॥

---

१ झरक्कि=झलक उठता है (चकमक पत्थर से चिनगारी झरती हैं)
२ मधु=मदिरा। ३ अमर=अमर कोश। ४ बूझि=बुद्धि। ५ भासवती=(भास्वती) शतानंद कृत प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ। ६ सांधे=सने हुए।
७ खेरौरा=लड्डू।

जनु वह तिल घुँघची[1] करमुहाँ। बिरहबान साधे सामुहाँ॥
अगिन बान जानहु तिल सूझा। एक कटाछ लाख दस जूझा॥
सो तिल काल मेटि नहिँ गयऊ। अब वह कालकाल जग भयऊ॥
देखत नैन परी परछाहीँ। तेहि ते रात स्याम उपराहीँ॥

दो०—सो तिल देखि कपोल पर, गगन रहा ध्रुव गाड़ि।
खिनहि उठै खिन बूड़ै, डोलै नहिँ तिल छाँड़ि॥११९॥

चौपाई

स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे। कुंडल कनक रचे उजियारे॥
मनि कुँडल चमकै अति लोने। जनु कौंधा लौकहिँ[2] दुइ कोने॥
दुहुँ दिस चाँद सुरिज चमकाहीँ। नखतन भरे निरखिनहिँ जाहीँ॥
तेहि पर खुटिल[3] दीप दुइ बारे। दुहुँ खूंट दुइ ध्रुव बैसारे॥
पहरे खुंभी[4] सिंघल दीपी। जानहु भरी कचपची[5] सीपी॥
खिन खिन जबहिँ चीर सिर गहा। काँपत बीजु दुहूँ दिस रहा॥
डरपहिँ देवलोक सिँघला। परै न टूटि बीजु एहि कला॥

दो०—करहिँ नखत सब सेवा, स्रवन दीन्ह अस दोउ।
चाँद सुरिज अस गहने, और जगत का कोउ॥१२०॥

चौपाई

बरनौं गीव कुंज कै रीसी[6]। कंचन तार लागु जनु सीसी॥
कूँदइ[7] फेरि जानु गिउँ काढ़ी। हारि पुछारि[8] ठगी जनु ठाढ़ी॥
जनु हिय काढ़ि परेवा ठाढ़ा। तेहि ते अधिक भाव गिउँ बाढ़ा॥

---

१ घुँघुची=घुँघुची रत्ती। २ लौकहिं=लपकहिं। ३ खुटिल=(खोटिला) कान में पहनने का एक भूषण विशेष। ४ खुम्भी=एक कर्णभूषण विशेष। ५ कचपची=कचपचिया, कृत्तिका नक्षत्र। ६ रीसी=(ऋष्या) एक प्रकार की मृगी विशेष जिसकी गर्दन बहुत सुन्दर होती है। (ऋष्यशृङ्ग ऐसी ही मृगी से पैदा हुए थे) ७ कूदा= खराद। ८ पुछारि=लंबी पूंछ वाला मोर।

चाक चढ़ाइ साँची[1] जनु कीन्हा। बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा॥
गिउँ मयूर तमचूर जो हारा। उहइ पुकारै साँझ सकारा॥
पुनि तेहि ठाउँ परी तिर[2] रेखा। घूंट जो पीक लीक[3] तस देखा॥
धनि ओहि गीवँ दीन्ह विधि भाऊ। दहुँ का सों लै करै मेराऊ[4]॥

दो०—कंठसिरी मुकुतावली, अभरन सोहैं गीव।
को हुँ हार कँठ लागै, केइँ तप साधा जीव॥१२१॥

चौपाई

कनक दंड दुइ भुजा कलाईं। जानहु[5] फेरि कुँदेरैं[6] भाँईं॥
कदलि खाँभ की जानहु जोरीं। औ राती कर कँवल हथोरीं॥
जानहु रक्त हथोरीं बूड़ीं। रवि परभात तात वै जूड़ीं॥
हिया काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथा। रुहिर भरीं अँगुरीं तेहि साथा॥
औ पहिरे नग-जरी अँगूठी। जग बिन जीउ जीउ ओहि मूँठी॥
बाँहू कंकन टाड़[7] सलोनी। डोलत बाँहु भाव गति लोनी॥
जानहु गति बेड़िन[8] दिखराई। बाँह डोलाइ जीउ लै जाई॥

दो०—भुज उपमा पौनार[9] नहिँ, खीन भई तेहिँ चिंत।
ठाँउँ ठाँउँ बेधा हिया, ऊभि साँस लेइ निंत॥१२२॥

चौपाई

हिया थार कुच कंचन लाड़ू[10]। कनक कचोर[11] उठे कै चाँड़ू॥
पेंधे भँवर कंट[12] केतकी। चाहहिँ बेध कीन्ह कंचुकी॥
कुंदन बेलि[13] साजि जनु कूँदे। अमिरित भरे रतन दुइ मूँदे॥

---

१ सांच=मानो सांचे में ढाला है। २ तिर=तीन। ३ लीक=लकीर। ४ मेराऊ=मिलान। ५ जानहु=मानो खराद पर कुंदेरे ने खरादी हो। ६ कुंदेरे=खराद करने वाला। ७ टाड़=बहुंटा, बरा। ८ बेड़िन=वेश्या। ९ पौनार=कमल नाल। १० लाड़ू=लड्डू। ११ कचोर=(कचोल=कशकोल) पियलिया, छोटी कटोरी। (दोनों कुच मानों सोने की कटोरियां हैं जिन्हें और अधिक उठने की प्रबल इच्छा है)। १२ कंट=डंक। १३ बेलि=बेलिया, छोटी कटोरी।

जोबन बान लेहिँ नहिँ बागा[1]। चाहहिँ हुलसि हिये केहि लागा ॥
अगिन बान जानहु दोउ साधे[2]। जग बेधैं जो होहिँ न बाँधे ॥
उतँग जँभीर होइ रखवारी। छुइ को सकै राजा कै बारी ॥
दारयौं दाख फरे अनचाखे। अस नारँग दहुँ का कहँ राखे ॥

दो०—राजा बहुत मुए तपि, लाइ लाइ भुइँ माथ।
कोऊ छुवै न पारै, गये मरोरत हाथ ॥१२३॥

चौपाई

पेट पत्र जनु चंदन लावा। कुँकुँह[3] केसर बरन सोहावा ॥
खीर अहार न कर सुकुवारा। पान फूल के रहै अधारा ॥
स्याम भुवंगिनि रोमावली। नाभि ते निकसि कँवल कहँ चली ॥
आय दोउ नारँग[4] बिच भई। देखि मयूर[5] ठमकि[6] रहि गई ॥
जनहु चढ़ी नागन कै पाँती। चंदन खाँभ बास कै माती ॥
कै कालिंदी बिरह सताई। चलि प्रयागअरयल[7] बिच आई ॥
नाभि कुंड बिच बारानसी[8]। सौंह को होइ मीचु तहँ बसी ॥

दो०—सिर करवत[9] तन करसि[10] लै, बहु सीझे तेहिँ आस।
बहुत धूम घूँघट मुए, उतर न देइ निरास ॥१२४॥

चौपाई

चोटी पीठ लीन्ह वैं पाछे। जनु फिर चली अपछरा काछे[11] ॥

---

१ बागलेना—रुकना। २ सांधे=साधन किये हुए। ३ कुंकुंह=रोरी। ४ नारंगा=नारंगी से कुच। ५ मयूर=मोर की सी गर्दन। ६ ठमकि=ठिटक कर। ७ अरयल=ग्राम विशेष जो प्रयाग के सामने जमुना के उस पार है। ८ बारानसी=बनारस (काशी)। ९ करवत=आरा। १० करसी=सूखे कंडे (काशी में लोग मनोवांछित फल पाने के लिये आरा से अपना सिर कटवाते थे और प्रयाग में सूखे कंडों की आग में जलते थे इसी बात को इसमें इंगित किया है)। ११ काछे=पोशाक पहने हुए—बनी ठनी।

मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी[1]॥
लहरैं लेत पीठ जनु चढ़ा। चीर ओढ़ावा कँचुलि मढ़ा॥
दहुँ का कहँ अस बेनी कीन्ही। चंदन बास भुवंगहि लीन्ही॥
किसुन[2] की कला चढ़ा वह माथे। तब सो छूट अब छूट न नाथे॥
कारी कँवल गहे मुख देखा। ससि पाछे जनु राहु विसेषा॥
को देखै पावै वह नागू। सो देखे माथैं मनि भागू॥

दे०—पन्नग पंकज मुख गहे, खंजन तहाँ बईठ।
छात सिंघासन राज धन, ताकहँ होय जो दीठ॥१२५॥

चौपाई

लँक पुहुमि अस आहि न काहू। केहरि कहौं न ओहि सरि ताहू॥
बसा[3] लंक बरनी जग झीनी[4]। तेहि ते अधिक लंक वह खीनी॥
परिहसु[5] पियरि भई तेहि बसा। लिहे डंक मानुष कहँ डसा॥
मानहु नलिन खंड दुई भया। दुहुँ बिच कनक तार रहि गया॥
हिय सो मोरि चलै वह तागा। पैग देत कत[6] सहँसक[7] लागा॥
छुद्रघंटि[8] मोहहिँ नर राजा। इन्द्र अखाड़ बाज जनु बाजा॥
मानहु बीन गहे कामिनी। गावहिँ सबै राग रागिनी॥

दो०—सिंह न जीता लंक सरि, हारि लीन्ह बनबासु।
तेहि रिस रकत पियत फिरै, खाइ मारि कै मासु॥१२६॥

चौपाई

नाभी कुंडर[9] मलय समीरू। समुँद भँवर जस भँवै गँभीरू॥
बहुतै भँवर बौंडरा[10] भये। पहुँचि न सके सरग कहँ गये॥

---

१ कारी=काली नाग। २ किसुन=श्रीकृष्ण। ३ बसा=बर्रं, भिड़। ४ झीनी=बारीक। ५ परिहसु=परिहास जनित दुःख, खिसी। ६ कत=कितना (बहुत अधिक)। ७ सहँसक=संसय, डर। ८ छुद्रघंटि=करधनी (घुंघरूदार)। ९ नाभी कुंडर=नाभिकुंड। १० बौंडरा=बवंडर।

अबहिँ सो आहि कँवल कै करी । न जनौ कौन भँवर कहँ धरी ॥
चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू[1] । दहुँ को पाव को राजा भोजू ॥
को ओहि लागि हेवंचल[2] सीझा । का कह ऐसि रची को रीझा ॥
कोंवल कमल सुगंध सरीरू[3] । समुंद लहर सोहै तन चीरू ॥
झूलहिँ रतन पाट के झोंपा[4] । साजि मयन[5] दहुँ का कहँ कोंपा ॥

दो०—बेधि रहा जग बासना, परिमल मेद सुगंध ।
तेहि अरघान[6] भँवर सब, तजैं न नीबीबंध[7] ॥१२७॥

चौपाई

बरनौं नितँब लंक कै सोभा । औ गज-गवन देखि सब लोभा ॥
जुरे जंघ सोभा अति पाये । केरा खाँभ फेरि जनु लाये ॥
कँवल चरन अति रात बिसेखी । रहैं पाट पर भूमि न देखी ॥
देउता हाथ हाथ पग लेहीँ । जहँ पग परै सीस तहँ देहीँ ॥
माथे भाग न कोउ अस पावा । चरन कँवल लै सीस चढ़ावा ॥
चूरा[8] चाँद सुरिज उजियारा । पायल बीच करहिँ झनकारा ॥
अनवट[9] बिछियाँ नखत तराईं । पहुँचि सकै को पायनताईं ॥

दो०—बरनि सिँगार न जान्यों, नख सिख जैसे अभोग[10] ।
तस जग कछू न पायों, उपम देउँ ओहि जोग॥१२८॥

---

१ खोज=पैर का निशान (भग की उपमा हिरनी के खुर में चिन्ह से जाती है)। २ हेवंचल=हिमाचल। ३ सरीरू-पद्मिनी नायिका की भग से कमल की गंध आती है (इसमें यही कथन है) । ४ झोंपा=गुच्छा, (नीवीबंध के छोर के) फुँदना । ५ मयन=मदन (कामदेव) । ६ अरघान=सुगंध। ७ नीबीबंध=नीबी की गांठ। ८ चूरा=पैर के कड़े। ९ अनवट=अँगूठा (पैर के अँगूठे में पहनने का जेवर)। १० अभोग=अभुक्त जिसे किसी ने भोग न किया हो, अछूता ।

१२—बारहवां खंड

(पूर्वानुराग वर्णन)

चौपाई

सुनि कै राजा गा मुरझाई । जानहु लहरि[1] सुरजि कै आई ॥
पेम घाउ दुख जान न कोई । जेहि लागै जाने पै सोई ॥
परा सो पेम समुन्द्र अपारा । लहरहिँ लहर होय बिसँभारा[2] ॥
बिरह भँवर होइ भाँवर देई । खन खन जीव हिलोरा लेई ॥
खनहि निसाँस बूड़ि जिउ जाई । खनहि उठै निसँसइ[3] बौराई ॥
खनहि पीत खन होइ मुख सेता । खनहि चेत खन होइ अचेता ॥
कठिन मरन ते पेम व्यवस्था[4] । ना जिउ जाय न दसौं-अवस्था[5] ॥

दो०—जेइ लेनहार[6] लीन जिउ, हरै तरासहिं ताहि ।
इतना बोलि न आव मुख, करै तराहि तराहि ॥१२६॥

चौपाई

जहँ लग कुटुम्ब लोग औ नेगी[7] । राजा राइ आये सब वेगी ॥
जाँवत गुनी गाररू[8] आए । ओझा[9] बैद सयान बोलाए ॥
चरचैं चेष्टा निरखहिँ नारी । नियर नाहिँ ओषद तेहि बारी ॥
है राजहिँ लछिमन कै करा[10] । सकति-बान मोहै हिय परा ॥

---

१ सूर्य की लहर=(लू) लूक । २ बिसंभारा=बे सँभार, व्याकुल । ३ निसंसइ=निःसंशय, निःसंदेह । ४ व्यवस्था=स्थिति । ५ दसौं अवस्था= मरण । ६ लेनहार=जिस लेने वाले ने प्राण लिये हैं, वही इस त्रास को दूर कर सकता है । ७ नेगी=नौकर-चाकर । ८ गाररू=(गारुड़ी) सर्प विष झारनेवाले । ९ ओझा=तंत्र यंत्र करने वाले । १० करा= (कला) दशा ।

नहिँ सो राम हनुवँत बड़ि दूरी। को लै आव सजीवन मूरी॥
विनय करहिँ जेते गढ़पती। का जिउ कीन्ह कौनि मति मती॥
कहौ सो पीर काहि बिन खाँगा। समुँद सुमेरु आव तुम माँगा॥
दो०—आवन तहाँ पठावहिँ, देहिं लाख दस रोक[1]।
है सो बैलि जेहिँ बारी, आनहिँ सबै बरोक[2]॥१३०॥

चौपाई

जो भा चेत उठा बैरागा। बाउर जनहु सूति उठि जागा।
आवत जग बालक जस रोवा। उठा रोइ हा ज्ञान सो खोवा॥
हौं तो अहा अमर पुर जहाँ। इहाँ मरनपुर आयों कहाँ॥
कोइ उपकार मरन कर कीन्हा। सकति जगाइ जीउ हरि लीन्हा॥
सोवत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोवत बिधि राखा॥
अब जिउ तहाँ ईहाँ तन सूना। कब लग रहै परान बिहूना[3]॥
जो जिउ घटै काल के हाथा। घटन नीक पै जीवन[4] साथा॥
दो०—अहुँठ[5] हाथ तन सरवर, हिया कमल तेहि माँहि।
नैनन जानी नीयरे, कर पहुँचब अवगाहि[6]॥ १३१॥

चौपाई

सबन कहा मन समझौ राजा। काल सेतीं[7] कोउ जूझि न छाजा॥
तासौं जूझि जात जो जीता। जातन किसुन तजत गोपीता[8]?॥
औ न नेह काहू सों कीजै। नाउँ मीठ खाए जिउ दीजे॥
पहिले सुख सनेह जब जोरा। पुनि है कठिन निबाहब ओरा[9]॥
अहुँठ हाथ तन जैस सुमेरू। पहुंचि न जाइ परै तस फेरू॥
गगन दिष्ट[10] सो जाय पहूँचा। पेम अदिष्ट[11] गगन ते ऊँचा॥

---

१ रोक=नगद रुपया। २ बरोक=(बलौकः) बलवान लोग, बल करके, सेना के बल से। ३ बिहून=बिहीन, बिना। जीवन=जीवनाधार, प्रेमपात्र। ५ अहुंठ=साढ़े तीन (हुंठा)। ६ अवगाहि=कठिन। ७ सेतीं =से। ८ गोपीता=गोपियां। ९ ओर=अंत। १० दिष्ट=दृश्यामान जो दिखाई पड़ सकै। ११ अदिष्ट=जो देखा (समझा) न जा सकै।

ध्रुव ते ऊँच पेम धू[1] ऊबा । सिर दै पाँउँ देइ सो छुवा ॥
दो०—तुम राजा औ सुखिया, करहू राज सुखभोग ।
यहि रे पंथ सो पहुँचे, सहै जो दुःख वियोग ॥१३२॥

चौपाई

सुवैं कहा सुनु मो सों राजा । करब पिरीति कठिन है काजा ॥
तुम अबहीं जेई घर पोई । कँवल न भेंटा भेंटी कोई ॥
जानहिँ भँवर जो तिन्ह पथ लुटे । जीउ दीन्ह औ दिहेउ न छुटे ॥
कठिन आहि सिंघल कै राजू । पाइय नाहिँ राज के साजू ॥
ओहि पथ जाय जो होय उदासी । जोगी जती तथा सन्यासी ॥
भोग छोड़ि धैयत वह भोगू । तजि सो भोग कोउ करत न जोगू ॥
तुम राजा चाहहु सुख पावा । जोगिहिँ भोग करत नहिँ भावा ॥
दो०—साधहिँ[2] सिद्धि न पाइय, जौ लग साध न तप्प[3] ।
सो पइ जानैं बापुरे, सीस जो करैं अरप्प[4] ॥१३३॥

चौपाई

का भा जोग कहानी कथे । निकसै घीउ न बिन दधि मथे ॥
जौलहि आपु हेराइ न कोई । तौ लहि हेरत पाव न सोई ॥
पेम पहार कठिन बिधि गढ़ा । सो पै जाइ सीस सों चढ़ा ॥
सूरि-पंथ[5] कर उठा अँकूरू । चोर चढ़ा कि चढ़ा मंसूरू[6] ॥
तुइँ राजा का पहिरसि कंथा[7] । तोरे घरहिँ माँझ दस पंथा ॥
काम क्रोध तिसना मद माया । पाँचौ चोर न छाँड़हि काया ॥
नौ सैंधैं घट के मँझियारा । घर मूँसैं दिन के उँजियारा ॥
दो०—अब हूं जाग अजानी, होत आव निसि भोर ।
पुनि कछु हाथ न लागै, मँसि जाहिँ जब चोर ॥१३४॥

---

१ धू=(ध्रुव)। २—साध=इच्छा। ३—तप्प=तपस्या। ४—अरप्प=अर्पण ५—सूरिपथ=सूली चढ़ने का रास्ता। ६—मंसूर=एक प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी फकीर जिसे 'सोऽहं' जपने के कारण बगदाद के शाह ने सूली पर चढ़वा दिया था। ७ कंथा=गुदड़ी।

चौपाई

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार टकटका लागा ॥
नैन ढरहिँ मोती औ मूँगा। जस गुर खाय रहा होइ गूँगा ॥
हिय की जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधियर भा बूझा ॥
उलटि दिष्टि माया सों रूठी। पलटि न फिरै जानि कै झूठी ॥
जो पै नाहिन अस्थिर[1] दसा। जग उजार का कीजै बसा ॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाइ लेइ सो चेला ॥
अबकी पतँग भृङ्ग की करा[2]। भँवर होहुँ जेहिँ कारन जरा ॥

दो०—फूल फूल फिरि पूँछौं, जो पहुँचौं वह केत[3]।
तन न्यौछावरि करि मिलौं, ज्यों मधुकर जिउ देत ॥१३५॥

चौपाई

बंधू मीत बहुत समुझावा। मान न राजा गवन[4] भुलावा ॥
उपजै पेम पीर जेहि आई। परबोधे होइ अधिक सवाई ॥
अमिरित बात कहत विष जाना। पेम को बचन मीठ कै माना ॥
जो ओहि विषै मारि कै खाई। पूँछौ ता सों पेम मिठाई ॥
पूँछौ बात भरथरिहिँ जाई। अमिरित राज तजा विष खाई ॥
औ महेस बड़ सिद्ध कहावा। उनहू विषै कंठ पै लावा ॥
होत उदौ रवि किरन निकासा। हनुमत है को देइ अस्वासा[5] ॥

दो०—तुम सब सिद्धि मनावहु, है गनेस सिधि लेउ।
चेला की न चलावहु, मिलै गुरू जेहिँ भेउ ॥१३६॥

---

१ अस्थिर = (स्थिर) सदैव एक सी रहने वाली। २ पतंग भृङ्ग की करा = पतंग भृङ्ग की कला। कला = भांति, तरह। ३ केत = केतकी ४ गवन भुलावा = रास्ता भूला हुआ, भटका हुआ। ५ अस्वासा = अश्वासन, दिलासा। (पहिले कह आये हैं कि राजा की दशा लक्ष्मण की सी है अर्थात् शक्तिबाण लगा है। अतः अब कहते हैं कि वहां तो आश्वासन देने वाले हनुमान जी थे, यहां हनुमान कौन बनता है)।

१३—तेरहवाँ खंड

जोगी होना

चौपाई

तजा राज राजा भा जोगी। औ किँगरी[1] कर गहेउ बियोगी॥
तन बिसँभर मन बाउर लटा[2]। उरझा पेम परी सिर जटा॥
चन्द्रबदन औ चंदन देहा। भसम चढ़ाय कीन्ह तन खेहा॥
मेखल सिंगी चक्र धँधारी[3]। लीन्ह हाथ तिरसूल सँभारी॥
कंथा पहिर डंड कर गहा। सिद्ध होय कहँ गोरख कहा॥
मुद्रा स्रवन कंठ जयमाला। कर अधियान[4] काँध बघछाला॥
पाँवरि[5] पाँय लीन्ह सिर छाता। खप्पर लीन्ह भेस करि राता॥
दोहा—चला भुगुति[6] माँगै कहँ, साज किया तप जोग।
सिधि होइ पदुमति[7] पाये, हिरदै जेहिक बियोग॥१३७॥

चौपाई

गनक[8] कहैं गनि गवन न आजू! दिन[9] लै चलहु होय सिधि काजू॥
पेम-पंथि दिन घरी न देखा। तब देखै जब होय सरेखा[10]॥
जेहि तन पेम कहाँ तेहिँ माँसू। कया न रकत नैन नहिँ आँशू॥
पंडित भुला न जानै चालू[11]। जीव लेत दिन पूंछ न कालू॥
सती कि बौरी पूँछै पाँड़े। औ घर बैठि न सेंतै भाँड़े॥
मरै जो चलै गंग गति[12] लेई। तेहि दिन तहाँ घरी[13] को देई॥
मैं घरबार कहाँ कर पावा। घर काया पुनि अंत परावा॥

---

१ भिंगरा=(किन्नरी) चिकारा। २ लटा=खीन। ३ चक्र-धंधारी=गोरख-धंधे का छल्लेदार चक्र। ४ अधियान=सुमिरनी (छोटी माला) ५ पांवरी=खड़ाऊँ। ६ भुगुति=भोजन, भीख। ७ पदुमति=पदमावती। ८ गनक=ज्योतिषी। ९ दिन=मुहूर्त, साइत। १० सरेख=समझदार। ११ चाल=गमन की साइत। १२ गति=मोक्ष। १३ घरी=शुभ महूर्त।

दोहा—हारे पखेरू पंखी, जेहि बन मोर निबाहु।
खेलि चला तेहि बन कहँ, तुम अपने घर जाहु ॥१३८॥

चौपाई

चहुँ दिस आन[1] सोंटियन[2] फेरी। भइ कटकाई[3] राजा केरी ॥
जाँवत अहैं सकल अरकाना[4]। साँबर[5] लेउ दूर है जाना ॥
सिंघल दीप जाइ सब चाहा। मोल न पाउब जहाँ बेसाहा[6] ॥
सब पै निबहै आपन साँठो[7]। साँठो बिन सो रह मुख माँठी ॥
राजा चला साजि कै जोगू। साजौ बेगि चलौ सब लोगू ॥
गरब जो चढ़े तुरी की पीठी। अब सो तजहु सरग[8] सों डीठी ॥
मंत्रा[9] लेहु होउ संग लागू। गुदरी पहरि होहु सब आगू ॥
दोहा—का निचिंत रे मनई[10], अपनी चिंता आछु।
लेहु सजग है अगमन, फिरि पछितासि न पाछु ॥१३९॥

चौपाई

बिनवै रतनसेन कै माया। माथे छात, पाट नित पाया[11] ॥
बिलसहु नौ लख लच्छि पियारी। राज छाँड़ि जिन होहु भिखारी ॥
नित चंदन लागै जेहि देहा। सो तन देख भरत अब खेहा ॥
सब दिन रहेउ करत तुम भोगू। सो कैसे साधब तप जोगू ॥
कैसे धूप सहब बिन छाँहा। कैसे नींद परब भुइँ माँहा ॥
कैसे ओढ़ब कामरि कंथा। कैसे पाँइ चलब तुम पंथा ॥
कैसे सहब खिनहि खिन भूखा। कैसे खाब कुरकुटा[12] रूखा ॥

---

१ आन=दोहाई, मनादी। २ सोंटियन=सोंटवर्दार, नकीब। ३ कटकाई=फौज की तैयारी। ४ अरकान=(फा० ارکان) मंत्री, बड़े सरदार। ५ सांबर=(संबल) राह का खर्च। ६ बेसाहा=सौदा। ७ सांठी=(सांठ) धन, पुंजी। ८ सरग सों डीठी=ईश्वर पर भरोसा कर के। ९ मंत्रा=मन्त्र, दीक्षा। १० मनई=मनुष्य। ११ माथे छात, पाट नित पाया=सिर पर छत्र रहता है और पैर सदा रेशम पर रहते हैं। १२ कुरकुटा=रोटी का टुकड़ा।

दोहा—राज पाट दर[1] परिगन[2], सब तुम सों उजियार।
बैठि भोग रस मानहु, कै न चलहु अँधियार ॥१४०॥

चौपाई

मोहिँ यह लोभ सुनाउ न माया। काकर सुख काकर यह काया ॥
जो निश्रान[3] तन होइहै छारा। माटी पोखि मरै को भारा ॥
का भूलउँ यहि चंदन चोवा। बैरी जहाँ अंग के रोवाँ ॥
हाथ पाउ सरवन मुख आँखी। ये सब भरहिँ उहाँ पुनि साखी ॥
सोत सोत[4] तन बोलहि दोखू। कहु कैसे होइहै गति मोखू ॥
जो भल होत राज औ भोगू। गोपीचंद न साधत जोगू ॥
उनहू सिष्टि जो दीख परेवा[5]। तजा राज कजली बन सेवा ॥

दोहा—देखि अंत अस होइ है, गुरू दीन्ह उपदेस।
सिंघलदीप जाब मैं, तुम सों मोर अदेस[6] ॥ १४१ ॥

चौपाई

रोवै नागमती रनिवासू। केइँ तुम्ह कंत दीन्ह बनबासू ॥
अब को हम करिहै भोगिनी। हमहु साथ होइहैं जोगिनी ॥
कै हम लावहु अपने साथा। कै अब मारि चलहु सइँ[7] हाथा ॥
तुम अस बिछुरे पीउ पिरीता। जहँवाँ राम तहाँ सँग सीता ॥
जौलहि जिउ सँग छाँड़ न काया। करिहौं सेव[8] पखरिहौं पाया ॥
भलेहिँ पदुमिनी रूप अनूपा। हमतें कोई न आगर[9] रूपा ॥
भँवै[10] भलेहिँ पुरुषन कै डीठी। जिन जाना तिन दीन्ह न पीठी ॥

---

१ दर=दल, सेना। २ परिगन=परिजन, नौकर चाकर, सेवक-जन। ३ निश्रान=निदान, अंत में। ४ सोत सोत=सकल रोम कूप। ५ परेवा=उड़नेवाली (अस्थिर)। ६ अदेस=प्रणाम। ७ सइं=से। ८ सेव=सेवा। ९ आगर=बढ़कर। १० भवै·······पीठी=पुरुषों की दृष्टि अच्छी वस्तु की ओर अवश्य घूमती है (पुरुष लोग अच्छी स्त्री को पसंद करते हैं) और जिसको अच्छी समझ लेते हैं उसे छोड़ते नहीं।

दोहा—दीन्ह असीस सबहिँ मिलि, तुम माथे नित छात।
राज करहु गढ़ चितवर, राखहु पिय अहिवात[1] ॥१४३॥

चौपाई

तुम तिरिया मति हीन तुम्हारी। मूरुख सो जो मतै[2] घर नारी ॥
राघौ जो सीता सँग लाई। रावन हरी कौन सिधि पाई ॥
यह संसार सपन जस हेरा। अंत न आपन को केहि केरा ॥
राजा भरथरि सुने न अजानी। जेहि के घर सोरह सै रानी ॥
कुच लीन्हे तरवा सोहराई। भो जोगी कोउ संग न लाई ॥
जोगिहि कहा भोग सों काजू। चहै न मेहरी[3] चहै न राजू ॥
जूड़[4] कुरकुटा पै भखु[5] चाहा। जोगिहिँ तात भात[6] सों काहा ॥
दोहा—कहा न मानै राजा, तजी सबाहीँ भीर।
चला छाँड़ि कै रोवत, फिरि कै दीन्ह न धीर ॥१४३॥

चौपाई

रोवै माता फिरै न बारा। रतन चला जग भा अँधियारा ॥
बार मोर रे जियाउर[7] रता। सो लै चला सुवा परवता ॥
रोवहिँ रानी तजहिँ पराना। फोरहिँ बरै[8] करहिँ खरिहाना[9] ॥
चूरहिँ गिउ-अभरन उर हारू। अब का कहँ हम करब सिँगारू ॥
जा कहँ कही रहसि[10] कै पीऊ। सोइ चला का कर यह जीऊ ॥
मरै चहहिँ पै मरैं न पावैं। उठी आग सब लोग बुझावैं ॥
घरी एक सुठि भयो अँदोरू[11]। पुनि पाछे बीता होइ रोरू[12] ॥
दोहा—टूट मनै नौ मोती, फूट मनै नौ काँच।
लीन्ह समेटि सब अभरन, होइगा दुख कर नाँच ॥१४४॥

---

१ अहिवात=(आधिपत्य) सोहाग। २ मतै घर नारी=घर की स्त्री का मत मानै। ३ मेहरी=स्त्री। ४ जूड़=ठंढा, बासी। ५ भखु=भोजन। ६ तात भात=गर्म चावल। ७ जियाउर रता=जिस पर मेरा जी अनुरक्त था। ८ बरै=(वलय) चूड़ी। ९ खरियान=ढेर। १० रहसि कै=खुश होकर। ११ अंदोरू=आन्दोलन। १२ रोरू=शोर।

चौपाई

निकसा राजा सिंगी पूरी। छाँड़ि नगर मेला[1] होइ दूरी॥
राय राँक सब भए बियोगी। सोरह सहस कुंवर भे जोगी॥
माया मोह हरी सें हाथा। देखेनि बूझि निश्रान[2] निसाथा[3]॥
छाँड़ेन लोग कुटुंब सब कोऊ। भे निरार दुख सुख तजि दोऊ॥
सँवरैं राजा सोइ अकेला। जेहिँ रे पंथ खेले होइ चेला॥
नगर नगर औ गाँवहिँ गाँवाँ। छाँड़ि चला सब ठावहिं ठाँवा॥
का कर घर का कर मढ़[4] माया। ता कर सब जाकर जिउ काया॥

दोहा—चला कटक जोगिन कर, कै गेरुवा सब भेसु।
कोस बीस चारहु दिस, जानहु फूला टेसु॥ १५॥

चौपाई

आगे सगुन सगुनियन[5] ताका। दहिउ माँछ रूपे कर टाका॥
भरे कलस तरुनी चल आई। दहिउ लेहु ग्वालिन गोहराई॥
मालिनि आई मौर लै गांथे। खंजन बैठ नाग[6] के माथे॥
दाहिन मिरिग आय गा धाई। प्रतीहार[7] बोला खर[8] बाँई॥
बिरिष[9] सँवरिया दाहिन बोला। बायें दिस गारुर[10] तहँ डोला॥
बाँयें अकासी[11] धौरी आई। लोवा दरस आय दिखराई॥
बायें कुररी[12] दाहिन कोंचा[13]। पहुँचै भुगुति जैस मन रोचा॥

दोहा—जा कहँ सगुन होय अस, औ गवनहिं जेहि आस।
अष्ट महा सिधि पंथहिं, जस कबि कहा बियास॥१४६॥

---

१ मेला=मेलान किया, पड़ाव डाला। २ निश्रान=निदान, अंत में। ३ निसाथा=अकेला (निस्तथा) ४ मढ़=घर। ५ सगुनियन= सगुन परखने वाले। ६ नाग=हाथी। ७ प्रतीहार=तीतर। ८ खर=गदहा। ९ बिरिष=(वृष) बैल, सांड। १० गारुर=गिद्ध पक्षी। ११ अकासी धौरी=सफेद चील्ह, क्षेमकारी। १२ कुररी=टिटिहरी। १२ कोंच= क्रौंच पक्षी।

चौपाई

भयो पयान चला तब राजा । सिँगिनाद जोगिन कर बाजा ॥
किहिन आजु कछु थोर पयाना । काल्हि पयान दूर है जाना ॥
ओहि मेलान[1] जो पहुँचै कोई । तब हम कहब पुरुष भल सोई ॥
है आगे परबत कै बाटी[2] । बिषम पहार अगम सुठि घाटी ॥
बिच बिच खोह नदी औ नारा । ठाँवहिँ ठाँव बैठ बटपारा[3] ॥
हनुवँत[4] केर सुनत पुनि हाँका । दहुँ को पार होय को थाका ॥
अस मन जानि सँभारहु आगू । अगुआ केर होहु पछलागू ॥

दो०—करहिं पयान भोर उठि नितहिँ कोस दस जाहिँ ।
पँथी पंथा जे चलहिँ ते कि राह उबटाहिँ[5] ॥ १४७ ॥

चौपाई

करहु दिष्टि थिर होहु बटाऊ[6] । आगू देखि धरहु भुइँ पाऊ ॥
जो रे उबटि[7] भुइँ परे लुभाने । गये मारे पँथ चलै न जाने ॥
पायन पहिर लेहु सब पँवरी[8] । काँट न चुभै न गड़ै कँकवरी[9] ॥
परे आय अब बन खँड माँहाँ । दँडकारन्य[10] बिजनबन[11] जाँहाँ ॥
सघन ढाँख बन चहुँदिस फूला । बहु दुख मिलै उहाँ कर भूला ॥
झाखर जहाँ सो छाँड़हु पंथा । हिलगि[12] मकोइ न फारहु कंथा ॥
दहिने बिदर चँदेरी बाँयें । दहुँ केहि होब बाट दुइ ठाँयें ॥

दो०—एक बाट गइ सिंघल दूसर लंक समीप ।
हैं आगे पँथ दोऊ दहुँ गवनब केहि दीप ॥ १४८ ॥

---

१ मेलान = पड़ाव, ठहरने का मुकाम । २ बाटी = राह । ३ बटपारा = डाकू । ४ हनुवंत = बन्दर । ५ उबटाना = ठोकर खाना (जैसे घोड़ा नाखून लेता है) । ६ बटाऊ = बटोही, पथिक । ७ उबटि भुइँ परे = ठोकर खाकर ज़मीन पर गिरे । ८ पंवरी = खड़ाऊं । ९ कंकवरी = कंकड़ी । १० दँडकारन्य = दण्डकारण्य । ११ बिजनबन = निर्जन वन । १२ हिलगना = उरझना ।

चौपाई

ततखन बोला सुवा सरेखा। अगुवा सोइ पंथ जेइँ देखा॥
सो का उड़ न जेहि तन पाँखू। लै सो परासहिं बूड़ै साँखू॥
जस अंधा अंधे कर संगी। पंथन पाव होय सहलंगी[1]॥
सुनु मत काज चहसि जो साजा। बोजा नगर विजयगिरि राजा॥
पहुँचौ जहाँ गोंड़[2] औ कोला। तजु बाँयें अँधियार[3] खटोला[4]॥
दक्खिन दहिने रहै तिलंगा। उतर माँझ होइ गढ़ा[5] कटंगा[6]॥
माँझ रतनपुर सिंह दुआरा[7]। झारखंड दै बाँउँ पहारा॥

दो०—आगे बाँउँ उड़ैसा बाँयें देहु सो बाट।
दहिनावरत लाइ कै उतरु समुँद के घाट॥१४६॥

चौपाई

होत पयान जाय दिन गेरा[8]। मिरगारन महँ होत बसेरा॥
कुस साथरि भइँ सौंर[9] सुपेती। करँवट[10] आइ बनै भुइँ सेती॥
कया मलिन जस भूमि मलोजा। चलि दसकोस ओस[11] तन भीजा॥
ठाँउँ ठाँउँ सब सोवहिं चेला। राजा जागै आपु अकेला॥
जेहि के हिये पेम रङ्ग जामा। का तेहि नींद भूख बिसरामा॥
बन अँधियार रैनि अँधियारी। भादौं बरन भई निस कारी॥
किंगरी हाथ गहे बैरागी। पाँच तन्तु[12] एकै धुनि लागी॥

---

१ सहलंगी=साथ ही में लगा रहनेवाला। २ गोंड़=गोड़ों और कोलों का देश (गोंड़वाना)। ३ अँधियार=अनूजार नामक नगर जो इसी नाम की नदी के किनारे पर था। यह नदी होशंगाबाद के ज़िले में है। ४ खटोला=सागर, दमोह, शाहगढ़ इत्यादि के ज़िले प्राचीन काल में खटोला नाम से प्रसिद्ध थे। ५ गढ़ा=जबलपुर के निकट है। ६ कटङ्गा=जबलपुर के निकट है। ७ सिंहदुआरा=जिसे अब 'छिंदवारा' कहते हैं। ८ गेरा जाना=व्यतीतकर कर देना। ९ सौंर सुपेती=ओढ़ने का वस्त्र पसीना की (चादर व रजाई) और बिछौना। १० करवट=तकिया। ११ ओस=बूँदें। १२ तंतु=तार।

दो०—नैन लागु तेहि मारग पद्मावत जेहि दीप।
जैस सेवा तिहि सेवै वन चातक जल सीप ॥१५०॥

१४—चौदहवाँ खंड

(राजा रतनसेन—गजपति संवाद)

चौपाई

मासक लाग चलत तेहि बाटा। उतरे जाय समुँद के घाटा॥
रतनसेन भा जोगी जती। सुनि भेंटै आवा गजपती[१]॥
जोगी आप कटक सब चेला। कौन दीप कहँ चाहहु खेला॥
भल आये अब माया[२] कीजै। पहुनाई[३] कहँ आयसु दीजै॥
सुनहु गजपती उतरु हमारा। हम तुम एकै भाव निरारा॥
सो तेहि कहँ जेहि महँ भव भाऊ[४]। जो निरभव[५] तेहिं लाइ नसाऊ॥
इहै बहुत जो बोहित पाऊँ। तुम्ह तें सिंघलदीप सिधाऊँ॥
दो०—जहाँ मोहि निजु[६] जाना कटक होहुँ लै पार।
जो रे जिअउँ तो लै फिरौं मरौं तो ओहि के बार॥१५१॥

चौपाई

गजपति कहा सीस पर माँगा। एतना बोल न होइहै खाँगा॥
मैं सब देउँ आनि नव गढ़े। फूल सोइ जो महेसुर चढ़े॥
पै गोसाइँ सुनु एक बिनाती[७]। मारग कठिन जाब केहि भाँती॥

---

१ गजपती=कलिङ्ग देश के राजा जिसके देश में हाथी बहुत पैदा होते थे। यह राजा चित्तौर के राजों के वंश से था। २ माया=कृपा। ३ पहुनाई=मेहमानी। ४ भव-भाऊ=सांसारिक भाव। ५ निरभव=सांसारिक भाव रहित अर्थात् त्यागी। ६ निजु=निश्चय कर के। ७ बिनाती=बिनती।

सात समुन्द्र असूझ अपारा। मारहि मगर मच्छ घरियारा॥
उठै हिलोर न जाय सँभारी। भागन कोउ निबहै बैपारी॥
तुम सुखिया अपने घर राजा। एता दुख जो सहहु केहि काजा॥
सिंघलदीप जाय सो कोई। हाथ लिहें आपन जिउ होई॥

दो०—खार खीर दधि अजि[1] सुरा पुनि किलकिला अकूत[2]।
को चढ़ि नांघै समुद ये है काकर अस बूत[3]॥१५२॥

चौपाई

गजपति यह मन सकती सीऊ[4]। पै जेहि पेम कहाँ तेहि जीऊ॥
जो पहिलेइँ सिर दै पगु धरई। मूए केर मीचु का करई॥
सुख सँकलपि दुख साँवर[5] लीन्हा। तब पयान सिंघल कहँ कीन्हा॥
भँवर जान पै कँवल पिरीती। जेहि महँ बिथा पेम कै बीती॥
औ जेइँ समुँद पेमकर देखा। तेइँ यह समुँद बूँद परि-लेखा[6]॥
सात समुँद सत लीन्ह सँभारा। जो धरती, का गरुअ पहारा॥
जो पै जीउ बाँधि सत बेरा। बरु जिउ जाय फिरै ना फेरा॥

दोहा—रंग[7] नाथ हौं चेला हाथ ओही के नाथ[8]।
गहे नाथ सो खीँचै फिरै न फेरे माथ॥ १५३॥

चौपाई

पेम समुंद्र ऐसा अवगाहा। जहां न वार न पार न थाहा॥
जे यहि समुँद अगाधहिँ परे। जो[9] अवगाह हंस होइ तरे॥
हौं पदमावत कर भिखमंगा। दिष्टि न आव समुद औ गंगा॥

---

१ अजि =(आज्य) घी। २ अकूत=बे अन्दाज़, बहुत बड़ा—इस समुद्र का नाम कवि ने आगे के खँड में 'मानसरोवर कहा है। ३ बूत= बल, शक्ति। ४ सकतीसीऊ=शक्तिसींव, बलसींव, बली। ५ सांवर=(संवल) राहखर्च। ६ परिलेखा=समझा। ७ रङ्ग=अनुराग, प्रेम। ८ नाथ=नकेल, नाथ में पड़ी हुई रस्सी (जैसे बैलों की)। ९ जो अवगाह=यद्यपि अगाध हो।

अस मन जानि समुद महँ परौं। जो कोउ खाय बेग निस्तारौं ॥
जेहि कारन गिउँ काँथरि कंथा। जहाँ सो मिलै जाऊँ तेहि पंथा ॥
अब यहि समुँद पर्यौं है मरा। मुए केर पानी का करा ॥
मरि[1] भा कोउ कतहुँ ले जाऊ। ओहि के पंथ कोउ धरि खाऊ ॥

दोहा—सारग सीस धर[2] धरती हिया सो पेम समुंद।
नैन कौड़िया[3] है रहे लै लै उठहिं सो बुंद ॥ १५४ ॥

चौपाई

कठिन वियोग जोग दुख दाहू। जनम जरत होइ ओर निबाहू ॥
डर लज्या तेहि दोउ गँवानी। देखै कछु नहि आगि न पानी ॥
आगि देखि वह आगे धावा। पानी देखि वह सौंहँ धँसावा ॥
जस बाउर न बुझाये बूझा। तौ नहिँ भाँति जाय का सूझा ॥
मगरमच्छ डर हिये न लेखा। आपुहिं चहै पार भा देखा ॥
औ न खाइँ ओहि सिंह सदूरा[4]। काठहु चाहि अधिक सो झूरा ॥
कया मया सँग नाहीं आथी[5]। जेहिं जिउ सौंपा सोई साथी ॥

दोहा—जो कुछ दरब[6] अहा संग दान दीन्ह संसार।
का जानौं केहि के सत दइउ उतारै पार ॥ १५५ ॥

चौपाई

धनि जीवन औ ताकर होया। ऊँच जगत महँ जाकर दीया ॥
दिया सो सब जप तप उपराहीं। दिया बराबर जग कछु नाहीं ॥
एक दिया तेइ दस गुन लाहा[7]। दिया देखि सब जग मुख चाहा[8] ॥
दिया करै आगे उजियारा। जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा ॥

---

१ मरि भा = मर चुका। २ धर = धड़, शरीर। ३ कौड़िया = वह जल जंतु जिसका ऊपरी ठट्ठर कौड़ी कहलाता है। ४ सदूरा = (शार्दूल) एक प्रकार का बाघ। ५ आथी = सारवस्तु। ६ दरब = द्रव्य, धन। ७ लाहा = लहा, पाया। ८ मुख चाहना = मुंह देखना।

दिया मँदिर निस करै अँजोरा[1]। दिया नाहिँ घर मूसहिँ[2] चोरा॥
हातिम[3] करन[4] दिया जो सिखा। नाउँ रहा धरमिन महँ लिखा॥
दिया सो काज दुहूँ जग आवा। इहाँ जो दिया उहाँ सब पावा॥

दोहा—निरमल पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिया कुछ हाथ।
कछु न कोइ लै जाइहि दिया जाय पै साथ॥१५६॥

१५—पन्द्रहवाँ खंड

(बोहित खंड)

चौपाई

सत न डोल देखा गजपती। राजा दत्त[5] सत्त[6] दुहुँ सती॥
आपन नाहिँ कया औ कंथा। जीउ दीन्ह अगमन तेहिँ पंथा॥
निहचै चला भरम डर खोई। साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई॥
निहचै चला छाँड़ि कै राजू। बोहित दीन्ह दीन्ह सब साजू॥
चढ़ा बेगि औ बोहित पेले[7]। धनि वे पुरुष प्रेम पँथ खेले॥
पेम पंथ जो पहुँचै पारा। बहुरि न आय मिलै यहि छारा॥
तिन पावा उत्तिम कैलासू। जहाँ न मीचु सदा सुख बासू॥

दोहा—यहि जीवन कै आस का जैस सपन तिल आधु।
मुहमद जियतहिँ जे मरहिँ तेइ पुरुष सिध साधु॥१५७॥

---

१ अंजोरा=उजियाला। २ मूसना=मूसों की तरह सेंध देकर धन ले जाना, लूटना। ३ हातिम=अरब देश का एक प्रसिद्ध दानी सज्जन। ४ करन=अङ्गदेश का राजा जो प्रसिद्ध दानी था। सवा मन सोना दान करके दतून करता था। ५ दत्त=दान। ६ सत्त=सत्यसंधता। ७ पेले=प्रेरित किये, चलाये।

चौपाई

जस बन रेंगि चलै गज ठाटी[1]। बोहित चले समुँद गा पाटी ॥
धावहिं बोहित मन उपराहीं। सहस कोस एक पल महँ जाहीं॥
समुँद अपार सरग जनु लागा। सरग न घाल[2] गनै बैरागा ॥
तत खन चाल्ह[3] एक दिखरावा। जनु धवलागिरि परबत आवा ॥
उठी हिलोर जो चाल्ह बराजी[4]। लहर अकास लागि भुइँ बाजी[5]॥
राजा सेतीं[6] कुँवर सब कहहीं। अस अस मच्छ समुँद महँ अहहीं॥
तेहि रे पंथ हम चाहहिं गवना। होहु सचेत बहुरि नहिं अवना॥

दोहा—गुरु हमार तुम राजा हम चेला तुम नाथ[7]।
जहाँ पाउँ गुरु राखै चेला राखै माथ ॥१५८॥

चौपाई

केवट हँसे सो सुनत गवेंजा[8]। समुँद न जान कूप कर मेंजा[9]॥
यह तौ चाल्ह न लागै कोहू[10]। का कहिहौ जब देखिहौ रोहू ॥
सो अबहीं तुम देख्यौ नाहीं। जेहि मुख ऐसे सहस समाहीं॥
राजपँखि तेहि पर मँड़राहीं। सहस कोस तिनकै परछाहीं ॥
ते वै मच्छ ठोर[11] गहि लेहीं। सावक[12] मुख चारा लै देहीं ॥
गरजै गगन पंखि जो बोलहिं। डोलै समुँद डहन[13] जो डोलहिं॥
तहाँ न सुरिज न चाँद असूझा। चढ़ै सोई जो अगमन बूझा ॥

दो०—दस महँ एक जाय कोउ धरम करम सत नेम।
बोहित पार होय जो तौहु कुसल औ खेम ॥१५९॥

---

१ ठाटी=ठट्ट, समूह। २ घाल गनना=घिलौना (घलुआ) समझना, कुछ न समझना। [मिलाओ—रघुबीर बल गर्वित विभीषण घाल नहिं ता कहँ गनै—(तुलसीदास)—लंका कांड]। ३ चाल्ह=एक प्रकार की मछली। ४ बराजी=चली (व्रजन=गमन)। ५ बाजी=टकराई (बाजना=भिड़ना)। ६ सेतीं=से। ७ नाथ=मालिक (यहाँ गुरू)। ८ गवेंजा=(गुंजन) बातचीत का शोर गुल। ९ मेंजा=मेढ़क। १० कोह=(फा०) पहाड़। ११ ठोर=चोंच। १२ सावक=बच्चा। १३ डहन=पंखों के डैना।

चौपाई

बात कहत भई देस गोहारी । केउटन चाल्ह समुँद महँ मारी ॥
हस्ती सिस्ट[1] लाइ हठि ढीला । दौरि आय एक चाल्ह सो लीला ॥
केवट लोग लाख हुत बली । फिरी न चाल्ह जैस किलकिली[2] ॥
बोहित सहस जाहिं चहुँ ओरा । होय कलोल जाहिं तरबोरा[3] ॥
सुनि कै आपु चढ़ा स्वैं[4] राजा । औ सब देस लोग मिलि बाजा ॥
भाल बाँस खाँड़े बहु परहीं । जानि पखाल[5] बादि कै[6] चढ़हीं ॥
चारा लीलि सो माँछुरि भाजी । कहाँ जाय जो जाकर खाजी[7] ॥
दो०—माँछुर कर विष हिरदै तेहि साँधे बिष बान ।
सबहिँ पहुँच कै मारी चाल्हर तजे परान ॥१६०॥

चौपाई

जस धौलागिरि परबत होई । तेही भांति उतरान्यो सोई ॥
सबहि देस[8] मिलि तीरहिं आना । लीन्ह कुल्हारी लोग जहाना[9]॥
जनु परबत कहँ लागहिँ चाँटी । लै गये माँसु रही सबकाँटी[10] ॥
माँजरि[11] परी कोस दस बेंड़ी । कस माँजरि जस सेत बरेंड़ी[12] ॥
नैन सो जानु कोटकी पवँरीं[13] । कित[14] अस गये फिरैंतहँभँवरीं ॥
रतनसेन सो सुनि कै कहैं । अस अस मच्छ समुंद महँ अहैं ॥
राजा तुम चाहहु तहँ गवना । होहिसँयोग[15] बहुरि नहिं अवना ।

---

१ सिस्ट लाय = जंजीर में बांध कर । २ किलकिली = एक पक्षी जो मछली को पकड़ कर दूर ले जाकर निगलता है और जब तक निगल नहीं लेता लौटता नहीं । ३ तरबोर = नीचे, गहराई की तह । ४ स्वैं = स्वयं, आप खुद । ५ पखाल = मशक । ६ बादि कै = हठ करके, बलात् । ७ खाजी = खुराक, भक्ष्य । ८ देस = लोग । ६ लोग जहाना = सब लोग । १० कांटी = कंटक मयी ठठरी । ११ माँजरि = हड्डियों की ठठरी । १२ बरेंड़ी = धरन शहतीर । १३ पँवरि = द्वार पर की दालान । १४ कित = कितने ही लोग उसमें जाकर चक्कर लगाते थे । १५ सँयोग = जान पड़ता है कि ऐसा संयोग होगा कि यहाँ से लौट कर आवैंगे नहीं ।

दो०—तुम राजा और गुरू हम सेवक और चेर[1]।
कीन्ह चहहिँ सब आयसु अब गवनब तह फेर[2]॥१६१॥

चौपाई

राजैं कहा कीन्ह मैं पेमा। जहाँ पेम तहँ कूसर[3] खेमा॥
तुम खेवहु जो खेवहि पारौ[4]। जैसे आप तरौ मोहि तारौ[5]॥
मोहि कुसर कर सोच न ओता[6]। कुसर होत जो जनम न होता॥
धरती सरग जाँतपिल[7] दोऊ। जो यहि बिच जिय राख न कोऊ॥
हौं अब कुसल एक पै माँगौं। पेम पंथ सत बाँधि न खाँगौं॥
जो सत हिये तो पंथहि दीया। समुंद न डरै देखि मरजीया[8]॥
तहँ लगि हेरौं समुंद ढंढोरौं[9]। जहँ लगि रतन पदारथ जोरौं॥

दो०—सपत[10] पतार खोजि कै काढौं वेद गरंथ।
सात समुंद चढ़ि धावौं पदमावति जेहि पंथ॥१६२॥

१६—सोलहवाँ खण्ड

[सात समुद्र वर्णन]

चौपाई

सायर[11] तरै हिये सत पूरा। जो जिउ सत कायर पुनि सूरा॥
तेहि सत बोहित पूर चलाये। जेहि सत पवन पंख जनु लाये॥
सत साथी सतगुरु कनहारू[12]। सत्त खेइ लै लावै पारू॥

---

१ चेर=चेला। २ अब गवनब तहँ फेर=अब वहाँ का जाना बन्द कीजिये, लौट चलिये। ३ कुसर खेम=कुशल क्षेम। ४ पारौ=खे सकौं। ५ तारौ=पार करो। ६ ओता=उतना। ७ जाँत पिल=जाँता के पाट (नीचे ऊपर के दोनों पत्थर)। ८ मरजीया=मोती निकालने वाला गोता खोर। ९ ढँढोरौं=तलाश करूँगा, खोजूँगा। १० सपत=(सप्त) सात। ११ सायर=सागर। १२ कनहारू=कर्णधार, मल्लाह।

सतइ ताक सब आगू पाछू। जहँ जहँ मगर मच्छ औ काछू ॥
उठै लहर जनु ठाढ़ पहारा। चढ़ै सरग औ परै पतारा ॥
डोलैं बोहित लहरैं खाहीं। खन तर[1] कहँ खन होइँ उपराहीं ॥
राजै सो सत हिरदैं बाँधा। जेहि सत टेकि करै गिरि[2] काँधा ॥
दोहा—खार समुंद सब नाँघा आये समुंद जहँ खीर।
मिले समुंद वै सातौ बीहर बीहर[3] नीर ॥ १६३ ॥

चौपाई

खीर समुंद का बरनौं नीरू। संत सरूप पियत जस खीरू ॥
उलथहिं मानिक मोती हीरा। दरब देखि मन होय न धीरा ॥
मनवा[4] चाह दरब औ भोगू। पंथ भुलाइ बिनासै जोगू ॥
जोगी मनहिं ओही रिस मारहिं। दरब हाथकै समुंद पवाँरहिं ॥
दरब लेइ सो अस्थिर राजा। जो जोगी तेहि के केहि काजा ॥
पंथिहि पंथ दरब रिपु होई। ठग बटपार चोर सँग सोई ॥
पंथी सो जो दरब सो रूसे। दरब समेंट बहुत अस मूसे ॥
दोहा—खीर समुंद सब नाँघा आये समुंद दधि माँह।
जो है नेहक बाउर ना तेहि धूप न छाँह ॥ १६४ ॥

चौपाई

दधि समुंद्र देखत तस दहा। पेम क लुबुध दगध पै सहा ॥
पेम जो दाधा धनि वह जीऊ। दधि जमाइ मथि काढ़ै घीऊ ॥
दधि एक बूँद जाम सब खीरू। काँजी बूँद बिनासै नीरू ॥
सो अस दधि मन मथनी काढ़ी। हिये जोति बिन फूटन साढ़ी ॥
जेहिं जी पेम चंदन तेहि आगी। पेम बिहून फिरै डर भागी ॥
पेम की आग जरै जो कोई। ताकर दुख न अबिरथा[5] होई ॥
जो जानै सत आपुहि जारा। निसत हिये सत करै न पारा ॥

---

१ तर=तल, नीचे। २ गिरि=जिस सत को टेककर मनुष्य कंधे पर पहाड़ उठा लेता है। ३ बीहर=न्यारा न्यारा। ४ मनवा=मन चाहे। ५ अबिरथा=व्यर्थ, बेफ़ायदा।

दोहा—दधि समुंद्र पुनि पार भे, पेमिहिं कहाँ सँभार।
भावै पानी सिर परै, भावै परहिँ अँगार ॥ १६५ ॥

चौपाई

आजि[1] उदधि सो समुंद अपारा। धरती सरग जरै जेहिँ झारा ॥
आजि जो उफना[2] ओही समुंदा। लंका जरी ओही एक बुन्दा ॥
बिरह जो उफना उहईं काढ़ा। खन न बुझाइ जगत तस बाढ़ा ॥
जेहिँ सो बिरह तेहि आगि न डीठी। सौंह जरइ फिरि देइ न पीठी ॥
जगमहँ कठिन खरग कै धारा। तेहि ते अधिक बिरह कै झारा ॥
अगम पंथ जो ऐस न होई। साध[3] किहें पावै सब कोई ॥
तेहि रे समुन्द महँ राजा परा। चहै जरा पै रोम न जरा ॥

दोहा—तलफै[4] तेल कराह जिमि, इमि तलफै सब नीर।
यह जी मलयगिरि पेमका, वृन्द समुंद-सरीर ॥१६६॥

चौपाई

सुरा समुंद पुनि राजा आवा। महुवामद छाता[5] दिखरावा ॥
जो तेहिं पियै सो भाँवर लेई। सीस फिरै पँथ पैगु न देई ॥
पेम सुरा जेहि के जिय माँहाँ। कित बैठे महुवा की छाँहाँ ॥
गुरु के पास दाख रस रसा। बेरो बँबुर मार मन कसा ॥
बिरहैं दगध कीन्ह तन भाठी। हाड़ जराइ दीन्ह जस काठी ॥
नैन नीर सों पोती किया। तस मद चुवै बरै जस दिया ॥
बिरह सुरागिन भूँजै मासू। गिरिगिरि[६] परहिं रकत के आँसू ॥

दोहा—मुहमद मद जो प्रेम का, हिये दीप तेहिं राखि।
सीस न देइ पतंग ज्यौं, तौलहि जाइ न चाखि ॥१६७॥

चौपाई

पुनि किलकिला समुंद महँ आये। गा धीरज देखत डर खाये ॥
भा किलकिल अस उठै हिलोरा। जनु अकास टूटे चहुँ ओरा ॥

---

१ आजि उदधि = घी का समुद्र। २ उफना = उबला। ३ साध = इच्छा।
४ तलफै = खौलता है। ५ छाता दिखरावा = छाती उभाड़ी, घमंड से उमड़ा।

उठै लहर परबत की नाईं। फिर आवै जोजन लख ताईं॥
धरती लेत[1] सरग लहि बाढ़ा। सकल समुंद जानौ भा ठाढ़ा॥
नीर होय तर ऊपर सोई। महा अरंभ[2] समुंद महँ होई॥
फिर समुंद जोजन लख ताका। जैसे फिरै कुम्हार कै चाका॥
भा परलौ[3] नियराना जबहीं। मरै सो ता कहँ परलौ तबहीं॥

दोहा—ये अउसान[4] सबन के, देखि समुंद कै बाढ़ि।
नियर होत जनु लीलै, रहा नैन अस काढ़ि॥१६८॥

चौपाई

हीरामनि राजा सों बोला। इहै समुंद आइ सत-डोला[5]॥
सिंघल पंथ जो नाहिँ निबाहू। यही ठाँव साँकर[6] सब काहू॥
यहै किलकिला समुँद गँभीरू। जेहि गुन होय सो पावै तीरू॥
यही समुंद पंथ मँझधारा। खाँड़े कै अस धार निनारा॥
तीस सहस कोसन कै बाटा। अस साँकर[7] चलि सकै न चाँटा॥
खाँड़े चाहि[8] पइनि पइनाई[9]। बार चाहि पातर पतिराई॥
यही पंथ कहँ गुरु संग लीजै। गुरु संग होय पार तौ कीजै॥

दोहा—मरन जियन एही पँथ, एही आस निरास।
परा सो गवा पतारहिँ, तरा सो गा कैलास॥१६९॥

चौपाई

राजैं दीन्ह कटक कहँ बीरा। सुपुरुष होहु करहु मन धीरा॥
ठाकुर जेहि क सूर भा कोई। कटक सूर पुनि आपुहि होई॥
जौलहि सती न जिय सत बाँधा। तौलहि देइ कहार न काँधा॥
पेम समुंद महँ बाँधा बेरा। एहि सब समुंद बूँद जेहि केरा॥
ना हौं सरग न चाहौं राजू। ना मोहिँ नरक सेतीं[10] कछु काजू॥
चाहौं ओहि के दरसन पावा। जेइ मोहिँ आनि पेम पँथ लावा॥

---

१ लेत=लेकर, से। २ अरंभ=वेग। ३ परलौ=प्रलय। ४ अउसान=धीर्य, मानसिक शान्ति। ५ सत-डोला=सत डोलाने वाला। ६ सांकर=संकठ। ७ साँकर=तंग, संकुचित। ८ चाहि=बढ़कर। ९ पइनाई=तीक्ष्णता, तेज़ी। १० सेतीं=से।

काठहिँ काह गाढ़[1] का ढीला। बूड़ न समुंद मगर नहिँ लीला॥
दोहा—कान्ह[2] समुंद धँसि लीन्हेंसि, भा पाछे सब कोइ।
कोउ काहू न सँभारै, आपन आपन होइ॥१७०॥

चौपाई

काइ बोहित जस पवन उड़ाहीँ। कोई चमकि बीजु अस जाहीँ॥
कोई भल जस धाव तुषारा[3]। कोई जैस बैल गरियारा[4]॥
कोई हरुअ[5] जानु रथ हाँका। कोई गरुअ भार भा थाका॥
कोई रेंगहि जानहु चाँटी। कोई टूटि होहिँ सरि माँटी॥
कोई खाहिँ पवन कर झोला। कोई करहिँ पात ज्योँ डोला॥
कोई परहिँ भँवर जल माँहाँ। फिरत रहै कोऊ देइ न बाँहाँ॥
राजा कर भा अगमन खेवा। खेवक[6] आगे सुवा परेवा॥
दोहा—कोइ दिन मेला[7] सबेरे कोइ आवा पछु राति।
जाकर हुत जस साजू सो उतरा तेहिँ भाँति॥१७१॥

चौपाई

सतय समुँद मानसर आये। सत जो कीन्ह सहस सिधि पाये॥
देखि मानसर रूप सोहावा। हिय हुलास पुरइन होइ छावा॥
गा अँधियार रैनि मसि[8] छूटी। भा भिनसार[9] किरन रबि फूटी॥
अस्तु अस्तु सब साथी बोले। अंध जो अहे नैन बिधि खोले॥
कँवल बिगस तस बिहँसी देहीं। भँवर मगन होइ होइ रस लेहीं॥
हँसहिँ हंस औ करहिँ किरीरा[10]। चुगहिँ रतन मुकताहल हीरा॥
जो अस साधि आव तप जोगू। पूजै आस मान रस भोगू॥

---

१ गाढ़=तंग। २ कान्ह=(कर्ण)=पतवार। ३ तुषार=घोड़ा। ४ गरियार=जो चलते समय बैठ बैठ जाय। ५ हरुअ=हलका। ६ खेवक=खेने वाला। ७ मेला=पड़ाव डाला। ८ मसि=कालिख। कालापन। ९ भिनसार=सवेरा। १० किरीरा=क्रीड़ा।

दोहा—भँवर जो मनसा[1] मानसर, लीन्ह कँवल रस आय।
घुन जो हियाउ[2] न कसका, झूर काठ तस खाय ॥१७२॥

सत्रहवाँ खंड

सिंघलदीप का दृश्य वर्णन

चौपाई

पूँछा राजैं कहु गुरु सेवा। न जनों आजु कहाँ दिन उवा ॥
पवन बास सीतल लै आवा। कथा दुहत चंदन जनु लावा ॥
कबहुँ न ऐस सिरान[3] सरीरू। परा अगिन महँ जानहु नीरू ॥
निकसत आव किरन रबि रेखा। तिमिर गयो निरमल जग देखा ॥
उठे मेघ अस जानहु आगे। चमकै बीजु गगन पै लागे ॥
तेहि ऊपर जनु ससि परगासा। औसो चाँद कचपची गरासा ॥
और नखत चहुँ दिसि उजियारे। ठावहिँ ठाँवँ दीप अस बारे ॥

दोहा—और दखिन दिस नियरहिँ, कंचन मेरु दिखाव।
जस बसंत रितु आवैं, तैस बास जग आव ॥१७३॥

चौपाई

तुइँ राजा जस बिकरम आदी। पुनि हरिचंद बैन[4] सतबादी ॥
गोपिचंद तैं जीता जोगू। औ भरथरी न पूज बियोगू ॥
गोरख सिद्ध दीन्ह तोहि हाथू। तारी[5] गुरू मछंदर नाथू ॥

---

१ मनसाना=हिम्मत करना। २ हियाउ=साहस, हिम्मत। ३ सिराना=शीतल होना। ४ बैन=राजा बेणु का पुत्र राजा पृथु। ५ तारी=ताली (कुंजी)।

जिता पेम तैं पुहुमि अकासू। दिष्टि पड़ा सिंघल कैलासू॥
वै जो मेघ गढ़ लागु अकासा। बिजुरी कनक कोट चहुँ पासा॥
तेहि पर ससि जो कचपची भरा। राज मँदिर सोने नग जरा॥
और नखत ओहि के चहुँ पासा। सब रानिन के अहैं अबासा॥

दोहा—गगन सरोवर ससि कँवल, कुमुद तराइँ पास।
तुइँ रबि ऊवा भँवर होइ, पवन मिला लै बास॥१७४॥

चौपाई

सो गढ़ देखु गगन ते ऊँचा। नैन देख कर नाहिँ पहूँचा॥
बिजुरी चक्र फिरहिँ चहुँ फेरे। ज्यों जमकात[1] फिरैं जम फेरे॥
धाय जो बाजा कै मन साधा[2]। मारा चक्र भयो दुइ आधा॥
चाँद सुरजि औ नखत तराईं। तेहि डर अँतरिख फिरहिँ सवाईं॥
पवन जाइ तहँ पहुँचा चहा। मारा तैस लोटि भुइँ रहा॥
अगिन उठी जरि बुझी नियाना[3]। धुँवाँ उठा उठि बिच बिलाना॥
पानि उठा उठि जाय न छुवा। बहुरा रोइ आइ भुइँ चुवा॥

दोहा—रावन चहा सउँ[4] हेरों, उतर गये दस माथ।
संकर धरा लिलार भुइँ, और को जोगी नाथ॥१७५॥

चौपाई

तहाँ देखु पदमावत रामा[5]। भँवर न जाय न पंखी नामा॥
अब बुधि एक देउँ तेहिँ जोगू। पहिले दरस होइ पुनि भोगू॥
कंचन मेरु दिखावसि जहाँ। महादेव कर मंडह तहाँ॥
ओहिक खंड परबस जस मेरू। मेरुहिँ लाग होय तसु[6] फेरू[7]॥

---

१ जमकात=यम के अस्त्र, यम के हथियार। २ साध=अभिलाष। ३ नियान=निदान। ४ सउँ=सामने। ५ रामा=रमणीय स्त्री। ६ तसु=तासु (उसीका) ७ फेरू=कुंभाकार मंडप। (इसी मेरु से लगा हुआ उस मन्दिर का मंडप है)।

माघ मास पाछिल पख लागे। सिरीपंचमी[1] होइहै आगे ॥
उघरहिँ महादेव कर बारू[2]। पूजै जाय सकल संसारू ॥
पदुमावति पुनि पूजै आई। होइहि यहि मिस दिष्टि मेराई ॥

दोहा—तुम गवनहु ओहि मंडप हौं पदमावति पास।
पूजै आइ बसंत जो तौ पूजै मन आस ॥१७६॥

चौपाई

राजैं कहा दरस जो पाऊँ। परबत काह गगन कहँ धाऊँ ॥
जेहि परबत पर दरसन लीन्हा। सिर सों जाउँ पाँउ का कीन्हा ॥
मोहि रे भावै ऊँच सो ठाऊँ। ऊँचे लेउं पिरीतम नाऊँ ॥
पुरुषहिँ चाहिय ऊँच हियाऊ। दिन दिन ऊँचे राखै पाऊ ॥
सदा ऊँच पै सेइय बारू। ऊँचइ संग कीजै व्यवहारू ॥
ऊँचे चढ़े ऊँच खँड सूझा। ऊँचे पास ऊंच मति बूझा ॥
ऊँचे सँग संगति नित कीजै। ऊँचे लागि जीउ बलि दीजै ॥

दोहा—दिन दिन ऊँचा होइ सो, जेहिँ ऊँचे पर चाउ।
ऊँच चढ़त जो खसि[3] परै, ऊँच न छाँड़ै काउ ॥१७७॥

चौपाई

नीच संग नित होय निचाई। जैसे हंस काग की नाई ॥
नीच न कबहूँ मन महँ राखै। नीच न कबहूँ भाखन भाखै ॥
नीचे सों संगति नहिँ कीजै। नीचे पंथ पाउँ नहिं दीजै ॥
नीचे नहिँ कीजै व्यवहारू। नीचे कहँ नहिँ दीजै भारू[4] ॥
नीच संग नहिँ कीजै साथू। नीच गहे कछु आव न हाथू ॥
नीच न कबहूँ आवै काजा। नीचहिँ अहै न एको लाजा ॥
नीच करम कबहूँ नहिँ कीजै। नीच काज कै अजस न लीजै ॥

---

१ सिरीपंचमी = बसंत पंचमी। २ बारू = द्वार। ३ खसि परै = गिर पड़ै। ४ भारू = ज़िम्मेदारी का काम, बड़ा काम।

दोहा—होय नीच नहिँ कबहूँ, जेहिं ऊँचे मन चाउ ।
नीच ऊँच लै बोरै, नीचै सबै नसाउ ॥१७८॥

चौपाई

हीरामनि दै बचा[1] कहानी । चला जहाँ पद्मावति रानी ॥
राजा चला सँवरि सो लता[2] । परबत कहँ ज्यौं चलै परबता[3]॥
का परबत चढ़ि देखै राजा । ऊँच मँडप सोने सब साजा ॥
अँबिरित फर पुनि फरे अपूरी[4]। औ तहँ लागि सजीवन मूरी ॥
चोमुख[5] मँडप चहूँ केवारा । बैठे देवता चहूँ दुआरा ॥
भीतर मँडप चारि खँभ लागे । जिनवेइ छुए पाप तिन भागे ॥
संख घंट घन बाजहिँ सोई । औ बहु होम जाप तहँ होई ॥

दोहा—महादेउ कर मंडप, जगत जातरा[6] आउ ।
जो इच्छा मग जेहि के, सो तैसइ फल पाउ ॥१७९ ॥

अठारहवाँ खंड

मंडप गमन वर्णन

चौपाई

राजा बाउर बिरह बियोगी । चेला सहस तीस सँग जोगी ॥
पदुमावति के दरसन आसा । डँडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा॥
पुरुब बार होइ कै सिरनावा । नावत सीस देव पहँ आवा ॥
नमो नमो नारायन देवा । का तोहि जोग सकौं कै सेवा ॥

---

१ बचा=बाचा, वचन, वादा । २ लता=लता रूप पद्मावती ।
३ परबता=पर्वत पर रहने वाल जन । ४ अपूरी=(अपूर्ण) अधिकता से ।
५ चौमुख=चारों दिसा में । ६ जातरा=यात्रा, दर्शन पूजनादि ।

तुइँ दयाल सब के उपराहीं । सेवा केरि आस तोहि नाहीं ॥
ना मोहि गुन न जीभ रसबाता । तू दयाल गुनि निरगुनि दाता ॥
पुरवहु मोरि दरस कै आसा । हौं मारग जोवौं हर स्वासा ॥

दोहा—तेहि बिधि बिनय न जानौं, जेहि बिधि अस्तुति तोरि ।
करु सुदिष्टि औ किरपा, इच्छा पूजै मोरि ॥१८०॥

चौपाई

कै अस्तुति जो बहुत मनावा । सबद अकुत[1] मंडप तें आवा ॥
मानुस पेम भयो बैकूँठी । नाहित कहा छार एक मूँठी ॥
पेमहिँ माँहँ बिरह औ रसा । मैन[2] के घर मधु-अमिरितु बसा[3] ॥
निसती धाय मरै तौ काहा । सत जो करै होइ तेहि लाहा ॥
एक बार जो मन दै सेवा । सेवा-फल परसन होइ देवा ॥
सुनिकै सबद मँडप झनकारा । बैठेउ आय पुरुब के बारा ॥
पिंड चढ़ाय छार जेत[4] आँटी । माँटी होहु अंत जो माँटी ॥

दोहा—माँटो मोल न कुछ लहै, औ माँटी सब मोल ।
दिष्टि जो माँटी हू करै, माँटी होय अमोल ॥१८१॥

चौपाई

माटी जो रे गरब सों होती । पावत कत सरूप औ जोती ॥
जो माटी तजि आपुहि चीन्हा । फरै रतन मोती विधि कीन्हा ॥
अस्तुति कै बिनवा बहु भाँती । भये मयाउर सुनत बिनाती ॥
जिन कर फूल चढ़ै एक बारा । सो निरफल नहिँ जाय सँसारा ॥
सोचु न करु बिरहो बलबीरा । पूजहि आस राखु मन धीरा ॥
सुनत बचन बैठे सब आई । मंडप के सनमुख मुख लाई ॥
जोगिन केर कटक सब मेला । गुरू माँझ चारिहु दिस चेला ॥

१ अकुत=अकस्मात । २ मैन=(मदन)=मोम । ३ बसा=बर्रे । भिड़ (यहाँ मधुमक्खी) मोम के छत्ते ही में अमृत रूपी शहद और (डंक मारने वाली) मधु मक्खी रहती है । ४ जेत=जितनी ।

दोहा—रतनसेन सोचन लगे, सुवा बचन सुधि पारि।
बाढ़ा बिरह सरीर महँ, पीर न सके सँभारि ॥१८२॥

चौपाई

बैठ सिंहछाला होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा ॥
दिष्टि समाधि ओही सों लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी ॥
किँगिरी गहे बजावै झूरी। भोर साँझ सिंगी नित पूरी ॥
कंथा जरै आगि जनु लाई। बिरह धँधोर[1] जरत न बुझाई ॥
नैन रात निसि मारग जागे। चकित चकोर जानु ससि लागे ॥
कुंडर[2] गहे सीस भुइँ लावा। पाँवरि होउँ जहाँ ओहि पावा ॥
जटा छोरि कै बार बहारौं[3]। जेहिँ पँथ आव सीस तहँ वारौं[4] ॥

दोहा—चार चक्र फिरौं खोजत, डँड[5] न रहौं थिर मार[6]।
होइ कै भसम पवन सँग, जहाँ सो प्रान अधार ॥१८३॥

१२—उन्नीसवाँ खंड

पदमावत का पूर्वानुराग वर्णन

चौपाई

पदुमावति तहँ जोग सँजोगा। परी पेम बस गहे बियोगा ॥
नींद न परै रैनि जो आवा। सेज केवाँच जानु कोउ लावा ॥
दहै चाँद औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू ॥
कलप समान रैनि तेहि बाढ़ी। तिल तिल भइ जुग जुग पर गाढ़ी ॥

---

१ धँधोर=लपट, ज्वाला। २ कुंडर=कुण्डल। ३ बहारना=झारना।
४ वारौं=निछावर करौं। ५ डंड=दंड। ६ थिरमार=स्थिर होकर।

गही बीन मकु रैनि बिहाई। ससि-बाहन[1] तब रहा ओनाई॥
पुनि धन सिंह उरेहै लागै। ऐसी बिथा रैनि सब जागै॥
कहाँ हो भँवर कँवल रस लेवा। आइ परहु ह्वै घिरिनि[2] परेवा॥

दोहा—सो धन बिरह पतंग ज्यौं, जरा चहै तेहिँ दीप।
कंत न आव भिरिंग ह्वै, को चंदन तन लीप॥१८४॥

चौपाई

परी बिरह बन जानहु घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी॥
चतुर दिसा चितवै जनु भूली। सो बन कौन जो मालति फूली॥
कँवल भँवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझावै॥
अंग अंग अस कँवल सरीरा। हिय भा पियर पेम की पीरा॥
चहै दरस रबि कीन्ह प्रकासू। भँवर दिष्टि महँ कँवल अकासू॥
पूँछै धाय बारि कहु बाता। तुइँ जस कँवल-कली रँग राता॥
केसर बरन हिया भा तोरा। मानहु मनहिँ परा कछु भोरा[3]॥

दोहा—पवन न पावै संचरै, भँवर न तहाँ बईठ।
भुली कुरंगिनि कस भई, मनहुँ सिंह तोहि दीठ॥१८५॥

चौपाई

जब जनमी तुइँ पदुमिनि रानी। ता दिन गनकन कहा बखानी।
जंबूदीप देस इक आहा। पदुमावति कर तहाँ बिआहा॥
जब यहि बिधि कहि धाय सुनावा। सुनि अति सै जिय गहबर[4] आवा॥
जब रतिपति संजोग समाना। सीस हीन दुइ उठे अमाना[5]॥
स्रवत नीर निसि औ दिन जाई। भूषन बसन न भवन सोहाई।
बिरह बिथा अति ब्याकुल बारी। हरिहित[6] लेपन भाव न सारी॥

---

१ ससि बाहन=चंद्रमा के रथ का मृग। २ घिरिन परेवा=गिरहबाज कबूतर। ३ भोरा=भ्रम। ४ गहबर=हृदय गद्गद् हो आया। ५ अमाना=आम का टकोरा। ६ हरिहित=चंदन।

जलसुत[1] सीतल देह चढ़ाई । अधिक बिरह तन लाग डहाई[2] ।

दोहा—बनिता बैठी सँवरे, बिरस साँस भरि लेइ ।
सुरिज चाँद कब मिलि हैं, रतिपति अति दुख देइ॥१८६॥

चौपाई

धाय ! सिंह बरु खात्यौ मारी । की तस रहति अही[3] जसबारी ॥
जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू । तेहि बन परेउ हस्ति मैमंतू[4] ॥
अब जोबन बारी[5] को राखा । कुंजर बिरह बिधंसै[6] साखा ॥
मैं जाना जोबन रस भोगू । जोबन कठिन सँताप बियोगू ॥
जोबन गरुअ सुमेर पहारू । सहि न जाय जोबन कर भारू॥
जोबन अस मैमंत न कोई । नवै हस्ति जो आँकुस होई ॥
जोबन भर भादौं जस गंगा । लहरैं देइ समाय न अंगा ॥

दो०—परिउँ अथाह धाय हौं, जोबन सलिल गँभीर ।
तेहि चितवउँ चारिउ दिस, को गहि लावै तीर॥१८७॥

चौपाई

पदुमावति तुइँ समुँद सयानी । तोहि सरि समुंद न पूजै रानी ॥
नदी समाहिं समुँद महँ आई । समुँद डोलि कहु कहाँ समाई ॥
अबहीं कँवलकली हिम तोरा । अइहै भँवर जो तो कहँ जोरा ॥
जोबन तुरी[7] हाथ गहि लीजै । जहाँ जाय तहँ जान न दीजै ॥
जोबन जोर मात[8] गज अहै । गहहु ज्ञान आँकुस जिमि रहै ॥
अबहिँ बारि तुइँ पेम न खेला । का जानसि कस होय दुहेला[9]॥
गगन दिष्टि करु नाइ[10] तराहीँ । सुरिज दीख कर आवन नाहीँ॥

दोहा—जब लग पीउ मिलै तोहिँ, साध पेम कै पीर ।
जैसे सीप सेवाति कहँ, तपै समुँद मँझ नीर ॥१८८॥

---

१ जलसुत=मोती । २ लगि डहाई=जलने लगा । ३ अही=थी । ४ मैमंत =मदमस्त (मता हुआ) ५ बारी=बाटिका । ६ बिधंसै=विनासैगा । ७ तुरी =घोड़ा । ८ मात=मस्त । ९ दुहेला=दुःख । १० नाइ=नवाँकर, झुकाकर ।

चौपाई

रहो न धाय जोबन औ जोऊ। जानहु परै अगिन महँ घीऊ॥
करवत सहौं होत दुइ आधा। सहा न जाय बिरह की दाधा[1]॥
बिरहा सुभर समुद्र अपारा। भँवर मेलि जिउ लहरहिं मारा॥
बिरह नाग होइ सिर चढ़ि डसा। औ होइ अगिन चाँद महँ बसा॥
जोबन पंखी बिरह बियाधू। केहरि भयो कुरंगिनि खाधू[2]॥
कनक बानि[3]कत जोबन कीन्हा। औटनिकठिनबिरहओहिदीन्हा॥
जोबन जलहिं बिरह हँस छूवा। फूलहिं भँवर फरहिं भा सूवा॥

दोहा—जोबन चंद उवा जस, बिरह संग भा राहु।
घटतहिं घटत खीन भइ, कहै न पारउँ काहु॥१८९॥

चौपाई

नैन जो चाक[4] फिरहिं चहुँओरा। चरचै[5] धाय समाय न कोरा[6]॥
कहेसि पेम उपमा[7] जो बारी। बाँधहु सतमन डोल न भारी॥
जेहि जी महँ सत होय पहारू। परै पहार न बाँकै[8] बारू॥
सती जो जरै पेम पिय लागी। जो सत हिये तो सीतल आगी॥
जोबन चाँद जो चौदस करा। बिरह की चिनिंगि[9] सो उ पुनि जरा॥
पवन बाँध सो जोगी जती। काम बाँध सो कामिनि सती॥
आव बसंत फूल फुलवारी। देव बार सब जैहैं बारी॥

दो०—तुम्ह पुनि जाहु बसंत लै, पूजि मनावहु देव।
जिउ पाई जग जनमें, पिउ पाई कै सेव॥१९०॥

चौपाई

जउ लगि अवधि आइ नियराई। दिन जुग जुग बिरहिनि कहँ जाई॥

---

१ दाधा=जलन। २ खाधू=खाद्य वस्तु, शिकार। ३ बानि=आदत, सुभाव। ४ चाक=चक्र (की भांति)। ५ चरचै=अनुमान करती है। ६ कोरा=गोद (क्रोड़)। ७ उपना=उत्पन्न हुआ है। ८ बांकना=बंक होना, टेढ़ा होना। ९ चिनगी=आग की चिनगारी।

नींद भूख निसि दिन गइ दोऊ। हिये माँझ जस कलपै[1] कोऊ॥
रोम रोम जनु लागे चाँटे। सोत सोत जनु बेधे काँटे।
दगध कराह जरै जस घीऊ। बेगि न आव मलयगिरि पीऊ॥
कवन देव कहँ परसौं जाई। मिलै पीउ जेहि परसत आई॥
गुप्त जो फल साँसहिं परगटै। अब होइ सुभर[2] चहै सो घटै॥
भयउ सँजोग जुरा अस मरना। भूखहि गए भोग का करना॥
दो०—जोबन चंचल ढीठ है, करै निकाजइ[3] काज।
थनि कुलवंति जो कुल घरै, कै जोबन मन लाज॥१६१॥

२०—बीसवाँ खंड

पदमावती हीरामान भेंट वर्णन

तेहिं बियोग हीरामनि आवा। पदुमावति जानहु जिउ पावा॥
कंठ लगाइ सुवा सों रोई। अधिक मोह जो मिलै बिछोई[4]॥
आगि उठी दुख हिये गँभीरू। नैनन आइ चुवा होइ नीरू॥
रही रोइ जब पदुमिनि रानी। हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी॥
मिले रहसि[5] चाहिय भा दूना। कित रोइय जो मिलै बिछूना[6]॥
तेहि क उतर पदुमावति कहा। बिछुरन दुख सो हिये भरि रहा॥
मिलतै हिये आय सुख भरा। वह दुख नैन नीर होइ ढरा॥
दो०—बिछुरंता जब भेंटइ, सो जानै जेहि नेह।
सुक्ख सुहेला[7] उग्गवै[8], दुःख झरै ज्यौं मेह॥ १६२॥

---

१ कलपना=(कपटना) काटना। २ सुभर=पूरे, बड़े। ३ निकाज=खराब, बुरा। ४ बिछोई=बिछुड़ा हुआ। ५ रहसि=खुश होकर। ६ बिछूना=बिछुड़ा हुआ। ७ सुहेला=सुहेल नाम का सितारा जो अरब देश में बरसात से पहले उदय होता है। ८ उग्गवै=उगता है।

चौपाई

पुनि रानी हँसि कूसर[३] पूँछा। कित गवनेहु कै पींजर छुंछा ॥
रानी तुम जुग जुग सुख पाटू[४]। छाज न पंखी पींजर ठाटू ॥
जो भा पंख कहाँ थिर रहना। चाहै उड़ा पांख औ डहना ॥
पींजर महँ जो परेवा घेरा। आइ मँजार कीन्ह तहँ फेरा ॥
दिवसक आइ हाथ पै मेला। तेहि डर बनोबास कहँ खेला ॥
तहाँ बियाध आय नर[५] साँधा। छूट न पाव मीचु कर बाँधा ॥
वैं धरि बेंचा बाम्हन हाथा। जंबूदीप गयौं तेहि साथा ॥

दो०—तहाँ चितर[६] चितउर गढ़, चितरसेन कर राज।
टीका[७] दीन्ह पुत्र कहँ, आप लीन्ह सिउसाज[८] ॥१६३॥

चौपाई

बैठ जो राज पिता के ठाऊँ। राजा रतनसेन ओहि नाऊँ ॥
का बरनौं धनि देस दियारा[९]। जहँ अस नग उपना उजियारा ॥
धनि माता औ पिता बखाना। जेहि के बंस अंस[१०] अस आना ॥
लखन बतीसौ कुल निरमरा। बरनि न जाइ रूप औ करा[११] ॥
वैं हौं लीन्ह अहा अस भागू। चाहै सोने मिला सोहागू ॥
सो नग देखि इच्छा भइ मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी ॥
है ससि जोग इहै पै भानू। तहँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू ॥

दोहा०—कहाँ रतन रतनागिरी, कंचन कहाँ सुमेरु।
दई जो जोरी दुहुँ लिखो, मिली सो कौने फेरु[१२] ॥१६४॥

---

३ कूसर=कुशल। ४ पाट=राज सिंहासन। ५ नर=नरसल की लग्गी। ६ चितर=चित्र समान सुन्दर। ७ टीका दीन्ह=राज्याभिषेक कर दिया। ८ सिउसाज लेना=कैलासवासी होना, मर जाना। ९ दियारा =दीपक के समान। १० अंस=भाग्यवान। ११ करा=कला-कुशलता। १२ फेरु=हेर फेर, विचित्र घटना।

चौपाई

सुनि कै विरह चिनिंग ओहि परी। रतन पाउ जस कंचन करी[1] ॥
कठिन पेम बिरहा दुख भारी। राज छाँड़ि भा जोगि भिखारी ॥
मालति लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा[2] बुधि खोई ॥
कहेस पतंग होय रस लेऊं। सिंघलदीप जाय जिउ देऊं ॥
पुनि ओहि कोउ न छांड़ अकेला। सोरह सहस कुँअर भे चेला॥
और गनै को संग सहाई। महादेव-मढ़ मेला आई ॥
सुरज-पुरुष दरस की ताईं। चितवै चाँद चकोर की नाईं ॥

दोहा०—तुम बारी रसजोग जेहि, कँवलहि जस अरघानि[3] ॥
तस सूरज परगास कै, भँवर मिलायो आनि ॥ १९५ ॥

चौपाई

हीरामन जो कही यह बाता। सुनिकै रतन पदारथ राता[4] ॥
जैसे सुरिज देखि है ओपा। तस भा बिरह काम दल कोपा॥
सुनि कै जोगी केर बखानू। पद्मावत मन भा अभिमानू ॥
कंचन-करी[5] न काँचहि लोभा। जो नग जरै होय तब सोभा ॥
कंचन जो कसिये कै ताता। तब जानिय दहुँ पीत कि राता॥
नग कर मरम सो जड़िया[6] जाने। जरै जो अस नग हेरि[7] बखानै॥
को अस हाथ सिंह मुख घालै। को यह बात पिता सों चालै[8] ॥

दोहा०—सरग इन्द्र डरि काँपे, बासुकि डरै पतार।
कहाँ ऐस बर पिरथिमी[9], मोहिँ जोग संसार ॥१९६ ॥

चौपाई

तुइँ रानी ससि कंचन-करा[9]। वह नग रतन सूर निरमरा ॥

---

१ कंचन करी=सोने की अँगूठी। २ निसरा=निकला। ३ अर्घानि =सुगन्ध। ४ राता=अनुरक्त हुआ। ५ कंचनकरी=सोने की अँगूठी। ६ जड़िया=नग जड़नेवाला। ७ हेरि=ढूंढ़कर। ८ चालै=कहै। १० पिरथिमी=पृथ्वी पर। ९ कंचन करा=सोने के समान।

बिरह बजागि[1] बीच गा कोई। आगि जो छुवै जाइ जरि सोई॥
आगि बुझाय धोय जल काढ़े। वह न बुझाय आगि अति बढ़े॥
बिरह की आग सूर जर कया। रातिहुँ दिवस जरै औ तपा[2]॥
खिनहिं सरग खिन जाय पतारा। थिर न रहै तेहि आगि अपारा॥
धनि सो जीउ दगध इमि सहा। ऐस जरै दुसरे नहिं कहा॥
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा। परगट होइ नहिं काढ़ै[3] नामा॥

दोहा०—झाह कहौं हौं ओहि सों, जेइ दुख कीन्ह न मेट[4]।
आगि करौं यह बाहेर, जेहि दिय होय सो भेंट॥ १९७॥

चौपाई

सुना जो अस धन जारै कया[5]। तन भा साँच नयन भा मया[6]॥
देखौ जाय जरै जस भानू। कंचन जरे अधिक होय बानू[7]॥
अब जो जरै सो पेम बियोगी। हत्या मोहि जेहि कारन जोगी॥
हीरामन सो कही रस बाता। सुनिकै रतन[8] पदारथ राता॥
जोगी जोग सँभारैं छाला। देहौं भुगुति[9] देउँ जयमाला॥
आव बसंत कुसल सों पाऊँ। पूजा मिस मंडप कहँ जाऊँ॥
गुरु के बचन फूल हिय गाँथे। देखौं नैन चढ़ावौं माथे॥

दोहा०—कँवल बरन तुम्ह बरना[10], मैं माना पुनि सोय।
चाँद सुरिज कहँ चाहिय, जो रे सुरज वह होय॥१९८॥

चौपाई

हीरामनि जो कही रस बाता। पावा पान भवा मुहँ राता॥

---

१ बजागि=बज्राग्नि, बिजली की आग। २ तपा=तपता है। ३ काढ़ै=प्रगट अपने प्रियतम का नाम ज़बान से नहीं निकालता। ४ मेट=जिसने मेरा दुख न मिटाया। ५ कया=काया, शरीर। ६ मया=मग्न (मोम) ७ बानू=रंग, चमक। ८ सुनिकै·····राता=रतन सेन का हाल सुनकर पद्मावती अनुरक्त हुई। ९ भुगुति=भिक्षा। १० बरना=वर्ण, रंग।

चला सुवा तब रानी कहा। भा जा पराउ सो कैसे रहा ॥
जो नित चलै सँवारहि पाँखा। आजु जो रहा कालिह को राखा॥
न जनौ आज कहाँ दिन उवा। आवा मिलै चला मिलि सुवा॥
मिलिकै बिछुरन मरन कि आना। कत आयो जो चल्यो नियाना[1]॥
सुनु रानी हों रहतेउँ राँधा[2]। कैसे रहौं बचा[3] कर बाँधा॥
ताकर दिष्टि ऐसि तुम्ह सेवा[4]। जैस कुँज मन सेवा परेवा[5]॥
दोहा०—बसै मीन जल धरती, अंबा बिरिछ अकास।
जो पै पिरीति दोउ महँ, अंत होहिँ एक पास[6] ॥१९९॥

चौपाई

आवा सुवा बैठ जहँ जोगी। मारग नयन बियोग बियोगी॥
आय पेम रस कहा सँदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू॥
तुम कहँ गुरू मया[7] बहु कीन्हा। कीन्ह अदेस[8] अवन[9] कहि दीन्हा॥
सबद एक है कहा अकेला। गुरु जस भिरिंग पतिंग जस चेला॥
भृङ्गिहि ओहि पंख पै लेई। एक बार गहे जिउ देई॥
ता कहँ गुरू मया भल कीन्हा। नव अवतार कया नव दीन्हा॥
होइ अमर अस मरि कै जिया। भँवर कँवल मिलिकै मधु पिया॥
दोहा०—आवै रितू बसंत जब, तब मधुकर तब बासु।
जोगी जोग जो इमि सहै, सिद्धि समापति[10] तासु॥२००॥

---

१ नियाना=निदान, अंत में। २ रांधा=निकट, पास। ३ बचा=बचन, प्रतिज्ञा। ४ सेवा=इसकी (राजा की) दृष्टि तुम्हारी सेवा में ऐसी लगी रहती है। ५ परेवा=जैसे कबूतर मन से अपनी कुंज (अड्डा) को कभी नहीं भूलता। ६ पास="आंब और मछली की भेंट" एक प्रसिद्ध कहावत है (मछली पकाते समय आंब की खटाई डाली जाती है, अथवा मछली सड़ाकर आंब के वृक्ष में खाद दी जाती है। इस तरह उनका मिलन मरने पर हो जाता है) ७ मया=छोह, कृपा। ८ अदेस=प्रणाम (यहां आशीर्वाद) बहुधा गोरख पंथी साधु 'प्रणाम' के स्थान पर 'आदेश' शब्द बोलते हैं। ९ अवन=आगमन। १० समापति=(समाप्ति) पूर्ण, निःशेष।

२१—इक्कीसवाँ खण्ड

बसंत क्रीड़ा वर्णन

चौपाई

दई दई[1] कै सो रितु गँवाई। सिरी-पंचमी-पूजा आई॥
भयो हुलास नवल रितु माहाँ। खिन न सोहाय धूप औ छाहाँ॥
पद्मावत सब सखीं हँकारी। जाँवत सिंहलदीप की बारी॥
आजु बसंत नवल रितु राजा। पंचमी होय जगत सब साजा॥
नवल सिँगार बनापति[2] कीन्हा। सीस परासन[3] सेंदुर दीन्हा॥
बिकसे कँवल फूल बहु बासा। भँवर आय लुबुधे चहुँ पासा॥
पियर पात दुख झारि निपाते। सुख पल्लव उपने[4] है राते॥

दोहा—अवधि आये सो पूजी, जो इच्छा मन कीन्ह।
चलौ देव-मढ़ गोतन[5], चहौं सो पूजा दीन्ह॥ २०१॥

चौपाई

फिरी आन ऋतु बाजन बाजे। औ सिंगार बारिन सब साजे॥
कँवल करी पद्मावत रानी। होय मालित जानहु बिकसानी॥
तारामँडर[6] पहिर भल चोला[7]। भरे सीस सब नखत अमोला॥
सखी कुमोद सहस दस संगा। सबै सुगंध चढ़ाये अंगा॥
सब राजा रायन की बारी। बरन बरन पहिरे सब सारी॥
सबै सुरूप पद्मिनी जाती। पान फूल सेंदुर सब राती॥
करहिं कलोल सो रंग रंगोली। औ चोवा चंदन सब गोली॥

१ दई दई कै=मुशकिल से। २ बनापति=वनस्पति (वृक्षलतादि) ३ परास=पलास। ४ उपने=उत्पन्न हुए। ५ गोहन=साथ मिलकर। ६ तारा मण्डर=तारा मण्डल नामक एक कपड़ा जिसमें सोने की बूटियां होती हैं। ७ चोला=कुरता।

दोहा०— चहुँदिस रही बासना[1], फुलवारी अस फूल।
वै बसंत सों फूलीं, गा बसंत उन्ह भूलि॥ २०२॥

चौपाई

भइ अहान[2] पदमावति चली। छतिस कुरी भईं गोहन[3] भली॥
भईं गौरी[4] सँग पहिर पटोरा[5]। बाम्हनि ठाउँ सहस अंग मोरा॥
अगरवारि गज-गवन करेईं। बैसिनि पाउँ हंसगति देईं॥
चंदेलिनि ठमकत पगु धारा। चलि चौहानि होय झनकारा॥
चली सोनारि सोहाग सोहाती। औ कलवारि पेम-मद माती॥
बानिनि चली सेंदुर दै माँगा। कैथिन चली समाइ न आँगा॥
पठइनि पहिरि सुरँग तन चोला। औ बरइनि[6] मुख रात तँबोला॥

दोहा—चलीं पउनि[7] सब गोहन, फूल डालि[8] लै हाथ।
बिस्सुनाथ[9] कै पूजा, पदुमावति के साथ॥२०३॥

चौपाई

ठाठेरिनि बहु ठाठर[10] कीन्हे। चली अहीरिनि काजर दीन्हे॥
गुजरिनि चली गोरसकी माँती। बढ़इनि चली भाग[11] की ताँती॥
चलीं लोहारिनि पैने नैना। भाटिनि चली मधुर अति बैना॥
गंधिनि चली सुगंध लगाये। छीपिनि[12] चली सो छीट छपाये॥

---

१ बासना=सुगंध। २ भई अहान=यह बात प्रख्यात हुई। ३ गोहन=साथ। ४ गौरी=गौड़ ब्राह्मणों की स्त्रियां। ५ पटोर=रेशमी कपड़ा। ६ तँबोलिन। ७ पउनि=पौनी (नेग पानेवाली), दासियां। ८ डाली=डलिया, टोकरी। ९ बिस्सुनाथ=(विश्वनाथ) महादेव जी। १० ठाठर=ठाठ (बनाव सिंगार)। ११ भाग की तांती=सौभाग्यवती बनाने वाली (विवाह का मण्डप स्तम्भ बढ़ई बनाता है। यह स्तंभ विवाह सामग्री का एक मुख्य अंग है। उसी स्तंभ के निकट बहुतों को सोहाग प्राप्त होता है। इसी से बढ़इन को 'जायसी' ने "भाग की तांती" विशेषण दिया है)। १२ छीपिनि=छींट छापने वाली जाति की स्त्री।

रँगरेजिनि बहु राती सारी। चलीं जुगुति सों नाउनि बारी॥
मालिनि चलीं हार लिय गाँथे। तेलिन चलीं फुलायल[1] माथे॥
कै सिंगार बहु बेसवा[2] चलीं। जहँ लग मूँदी विकसी कलीं॥

दोहा—नटिनि डोमिनी ढारिनी, सहनाइनि[3] भेरिकारि[4]।
निरतत नाद बिनोद सों, बिहँसत खेलत नारि॥२०४॥

चौपाई

कमल सहाय चली फुलवारी। फर फूलन की इच्छा-बारी[5]॥
आप आप महँ करहिँ जोहारू[6]। यह बसंत सब कहँ तेवहारू॥
चहैं मनोरा झूमक[7] होई। फर औ फूल लेइ सब कोई॥
फाग खेलि पुनि दाहब होरी। सैंतब[8] खेह उड़ाउब झोरी॥
आजु छाँड़ि पुनि दिवस न दूजा। खेलि बसंत लेउ कै पूजा॥
भा आयसु पदुमावति केरा। फेरि न आय करब हम फेरा॥
तस हम कहँ होइहि रखवारी। पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी॥

दोहा—पुनि रे चलब घर आपन, पूजि बिसेसर देव।
जेहिका होहि खेलना, आजु खेलि हँसि लेव॥२०५॥

चौपाई

काहू गही आँब कै डारा। काहू बिरह जाम्बु[9] अति छारा॥
कोइ नारंग कोइ झार चिरौंजी। कोइ कटहर बड़हर कोइ न्यौजी[10]॥
कोइ दारयों कोइ दाख खुखीरी[11]। कोइसोसदाफर तुरँज जँभीरी॥

---

१ फुलायल=(फूल तेल) फुलेल। २ बहु बेसवा=वेश्याओं की कई जातियां होती हैं—जैसे—गंधरबिन, किंनरी, बेड़िन, रामजनी, कंचनी, गणिका इत्यादि। ३ सहनाइनि=सहनाई बजाने वाली। ४ भेरिकारि =भेरी बजाने वाली। ५ इच्छा-बारी=ऐसी बाटिका जिसमें मन चाहे फल फूल मिलैं। ६ जोहारू=प्रणाम। ७ मनोरा झूमक=एक बसन्ती गान। ८ सैंतना=संचय करना। ९ जाम्बु=जामुन। १० न्यौजी=चिलगोजा। ११ खीरी=खिरनी।

कोइ जयफर कोइ लौंग सुपारी। कोइ कमरख कोइ गुवा[1] छोहारी॥
कोइ बिजउर कोइ नरियर चूरी। कोइ अमिली कोइ महुव खजूरी॥
कोइ हरफारेउरी जो कसौंदा[2]। कोइ अनार कोइ बेर करौंदा॥
काहु गही केरा कै घौरी[3]। काहू हाथ परो निँबकोरी[4]॥

दोहा—काहू पाईं नियरे, काहू कहँ गये दूर।
काहू खेल भया विष, काहू अमिरितमूर॥२०६॥

चौपाई

पुनि बीनहिँ सब फूल सहेली। जो जेहि आस पास सब बेलीं॥
कोइ केवरा कोइ चंप नेवारी। कोइ केतकि मालति फुलवारी॥
कोइ सदबर्ग[5] कुंद कोइ करना। कोइ चँबेलि नागेसर बरना[6]॥
कोइ सुगुलाब सुदरसन कूजा[7]। कोई सोनजरद भल पूजा॥
कोइ सो मौलसिरी पुहुप बकउरी[8]। कोइ रूप-मँजरि कोइ गौरी[9]॥
कोइ सिंगारहार तेहिँ पाँहाँ। कोई सेवती कदम की छाँहाँ॥
कोइ चंदन फूलहिँ जनु फूली। कोइ अजान बिरवा तर भूली॥

दोहा—फूल पाव कोइ पाती, जेहि क हाथ जो आँट।
चीर हार उरझाना, जहाँ छुवै तहँ काँट॥२०७॥

चौपाई

फर फूलन सब डालि[10] भराईं। झुंड बाँधि कै पंचम गाईं॥
बाजहिँ ढोल दुंदुभी भेरीं। मिरतँग तूर झाँझ चहुफेरीं॥

---

१ गुवा=एक प्रकार की सुपारी। २ कसौंदा=आंवला। ३ घौरी=फलों का गुच्छा। ४ निबकोरी=निबौरी, नीब के फल। ५ सदबर्ग=गेंदा। ६ बरना=(वरुणः) बन्ना वृक्ष का फूल। यह वृक्ष पलास की जाति का है। ७ कूजा=(कुंजिका) एक प्रकार का गुलाब। ८ बकउरी=बकावली। ९ गौरी=सफ़ेद मल्लिका। १० डालि=डलियां (फूल रखने की टोकरियां)।

सिंगि संख डफ संग म बाजे । बंसकार[1] महुवर सुर साजे ॥
और कहा, जित बाजन भले । भांति भांति सब बाजत चले ॥
रथहिं चढ़ीं सब रूप सोहाईं । लै बसंत मढ़-मँडफ सिधाईं ॥
नवत बसंत नवल वै बारीं । सेंदुर बुक्का[2] करहिँ धमारी[3]॥
खिनहिं चलहिँ खिन चाँचरि[4] होई । नाच कूद भूला सब कोई ॥

दोहा—सेंदुर खेह[5] उठा तस, गगन भयो सब रात ।
राति सकल महि धरती, रात बिरिछ बन पात ॥२०८॥

चौपाई

यहि बिधि खेलत सिंहल रानी । महादेव मढ़ जाय तुलानी[6] ॥
सकल देवता देखै लागे । दृष्टि पाप सब उनके भागे ॥
एहि कैलास[7] सुनी अपछरी । कहँ ते आय टूटि भुइ परी ॥
कोई कहै पदुमिनो आई । कोइ कहै ससि नखत तराई ॥
कोइ कह फूल कोइ फुलवारी । भूले सबै देखि सब बारी ॥
एक सुरूप औ सेंदुर[8] सारी । जानहु दिया सकल महि बारी॥
मुरछि परै जाँवत जो जोहै । मानहु मिरिग दवारिहिँ[9] मोहै॥

दोहा—कोई परा भँवर होइ, बास लीन्ह जनु चाँप[10] ।
कोइ पतँग भा दीपक, है अधजर तन काँप ॥२०९॥

चौपाई

पदुमावति गइ देव दुवारू । भीतर मँडप कीन्ह पैसारू ॥
देवहु संसौ[11] भा जिउ केरा । भागौं केहि बिधि मंडप घेरा ॥
एक जोहार कीन्ह औ दूजा । तिसरे आय चढ़ाई पूजा ॥
फर फूलन सब मँडप भरावा । चंदन अगर देव अन्हवावा ॥

---

१ बंसकार=बंशी । २ बुक्का=अबीर । ३ धमार=फाग का गान । ४ चांचरि फाग के स्वांग । ५ खेह=धूल । ६ तुलानी=निकट पहुंची । ७ कैलास=स्वर्ग, इन्द्रपुरी । ८ सेन्दुर सारी=लाल सारी पहने हुए । ९ दवारि=दावाग्नि में पड़कर । १० चांप=चंपा । ११ संसौ=(संशय) सदेह, संकट, शंका ।

भरि सेंदुर आगे भइ खरी। परसि देव औ पायन परी॥
और सहेली सबै बियाहीं। मोकहँ देव कतहुँ बर नाहीं॥
हौं निरगुन जेइ कीन्ह न सेवा। गुन निरगुन दाता तुम देवा॥
दोहा—बर सँजोग मोहिं मेरवहु[1], कलस जाति हौं मानि[2]।
जेहि दिन इच्छा पूजै, वेगि चढ़ाऊँ आनि॥२१०॥

चौपाई

ईछि ईछि[3] बिनवा जस जानी। पुनि कर जोरि ठाढ़ भइ रानी॥
उतरु को देय देब मरि गयऊ। सब अकूत[4] मँडफ महँ भयऊ॥
काटि पबारा जैस परेवा। मरि गा ईस उतरु को देवा॥
भे बिन जिउ सब नाउत[5] ओझा[6]। विष भइँ पूरि[7] काल भये गोझा[8]॥
जेहि देखा जनु बिसहर डसा। देख चरित पदुमावति हँसा[9]॥
भला हम आय मनावा देवा। गा जनु सोय को मानै सेवा॥
को इच्छा पुरवै दुख खोवा। जहँ मन[10] आय सो तनि तनि सेवा॥
दोहा—जेहि धरि सखी उठावहिं, सीस बिकल नहिं डोल।
धर[11] कोउ जीव न जानै, मुख रे बकत कुबोल॥२११॥

चौपाई

ततखन आई सखी बिहँसानी। कौतुक एक न देखेहु रानी॥
पुरुब बार जोगी कोइ छाये[12]। न जानौं कौन देस ते आये॥

---

१ मेरवहु=मिलाओ। २ कलस मानना=कलस चढ़ाने की प्रतिज्ञा करना। ३ ईछि=इच्छा भर जैसा उचित समझा उस भांति विनती की। ४ अकूत=जो कूता न जा सकै। ५ नाउत जादूगर, मंत्र जंत्र करने वाले। ६ ओझा=भूत झाड़नेवाले। ७ पूरि=पूड़ियाँ। ८ गोझा=कुसली, गुझिया। ६ ऐसा प्रयोग गो० तुलसीदासजी ने भी किया है। यथा:—

'मर्म बचन सीता तब बोला' (आ०)

१० मन=जहां जिसका मन आया तहां वह ताने सो रहा है। ११ धर=धड़। १२ छाये=ठहरे हैं।

जनु उन जोगी तंत अब खेला। सिद्ध होन निसरे सब चेला ॥
उन महँ एक जो गुरू कहावा। जनु गुरु दै काहू बउरावा ॥
कुँवर बतीसौ लछन सो गाता। दसयें लखन कहै एक बाता ॥
जानहु आहि गोपिचँद जोगी। कै सो आहि भरथरी वियोगी ॥
वे पिँगला[1] गये कजरी आरन[2]। या सिँघला सेवैं केहि कारन॥

दो०—यहि मूरत यहि मुद्रा, हम न दीख अवधूत।
जानहु होहि न जोगी, कोइ राजा कर पूत ॥ २१२ ॥

चौपाई

सुनि सो बात रानी रथ चढ़ी। कहँ अस जोगि जो देखऊँ मढ़ी॥
लै सँग सखिन कीन्ह तहँ फेरा। जोगि आइ जनु अछरन[3] घेरा॥
नैन कचोर[4] पेम-मद भरे। भइ सुदिष्टि जोगि सउँ[5] ढरे ॥
जोगी दिष्टि दिष्टि सउँ लीन्हा। नैन रूप नैनन जिउ दीन्हा ॥
जो मद चहत परा तेहि पाले। सुधि न रही ओहि एक पियाले ॥
परा माति गोरखकर चेला। जिउ तन छाँड़ि सरग कहँ खेला[6] ॥
किँगिरी गहे जो हुत बैरागी। मरतिहु बार ओही धुनि लागी ॥

दो०—जेहि धंधा जाकर मन, सपनेहु सूज सो धंध।
तेहि कारन तप साधहिं, करहिं पेम मन बंध ॥२१३॥

चौपाई

पदुमावत जस सुना बखानू। सहसकरा देखेसि तस भानू ॥
मेलेसि चंदन मकु खिन जागा। अधिकौ सूत सीर तन लागा ॥
तब चंदन आखर हिय लिखे। भीख लेबु तैं जोगि न सिखे ॥
बार आइ तब गा तुइँ सोई। कैसे भुगुति परापति होई ॥
अब जो सूर आहि ससि राता। आय चढ़ै सो गगन पुनि साता ॥

---

१ पिंगला=गोपीचन्द की रानी का नाम। २ आरन=(अरण्य) बन। ३ अछरन=अप्सरायें। ४ कचोर=पियाला। ५ सउँ=सामने। ६ खेला=चला गया।

लिखि कै बात सखी सों कही। यहै ठाउँ हौं बारत[1] अही ॥
प्रगट[2] होउँ तो होय अस भिंगू[3]। जगत दिया कर होय पतिंगू ॥
दो०—जा सउँ हौं चख हेरौं, सोइ ठाउँ जिउ देइ।
यहि दुख कतहुँ न निसरौं, को हत्या अस लेइ ॥ २१४ ॥

चौपाई

कीन्ह पयान सबन्ह रथ हाँका। परमत छाँड़ि सिंगल गढ़ ताका ॥
बलि भये सबै देवता बली। हत्यारिन हत्या कै चली ॥
को अस हितू मुए गह बाहीं। जो पै जिउ अपने तन नाहीं ॥
जो लहि जिउ आयन सब कोई। बिन जीउ सबै निरापन[4] होई ॥
भाइ बंधु औ लोग पियारा। बिन जिउ घरी न राखै पारा ॥
बिन जिउ पिंड छार कर कूरा। छार मिलावै सोइ हितु[5] पूरा ॥
तहि जिउ बिना अमर भा राजा। को अब उठै गरब सों गाजा ॥
दो०—परी कया भुइँ लोटै, कहँ रे जीउ बल[6] भीउ।
को उठाइ बइसारै, बाजि[7] पिरीतम जीउ ॥२१५॥

चौपाई

सो पदुमावति मँदिर पईठी। हँसत सिंहासन जाइ बईठी ॥
निस सूती सुनि कथा बिहारी[8]। भा बिहान औ सखिन हँकारी ॥
देव पूजि हौं आइउँ काली। सपन एक निसि देखेउँ आली ॥
जनु ससि उदय पुरुब दिस लीन्हा। औ रबि उदौ पछिमदिसकीन्हा ॥
पुनि चलि सूर चाँद पहँ आवा। चाँद सुरिज दुहुँ भयो मेरावा ॥
दिन औ राति जानु भए एका। राम आय रावन गढ़ छेंका ॥
तस कछु[9] कहा न जाय निखेधा। अरजुन बान राहु गा बेधा ॥

---

१ यहै ठाउँ······अही = मैं इसी मौके को बचाती थी। २ प्रगट होउँ = जब मैं बाहर निकलती हूँ। ३ भिंगू = कोई अशुभ घटना। ४ निरापन = (निःआपन) पराया। ५ हितु = हितुवा। ६ बल भीउ = भीम के समान बली। ७ बाजि = बिना, बगैर। ८ बिहारी = बिहार की। ९ तसकछु······निखेधा = पुनः वह बात हुई जो कही नहीं जा सकती।

दो०—जनहु लंक सब लूसी[1], हनू[2] बिधंसी बारि[5]।
जागि उठिउँ अस देखत, कहु सखि सपन बिचारि ॥२१६॥

चौपाई

सखी सो बोली सपन बिचारू। कालिह जो गई देव के बारू[3] ॥
पूजि मनायहु बहुत बिनाती[4]। परसन आइ भयो तुम्ह राती ॥
सूरज पुरुब चांद तुम रानी। अस बर देव मिलावै आनी ॥
पछूँ[5] खंड का राजा कोई। सो आवै बर तुम कहँ होई ॥
कछु पुनि जूझि[6] लागि तुम रामा। रावन[7] सों होइहि संग्रामा ॥
चंद सुरिज सों होइ बियाहू। बारि बिधंसब बेधब राहू ॥
जस ऊषा कहँ अनिरुध मिला। मेटि न जाय लिखा पुरबिला[8] ॥

दो०—सुख सुहाग है तुम कहँ, पान फूल रस भोग।
आजु कालिह भा चाहै, अस सपने क सँजोग ॥२१७॥

---

१ लूसी=लूटी। २ हनू बिधंसी बारि=हनुमान ने बाटिका विध्वंस की। ३ बारू=द्वार। ४ बिनाती=बिनती। ५ पछूं खंड=पश्चिम देश का। ६ जूझि=युद्ध। ७ रावन=लंका का राजा (यहां सिंहल दीप का वर्तमान राजा गंधर्वसेन, पदमावती का पिता)। ८ पुरबिला=पूर्व जन्म के कर्मों का फल।

२२—बाईसवाँ खंड

राजा रतनसेन का जलने को तैयार होना

चौपाई

कै बसंत पदुमावति गई। राजहिँ तब बसंत सुधि[1] भई ॥
जो जागा न बसंत न बारी। नहिँ सो खेलन खेलन हारी ॥
ना वहँ[2] कै वह रूप सोहाई। गइ हेराय पुनि दिष्टि न आई ॥
फूल झरे सूखी फुलवारी। दिष्टि परीं उकठी[3] सब झारी[4] ॥
केइँ यह बसत बसंत उजारा। गा सो चाँद अथवा लै तारा ॥
अब तेहि बिन भा जग अँधकूपा। वह सुख छाँह, जरौं हौं धूपा ॥
बिरह दवाँ[5] को जरत सिरावा। को पीतम सौं करै मेरावा[6] ॥

दो०—हिये दीख चंदन घुरा[7] मिलि कै लिखा बिछोउ[8]।
हाथ मींजि सिर धुनि रोवै, जो निचिंत अस सोउ ॥२१८॥

चौपाई

जस बिछोह जल मीन दुहेला[9]। जलहु ते काढ़ि अगिनि महँ मेला ॥
चंदन आँक दाग होइ परे। बुझिहिँ न ते आखर परजरे ॥
जेहि[10] सर अगिन होय होइँ लागै। सब तन दागि सिंह बन दागै ॥
जरैं मिरिग बनखँड तेहि ज्वाला। औ तेउ जरैं बैठ तेहि छाला ॥

---

१ बसंत की सुध होना=ठीक ठीक ज्ञान होना, होश हवास ठीक होना। २ वहँकै=वहां की, उस स्थान की। ३ उकठी=सूखी। ४ झारी=झाड़ी। ५ दवां=दावाग्नि। ६ मेरावा=मिलान, मुलाकात। ७ घुर=लगा हुआ। ८ बिछोउ=बिछोह। ९ दुहेला=दुखित। १० जेहि······दागै=जिस बांस में अग्नि होती है, पहले उसी बांस में लगती है, और सारे शरीर को जल कर फिर वन के सिंहों को जलाती है। (अथवा) जिसके सिर में बिरह की अग्नि होती है, वह उसे अवश्य जलाती है और उसके सारे शरीर में जंगली शेर के से दाग़ पड़ जाते हैं।

कत तैं[1] आँक लिखे जो सोवा। मकु आँकन करतार बिछोवा॥
जस दुखंत[2] कहँ साकुंतला[3]। माधोनलहिँ कामकंदला[4]॥
राजा नल कहँ जैस दमावति[5]। नैना मूँदि छिपी पदुमावति॥
दो०—आय बसंत जो छिपि रहा, होइ फूलन के भेस।
केहि बिधि पाऊं भँवर होइ, केहि गुरु के उपदेस॥२१९॥

चौपाई

रोवै रतन माल जनु चूरा[6]। जहँ होइ ठाढ़ होव तहँ कूरा॥
कहाँ बसंत सो कोकिल बैना। कहाँ कँवल अलि बेधी-नैना[8]॥
कहाँ सो मूरति परी जो डीठी। काढ़ि लिहिसि जिउ हिये पईठी॥
कहाँ सो दरस परस जेहिं लाहा। जो सुबसंत, करीलहिँ काहा॥
पात बिछोही रूख जो फूला। सो महुवा अस रोवै भूला॥
टपकैं महुव आँसु तस परहीं। होइ महुवा बसंत जस झरहीं॥
मोर बसंत सो पदुमिनी बारी। जेहि बिन भयो बसंत उजारी॥
दो०—पावा नवल बसंत पुनि, बहु आरति बहु चोंप[9]।
ऐस न जाना अंत पुनि, पात झरे होइ कोंप[10]॥ २२०॥

चौपाई

अहो महा बिसवासी[11] देवा। कत मैं आइ कीन्ह तोरि सेवा॥
अपनी नाव चढ़ै जो देई। सो तौ पार उतारै खेई॥

---

१ कत तैं=हे ब्रह्मा! तू ने मेरी भाग्य में ऐसे अंक क्यों लिखे कि जिनके कारण मैं पदमावती के आने पर सो गया। शायद ब्रह्मा के अक्षरों हो ने मेरी और पदमावती की भेंट नहीं होने दी। २ दुखंत=दुःष्यन्त ३ साकुन्तला=शकुन्तला। ४ कामकन्दला=माधवानल और कामकंदला की प्रेम कथा प्रसिद्ध है। ५ दमावति=दमयन्ती। ६ माल जनु चूरा= जैसे मोतियों का माला चूर चूर हो गया हो (मोती से आंसू गिरते थे) ७ कूरा=(कूट) ढेर। ८ अलि बेधी-नैना=जिसने भँवर के नेत्रों को बेध डाला। ९ चौंप =हुलास। १० कोंप=कोंपल, नव पल्लव। ११ बिसवासी =(विश्व—आशी=संसार को खाने वाला)।

सुफल लागि पगु टेक्यौं तोरा। सुवा का सेमर तू भा मोरा॥
पाहन चढ़ि जो चहै भा पारा। सो ऐसै बूड़ै मँझ-धारा॥
पाहन सेवा कहां पसीजा। जनम न पलुहै[1] जो नित भीजा॥
बाउर सोइ जो पाहन पूजा। सकतिक भार लेइ सिर दूजा[2]॥
काहे न पूजिय सोइ निरासा[3]। मुए जियत मन जाकर आसा॥

दोहा—सिँह तरेंड़ा[4] जिन गहा, पार भये तेहिँ साथ।
ते पै बूड़े वारहिँ[5], भेड़ पूछ जिन्ह हाथ॥ २२१॥

चौपाई

देव कहा सुनु बौरे राजा। देवहिँ अगमन[6] मारा गाजा॥
जो पहिले अपनेइ सिर परई। सो का काहु क धरहरि[7] करई॥
पदुमावति राजा कै बारी। आइ सखिन सँग मँडप उघारी॥
जैस चाँद गोहन सब तारा। परेउ भुलाय देखि उजियारा॥
चमकैं दसन बीजु की नाईं। नैन चक्र जमकात[8] भँवाईं[9]॥
हौं तेहिँ दीप पतँग होइ परा। जिउ जम काढ़ि सरग लै धरा॥
फेरि न जानौं दहुँ का भई। दहुँ कैलास कि कहुँ अपसई[10]॥

दोसा—अब हौं मरौं निसाँसी, हिये न आवै साँस।
रोगिहा कै को चालै, वैदहि जहाँ उपास॥ २२२॥

चौपाई

अन्नै[11] दोष देउँ का काहू। संगी कया मया नहिँ ताहू॥

---

१ पलुहै=कृपालु हो। द्रवै (पल्ल-वित हो)। २ सकति क······दूजा =शक्तिवान का भार कोई दूसरा अपने सिर कैसे ले सकता है। ३ निरासा =जो किसी से कुछ आशा न रखता हो। ४ तरेंड़ा=नीचे का भाग (यहां पूँछ)। ५ वारहिं=इसीपार। ६ अगमन=पहले ही। ७ धरहरि =रक्षा, सहायता। ८ जमकात=यमकर्तरी एक प्रकार की छोटी तलवार। ९ भँवाई=भौहैं। १० अपसई=(अपसरण) चली गई। ११ अन्नै= व्यर्थ, बेफ़ाइदा।

हितू पियारा मीत बिछोई। साथ न लाग आपु गा सोई॥
का मैं कीन्ह जो काया पोखी। दूषन मोहिं आपु निरदोषी॥
फागु बसंत खेलि गइ गोरी। मोहि तन लाय आगि ज्यौं होरी॥
अब अस काहि छार सिर मेलौं। छारै होउँ फागु तस खेलौं॥
कत तब कीन्ह छाँड़ि कै राजू। अयुर[1] गई न भा सिधि काजू॥
पायों नहिँ ह्वै जोगी जती। अब सर[2] चढ़ौं जारौं जस सती॥

दोहा—आय पिरीतम फिरि गयो, मिला न आय बसंत।
अब तन होरी घालि[3] कै, जारि करौं भसमंत[4]॥२२३॥

चौपाई

कुकुनू[5] पंखि जैस सर साजा। तस सर बैठ जरा चह राजा॥
सकल देवता आय तुलाने। दहुँ कस होय देव-अस्थाने॥
बिरह अगिन बजरागि असूझा। जरै सूर न बुझाये बूझा॥
तेहि के जरत जो उठै बजागी[6]। तीनों लोक जरहिँ तेहिँ लागी॥
अब की घरी चिनँग पै छूटैं। जरैं पहार पहन[7] सब फूटैं॥
देउता सबै भसम होइ जाहीं। छार समेटै पाउब नाहीं॥
धरती सरग होय सब ताता। है कोई यहि राख बिधाता॥

दोहा—मुहम्मद चिनँग परेम कै, सुनि महि गगन डेराइ।
धनि बिरहिनि औ धनि हिया, जहँ यह आगि समाइ॥२२४॥

चौपाई

हनुमत बीर लंक जेइ जारी। परबत उहै अहा रखवारी॥
बैठ तहाँ भे लंका ताका। छठयेँ मास देइ उठि हांका॥

---

१ आयुर=उमर, जिंदगी। २ सर=चिता। ३ घालिकै=डालकर। ४ भसमन्त=भस्म, राख। ५ कुकुनू=(अ० कुकुनुस)=एक पक्षी जिस की चोंच में अनेक छेद होते हैं। यह पक्षी जब मस्त होकर गाता है, तब उसके घोंसले में आग लग जाती है और पक्षी जलकर राख हो जाता है। ६ बजागी=बज्राग्नि। पहन=पाहन, पत्थर।

तेहि की आगि उहउ पुनि जरा। लंका छाँड़ि पलंका[1] परा॥
जाय तहाँ यह कहा सँदेसू। पारवती औ जहाँ महेसू॥
जोगी आहि बियोगी कोई। तुम्हरे मँडफ आगि तेहिं बोई॥
जरे लँगूर सो राते ऊहां। निकसि जो भाग भये करमूहां॥
तेहि बजरागि जरै हौं लागा। बजर अंग जरि उठा तो भागा॥

दोहा—रावन लंका हौं दही, वैं मोहिं दाधा आय।
कनक[2] होत है रावट[3], को गहि राखै पाय॥ २२५॥

२३—तेईसवां खण्ड

राजा रतनसेन महादेव संबाद

चौपाई

ततखन पहुँचा आय महेसू। बाहन बैल कुष्टि कर भेसू॥
कांथर कया हड़ावरि[4] बांधे। मुंडमाल औ हत्या कांधे॥
सेसनाग सोहै कँठमाला। तन भभूति हस्ती कर छाला॥
पहुँचो रुद्र[5] कँवल के गटा[6]। ससि माथे औ सुरसरि जटा॥
चवँर घंट औ डमरू हाथा। गौरा पारबती धन साथा॥
औ हनुमंत बीर सँग आवा। धरे भेस जनु बंदर छावा[7]॥
अउतहिँ कहेन न लावहु आगि। ताकर सपथ जरै जेहि लागि॥

---

१ पलंका=पलंग, आराम का स्थान (यहां कैलाश पर्वत)। २ कनक=सोने के पर्वत। ३ रावट=रावटी, (एक प्रकार का काला पत्थर) झांवा। ४ हड़ावरि=हड्डियों का समूह। ५ रुद्र=रुद्राक्ष। ६ कँवल के गटा=कमल गट्टा। ७ छावा=बच्चा।

दो०—की तप कर न पारेहु, की रे नसायहु योग ।
जियत जीव कस काढ़ै, कहु सो मोहिँ बियोग[1] ॥२२६॥

चौपाई

कहेसि को मोहिँ बातन बिलमावा । हत्या केर न तोहि डर आवा ॥
जरै देहु दुख जरौं अपारा । निस्तरि जाउँ जरे इकबारा ॥
जस भरथरी लागि पिंगला । मो कहँ पदुमावति सिंघला ॥
मैं पुनि तजा राज औ भोगू । सुनि सो नाउँ लीन्हेउँ तप जोगू ॥
यहि मढ़ सेयों आय निरासा । गई सो पूजि, मन पूजि न आसा ॥
तैं यह जिउ दाधे पर दाधा । आधा निकसि रहा घट आधा ॥
जो अधजर सो बिलँव न लावा । करत बिलम्ब बहुत दुख पावा ॥

दो०—एतना बोल कहत मुख, उठी बिरह कै आगि ।
जो महेस न बुझावत, सगल जगत हुति लागि ॥२२७॥

चौपाई

पारवती मन उपना चाऊ[2] । देखउँ कुँवर केर सतभाऊ ॥
दहुँ यह बोच कि पेमहिँ पूजा । तन मन एक कि मारग दूजा ॥
भइ सुरूप जानहु अपछरा । बिहँसि कुँवर कर आँचर धरा ॥
सुनहु कुँवर मो सों एक बाता । जस रँग मोहिन औरहि राता ॥
औ बिधि रूप दीन्ह है तो कहँ । उठा सो सब्द जाय सिव लोकहँ ॥
तब हौं तो कहँ इँदर पठाई । गइ पदुमिनि तुइ आछरि पाई ॥
अब तजु जरन सरन तप जोगू । मों सो मान जनम भर भोगू ॥

दो०—हौं आछरि कैलास कै, जेहि सर पूज न कोइ ।
मोहि तजि सँवरि जो ओहि मरसि, कौन लाभ तोहि होइ ॥२२८॥

चौपाई

भलेहि रंग तोहि आछरि राता । मोहि दुसरे सों भाव न बाता ॥
मोहि ओहि सँवरि मुयउ अस लाहा । नैन जो देखसि पूँछसि काहा ॥

---

१ बियोग=दुःख । २ चाऊ=प्रबल इच्छा ।

अबहिँ ताहि जिउ देइन पावा । तोहि असि आछरि ठाढ़ मनावा ॥
जो जिउ देहौं ओहि की आसा । न जनौं काह होय कैलासा ॥
हौं कैलास काह लै करौं । सो कैलास लागि जेहि मरौं ॥
ओहि के बार जीउ तन बारौं । सिर उतारि न्यौछावरि डारौं ॥
ताकर चाह[1] कहै जो आई । दोउ जगत तेहि देउँ बड़ाई ॥

दो०—ओहि न मोरि कछु आसा, हौं ओहि आस करेउँ ।
तेहि निरास पीतम कहँ, जिउ न देउँ का देउँ ॥२२६॥

चौपाई

गौरी हँसि महेस सों कहा । निसचै यह बिरहानल दहा ॥
निसचै यह ओहि कारन तपा । परिमल[2] पेम न आछै[3] छपा ॥
निसचै पेम पीर यह जागा । कसे कसौटी कंचन लागा ॥
बदन पियर जल डभके[4] नैना । परगट दोउ पेम के धैना ॥
यहि ओहि जनम लागि ओहि सीझा । चहै न औरहिँ ओहई रीझा ॥
महादेव देउतन के पिता । तुम्हरे सरन राम रन जिता ॥
एहू कहँ तस मया करेहू । पुरवहु आस कि हत्या लेहू ॥

दो०—हत्या दुइ लिए काँधे, अजहुँ न गा अपराध ।
तिसरि लेहु कै माथे, जोरे लेइँ कै साध ॥२३०॥

चौपाई

सुनि कै महादेव कै भखा[5] । सिद्ध पुरुष राजै मन लखा ॥
सिद्धहिँ अङ्ग न बैठे माखी । सिद्धहि पलक न लागै आँखी ॥
सिद्धहि संग होय नहिँ छाया । सिद्धहि होय न भूख न माया ॥
जो जग सिद्ध गोसाईं[6] कीन्हा । परगट गुप्त रहै को चीन्हा ॥
बैल चढ़ा कुष्टी कर भेसू । कह राजा सत आय महेसू ॥

---

१ चाह = खबर । २ परमल = सुगंध । ३ आछै = है । ४ जल डभ के नैना = आंसू से भरे हुए नेत्र । ५ भखा = भाषा । ६ गोसाईं = परमेश्वर ।

चीन्है सोइ रहै तेहि खोजा। जस बिकरम औ राजा भोजा॥
कर जिउ तंत[1] संत सउँ हेरा। गयो हेराय जो ओहि भा मेरा॥
दो०—बिन गुरु पंथ न पावइ, भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी सिद्ध होय तब, जब गोरख सों भेंट॥२३१॥

चौपाई

ततखन रतनसेन गहबरा[2]। छाँड़ि डफार[3] पाँय लै परा॥
माता पिता जनमि कत पाला। जो अस पेम फाँद गिउँ घाला॥
धरती सरग मिले हुत दोऊ। कत निरार करि दीन्ह बिछोऊ॥
पदिक पदारथ करहु ते खोवा। टूटहिँ रतन रतन तस रोवा॥
गगन मेघ जस बरसहिँ भले। धरती पूरि सलिल होइ चले॥
सायर[4] उमड़ि सिखर गे पाटे[5]। चढ़े पानि पाहन हिय फाटे॥
प्रान बूँद होइ होइ सब गिरै। पेम फाँद कोऊ जनि परै॥
दो०—तस रोवै जस जिउ जरै, गिरै रकत औ माँसु।
रोंव रोंव सब रोवहिँ, सोत सोत[6] बहि आँसु॥२३२॥

चौपाई

रोवत बूड़ि उठी संसारू। महादेव तब भयो मयारू[7]॥
कहेसि न रोउ बहुत तैं रोवा। अब ईसुर सब दारिद खोवा॥
जो दुख सहै होय सुख ओका[8]। दुख बिन सुख न जाय सिउलोका॥
अब तू सिद्ध भया सिधि पाई। दरपन कया छूटि गइ काई॥
कहौं बात अबहूँ उपदेसी। लागु पंथ भूले परदेसी॥
जौ लहि चोर सेंध नहिँ देई। राजा केर न मूँखै पेई[9]॥
चढ़ै तो जाइ पार ओहि खूँदी[10] परै तो सेंधि सीस सों मूंदी॥

---

१ तंत=ठीक, बराबर। २ गहबरा=गह्वर हृदय होकर। ३ डफार छांड़ना=फूट फूट कर रोना। ४ सायर=(सागर) तालाब। ५ पाटे=धोबियों के पाट। ६ सोत सोत=रोमकूप। ७ मयार=कृपालु। ८ सुख-ओक=सुख का घर। ९ पेई=पूंजी, धन। १० खूंदना=कूदना।

दो०—कहौं सो तोहि सिंहल गढ़, है खँड सात चढ़ाव ।
फिरा न कोई जियत जी, सरग पंथ दै पाव ॥२३३॥

चौपाई

गढ़ तस बाँक जैस तोरि काया । परखि देखु तैं ओहि कै छाया ॥
पाइय नाहि जूझि हठ कीन्हें । जेइँ पावा तेइँ आपुहि चीन्हें ॥
नौ पँवरीं तेहिं गढ़ मंझारा । औ तहँ फिरैं पाँच कोतवारा ॥
दसौं दुवार गुपुत एक नाकी[1] । अगम चढ़ाव बाट सुठि[2] बाँकी ॥
भेदी[3] कोउ जाइ ओहि घाटी । जो लै भेद चढ़ै होइ चाँटी ॥
गढ़तर कुंड सुरँग[4] तेहि माँहा । ते वै पंथ कहौं तोहि पाहाँ ॥
चोर पैठि जस सेंधि सँवारी । जुवा पैंत[5] जस लाइ जुवारी ॥

दो०—जस मरजिया[6] समुँद धसै, हाथ आव तब सीप ।
ढूँढ़ै सरगदुवारि[7] जो, चढ़ै सो सिंघल दीप ॥२३४॥

चौपाई

दसौं दुवार तालिका[8] लेखा । उलटि दिष्टि जो लाव सो देखा ॥
जाय सो जाय स्वाँस मनबंदी[9] । जस धँसि लीन्ह कान्ह कालिंदी[10] ॥
गा पतार काली भन नाथा । कँवल पुहुप तब आयो हाथा ॥
परगट लोकचार[11] कहु बाता । गुपुत लाउ मन जासों राता ॥
हौं हौं कहत सबै मति खोई । जो तू नाहिं, आहि[12] सब सोई ॥
जियतहि जो रे मरै एक बारा । पुनि को मीचु मरै को मारा ॥
आपुहिं गुरू सो आपुहिं चेला । आपुहिं सब औ आपु अकेला ॥

---

१ नाकी=तंग दरवाज़ा । २ सुठि बांकी=बहुत टेढ़ी । ३ भेदी=भेद जानने वाला । ४ सुरंग=गुप्त रास्ता । ५ पैंत=दांवँ, बाज़ी । ६ मरजिया=गोताखोर । ७ सरगदुवारि=सर्गद्वारी, ऊपर चढ़ने का तंग रास्ता । ८ तालिका=कुंजी । ९ स्वांस मनबन्दी=स्वांस और मन को बांधने वाला । १० कालिंदी=जमुना । ११ लोकचार=लोकाचार । १२ आहि=जो तू अपने को नास्ति समझै (अहंकार छोड़ दे) तो तू सब कुछ हो जाय ।

दो०—आपुहिं मीचु जियन पुनि, तन मन आपुहिँ सोय ।
आपुहिं करै जो चाहै, कहाँ को दूसर कोय ॥२३५॥

२४—चौबीसवाँ खंड

रतनसेन ने सिंघलगढ़ छेंका

चौपाई

सिद्धि-गोटिका[1] राजैं पावा । औ श्री सिद्ध गनेस मनावा ॥
जब संकर सिधि दीन्हि गोटेका[2] । परा हौर[3] जोगिन गढ़ छेंका ॥
सबै पदुमिनी देखैं चढ़ी । सिंघल घेरि[4] गईं उठि मढ़ीं ॥
जस-घर-फिरा चोर मत कीन्हा । तेहि बिधि सेंधि चाह गढ़ दीन्हा ॥
गुपुत चोर जो रहै सो साँचा । परगट होइ जीउ नहिं बाँचा ॥
पँवरि पँवरि गढ़ लागि किंवारा । औ राजा सों भई पुकारा ॥
जोगी आइ छेंकि गढ़ मेले । न जनौं कौन कहाँ कहँ खेले ॥
दो०—भई रजायसु देखहु, को भिखारि अस ढीठ ।
बेगि बरजि तेहि आवहु, जन दुइ जाइ बसीठ[5] ॥२३६॥

चौपाई

उतरि बसिठ दुइ आइ जोहारे । की तुम जोगी की बनजारे ।
भई रजायसु आगे खेलहु । गढ़ तर छाँड़ि दूर है मेलहु ॥

---

१ सिद्धि गोटिका=कार्य सिद्धि की युक्ति । २ सिधि गोटेका=सिद्धि गोटिका । ३ परा हौर=शोर मचा । ४ सिंघल घेरि गई उठि मढ़ीं=सिंघल गढ़ के चारों ओर मढ़ी ही मढ़ी बन गई (जोगियों के रहने के लिये) । ५ बसीठ=दूत ।

अस लागेहु केहि के सिख दीन्हे। आयहु मरैं हाथ जिउ लीन्हे॥
इहाँ इन्द्र अस राजा तपा। जबहि रिसाइ सूर डर छपा॥
हौ बनजार तो बनिज[1] बिसाहौ। भरि बैपार[1] लेहु जो चाहौ॥
जोगी हौ त जुगुति सों माँगौ। भुगुति[2] लेहु लै मारग लागौ॥
इहाँ देवता अस गये हारी। तुम पतिंग को आहु भिखारी॥

दो०—तुम जोगी बैरागी, कहत न मानौ कोहु।
लेहु माँगि कुछु भिच्छा, खेलि अनत[3] कहँ होहु॥२३७॥

चौपाई

आन भीख हौं आयौं लेईं। कस न लेहूँ जो राजा देईं॥
पदुमावत राजा के बारी। हौं जोगी तेहि लागि भिखारी॥
खप्पर लिहे बार[4] भा माँगों। भुगुति देइ लै मारग लागों॥
सोई भुगुति परापति पूजा। कहाँ जाउँ अस बार न दूजा॥
अब धर इहाँ जीउ तेहि ठाऊं। भसम होउँ पै तजौं न नाऊँ॥
जस बिन प्रान पिंड है छूँछा। धरम[5] लागि कहिये जो पूँछा॥
तुम बसीठ राजा की ओरा। साजि[6] होहु यहि भीख निहोरा॥

दो०—जोगी बार आउ सो, जेहि भिच्छा कै आस।
जो निरास डिढ़[7] आसन, कित गवनै केहि पास॥२३८॥

चौपाई

सुनि बसीठ मन अपने रीसा[8]। जौ पीसत घुन जायहि पीसा॥
जोगी ऐस कहै नहिँ कोई। सो कहु बात जोगि तोहिं होई॥
वह बड़ राज इँदर कर पाटा। धरती परे सरग को चाटा॥
जो यह बात जाय तहँ चली। छूटहिं अबहिं हस्ति सिंघली॥

---

१ बनिज, बैपार=सौदा, सुलुफ। २ भुगुति=भोजन। ३ खेलि अनत कहँ होहु=अन्यत्र को चल दो। ४ बार भा=दरवाजे होकर। ५ धरम लागि=धर्म लगा (धर्म की बात) ६ साखि···निहोरा=इस भीख मांगने के साक्षी होना। ७ डिढ़ आसन=दृढ़ आसन। ८ रीसना=रुष्ट होना।

औ छूटहि सो बज्र के गोटा[1] । बिसरै भुगुति होय सब खोटा ॥
जहँ लगि दिष्टि न जाय पसारी । तहाँ पसारसि हाथ भिखारी ॥
आगे देखि पाउ धरु नाथा[2] । तहाँ न हेरु टूट जहँ माथा ॥
दो०—वह रानी जेहि जोह मुँह, तेहि क राज औ पाट ।
सुंदरि जाय राज घर, जोगिहिं बाँदर काट ॥२३९॥

चौपाई

जो जोगी सत बाँदर काटा । एकै जोग न दूसर बाटा ॥
और साधना आवै साधे । जोग साधना आपुहि दाधे ॥
सर[3] पहुँचाव जोग कर साथू । दिष्टि चाहि अगमन होइ हाथू ॥
तुम्हरे जोर सिंघल के हाथी । हमरे हस्ति गुरू बड़ साथी ॥
हस्ति नास्ति[4] तेहि करत न बारा । परबत करै पाउँ कै छारा ॥
जो रे गिरि-गढ़ जाँवत भये । जो गढ़-करब करहिं ते नये ॥
अंत जो चलना कोउ न चीन्हा । जो आवा सो आपन कीन्हा

दो०—जोगिहि कोह न चाही, तब न मोहिँ रिस लागि ।
जोगि तंत ज्यों पानी[5], काह करै तेहि आगि ॥२४०॥

बसिठहिं जाय कही सब बाता । राजा सुनत कोह भा राता ॥
ठाँवहिं ठाँव कुँवर सब माखे[6] । केइँ अब लौं ये जोगी राखे ॥
अबहूँ बेगिहि करौ सँजोऊ[7] । तस मारहु हत्या किन होऊ ॥
मंत्रिन कहा रहहु मन बूझे । पति[8] न होय जोगिन सों जूझे ॥

---

१ गोटा=गोला । २ नाथ=जोगी । ३ सर पहुँचाव······हाथू=जो कोई योग का साथ अंत तक देता है (अंत तक योग को निबाहता है) उसका हाथ वहां तक पहुंचता है, जहां (दूसरों की) दृष्टि भी नहीं पहुंचती । ४ नास्ति=हाथियों को नाश करने में इसे देर न लगेगी । ५ जोगि तंत ज्यों पानी=जोगी ठीक पानी की तरह है । ६ माखे=क्रुद्ध हुए । ७ करौ सँजोउ=लड़ाई का समान जोड़ो । ८ पति=इज्जत की बात ।

वै मारे तौ काह भिखारी। लाज होय जो आवै हारी॥
ना भव मुए न मारे मोखू। दुहूँ बात तुम लागै दोखू॥
रहै देहु[1] जो गढ़ तर मेले। जोगी कत[2] आये पुनि खेले[3]॥

दो०—रहै देहु जो गढ़ तरे, जिन चालहु यह बात।
नितहिं जो पाहन भख करहिं, अस केहि के मुख दाँत॥२४१॥

चौपाई

गये बसीठ पुनि बहुरि न आये। राजै कहा बहुत दिन लाये॥
न जानौ सरग बात दहुँ काहा। काहु न आइ कही फिरि चाहा[4]॥
पंख न काया पवन[5] न पाया[6]। केहि बिधि मिलौं होउँ केहि छाया[7]॥
सँवरि रकत नैनन भरि चुवा। रोइ हँकारेसि झाँझी[8] सुवा॥
परे जो आंसु रकत के टूटी। रेंगि चलीं जनु बीर बहूटी॥
ओही रकत लिखि दीन्ही पाती। सुवा जो लीन्ह चोंच भइ राती॥
बाँधी कंठ परा जरी काँठा[9]। बिरह क जरा जाय कत नाठा[10]॥

दो०—मसि नैना लिखनी बरुनि, रोइ रोइ लिखा अकत्थ[11]।
आखर दहैं न कोइ छुवै, दीन्ह परेवा हत्थ॥२४२॥

चौपाई

औ मुख बचन सो कहेसि परेवा। पहिले मोरि बहुत कहि सेवा[12]॥
पुनि रे सँघारि कहेसु अस दूजी। जिउबल दीन्ह देवतन पूँजी॥
सो अबही तइसै बल लागा। बल जिए रहा न तन सो जागा॥

---

१ रहै देउ=रहने दो। २ कत=कितने। ३ खेले=चले गये। ४ चाह=खबर, समाचार। ५ पवन=ज़ोर, बल। ६ पाया=पांव। ७ होउँ केहि छाया=किसकी शरण जाऊँ। ८ मांझी=बीच में पड़ने वाला, बिचवानी। ९ कांठा=कंठा। १० जाय कत नाठा=कैसे नष्ट किया जा सकता है, कैसे मिटाया जा सकता है। ११ अकत्थ=न कहने योग्य वार्ता। १२ सेवा=बिनय।

भलेहि ईस हौं तुम्ह बल दीन्हा । जहँ तुम तहाँ भाव[1] बल कीन्हा ॥
जो तुम मया कीन्ह पगु धारा । दिष्टि दिखाव बान बिष मारा ॥
जो अस जाकर आसा-मुखी[2] । दुख महँ ऐस न मारै दुखी ॥
नैन भिखारि न मानै सीखा । अगमन[3] दौरि लीन्ह पै भीखा ॥
दो०—नैनन नैन जो बेधि गे, नहिं निकसैं वै बान ।
हिये जो आखर तुम लिखे, ते सुठि घोंटैं प्रान[4] ॥ २४६ ॥

चौपाई

ते बिष बान लिखौं कहँ ताईं । रकत जो चुवा भीजि दुनियाईं[5] ॥
जान जो गारै[6] रकत पसेऊ । सुखी न जान दुखी कर भेऊ ॥
जेहिं न पीर तेहिँ काकर चिंता । प्रीतम नीठुर होइ अस निंता[7] ॥
का सौं कहौं बिरह कै भाषा । जा सौं कहौं होय जरि राखा ॥
बिरह आगि तन जनमैं जरई । नैन नीर सायर सब भरई ॥
पाती लिखी सँवरि तुम्ह नामा । रकत लिखे आखर भये स्यामा ॥
आखर जरहिँ न कोऊ छुवा । तब दुख देखि चला लै सुवा ॥
दो०—अब सुठि मरन छूँछि गइ, पाती पीतम हाथ ।
भेंट होत दुख रोवत, जीउ जात जो साथ ॥ २४४ ॥

चौपाई

कंचन तार बांधि गिउँ पाती । लै गा सुवा जहाँ धन राती ॥
जैसे कँवल सुरिज की आसा । तीर कंथ बहु[8] मरै पियासा ॥
बिसरा भोग सेज सुख बासू । जहाँ भँवर तहँ सबै हुलासू ॥
तब लग धीर, सुना नहिं पीऊ । सुना तो घरी रहै नहिं जीऊ ॥
तब लग सुख, हिय पेम न जाना । जहाँ पेम, कत सुख बिसरामा ॥

---

१ भाव=भावना । २ आसासुखी=आशा रखने वाला । ३ अगमन=आगे । ४ सुठि घोंटैं प्रान=और अधिक प्राण घोंटते हैं (प्राणों को दुःख देते है) । ५ दुनियाई=सारा संसार । ६ गारै=निचोड़ै । ७ निंता=नित्य । ८ बहु=बधू (पदमावत) ।

अगर चँदन सुठि दहै सरीरू। औ भा अगिन कया कर चीरू॥
कथा कहानी सुनि जिउ जरा। जानहु घिउ बैसंदर[1] परा॥
दो०—बिरह न आपु सँभारै, मैल चीर सिर रूख।
पिउ पिउ करति रैनि दिन, पपिहा जस मुँह सूख॥२४५॥

चौपाई

ततखन गा हीरामनि आई। मरत पियास छाँह जनु पाई॥
भल तुइँ सुवा कीन्ह है फेरा। कुसर छेम कहु पीतम केरा॥
बार न जानौं अगम पहारा। हिरदै मिला न होय निरारा॥
मरम पानि कर जानु पियासा। जो जल महँ ता कहँ का आसा॥
का रानी पूँछहु यह बाता। जिन कोउ होय पेम कर राता[2]॥
तुम्हरे दरसन लागि बियोगी। अहा सो महादेउ मढ़ जोगी॥
तुम बसंत लै तहाँ सिधाईं। देउ पूजि पुनि घर फिरि आईं॥
दो०—दिष्टि बान तस मारेहु, खाय रहा तेहि ठाउँ।
दूसर बार न बोला, लेइ पदमावत नाउँ॥ २४६॥

चौपाई

रोंवहिं रोंव[3] बान वै फूटे। सोतहिं सोत[4] रुहिर[5] मुख छूटे॥
नैनन चली रकत कै धारा। कंथा भीजि भयो रतनारा[6]॥
सूरज बूड़ि उठा परभाता। औ मजीठ टेसू बन राता॥
भये बसंत राते बनपती[7]। औ जितने सब जोगी जती॥
पुहुमि जो भीजि भई सब गेरू। औ राते तन पंख पखेरू॥
राती सती अगिनि सब काया। गगन मेघ राते तेहि छाया॥
ईंगुर भा पाहन तस भीजा। पै तुम्हार नहिं रोंव पसीजा॥

---

१ बैसंदर = (बैश्वानर) अग्नि। २ राता = अनुरक्त। ३ रोंवहिं रोंवँ = रोम रोम। ४ सोत = रोम कूप। ५ रुहिर = रुधिर। ६ रतनारा = सुर्ख। ७ बनपती = बनस्पति (वृक्षलतादि);

चौपाई

दो०—तहाँ चकोर कोकिला, तिन्ह हिय मया पईठि[1]।
नैनन रकत भरायन, तुय फिरि कीन्ह न डीठि ॥२४७॥

ऐस बसंत तुमहिँ पै खेलहु। रकत[2] पराये सेंदुर मेलहु॥
तुम तौ खेलि मँदिर कहँ आई। ओहि कमरम जस जानु गोसाईं[3]॥
कहेसि मरै को बारहिँ बारा। एकहि बार होउँ जरि छारा॥
सर रचि चहा आगि जो लाई। महादेव गौरी सुधि पाई॥
आइ बुझाय दीन्ह पँथ तहाँ। मरन[4] खेल कर आगम जहाँ॥
उलटा पंथ पेम का बारा[5]। चढ़ै सरग जो परै पतारा॥
अब धँसि लीन्ह चहै तेहि आसा। पावै खाँति कि मरै निरासा॥

दो०—पाती लिखि सो पठाई, लिखा सबै दुख रोय।
*दहुँ जिउ रहै कि निसरै; कहा रजायसु होय ॥२४८॥

चौपाई

कहि कै सुवैं छोरि दई पाती। जानहु दीप छुवत तस ताती॥
गींव जो बाँधा कंचन तागा। राता स्याम कंठ जरि लागा॥
आगिन स्वाँस मुख निसरी ताती। तरवर जरहिँ तहाँ का पाती॥
रोय रोय सुवैं कही सब बाता। रकत के आँसु भयो मुख राता॥
देखु कंठ जरि लाग सो गेरा[6]। सो कस जरै बिरह अस घेरा॥
जरि जरि हाड़ भये सब चूना। तहाँ माँसु का रकत बिहूना॥
वैं तोहि लागि कया सब जारी। तपत मीन जल रहै न पारी॥

---

१ पईठि = पैठी, धँसी। २ रकत······मेलहु = पराये रक्त से अपने सिर सिंदूर देती हो ३ गोसाईं = ईश्वर। ४ मरन······जहां = मरना ही जिस प्रेम रूपी खेल का आरंभ है। मरना ही प्रेम का श्रीगणेश है। ५ बारा = द्वार। ६ गेरा = चैागिर्द।

* यह दोहार्द्ध हाफ़िज शीराजी के निम्नलिखित मिसरे का अनुवाद ही ता है। "बाज़गर्दद या बरायद चीस्त फरमाने शुमा"

दो०—तोहि कारन वह जोगी, भसम कीन्ह तन दाहि।
तू अस निठुर निछोहो, बात न पूँछै ताहि ॥२४९॥

चौपाई

कहसि सुवा मोसों सुनु बाता। चहौं तो आजु मिलौं जस राता॥
पै सो मरम न जानै भोरा। जानै, प्रीति जो मरि कै जोरा॥
हौं जानति हौं अबहूँ काँचा। ना जेहि प्रीति रङ्ग थिर राँचा॥
ना जेहि भयो मलयगिर बासा। ना जो रबि होइ चढयो अकासा॥
ना जेहि होय भँवर कर रंगू। ना जो दीपकहि होय पतंगू।
ना जेहि करा भृङ्ग कै होई। ना जेहि आप जियै मरि सोई॥
ना जेहि पेम अवटि इक भयऊ। ना जेहि हिये माँझ डर गयऊ॥

दो०—तेहि का कहिये रहन थिर, जो है प्रीतम लागि।
जहँ वह सुनै लेइ धँसि, का पानी का आगि ॥२५०॥

चौपाई

पुनि धन कनक[1]पान मसि[2] माँगी। उतर लिखत भीजी तन आँगी॥
जस कंचन कहँ चहिय सोहागा। जो निरमल नग होय सो लागा॥
हौं जो गई सिउ मंडफ भोरी। तहवाँ कस न गाँठि गहि जोरी॥
गा बिसँभारि[3] देखि कै नैना। सखिन लाज का बोलौं बैना॥
खेलहिँ मिस मैं चन्दन घाला। मकु जागसि त देउँ जयमाला॥
तबहुँ न जागा गा तुइ सोई। जागे भेंट, न सोये होई॥
अब जो ससी होइ चढ़ी अकासा। जो जिउ देइ सो आवै पासा॥

दो०—तब लग भुकुति न लै सका, रावन सिय इक साथ।
कौन भरोसे अब कहौं, जीउ पराये हाथ ॥२५१॥

चौपाई

अब जो सूर गगन चढ़ि आवै। राहु होइ तौ ससि कहँ हावै॥
बहुतन ऐस जीव पर खेला। तू रे जोगि को आहि अकेला॥

---

१ कनकपान=सोने का वरक (सोनहला कागज़) २ मसि=स्याही
३ गा बिसँभारि=बे सँभार हो गया (बेसुध हो गया)

विक्रम धँसा पेम के बारा। संपावति कहँ गयो पतारा॥
सिद्धबच्छ मुगधावति लागी। गगनपूर गा होइ बैरागी॥
राज कुँवर कञ्चन पुर गयऊ। मिरगावति हित जोगी भयऊ॥
साध कुँवर खंडावति जोगू। मधु मालति कहँ कीन्ह बियोगू॥
प्रेमावति कहँ सुर[1] सर[2] साँधा[3]। ऊषा लगि अनिरुध गा बाँधा॥

दोहा—हौं रानी पदमावति, सात सरग पर बास।
हाथ चढ़ौं सो तेहि के, प्रथम करै अप[4] नास॥ २५२॥

चौपाई

हौं पुनि अहौं ऐस तोहि राती। आधी भेंट पिरीतम पाती॥
तुहुँ जो प्रीति निबाहै आँटा[5]। भँवर न देख केत महँ काँटा॥
होहु पतंग अधर गहु दिया। लेहु समुँद धँसि होइ मरजिया॥
रातु रङ्ग जिमि दीपक बाती। नैन लाउ होइ सीप सेवाती॥
चातक होहु पुकारु पियासा। पिऔ न पानि स्वाति की आसा॥
सारस हो बिछुरे जस जोरी। रैनि होहु जस चकइ चकोरी॥
होहु चकोर दिष्टि ससि पाँहाँ। मधुकर होहु कँवल दल माँहाँ॥

दोहा—हौं हुँ ऐसि तोहि राती, सकसि तो ओर[6] निबाहु।
रोहु[7] बेधु अरजुन होइ, जीत दुरपदी ब्याहु॥२५३॥

चौपाई

राजा इहाँ तैस तप झूरा। भा जरि बिरह छार कर कूरा॥
जीउ गँवाइ सो गयो[8] बिमोही। भा बिन जिउ जिउ दीन्हेसि ओही॥

---

१ सुर=सूर नामक व्यक्ति विशेष। २ सर=सरा, चिता। ३ साँधा=संधान किया, रचा. सँवारा। (प्रेमवती के वास्ते सूर नामक व्यक्ति चिता लगाकर जल गया) ४ अप=आपको। ५ आंटा=अँट सकै। ६ ओर=अंत तक। ७ राहु=(रोहु) मत्स्य लक्ष्य (जिसे अर्जुन ने द्रौपदी के लिये बेधा था।) ८ गयो बिमोही=बिमोहित हो गया (मूर्छित होगया)।

कहाँ पिँगला[1] सुखमन[2] नारी। सुन्न समाधि लागि गइ तारी ॥
बूँद समुद्र जैस हो मेरा। गा हेराय तस मिलै न हेरा ॥
रंगहि पानि मिला जस होई। आपुहि खोय रहा होइ सोई ॥
सुवैं आय देखा भा नासू। नैन रकत भरि आये आँसू ॥
सदा पिरीतम गाढ़ करेई। वह न भूल भूला जिउ देई ॥
दो०—मूर सजीवन आनि कै, औ मुख मेला नीर।
गरुर पंख जस झारै, अँबिरितु बरसा कीर ॥ २५४ ॥

चौपाई

मुवा जिया अस बास जो पावा। बहुरी साँस पेट जिउ आवा ॥
देखेसि जागि सुवा सिर नावा। पाती दै मुख बचन सुनावा ॥
सबद सुनाय अमी मुख मेला। कीन्ह सुदिष्टि बेगि चलु चेला ॥
तोहिं अलि कीन्ह आपु भई केवा[3]। हौं पठवा करि बीच परेवा ॥
पवन स्वांस तो सों मन लाये। जेवै मारग दिष्टि बिछाये ॥
जस तुम कया कीन्ह अगि दाहू। सो सब गुरु कहँ भयो अगाहू[4] ॥
तपावंत[5] छाला[6] लिख दीन्हा। बेगि आउ चाहौं सिध[7] कीन्हा
दो०—कहेसि बेगि चलि आवहु, जीउ बसै तुम्ह नाउँ ॥
नैनन भीतर पंथ है, हिरदै भीतर ठाउँ ॥ २५५ ॥

चौपाई

सुनि पदमावति कै अस मया[8]। भा बसंत उपनी[9] नव कया ॥
सुवा क बोल पवन अस लागा। उठा सोय हनुवँत अज जागा ॥
चाँद मिलन कहँ दीन्ही आसा। सहसन करा सुरिज परकासा ॥
पाती कर लै सीस चढ़ावा। दिष्टि चकोर चाँद जस पावा ॥

---

१ पिंगला नारी=दहने नथुने की सांस। २ सुखमना नारी—दोनों नथुना मे एक साथ चलती हुई सांस (उर्द्ध स्वांस)। ३ केवा=कदंब का फूल। ४ अगाहू=आगही खबर, इत्तिला। ५ तपावंत=(गरमी) संतप्तभाव से। ६ छाला=छाल पर लिखी हुई चिट्ठी। ७ सिद्ध=सिद्ध महात्मा। ८ मया=कृपा। ९ उपनी=उत्पन्न हुई।

आज पियासा जो जेहि केरा। जो झिझकार ओही सउँ[1] हेरा॥
अब यह कौन पानि मैं पिया। भे तन पाँख पतिँगा मरि जिया॥
उठा फूलि हिरदै न समाना। कंथा टूक टूक बहिराना[2]॥
दो०—जहाँ पिरीतम वे बसैं, यह जिउ बलि तेहिं बाट।
जो सो बोलावै पाँव सौं, मैं तहँ चलौं लिलाट॥२५६॥

चौपाई

जो पथ मिला महेसहिं सेई। गयो समुन्द्र ओहि धँसि लेई॥
जहँ वह कुंड विषम अवगाहा[3]। जाय परा सहँ पाव न थाहा॥
बाउर अंध प्रीत कर लागू। सौंह धँसै कछु सूझ न आगू॥
लीन्हेसि धँसि जो स्वांस मन मारा। गुरू मछंदरनाथ सँभारा॥
चेला परे न छाड़हिं पाछू। चेला मच्छ गुरू जस काछू[4]॥
जस धँसि लीन्ह समुँद मरजिया[5]। उघरे नैन बरैं जस दिया॥
खोजि लीन्ह सो सरग-दुवारा[6]। बज्र[7] जो मूँदा जाय उघारा॥
दो०—बाँक चढ़ाव सो गढ़ कर, चढ़त गयो होइ भोर।
भइ पुकार गढ़ ऊपर, चढ़े सेंधि दै चोर॥२५७॥

चौपाई

राजैं सुना जोगि गढ़ चढ़े। पूँछा पास पंडित जो पढ़े॥
जोगि गढ़ जो सेंधि दै आवैं। बोलो सबद सिद्धि[8] जस पावैं॥
कहेनि बेद पढ़ि पंडित बेदि। जोगि भँवर जस मालति भेदी॥
जैसे चोर सेंधि सिर मेलहिं। तस ये दोउ जीउ पर[9] खेलहिं॥
पंथ न चलहिं बेद जस लिखे। सरग जाहिं सूली चढ़ि सिखे॥
चोरे होय सूली पर मोखू[10]। देइ जो सूली तेहिं नहिँ दोखू॥

---

१ सउँ=सामने। २ बहिराना=बाहर होगया। ३ अवगाहा=अथाह, बहुत गहरा। ४ काछू=कछुवा। ५ मरजिया=गोताखोर। ६ सरग दुवारा =ऊपर चढ़ने का गुप्त द्वार। ७ बज्र=भारी पत्थर ८ सिद्धि=अंतिमफल (अर्थात दंड) ९ जी पर खेलना=जान जाने का न डरना। १० मोखु =मोक्ष।

चोर पुकारि बेधि[1] घर मूसा[2]। खोलै राज-भँडार मँजूसा[3]॥
दो०—जस इन राज मँदिर कहँ, दीन्ह रैन होइ सेंधि।
तस इनहूँ कहँ मोख होइ, मारहु सूली बेधि॥ २५८॥

२५—पचीसवाँ खंड

मंत्रियों की सलाह

चौपाई

राँध[4] जो मंत्री बोले सोई। ऐस जो चोर सिद्ध पै कोई॥
सिद्ध निसंक रैन दिन भँवहीं। ताका[5] जहाँ तहाँ अपसवहीं[6]॥
सिद्ध न डरपै अपने जीवा। खड्ग देखि कै नावै गीँवा[7]॥
सिद्ध जाय पै जेहि विधि जहाँ। औरहि मरन पंख अस कहाँ॥
चढ़ा जो कोपि गगन उपराहीं। थोरे साज, मरै पै नाहीं॥
जंबुक जूझ[8] चढ़ै जो राजा। सिंह साज कै चढ़ै तो छाजा॥
सिद्ध अमरकाया जस पारा। छरै छरै[9] पै जाय न मारा॥
दो०—छर[10] कै काज कृष्ण कर, राजा चढ़ै रिसाय।
सिध[11] गिध[12] दिष्टि गगन महँ, बिन छर कुछु न बसाय॥२५६॥

चौपाई

आवहु करहु कदरमस[13] साजू। चढ़ै बजाय जहाँ लहि राजू॥

---

१ बेधि=सेंध देकर। २ मूसा=चोरी की ३ मंजूसा=बन्दूक। ४ राँध=निकट। ५ ताका=देखा। ६ अपसवहीं=पहुँच जाते हैं। ७ गींवा=गरदन। ८ जूझ=युद्ध। ९ छरै=छिन्न भिन्न हो जाता है। १० छर=छल। ११ सिध=सिद्धपुरुष। १२ गिध=गृद्ध। १३ कदरमस=मार काट, युद्ध।

आज पियासा जो जेहि केरा। जो झिझकार ओही सउँ[1] हेरा ॥
अब यह कौन पानि मैं पिया। भे तन पाँख पतिँगा मरि जिया ॥
उठा फूलि हिरदै न समाना। कंथा टूक टूक बहिराना[2] ॥

दो०—जहाँ पिरीतम वे बसैं, यह जिउ बलि तेहिं बाट।
जो सो बोलावै पाँव सों, मैं तहँ चलौं लिलाट ॥२५६ ॥

चौपाई

जो पथ मिला महेसहिं सेई। गयो समुन्द्र ओहि धँसि लेई ॥
जहँ वह कुंड विषम अवगाहा[3]। जाय परा सहँ पाव न थाहा ॥
बाउर अंध प्रीत कर लागू। सौंह धँसै कछु सूझ न आगू ॥
लीन्हेसि धँसि जो स्वांस मन मारा। गुरू मछंदरनाथ सँभारा ॥
चेला परे न छाड़हिं पाछू। चेला मच्छ गुरू जस काछू[4] ॥
जस धँसि लीन्ह समुँद मरजिया[5]। उघरे नैन बरैं जस दिया ॥
खोजि लीन्ह सो सरग-दुवारा[6]। बज्र[7] जो मूँदा जाय उघारा ॥

दो०—बाँक चढ़ाव सो गढ़ कर, चढ़त गयो होइ भोर।
भइ पुकार गढ़ ऊपर, चढ़े सैंधि दै चोर ॥ २५७ ॥

चौपाई

राजैं सुना जोगि गढ़ चढ़े। पूँछा पास पंडित जो पढ़े ॥
जोगि गढ़ जो सैंधि दै आवैं। बोलौ सबद सिद्धि[8] जस पावैं ॥
कहेनि बेद पढ़ि पंडित बेदि। जोगि भँवर जस मालति भेदी ॥
जैसे चोर सैंधि सिर मेलहिं। तस ये दोउ जीउ पर[9] खेलहिं ॥
पंथ न चलहिं बेद जस लिखे। सरग जाहिं सूली चढ़ि सिखे ॥
चोरे होय सूली पर मोखू[10]। देइ जो सूली तेहिं नहिँ दोखू ॥

---

१ सउँ=सामने। २ बहिराना=बाहर होगया। ३ अवगाहा=अथाह, बहुत गहरा। ४ काछू=कछुवा। ५ मरजिया=गोताखोर। ६ सरग दुवारा=ऊपर चढ़ने का गुप्त द्वार। ७ बज्र=भारी पत्थर ८ सिद्धि=अंतिमफल (अर्थात दंड) ९ जी पर खेलना=जान जाने का न डरना। १० मोखू=मोक्ष।

चोर पुकारि बेधि[1] घर मूसा[2]। खोलै राज-भँडार मँजूसा[3]॥
दो०—जस इन राज मँदिर कहँ, दीन्ह रैन होइ सँधि।
तस इनहूँ कहँ मोख होइ, मारहु सूली बेधि॥ २५८॥

२५—पचीसवाँ खंड

मंत्रियों की सलाह

चौपाई

राँध[4] जो मंत्री बोले सोई। ऐस जो चोर सिद्ध पै कोई॥
सिद्ध निसंक रैन दिन भँवहीं। ताका[5] जहाँ तहाँ अपसवहीं[6]॥
सिद्ध न डरपै अपने जीवा। खड्ग देखि कै नावैं गींवा[7]॥
सिद्ध जाय पै जेहि विधि जहाँ। औरहि मरन पंख अस कहाँ॥
चढ़ा जो कोपि गगन उपराहीं। थोरे साज, मरै पै नाहीं॥
जंबुक जूझ[8] चढ़ै जो राजा। सिंह साज कै चढ़ै तो छाजा॥
सिद्ध अमरकाया जस पारा। छरै[9] पै जाय न मारा॥
दो०—छर[10] कै काज कृष्ण कर, राजा चढ़ै रिसाय।
सिध[11] गिध[12] दिष्टि गगन महँ, बिन छर कुछु न बसाय॥२५९॥

चौपाई

आवहु करहु कदरमस[13] साजू। चढ़ै बजाय जहाँ लहि राजू॥

---

१ बेधि=सेंध देकर। २ मूसा=चोरी की ३ मंजूसा=सन्दूक। ४ राँध=निकट। ५ ताका=देखा। ६ अपसवहीं=पहुँच जाते हैं। ७ गींवा=गरदन। ८ जूझ=युद्ध। ९ छरै=छिन्न भिन्न हो जाता है। १० छर=छल। ११ सिध=सिद्धपुरुष। १२ गिध=गृद्ध। १३ कदरमस=मार काट, युद्ध।

होहिँ सँजोइल[1] कुँवर जो भोगी। सब दर[2] छेंकि धरहु अब जोगी॥
चौबिस लाख छत्रपति[3] साजे। छपन कोटि दर बाजन बाजे॥
बाइस सहस हस्ति सिंघली। सकल पहार सहित महि हली॥
जगत बराबर वैं सब चाँपा। डरा इन्द्र बासुकि हिय काँपा॥
पदुम कोटि रथ साजे आवहिँ। गढ़ होइ खेह गगन कहँ धावहि॥
जनु भुइँचाल[4] चलत तिन्ह परा। कूरम पीठि टूटि हिय डरा॥
दो०—छत्रन सरग छाय गा, सूरज गयो अलोप[5]।
दिनहिराति अस देखी, चढ़ा इन्द्र होइ कोप॥२६०॥

चौपाई

देखि कटक औ मैंमत[6] हाथी। बोले रतनसेन के साथी॥
होन आव दर बहुत असूझी[7]। अस जानब कछु होइहै जूझी[8]॥
राजा तू जोगी होइ खेला। यही दिवस कहँ हम भये चेला॥
जहाँ गाढ़ ठाकुर[9] कहँ होई। संग न छाँड़ै सेवक सोई॥
जो हम मरन दिवस जी ताका। आजु आय पूजी वह साका[10]॥
बरु जिउ जाय, जाय नहिँ बोला[11]। राजा सत्त सुमेरु न डोला॥
गुरू केर जो आयसु पावैं। हमहुँ सौंह होइ चक्र चलावैं॥
दो०—आजु करैं रन भारथ, सत्त बचा[12] लें राखि।
सत्त गुरू सत्त कौतुक, सत्त भरैं पुनि साखि॥२६१॥

चौपाई

गुरू कहा चेला सिध[13] होहू। पेमबार[14] महँ करहु न कोहू॥
जा कहँ सीस नाय कै दीजै। रङ्ग[15] न होय ऊभ[16] जो कीजै॥

---

१ सँजोइल=साज समान से लैस। २ दर=दल। ३ छत्रपति=छत्रधारी राजा। ४ भुइँचाल=भूकम्प। ५ अलोप गयो=आलुप्त हो गया. छिप गया। ६ मैंमत=मदमस्त। ७ असूझी=अँधेरी। ८ जूझी=युद्ध। ९ ठाकुर=मालिक। १० साका=समय। ११ बोला=बचन। १२ बचा=बचन। १३ सिध=सिद्ध पुरुष। १४ पेमबार=प्रेम का द्वार। १५ रंग=लुत्फ, मज़ा। १६ ऊभ=विद्रोह।

जेहि जी `म, पानि भा सोई । जेहि रँग मिलै तेहि रङ्ग होई ॥
जो पै जाइ पेम सों जूझा । कत तपि मरै, सिद्ध जेइँ बूझा॥
यह सत बहुत जो जूझ न करिये । खरग देखि पानी होइ ढरिये ॥
पानिहि काह खरग कै धारा । लौट पानि सोई जेइँ मारा[1] ॥
पानी सेतीं[2] आगि का करई । जाय बुझाय पानि जो परई ॥

दो०—सीस दीन्ह मैं अगमन[3], पेमवार सिर मेलि ।
अब सो प्रीति निबाहौं, चलौं सिद्ध होइ खेल ॥२६२॥

चौपाई

राजैं छेंकि[4] धरे सब जोगी । दुख ऊपर दुख सहै बियोगी ॥
ना जिय धरक[5] धरत है कोई । जान न मरन जियन कस होई ॥
नाग फाँस उन्ह मेली गीँवाँ । हरष न बिसमौ[6] एकौ जीवा ॥
जेइँ जिउ दीन्ह सो लियो निरासा । बिसरै नहिँ जौलहि तन स्वाँसा
कर किँगिरी तिन्ह तंत[7] बजावा । नेह-गीत बैरागिन गावा ॥
भलेहि आनि गिउँ[8] मेली फाँसी । अहै न सोच हिये रिस नासी॥
मैं गिउँ फाँद वही दिन मेला । जेहि दिन पेमपंथ होइ खेला[9] ॥

दो०—परगट गुपुत सकल महँ, पूरि रहा सो नाउँ ।
जहँ देखौं ओहि देखौं, दूसर नहिँ कहँ जाउँ ॥ २६२ ॥

चौपाई

जबलग गुरु मैं अहा न चीन्हा । कोटि अँतरपट[10] बिच हुत दीन्हा ॥
जब चीन्हा तब और न कोई । तन मन जिव जीवन सब सोई ॥

---

१ मारा=पानी उलट कर उसी पर पड़ता है जो उसे मारता है। २ सेतीं=केप्रति। ३ अगमन=पहले ही। ४ छेंकि=घेर कर। ५ धरक=धड़क, डर। ६ बिसमौ=दुःख। ७ तंत=तांत (जो किंगरी में तार की तरह लगी रहती है)। ८ गिउँ=ग्रीवा, गर्दन। ९ पेमपंथ होइ खेला=पेमपंथ होकर चला। १० कोटि अंतरपट बिच हुत दीन्हा=करोड़ों परदे बीच में पड़े थे।

हौं हौं कहत धोख अँतराही[1]। जो भा सिद्ध कहाँ परछाहीं ॥
मारै गुरू कि गुरू जियावा। और को मार, मरै सब आवा ॥
सूरी मेल हस्ति गुरु चूरू[2]। हौं नहिँ जानौ जानै गूरू ॥
गुरू हस्ति पर चढ़े सो पेखा। जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा ॥
अंध मीन जस जल महँ धावा। जल जीवन जल दिष्टि न आवा ॥

दो—गुरू मोर मोरे हिये, दिये तुरंगम-ढाठ[3]।
भीतर करहिँ डोलावै, बाहर नाचै काठ ॥ २६४ ॥

चौपाई

सो पदमावत गुरु, हौं चेला। जोग तंत[4] जेहि कारन खेला ॥
तजि ओहि बार न जानौं दूजा। जेहि दिन मिलै चढ़ावौं पूजा ॥
जीउ काढ़ि भुइँ धरौं लिलाटू। बैठक देउँ हिये कर पाटू[5] ॥
को मोहि लै सो छुवावै पाया[6]। नव अवतार देइ नव काया ॥
जीउ चाहि[7] सो अधिक पियारी। माँगै जीउ देउँ बलिहारी ॥
माँगै सीस देउँ स्यौं[8] गीवा। अधिक नवौं जो मारै जीवा ॥
अपने जिउ कर लोभ न मोहीं। पेमबार होइ मागौं ओही ॥

दो०—दरसन ओहिक दिया जस, हौं रे भिखारि पतंग।
जो करवत[9] सिर सारै, मरत न मेरौं अंग ॥ २६५ ॥

---

१ धोख अँतराहीं=धोखे में पड़ा रहा। २ सूरी मेल हस्ति गुरु चूरू=गुरू का हाथी सूली को चूर चूर करके फेंक देगा। ३ तुरंगम-ढाठ=घोड़े कीसी बाग। ढाठ=ढट्ठी, रुकावट की वस्तु (यहां लगाम)। ४ तंत=पूर्ण। ५ पाट=पीढ़ा, सिंहासन। ६ पाया=पद, पैर। ७ चाहि=अधिकतर। ८ स्यौं=सहित समेत। ९ जो करवत सिर सारै=यदि सिर पर आरा भी चलवावै।

२६—छब्बीसवाँ खंड

(पद्मावत-मूर्च्छा वर्णन)

चौपाई

पदुमावति कँवला[1] ससि जोती। हँसै फूल रोवै तब मोती॥
परजापतो[2] हँसी औ रोजू[3]। लाये दूत होइ नित खोजू॥
जबहिँ[4] सुरिज कहँ लागा राहू। तबहिँ कँवल मन भयो अगाहू॥
बिरह-अगस्त जो बिसमौ[5] भयउ। सरवर हरष सूखि सब गयऊ॥
परगट ढारि सकै नहिँ आँसू। घुटि घुटि माँसु गुप्त होइ नासू॥
जनु दिन माँझ रैनि होइ आई। बिकसित कँवल गये कुम्हिलाई॥
राता बदन गयो होई सेता। भँवर भँवर होइ रह्यो अचेता॥

दो०—चितहिँ जो चित्र कीन्ह धनि, रों रों[6] रङ्ग समेटि।
लिहिस साँस दुख आह भरि, परी मुरछि भुइँ भेंटि॥२६६॥

---

१ कंवला ससि जोती=कमल सम मृदु और शशि सम ज्योतिमय। २ परजा पति=राजा (गंधर्व सेन) ३ रोजू=रोना। परजापती···खोजू =राजा गंधर्वसेन (पद्मावत का पिता) ने दूत नियत कर दिये थे जो पद्मावत के हंसने और रोने—सुख दुःख—की खबर नित्य राजा को सुनाते थे। ४ अर्थात् जब राजा रतन सेन पकड़ा गया और सूली का हुक्म हुआ, तब इसकी खबर पद्मावती को भी लग गई। आगाह होना=जान जाना। ५ बिसमौ=दुःख। बिरह रूपी अगस्तोदय से पदमावती को ऐसा हुआ कि हर्ष रूपी सरोवर सूख गया। (मिलान करो—'उदित पंथ जल सोखा,—तुलसीदास) ६ रों रों रंग समेटि=रोम रोम कर।

चौपाई

पदुमावत सँग सखो सयानी। गनत नखत सब रैनि बिहानी॥
जाना मरम कँवल कर कोईं[1]। देखि बिथा बिरहिनि कै रोईं॥
बिरहा कठिन काल की कला। बिरह न सहै काल बरु भला॥
काल काढ़ि जिउ लेय सिधारै। बिरह-काल मारे पै मारै॥
बिरह अगि पर मेलै आगी। बिरह घाव पर घाव बजागी[2]॥
बिरह बान पर बान पसारा। बिरह रोग पर रोग सँचारा॥
बिरह साल पर साल[3] नवेला। बिरह काल पर काल दुहेला[4]॥

दो०—तन रावन पुर[5] जरि बुझा, बिरह भयो हनिवंत।
जारे ऊपर जारै, तजै न कै भसमंत॥ २६७॥

चौपाई

कोइ कुमोद[6] परसहिँ कर पाया। कोइ मलयागिरि छिरकहिँ काया॥
कोइ मुख सीतल नीर चुवावहिँ। कोइ आँचर सों पवन डोलावहिँ
कोइ मुख अमिरित आनि निचोवै। जनु विष देहिँ अधिक धन सोवै॥
जोवहिँ साँस खनहि खन सखी। कब जिउ फिरै पवन औ पंखी॥
बिरह काल होय हिये पईठा। जीउ काढ़ि लै हाथ बईठा॥
खन एक मूँठि बाँध खन खोला। गहेसि जीभ मुख जाय न बोला॥
जनहु बीजु[7] कै बानन मारा। कँपि कँपि नारि मरै बिकरारा[8]॥

दो०—कैसहुँ बिरह न छाँड़ै, भा ससि गहन गरास।
नखत चहूँदिस रोवहिँ, अँधियर धरति अकास॥ २६८॥

---

१ कोईं=कुमुदिनी। २ बजागी=बज्राग्नि। ३ साल=छेद। ४ दुहेला=दुख दुर्भाग्य। ५ रावनपुर=लंका। (मिलान करो—उलट पलट लंका कपि जारी—तुलसीदास) ६ कुमोद=कुमुदिनी (यहां सखी जो कुमुदिन अर्थात् दुखित थीं।) ७ बीजु=बिजली। ८ बिकरारा=अत्यंत व्याकुल।

दो०—खनहिँ उठै खन बूड़ै, अस हिय कमल सकेत[1]।
हीरामनिहिँ बुलावहु, सखी बिरह जिउ लेत ॥ २७० ॥

चौपाई

चेरी धाय सुनत उठि धाई। हीरामनिहिँ बोलि लै आई ॥
जनहुँ बैद औषधि लै आवा। रोगिया रोग मरत जिउ पावा ॥
सुनत असीस नैन धन खोले। बिरह बैन जिमि कोकिल बोले ॥
कँवलहिँ बिरह बिथा जस बाढ़ी। केसर[2] बरन पीर हिय काढ़ी ॥
कत कँवलहिं भा पीर अँकूरू। जो पै गहन लीन्ह दिन सूरू ॥
पुरइन छाहँ कँवल की करी। सुरिजि बिथा सुनि अस मनहरी ॥
पुरुष गँभीर न बोलहिँ काहू। जो बोलहिँ तौ ओत निबाहू ॥

दो०—इतना बोल कहत मुख, पुनि होइ गई अचेत।
पुनि कै चेत सँभारो, यहै बकुर[3] मुख लेत ॥ २७१ ॥

चौपाई

उर क दाह का कहौं अपारा। सती जो जरै कठिन अस झारा ॥
होइ हनिवंत पैठ हिय कोई। लंका दाह लागु तन होई ॥
लंका बुझी आगि जो लागी। यह न बुझै तस उपनि बजागी[4] ॥
जनहु अगिनि के उठहिँ पहारा। होइ सब लागहिँ अङ्ग अँगारा ॥
कटि कटि माँसु सराग[5] पिरोवा। रकत कै आँसु माँसु सब रोवा ॥
खन यकतार[6] माँसु अस भूँजा। खनहिं चियाय[7] सिंह अस गूँजा ॥
यहि रे दगध ते उतम मरीजै। दगध न सहित जीउ बरु दीजै ॥

---

१ सकेत=संकुचित। २ केसर बरन=पीले रङ्गवाला अर्थात् हीरामन सुवा। ३ बकुर लेना=बात कहना। यहै बकुर मुख लेत=मुख से यही बात कहते हुए। ४ बजागी=बज्राग्नि। ५ सराग=शलाका, सूलाख (लोहे की छड़ जिस पर कबाब भूना जाता है) ६ यकतार=लगातार, एक सा। ७ चियाइ=चुप रह कर।

दो०—जहँ लग चंदन मलयगिर, औ सायर[1] सब नीर।
सब मिल आय बुझावैं, बुझै न आगि सरीर॥ १७२॥

चौपाई

हीरामनि जो देखेसि नारी। प्रीति बोलि उपनी हिय बारी[2]॥
कहेसि कि तुम कस होइ दुहेली। उरझी प्रेम प्रीति कै बेली॥
प्रीति बेलि जनि उरझै कोई। उरझा मुएहु न छूटै सोई॥
प्रीति बेलि ऐसे तन डाढ़ा। पलुहत[3] सुख बाढ़त दुख बाढ़ा॥
प्रीति बेलि कै अमर को बोई। दिन दिन बढ़ै खीन नहि होई॥
प्रीति बेलि सँग बिरह अपारा। सरग पतार जरै तेहिँ झारा॥
प्रीति अकेलि बेलि जेहि छावा। दुसरि बेलि न सँचरै पावा॥

दो०—प्रीति बेलि उरझाय जब, तब सो जन सुख साख[4]।
मिलै पिरीतम आय कै, दाख बेलि रस चाख॥ १७३॥

चौपाई

पदमावत उठि टेके पाया। तुम हुत[5] देखौं प्रीतम छाया॥
कहत लाज उर, हिये न जीऊ। एक दिस आगि दुसर दिस पीऊ॥
तुम सो मोर सेवक गुरु देवा। उतरौं पार तेहि विधि खेवा॥
सूर उदयगिरि चढ़त भुलाना। गहने गहा कँवल कुम्हिलाना॥
ओहटै[6] होय तो मरौं न झूरी। यह सुठि मरन जो नियरेहिँ दूरी॥
घट महँ निकट विकट भा मेरू। मिलत न मिला परा तस फेरू॥
दमनहिँ[7] नल जस हंस मेरावा। तब हीरामनि नाम कहावा॥

दो०—मूर सजीवन दूर अति, सालै सकती बान।
प्रान मुकत अब होत है, बेगि दिखावहु आन॥ १७४॥

---

१ सायर=सागर २ बारी=वाटिका। ३ पलुहना=पल्लवित होना। ४ सूख साख=सूख साख जाता है, दुबला हो जाता है। ५ तुम हुत=तुम्हारे द्वारा। ६ ओहटै=ओट, दूर। ७ दमन=दमयन्ती. जैसे दमयन्ती और नल को हंस ने मिलाया वैसे ही तू मुझे राजा रतनसेन से मिला दे तब तेरा हीरामनि नाम ठीक हो।

चौपाई

हीरामन भुइँ धरा लिलाटू। तुम रानी जुग जुग सुख पाटू[1]
जेहि के हाथ सजीवन मूरी। सो जोगी अब नाहीं दूरी॥
पिता तुम्हार राज कर भोगी। पूजै विप्र मरावै जोगी॥
पँवरि पंथ कोतवार बईठा। पेम क लुबुध सुरङ्ग पईठा॥
चढ़त रैन गढ़ होइगा भोरू। आवत बार धरा कहि चोरू॥
अब लै गए देइँ ओहि सूरी। तेहि ते आगु[2] बिथा तुम पूरी॥
अब जिउ तुम, काया वह जोगी। कया क रोग जानु पै रोगी॥

दो०—रूप तुम्हार जपै जिय, पिंडक माला फेरि।
आपु हेराय रहा तहां, काल न पावै हेरि॥२७५॥

चौपाई

हीरामनि जो बात यह कही। सुरिज के गहन चाँद पुनि गही॥
सुरिज के दुःख जो ससि होइ दुखी। सो कत दुख मानै करमुखी[3]॥
अब जो जोगि मरै मोहि नेहा। मोहि ओहिसाथधरतिगगनेहा[4]॥
रहै तो करौं जनम भरि सेवा। चलै तो यह जिउ साथ परेवा[5]॥
कौन सो करनी केहि कर सोई। परकाया परबेस जो होई॥
पलटि सो पंथ कवन विधि खेला। चेला गुरू गुरू होइ चेला॥
कौन खंड सो रहा लुकाई। आवै काल हेरि फिरि जाई॥

दो०—चेला सिद्धि सो पावै, गुरु सों करै अछेद[6]।
गुरू करै जो किरपा, कहै सो चेला भेद॥२७६॥

चौपाई

अन[7] रानी तुम गुरु वह चेला। मोहि पूँछौ करि सिद्ध नवेला॥

---

१ पाट=सिंहासन। २ आगु=आगे ही. पहले ही। ३ कर मुखी=काले मुखवाली कलंक युक्त (शशि शब्द को जायसी ने सर्वत्र स्त्रीलिंग माना है)। ४ गगनेहा=आकाश. स्वर्ग। ५ परेवा=पक्षी। ६ अछेद=अभिन्नता; ७ अन=निश्चय करके. निःसन्देह।

तुम चेला कहँ परसन भईं। दरस देयँ मंडप चलि गईं॥
रूप गुरू कर चेलैं दीठा। चित समाय होय चित्र बईठा॥
जीउ काढ़ि लै तुम अपसईं[1]। वह भा कया जीउ तुम भईं॥
कया जो लाग धूप औ सीऊ[2]। कया न जान जान पै जीऊ॥
भोग तुम्हार मिला ओहि जाई। ओहि कै बिथा सो तुम कहँ आई॥
तुम ओहि के घट वह तुम माहाँ। काल न चाँपै पावै छाहाँ[3]॥

दो०—अस वह जोगी अमर भा, पर काया परवेस।
आव काल तन देखै, फिरै सो करि आदेस[4] ॥२७७॥

चौपाई

सुनि जोगी कै अम्मर[5] करनी। निबरी[6] बिरह बिथा की मरनी॥
कँवलकरी होइ विकसा जीऊ। जनु रबि देखि छूटिगा सीऊ॥
जो भा सिद्ध को मारै पारा। निरखत नैन होइ जरि छारा॥
कहहु जाय अब मोर सँदेसू। तजहु जोग अब भयो नरेसू॥
जिन जानहु तुमसों हौं दूरी। नैनन माँझ गड़ी वह सूरी॥
तुम्हर पसेव[7] गिरे घट केरा। मोहि घट जीउ घटत नहिं बेरा[8]॥
तुम कहँ पाट[9] हिये मैं साजा। अब तुम मोर दुहूँ जग राजा॥

दो०—जो रे जियहि मिलि गल रहैं, मरहिं तो एकै दोउ।
तुम्हर जियहि जनि होउ कछु, मोहिं जिय होउ सो होउ ॥२७८॥

—:०:—

१ अपसईं=खिसक गईं, अपसना=खिसक जाना. टल जाना (सं० अपसर्जन से)। २ सीउ=शीत, सरदी। ३ छाहँन चांप पावै=निकट नहीं पहुँच सकता। ४ आदेस=प्रणाम, सलाम। ५ अम्मर=अमर। ६ निबरी=निपटी, खतम हो गई। ७ पसेव=पसीना। ८ बेरा=देर। ९ पाट=सिंहासन।

२७—सत्ताईसवाँ खंड

शूली वर्णन

चौपाई

बाँधि तपा[1] आने जहँ सूरी। जुरी आय सब सिंघल पूरी॥
पहिले गुरुदेव कहँ आना। देखि रूप सब कोउ पछताना॥
लोग कहहिँ यह होय न जोगी। राजकुवाँर आहि कोउ भोगी॥
काहुइँ लागि भयो है तपा। हिये सुमाल किये मुख जपा॥
जस मारै कहँ बाजा तूरू[2]। सूरी देखि हँसा मंसूरू[3]॥
चमके दसन भयो उजियारा। जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा॥
जोगी केर करहु पै खोजू। मकु यह होय न राजा भोजू॥

दो०—सब पूँछहिँ कहु जोगी, जाति जनम औ नाउँ।
जहाँ ठाउँ रोवै कर, हँसा सो कहु केहि भाउ[4]॥२७६॥

चौपाई

का पूँछहु अब जाति हमारी। हम जोगी औ तपा भिखारी॥
जोगी जाति कौन हो राजा। गारि न कोह मार नहिँ लाजा॥
निलज भिखारि लाज जेहि खोई। तेहि के खोज परौ जिन कोई॥
जाकर जीउ मरै पर बसा। सूरी देखि सो कस नहिँ हँसा॥
आजु नेह सों होइ निबेरा[5]। आजु भूमि तजि गगन बसेरा॥
आजु कया पंजर बँद टूटा। आजु परान परेवा छूटा॥

---

१ तपा=तपस्वी, जोगी। २ तूर=तुरही। ३ मंसूरू=एक फकीर थे जो "अनलहक़" अर्थात् 'अहम्ब्रह्म' कहा करते थे। इनको काफ़िर समझ कर उस समय के राजा ने शूली का दंड दिया था। मंसूर प्रसन्नता पूर्वक शूली पर चढ़े थे। ४ भाउ=(भावे) प्रयोजन। ५ निबेरा=जुदाई।

आजु नेह सों होय निरारा। आजु पेम सँग चला पियारा॥
दो०—आजु अवधि सो पहुँची, किये जाउँ मुखरात[1]।
बेगि होहु मोहि मारहु, जिन चालहु कछु बात॥२८०॥

चौपाई

कहेनि सँवरु जेहि चाहसि सँवरा। हमतोहिकरहिँकेत[2]करभँवरा॥
कहेसि ओही सँवरौं हर फेरा। मुए जियत आहौं जेहि केरा॥
औ सँवरौं पदमावत रामा। यह जिउ न्यौछावर तेहि नामा॥
रकत की बूँद कया जत[3] अहईं। पदमावत पदमावत कहईं॥
रहै तो बूँद बूँद महँ ठाऊँ। परहि तो सोई लै लै नाऊँ॥
रोम रोम तन तासों ओधा[4]। सोतहि सोत बेधि जिउ सोधा॥
हाड़ हाड़ महँ सबद सो होई। नस नस माहिँ उठै धुनि सोई॥
दो०—खाय बिरह गा ताकर, गूद[5] मास कै हान।
हौं पुनि साँचा[6] होइ रहा, ओहि के रूप समान॥२८१॥

चौपाई

जोगिहि जबै गाढ़ अस परा। महादेव कर आसन टरा॥
औ हँसि पारबती सों कहा। जानहुँ सूर गहन अस गहा॥
आजु चढ़े गढ़ ऊपर तपा। राजैं गहा सूर तन छपा॥
जग देखैं गा कौतुक आजू। जहाँ तपा मारैं कर साजू॥
पारबती सुनि पायन परी। चलु महेस देखैं एक घरी॥
भेस भाट भाटिन कर कीन्हा। औ हनिवंत बीर सँग लीन्हा॥
आय गुपुत होइ देखन लागे। दहुं मूरति कस सती सभागे[7]॥

---

१ किये जाउँ मुखरात=सुर्खरू होकर जाऊँगा। (फ़ारसी मुहावरे का अनुवाद) २ केत केतकी (केतकी के कांटों में भँवरा बेध जाता है)। ३ जत=जितनी। ४ ओधा=अटक रहा है, बिधा हुआ है। ५ गूद=गूदा, मज्जा। ६ साँचा=वस्तु ढालने का। ७ सभागे=कि आया सत्य संध और सौभाग्यमान राजा रतनसेन की मूर्ति कैसी है।

दो०—कटक असूझ[1] देखि कै, राजा गरब करेइ ।
दई[2] की दिसा न देखै, दहुँ का कहँ जय देइ ॥२८२॥

चौपाई

आसन मारि रहा होइ तपा । पदमावत पदमावत जपा ॥
मन समाधि तासों धुनि लागी । जेहि दरसन कारन बैरागी ॥
रहा समाय रूप ओहि नाऊँ । और न सूझ बार जहँ जाऊँ ॥
औ महेस कहँ करै अदेसू[3] । जेइँ यहि पंथ दीन्ह उपदेसू ॥
पारबती पुनि सत्य सराहा । औ फिरि मुख महेस कर चाहा[4] ॥
हिये महेस होइ जो महेसी[5] । केहि सिर नावै या परदेसी ॥
मरतहुँ लेइ तुम्हारइ नाऊँ । तुम चित्त[6] किये रहौ यहि ठाऊँ ॥

दो०—मारत हैं परदेसिहिँ, राखि लेहु यहि बेर ।
कोऊ या कर नाही, जो चालै यहि टेर ॥२८३॥

चौपाई

लै सँदेस सुवटा गा तहाँ । सूरी देहिँ रतन कहँ जहाँ ॥
देखि रतन हीरामनि रोवा । राजा जिउ लोगन हठि खोवा ॥
देखि रुदन हीरामनि केरा । रोवहि सब राजा मुख हेरा ॥
मांगहिँ सब बिधना सों रोई । कै उपकार छोड़ावै कोई ॥
कहि सँदेस सब बिपति सुनाई । बिकल बहुत कछु कहि नहिँ जाई ॥
काढ़ि परान बैठि हिय हाथा । मरै तो मरौं जियौं एक साथा ॥

---

१ असूझ=अगणित, बहुत बड़ा । २ दई की दिसा=ईश्वर की ओर । ३ अदेसू=प्रणाम । ४ चाहा=देखा । ५ महेसी=ईश्वरता, ईश्वरीय शक्ति । (पार्वती कहती हैं कि हे महेश, यदि तुमको अपनी माहेश्वरी शक्ति का कुछ भी अहंकार हो तो इसे ऐसा कर दो कि यह परदेसी किसी से नीचा न देखे (६ तुम चित .... ठाउँ=तुम्हीं इसके चित्त में सदा बसते हो ।

सुनि सँदेस राजा तब हँसा। प्रान[1] प्रान घट घट महँ बसा॥
दो०—हीरामनि जिनि सोचु तैं, करसि देखि दुख मोर।
जियत जपौं नित नाम वहि, मुए निबाहौं ओर ॥२८४॥

चौपाई

राजा रहा दिष्टि कै औंधी[2]। सहि न सका सो भाट दसौंधी[3]॥
कहेसि मेलि कै हाथ कटारी। पुरुष न छाजैं बैठि पेटारी[4]॥
कान्ह कोप कै मारा कंसू। गोकुल मांझ बजावा बंसू[5]॥
गंध्रबसेन जहाँ रिस बाढ़ा। जाय भाट आगे भा ठाढ़ा॥
ठाढ़ देखि सब राजा राऊ। बायें हाथ दीन्ह बरम्हाऊ[6]॥
बोला गंध्रबसेन रिसाई। कैस जोगि कस भाट असाई[7]॥
जोगी पानि आग तू राजा। आगि पानि सों जूझ न छाजा॥
दो०—आगि बुझाइ पानि सों, जूझ न राजा बूझ।
तोरे बार खपर लिये, भिच्छा देहि न जूझ ॥२८५॥

चौपाई

जोगि न होय आहि सो भोजू[8]। जोगी भयो भोज[9] के खोजू॥
भारथ होय जूझ जो ओधा[10]। होहिँ सहाय आय सब जोधा॥
महादेव रनघंट बजावा। सुनि कै सबद ब्रह्म[11] चलि आवा॥
बासुकि फन पतार सों काढ़ा। आठो कुरी नाग भे ठाढ़ा॥
छप्पन कोटि बसंदर[12] बरा। सवा लाख परबत फरहरा[13]॥

---

१ प्रान मन……बसा=प्रानों का प्राण अर्थात् ईश्वर घट घट में बसता है अर्थात् जब मैंने पद्मावत से सच्चा प्रेम किया तब ईश्वर की प्रेरणा से उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि अब वह भी मेरे प्रेम में मरने को तैयार है। २ औंधी=(अधः) नीचे की ओर। ३ भाट दसोंधी=दसौंधी जाति का भाट। ४ पेटारी=झांपी। ५ पंसू=बंसी। ६ बरम्हाऊ=आशीर्वाद। ७ असाई=(अशास्त्री) अज्ञानी। ८ भोजू=राजा। ९ भोज=भोग्य पदार्थ (स्त्री) १० ओधना=लगना। ११ ब्रह्म=ब्रह्मा। १२ बसंदर=आग। १३ फरहरा=उड़ आये।

चढ़े अत्र[1] लै कृष्ण मुरारी। इन्द्रलोक सब लाग गोहारी[2] ॥
तैंतिस कोटि देवता साजा। औ छानबे मेघ दल गाजा ॥
दो०—नवौ नाथ चलि आयहिं, औ चौरासी सिद्ध।
आज महाभारत चले, गगन गडुर और गिद्ध ॥२८६॥

चौपाई

मैं आज्ञा को भाट औभाऊ[3]। बायें हाथ दिये बारम्हाऊ[4] ॥
को जोगी अस नगरो मोरी। जो दै सेंधि चढ़ै गढ़ चोरी ॥
इँदर डरै नित नावै माथा। कृष्ण डरै कारी जेइँ नाथा ॥
बरम्हा डरै चतुरमुख जासू। औ पाताल डरै बलि बासू[5] ॥
धरति हलै चल मंदर मेरू। चाँद सुरिज औ गगन कुबेरू ॥
मेघ डरै बिजली जेहि डीठी। कुरम डरै धरती जेहि पीठी ॥
चहौं तो सब फेंकौं धरि केसा। औ को गिनत अनेक नरेसा ॥
दो०—बोला भाट नरेस सुनु, गरब न छाजा जीउ।
कुम्भकरन की खोपरी, बूड़त बाँचा भीउ[6] ॥२८७॥

चौपाई

रावन गरब बिरोधा रामू। ओही गरब भयो संग्रामू ॥
तस रावन अस को बरबंडा। जेहि दस सीस बीस भुज दंडा ॥
सूरज जेहि कै तपै[7] रसोई। बैसन्दर नित धोती धोई ॥
सूक सोंटिया[8] ससि मसियारा[9]। पवन करै नित बार बुहारा ॥
मीचु लाय कै पाटी बाँधा। रहा न दूसर सपनेहु काँधा[10] ॥
जो अस उजर टरै नहि टारा। सोउ मुव दुइ तपसीकर मारा ॥
नाती पूत कोटि दस अहा। रोवनहार न एकौ रहा ॥

---

१ अत्र=अस्त्र। २ गोहार लगना=सहायता के लिए आ पहुँचना। ३ औभाऊ=(अव भावुक) बुरी भावना वाला। ४ बरम्हाऊ=आशीर्वाद। ५ बासू=बासुकिनाग। ६ भीउ=भीमसेन। ७ रसोई तपना=भोजन पकाना। ८ सोंटिया=सोंटाबरदार. चोबदार। ९ मसियारा=मशालची। १० कांधा=कंधा से कन्धा मिलानेवाला, बराबरीवाला।

दो०—ओछ[1] जानि कै काहुइ, जिनि कोउ गरब करेय।
ओछी पार दई[2] है, जीत पत्र जो देय ॥२८८॥

चौपाई

अब जो भाट तहाँ हुत आगे। बिनय उठा राजहि रिस लागे॥
भाट आहि ईसुर कै कला। राजा सब राखहिँ अरगला[3]॥
भाट मीचु आपनि पै दीसा। तासों कौन करै अस रीसा॥
भयो रजायसु गंध्रपसेनी। काहे मीचु की चढ़ै नसेनी॥
का यह आँय बाँय अस पढ़ै। करी न बुद्धि भेंट,कछु कढ़ै[4]।
जाति कला कस औगुन लावसि। बायें हाथ राज बरम्हावसि[5]॥
भाट नाउँ का मारउँ जीवा। अबहूँ बोलु नाय कै गीँवा॥

दो०—तुइँ रे भाट वह जोगी, तोहिँ ओहि कहाँ क संग।
कहाँ भुलाय चढ़ा वह, कहा भयो चितभंग ॥२८९॥

चौपा

जो सति पूँछसि गंध्रब राजा। सति पै कहूँ परै नहिँ गाजा॥
भाटहिँ कहा मीचु सों डरना। हाथ कटार पेट हनि मरना॥
जंबू दीप चिता उर देसू। चित्रसेन बड़ तहाँ नरेसू॥
रतनसेन यह ताकर बेटा। कुल चौहान जाय नहिँ मेटा॥
खाँड़े अचल सुमेर पहारू। टरै न जो लागै संसारू॥
दान समुद्र देत नहिँ खाँगा। जो ओहि माँग, न औरहिँ माँगा॥
दाहिन हाथ उठायों ताही। और को अस बरम्हावैं जाही॥

१ ओछ=छोटा, कमजोर। २ ओछी पार दई है=कमज़ोर की पाली में ईश्वर है, बलहीन का पक्ष परमेश्वर करता है। ३ अरगला=बेड़ा (रोक की वस्तु) सब राजाओं को अनुचित कार्य से रोककर सीमा में रखते हैं। ४ कढ़ै=क्या तूने बुद्धि से भेंट नहीं की जिससे तुझे कुछ लाभ होता अर्थात् क्या तू निपट मूर्ख ही है। ५ बरम्हना=ब्राह्मण की तरह असीस देना।

दो०—नाउँ महापातर[1] मोहिं, तेहिक[2] भिखारी ढीठ।
खरि[3] दातन रिस लागै, खरि पै कहै बसीठ[4] ॥२९०॥

चौपाई

ततखन सुनि महेस मन लाजा। भाटकरा[5] होइ बिनवा राजा॥
गंध्रबसेन तु राजा महा। हौं महेस मूरति, सुनु कहा॥
पै जो बात होय भल आगे। कहो चही का भा रिस लागे॥
राज कँवर यह होय न जोगी। सुनि पद्मावत भयो बियोगी[6]॥
जंबू दीप राज घर बेटा। जो है लिखा[7] सो जाय न मेटा॥
तोरे सुवैं जाय ओहि आना। औ जाकर बिरोग[8] तै माना॥
पुनि यह बात सुनो सिवलोका। करु सो बियाह धरम बड़ तोका॥

दो०—भीख खपर लै माँगै, मुयहु न छाँडै बार।
बूझ जो कनक[9] कचोरी, भीख देहु, नहिँ मार॥२९१॥

चौपाई

ओहट[10] होहि रे भाट भिखारी। का तू मोहिँ देसि अस गारी॥
को मोहि जोग जगत होइ पारा। जा सउँ[11] हेरौं जाय पतारा॥
जोगी जती आव जित[12] कोई। सुनत तरासमान[13] भा सोई॥
भीख लेहु फिरि मांगहु आगे। ये सब रैन रहे गढ़ लागे॥

१=महापतार=महापात्र। २ तेहिक=उसका अर्थात् चित्रसेन का। ३ खरि=खरी, सत्य। ४ बसीठ=दूत। ५ भाटकारा=भाटकी तरह। ६ बियोगी=अनुरक्त। ७ जो है लिखा ......मेटा=(देखो खंड तीसरा—सिंघल दीप भयो अवतारू। जंबूदीप जाय जम-बारू) ८ बिरोग=दुख। ९ कनककचोरी=सोने की कटोरी अर्थात अपनी कन्या के लिये योग्यपात्र। १० ओहट=ओट, दूर। ११ सउँ=सामने। १२ जित जितने। १३ तरा-समान=(त्रासमान), भयभीत।

* जस जेहि इच्छु चहौं तस दीन्हा। नाहिँ बेधि सूरी जिउ लीन्हा॥
जेहि अस साध होय जिउ खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा॥
सुर नर मुनि गुनि[1] गंध्रब देवा। तिन्ह को गनै करै नित सेवा॥

दो०—मोंसों को सरिवर करै, रे सुनु झूठे भाट।
छार होय जो चालौं, गज हस्तिन के ठाट॥ २९२॥

चौपाइ

जोगी धरि मेले सब पाछे। ओरै[2] माल्ह[3] आये रन काछे॥
मंत्रिन कहा सुनो हो राजा। देखहु अब जोगिन कर काजा॥
हम जो कहा तुम करहु न जूझा। होत आव दर[4] जगत असूझा॥
खन एक माँहिँ चरँहटा[5] बीतहि। दहुँ दुइ महँ को हार को जीतहि॥
कै धीरज राजा तब कोपा। अंगद आय पाउँ रन रोपा॥
हस्ति पांच जो अगमन धाये। ते अंगद धरि सूँड़ि फिराये॥
दीन्ह उड़ाय सरग कहँ भये। लौटि न फिरे तहइँ के भये॥

दो०—देखत लाग अचंभव[6], हस्ती बहुरि न आय।
जोगिन कर अस जूझब, भूमि न लागैं पाय॥ २९३॥

चौपाई

सुना राउ जोगिन बल पावा। खन एक माहिँ करैं रन धावा॥
जौलहि धावहिँ अस कै खेलौ। हस्तिन केर जूह सब पेलौ॥
जस गजपेल[7] होय रन आगे। तस बगमेल[8] करहु सँग लागे॥

---

१ गुनी=गुणी जन। २ ओरै आये=बहुत से एकत्र हो गये। ३ माल्ह=मल्ल योद्धा.वीर। ४ दर=दल,सेना। ५ चरहटा तीतहि=हथियार चलने लगेगा। ६ अचंभव=(असंभव)आश्चर्य। ७ गजपेल=हाथियों का हमला। ८ बगमेल=हाथों हाथ की लड़ाई।

* जिसकी जो इच्छा हो उसकी मैं वैसी भिक्षा देना चाहता हूँ (लड़की देने के योग्य वह जोगी नहीं है) अगर न मानैगा तो सूली देकर प्राण ले लूंगा।

हस्तिक जूह जबहिँ अगु[1] सारी । हनिवँत तबहिँ लँगूर पसारी ॥
जबहिँ सो सैन बीच रन आये । सबहिँ लपेटि लँगूर चलाये ॥
बहु तक टूटि भये नौ खंडा । बहुतक जाय परे ब्रहमंडा[2] ॥
बहुतक फेंकि दिये अँतरीखा[3] । रहे जो लाख भये ते लीखा[4] ॥
दो०—बहुतक परे समँद महँ, परत न पावा खोज ।
जहाँ गरब तहँ पीरा, जहाँ हँसी तहँ रोज[5] ॥ २१४ ॥

चौपाई

फिरि आगे ला देखै राजा । ईसुर[6] केर घंट रन बाजा ॥
सुना संख जो बिसुन अपूरा[7] । आगे हनिवँत केर लँगूरा ॥
जहँ लग देव दइत नव खंडा । सरग पतार लोक ब्रहमंडा ॥
बलि बासुकि औ इन्द्र नरिंदू । राहु नखत सूरज औ चंदू ॥
जाँवत दानौ राकस पूरे । अहुठौ[8] बज्र आय रन जूरे ॥
जिन्ह कर गरब करत हुन राजा । सो सब फिर बैरीसइसाजा ॥
जहँवा महादेव रन खरा । राजा नाय गींउ पग परा ॥
दो०—केहि कारन रिस कीजै, हो सेवक औ चेर[9] ।
जेहि चाहिय तेहि दीजै, बारि[10] गोसाईं केर ॥ २९५ ॥

चौपाई

तब महेस उठि कीन्ह बसीठी[11] । पहले करू[12] अंत होइ मीठी ॥
तू गंध्रब राजा जग-पूजा । गुन चौदह[13] सिख देइ को दूजा ॥
हीरामनि जो तुम्हार परेवा । गा चितौर कीन्हेसि जस सेवा ॥
तेहि बोलाय पूँछहु वह देसू । औ पूँछहु जोगिहि जस भेसू ॥

---

१ अनुसारी=आगे चलाया । २ ब्रहमंडा=अन्य ब्रह्मण्ड में । ३ अंत-रीखा=अन्तरिक्ष । ४ लीख=जूं के अन्डे । ५ रोज=रोना । ६ ईसुर=महादेव । ७ अपूरा=(अपूर्ण) पूरे शब्द से । ८ अहुट=साढ़े तीन । हिन्दू ऐसा मानते हैं कि संसार में साढ़े तीन बज्र है) ९ चेर=चेला १० बारि=बारी, लड़का । ११ बसीठी=दूतत्व । १२ करू=कटु । १३ गुन चौदह =चौदाहों विद्या का निधान ।

हमरे कहत रोस नहिँ मानौ। जो वह कहै सोई परमानौ[1] ॥
जहाँ बारि आवा बर ओका[2]। करहु वियाह धरम बड़ तोका[3] ॥
जो पहिले मन मानि न काँधै[4]। परखै रतन गाँठि तब बाँधै ॥
दो०—रतन छिपाये ना छिपै, पारखि होइ सो परोख[5]।
गालि[6] कसौटी दीजये, कनक[7] कचोरी भीख ॥ २६६ ॥

२८—अट्ठाईसवां खण्ड

होरामनि-राजा-संबाद वर्णन

चौपाई

होरामनि जो राजैं सुना। रोष बुझाय हिये महँ गुना ॥
अज्ञा भई बोलावो सोई। पंडित हू ते दोष न होई ॥
एक कहत सहसक दस धाये। होरामनिहि बेगि लै आये ॥
खोला आगे आनि मँजूसा[8]। मिला निकसि बहु दिन कर रूसा ॥
अस्तुति करत मिला बहु भांती। राजैं सुना हिये भइ साँती ॥
जानहु जरत अगिन जल परा। होइ फुलवार[9] रहस[10] हियभरा ॥
राजैं मिलि पूँछी हँसि बाता। कस तन पियर भयो मुख राता ॥
दो०—चतुर बेद तुम पंडित, पढ़े सासतर बेद।
कहा[11] चढ़े जोगी गढ़, आनि कीन्ह घर भेद[12] ॥ २६७ ॥

---

१ परमानना=प्रमाण माननो सत्य समझना । २ ओका=इसका । ३ तोका=तुझको । ४ कांधना=स्वीकार करना । परीख=परीक्षा कर । ६ घालि कसौटी=कसौटी में कसकर । ७ कनक कचोरी=सोने की कटोरी में (योग्य पात्र में) ८ मंजूसा=पिंजड़ा, झांपी । ९ फुलवाह= प्रफुल्लित । १० रहस=आनन्द । ११ कहा=क्यों. किस कारण । १२ भेद=भेद न, छेद, संधि ।

चौपाई

हीरामनि रसना रस खोला। दै असीस औ अस्तुति बोला॥
इन्द्रराज राजेसुर महा। सुनि हिय रिस कछु जाय न कहा॥
पै जेहि बात होय भल आगे। सेवक निडर कहैं रिस लागे॥
सुवा सुभल[1] अँवरित पै खोजा। होय न विकरम राजा भोजा॥
हौं सेवक तुम आदि गोसाईं। सेवा करौं जियों जब ताईं॥
जेइँ जिउ दीन्ह दिखावा देसू। सो पै जिय महँ बसै नरेसू॥
तू सब कुछ सब ऊपर तुहीं। हौं कछु नाहिँ पंखि रतमुहीं[2]॥

दो०—नैन बैन औ सरवन, सबही तोर प्रसाद।
सेवा मोरि यहै नित, बोलौं आसिर्वाद ॥२९८॥

चौपाई

हौं पंछी सेवक तुम दासा। एक छाँड़ि चित और न आसा॥
तेहि सेवक के करमहिँ दोसू। सेवा करत करै पनि रोसू॥
औ जब दोष निषोदहिँ लागा। सेवक डरा जोउ लै भागा॥
जो पंखी कहँवाँ थिर रहना। ताके जहाँ, जाय लै डहना॥
सात दीप फिरि देखउँ राजा। जंबूदीप जाय पुनि बाजा[4]॥
तहँ चितउर देखउँ गढ़ ऊँचा। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा॥
रतनसेन यह तहाँ नरेसू। आन्यो लै जोगी करि भेसू॥

दो०—सुवा सुफल पै आनै, है तेहि गुन मुख रात।
कया पीत है तासों, सँवरौं विक्रम[5] बात ॥२९९॥

चौपाई

पहिले भयो भाट सत भाषी। पुनि बोला हीरामनि साखी॥
राजैं भा निहचै मन माना। बाँधा रतन[6] छोरि कै आना॥

---

१ सुवा...खोजा=सुवा तो सदा मीठे ही फल खोजा करता है। २ रतमुहीं=लाल मुखवाला। ३ डहना=पंख। ४ जाय बाजा=जा भिड़ा अर्थात पहुँचा। ५ विक्रम बात=राजा विक्रमादित्य ने एक बार अपनी एक रानी के कहने पर एक सुवा को मरवा डाला था—इसी कथा की ओर इशारा है। ६ रतन=राजा रतनसेन।

कुल पूँछा चौहान कुलीना। रतन न बाँधे होय मलीना॥
हीरा दसन पान रँग पागे। बिहँसत बदन बीजु बर लागे॥
मुद्रा श्रवन मैन[1] सों खाँपे। राज बैन उघरे सब झाँपे॥
आना काटर[2] एक तुषारू[3]। कहा सो भेरु, भयो असवारू॥
फेरा तुरी छतीसौ खुरी[4]। सबन सराहा सिंघलपुरी॥

दो०—कुँवर बतीसो लाच्छना, सहसकरा जस भान।
कहा कसौटी कसिये, कञ्चन बारह[5] बान॥३००॥

चौपाई

देखि सुरिज वर कँवल संजोगू। अस्तु[6] अस्तु बोला सब लोगू॥
मिला सुबंस अंस उजियारा। भा बरोक[7] औ तिलक[8] सँवारा॥
अनिरुध कहँ जो लिखी जयमारा। की मेटै बानासुर हारा॥
आजु मिली अनिरुध कहँ ऊपा। देव अनन्द दैत सिर दूखा[9]॥
सरग सूर भुइँ सरवर केवा[10]। बन खँडभँवर होय रसलेवा॥
पछूँ[11] क बार[12] पुरब कै बारी। लिखी जो जोरी होयउ न्यारी॥
मानुष साज लाख मन साजा। सोइ होइ जो विधि उपराजा[13]॥

दो०—गये जे बाजन बाजत, जिउ मारन रन महिँ।
फिरि बाजन ते बाजे, मंगलचार उमाहिँ[14]॥३०१॥

चौपाई

बोल गोसाईं कर मैं माना। कौन जुगुति ऊतर कहौं आना॥
माना बोल हरष जिय बाढ़ा। औ बरोक भा टीका काढ़ा॥

---

१ मैन=मोम। २ काटर=कट्टर, कटहा। ३ तुषार=सफेद घोड़ा। ४ छतीसौ खुरी=छत्तीस प्रकार की चाल। ५ कंचन बारह बान=खरा सोना। ६ अस्तु अस्तु=ऐसाही होना चाहिये, ठीक है, यही उचित है। ७ बरोक=बर-बधू का संबन्ध सूचक पिता की मंजूरी। ८ तिलक=लगन, बिवाह का टीका। ९ दूखा=पीड़ित हुआ। १० केवा=कमल पुष्प। ११ पछूं=पश्चिम। १२ बार=बालक, बर। १३ उपराजा=रचा है। १४ उमाहि=उमंग में आकर।

दोनों मेर मेरावा भला। विग्रह[1] आप आप[2] गा चला॥
जो इन लीन्ह राज तजि जोगू। जो तप करै सो मानै भोगू॥
वह मन चित्त जो एकै अहा। खाई मार न दूसर कहा॥
जो कोऊ अस जिउ पर खेवा[3]। देउता आय करैं तेहि सेवा॥
दिन दस जीवन जो दुख देखा। भा जुग २ सुख जाहिन लेखा॥

दो०—रतनसेन कर बरनौ, पदमावत सँग व्याह।
मंदिर वेगि सँवारहु, मंदिर तोर उछाह॥३०२॥

चौपाई

लगनधरी औ रचा बियाहू। सिंघल नेवत फिरा सब काहू॥
बाजन बाजे कोटि पचासा। भा आनँद सिगरे कैलासा॥
जेहि दिन का नित देव मनावा। सोइ दिवस पदमावत पावा॥
चाँद सूर मनि माथे भागू। औ गावहिं सब नखत[4] सोहागू॥
रचिरचि मानिक माँड़ौ छावैं। औ भुइं रात[5] बिछाव बिछावैं॥
चन्दन खाँभ रचे चहुँ पाँती। मानिक दिया बरहिँ दिनराती॥
घर घर सुन्दर रचे दुवारा। जाँवत नगर गीत झनकारा॥

दो०—हाट बाट सब सिँघल, जहँ देखौ तहँ रात।
धनि रानी पदमावत, जाकर ऐसि बरात॥३०३॥

---

१ बिग्रह=झगड़ा। २ आप आप=आपै आप, अनायास। ३ सेवा=कष्ट सहन किया। ४ नखत=(यहां पर) सखियां। ५ रात=सुर्ख, लाल।

२९—उन्तीसवाँ खंड

विवाह वर्णन

चौपाई

रतनसेन कहँ कापर[1] आये । हीरा मोति पदारथ[2] लाये ॥
कुँवर सहस सँग अहे सभागे । विनय करै राजा पहँ लागे ॥
अब लग तुम साधा तप जोगू । लेहु राज मानहु अब भोगू ॥
मंजन करहु भभूत उतारहु । करि असनान चित्र[3] सम सारहु ॥
काढ़हु मुद्रा फटिक अभाऊ[4] । पहिरहु कुंडल कनक जड़ाऊ ॥
छोरहु जटा फुलायल[5] लेहू । झारहु केस मुकुट सिर देहू ॥
काढ़हु कंथा चिरकुट[6] लावा । पहिरहु राता दगल[7] सोहावा ॥

दो॰—पाँवरि तजि हग पायरे[8], दीजै बांक तुषार ।
बाँधि मौरि धरि छत्र सिर, बेगि होहु असवार ॥३०४॥

चौपाई

साजा राजा बाजन बाजै । मदन सहाय दोउ दल गाजे ॥
औ राता सोने रथ साजा । भइ बरात गोहन[9] सब राजा ॥
बाजत गाजत भा असवारा । सब सिंघल मिलि कीन्ह कुहारा ॥
चहुँदिस मसियर[10] नखत तराईं । सूरज चढ़ा चाँद की ताईं ॥

---

१ कायर=कपड़ा । २ पदारथ=माणिक । ३ चित्र सम सारहु=बनाव सिंगार करो । ४ अभाऊ=तुच्छ, असुंदर, जो न भावै । ५ फुलायल=फुलेल । ६ चिरकुट लावा=टुकड़े लगे हुए । ७ दगल=दगला, जामा ८ पायरा=रकाब (घोड़े के चार जामा के) ९ गोहन=साथ । १० मसियर=मशाल ।

सब दिन तपा जैस हिय माहाँ। तैस रैनि पाई सुख छाँहा ॥
ऊपर छत्र रात तस छावा। इन्द्र लोक सब सेवा आवा।
आजु इँदर अच्छुर[1] सो मिला। सब कैलास होय सोहिला[2] ॥

दो०—धरनी सरग चहूँ दिस, पूर रहीं मसियार[3]।
बाजत आये मँदिर कहँ, होहिँ मंगलाचार ॥३०५॥

चौपाई

पदमावत धौराहर[4] चढ़ी। दहुँकस रबि जाकहँ ससि गढ़ी ॥
देखि बरात सखिन सों कहा। इन्ह महँ कौन सो जोगी अहा ॥
कै सो जोग लै ओर निबाहा। भयो सूर चढ़ि चाँद बियाहा ॥
कौन सिद्ध सो ऐस अकेला। जेइँ सिर लाय पेम सो खेला ॥
कासों पितैं बचा[5] अस हारी। उतर न दीन्ह दीन्ह तेहिँ बारी[6] ॥
का कहँ दइउ ऐस जिउ दीन्हा। जेइँ जिउ मारि जीत रन लीन्हा ॥
धनि सो पुरुष नवा न नवाये। सुपुरुष होइ रहा देस पराये ॥

दो०—को बरबंड[7] वीर अस, मोहिँ देखै कर चाव[8]।
पुनि जायहि जनवासहि, सखी री बेग दिखाव ॥३०६॥

चौपाई

सखी दिखावहिँ चमकैं बाहू। तू जस चाँद सुरिज तोर नाहू[9] ॥
छिपा न रहै सुरिज परकासू। देखि कँवल मन भयो विकासू ॥
यह उजियार जगत उपराहीं[10]। जग उजियार सो तेहिँ परछाहीं ॥
जस रबि दीख उठै पर भाता। उठा छत्र देखहिँ सब राता ॥
वहै माँझ मा दूलह सोइ। और बरात संग सब कोई ॥
सहसहुकरा रूप बिधि गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा ॥

---

१ अच्छुर=अप्सरा। २ सोहिलो=मंगल गीत। ३ मसियार=मशाल। ४ धौराहर=ऊँचा महल, मीनार। ५ बचा=बाचा, बचन। ६ बारी=कन्या, लड़की। ७ बरबंड=अत्यन्त बली। ८ चाव=शौक। ९ नाह=पति। १० जग उपराहीं=सारे संसार से ऊपर (अधिक)।

मनि माथे दरसन उजियारा। सौंह[1] निरखि नहिँ जाय निहारा॥

दो०—रूपवन्त जस दरपन, धनि तूं जाकर कन्त।
चाहे जैस मनोहरा, मिला सो मन भावंत॥३०७॥

चौपाई

देखा चाँद सुरिज जस साजा। आठौ अंग मदन तन गाजा।
हुलसे नैन दरस मद माते। हुलसे अधर रंग[2] रस राते॥
हुलसा बदन ओप[3] रबि आई। हुलसा हिय कंचुक[4] न समाई॥
हुलसे कुच कसनीबँद[5] टूटे। हुलसी भुजा बलय[6] कर फूटे॥
हुलसि लङ्क गा रावन राजू। राम लसन दर[7] साजहिँ साजू॥
आजु चाँद घर आवा सूरू। आजु सिंगार होय सब पूरू[8]
आजु कटक जोरा हठि कामू। आजु बिरह सों होइ सँगरामू॥

दो०—अंग अङ्ग सब हुलसे, कोउ कतहूँ न समाइ।
ठाँवहिँ ठाँउ बिमोही, गइ मुरछा गति आइ॥३०८॥

चौपाई

सखी सँभारि पियावहिँ पानी। राजकुँवरि काहे कुँम्हिलानी॥
हम तो तोहि दिखावा पीऊ। तू मुरजानि कैस भा जीऊ॥
सुनहु सखी सब कहैं बियाहू। मोहि कहँ जैस चाँद कहँ राहू॥
तुम जानहु आवै हिउ साजा। यह धम धम मो पर सब बाजा॥
जेत[9] बराती आव सवारा। ये सब मोरे चालनहारा[10]॥
सो आगम[11] देखत हौं झखी[12]। आपन रहन न देखौं सखी॥
होइ बियाह पुनि होई गवना[13]। गवनब इहाँ बहुरि नहिँ अवना॥

---

१ सौंह=सामने। २ रंग=प्रेम। ३ ओप=चमक। ४ कंचुक=वस्त्र। ५ कसनी=अँगिया, चोली। ६ बलवाह चूड़ियां। ७ दर=दल। ८ पूरू=पूर्ण ९ जेत=जितने। १० चालनहार=लेजानेवाले। ११ आगम=भविष्य। १२ झखी=झंखी, दुखी हुई। १३ गवना=द्विरागमन।

दो०—अब सो कित है सखी, परा बिछोहा[1] टूट।
तैस गाँठि पिउ जोरब, जनम न होई छूट ॥३०९॥

चौपाई

आय बजावत बैठि बराता। पान फूल सेंदुर सब राता॥
जहँ सोने कर चित्र सँवारे। आनि बराती तहँ बैठारे॥
माँझ सिँहासन पाट सँवारा। दूलह आनि तहाँ बैसारा॥
कनक खंभ लागे चहुँ पाँती। मानिकदिया बरहिँ दिन राती॥
भयो[2] अचल ध्रुव जोग पखेरू। फूल बैठ थिर जैस सुमेरू॥
आजु दई हौं कीन्ह सुभागा। जस दुख कीन्ह नेग[3] सब लागा॥
आजु सूर ससि के घर आवा। चाँद सुरजि दुहुँ भयो मेरावा॥

दो०—आजु इन्द्र होइ आयौं, स्यौं[4] बरात कैलास।
आजु मिली मोहिँ आछर[5], पूजी मनकी आस॥ ३१०॥

चौपाई

होन लगा जेवनार पसारा[6]। कनक पत्र परसे पनवारा॥
सोन थार मनि मानिक जरे। राउ रङ्क सब आगे धरे॥
रतन जड़ाऊ खोरा[7] खोरी। जन जन आगे सौ सौ जोरी॥
गडुवन हीर पदारथ[8] लागे। देखि बिमोहे पुरुष सभागे॥
जानहु नखत करहि उजियारा। छिप गये दोपक औ मसियारा॥
भइ मिलि चाँद सुरिज की कला। भा उदोत तैसे निरमला॥
जेहि मानुस कहँ जोति न होती। तेहि भइ जोति देखि वह जोती॥

---

१ बिछोहा=जुदाई। २ भयो अचल......सुमेरु=राजा रतन सेन का मन अनेक संकल्प विकल्पों में पड़ा हुआ पक्षी की तरह चंचल रहा करता था, इस मौक़े पर उस मन को अचल ध्रुवजोग प्राप्त हुआ और प्रसन्न होकर सुमेरु की तरह स्थिर होकर बैठा। ३ नेग सब लागा=सब नेगे लग गया, सब परिश्रम ठिकाने लगा और अच्छा फल मिला। ४ स्यौं =सहित। ५ आछर=अप्सरा। ६ पसार=तैयारी। ७ खोरा खोरी= कटोरा कटोरी। ८ पदारथ=माणिक।

दो०—पाँति पाँति सब बैठे, भाँति भाँति ज्योनार।
कनक[1] पाट तर धोती, कनक-पत्र पनवार ॥३११॥

चौपाई

पहले भात परोसा आनी। जनहु सुबास कपूर बसानी॥
झालन[2] माँडे औ घी पोई[3]। उजियर देखि पाप गये धोई॥
लुचई[4] पुवा सोहारि[5] पकौरी। एक तौ ताती औ सुठि कौरी[6]॥
खँड़रा[7] खाँड़ जो खंड खँडौरी[8]। बरी एको तरसौ[9] कुम्हड़ौरी[10]॥
पुनि सँधान[11] आने बहु साधे। दूध दही के मोरन[12] बाँधे॥
पुनि बावन परकार जो आये। नहिँ अस दीख न कबहूँ खाये॥
पुनि जाउरि बीजाउरि[13] आई। घिरित खाँड़ का कहौं मिठाई॥
दो०—जेंवत अधिक सुवासित, मुँह महँ परत बिलाय।
सहस स्वाद सो पावै, एक कौर जो खाय ॥३१२॥

चौपाई

जेंवन[14] आवा बीन न बाजा। बिन बाजा नहिँ जेंवै राजा॥
सब कुँवरन पुनि खैंचा हाथू। ठाकुर जेंव तो जेंवै साथू॥
विनय करत पंडित बिचवाना। काहे नहिँ जेवहु जजमाना॥
यह कैलास इँदर कर बासू। यहाँ न अन्न न मोछुर माँसू॥
पान फूल बाँछहि[15] सब कोई। तुम कारन यह कीन्ह रसोई॥

---

१ कनक पाट तर धोती = सोने के पीढ़े पड़े हैं जिनके नीचे धोया हुआ बिछौना बिछा है। २ झाल = बड़ा टोकरा। ३ घीपोई = खस्ता रोटी। ४ लुचई = छोटी और मुलायम पूड़ी। ५ सोहारी = बड़ी पूड़ी। ६ कोरी = कोमल। ७ खँड़रा खांड़ = रसाजौ के टुकड़े। ८ खँड़ौरी = अमृतबरी नामक भोजन (मीठी रसाजैं)। ९ एकोतरसों = (एकोत्तर शत) १० प्रकार की। १० कुम्हड़ौरी = कुम्हड़ा की बरी। ११ सँधान = अचार। १२ मोरन = शिखरन। १३ बिजाउरि = खरबूजा इत्यादि के बीजों की खीर ४ जेंवन = भोजन। १५ वांछहिं = वांछा करते हैं, चाहते हैं।

भूख तो जन अमृत अन[1] सूखा। धूप तो सीरक[2] नींबी रूखा॥
नींद तो भुइँ जनु सेज सुपेती[3]। छाँड़ेहु का चतुराई एती॥
दो०—कौन आज केहि कारन, बिलग[4] भयो जजमान।
होइ रजायसु सोई, बेगि देहि हम आन॥२१३॥

चौपाई

तुम पंडित सब जानहु भेदू। पहिले नाद भयो तब बेदू॥
आदि पिता[5] जो बिधि औतारा। नाद संग जिउ कया सँचारा॥
सो तुम बरजि नेग[6] का कीन्हा। जेंवन संग भोग बिधि दीन्हा॥
नैन बैन नासिक दुइ श्रवना। येहि चारो सँग जेंवन अवना॥
जेंवन देखा नैन सिराने। जीभ सवाद भुगुति रस जाने॥
नासिक सबै बासना[7] पाई। सरवन का सँवरहिँ पहुनाई[8]॥
तिन्ह कहँ होय नाद तें तोपू। तब चारिहु करि होइ सँतोषू॥
दो०—सुनहिँ साथ और सिद्ध जन, जिनहिँ परा कछु सूझि।
नाद सुनब जो बरजेहु, पंडित तुम का बूझि॥२१४॥

चौपाई

राजा उतरु सुनौ अब सोई। महि डोलै जो बेद न होई॥
नाद बेद मद[9] पैंड[10] जो चारी। काया महँ ते लेहु बिचारी॥
नादहिँ ते उपजी यह काया। जस मदपि था पैंड तेहिँ छाया॥
सुधि नहिँ और जूझि सो करई। जो न बेद आँकुस सिर धरई॥
जोगी होय नाद सो सुना। जेहि सुनि काम जरै चौगुना॥

---

१ अन=अन्न। २ सीरक=ठंढा। ३ सुपेती=तोशक। ४ बिलग=अप्रसन्न, नाखुश। ५ आदि पिता=हज़रत आदम। ६ नेग=रीति, रस्म। ७ बासना=सुगंध। ८ सरवन......पहुनाई=तुम्हारी पहुनाई की याद कान कैसे करेंगे। ९ मद=नशा (किसी कार्य विशेष की ओर चित्त की आसक्ति)। १० पैंड=रस्ता, मज़हब, मत।

कै[1] जो प्रेम तंत मन लावा। घूम[2] मात तस और न भावा॥
कै जो धरम पंथ होइ राजा। सो पुनि सुनै ताहिँ कहँ छाजा॥
दो०—जस मद पिये घूम कोउ, नाद सुनै पै धूम।
तेहि ते बरजन छाजे, चढ़ै रहस[3] कै दूम[4] ॥३१५॥

चौपाई

भइ ज्यौंनार फिरा खँडवानी[5]। फिरा अरगजा कुँहकँह[6] बानी॥
फेरे पान फिरा सब कोई। लाग बियाहचार सब होई॥
माँड़ौ सोन क गगन सँवारा। बंदनवार लाग सब बारा॥
साजा पाट छत्र के छाहाँ। रतन चौक पूरी तेहिँ माहाँ॥
कंचन कलस नीर भरि धरा। इन्द्र[7] पास आनी अपसरा[8]॥
गाँठ दुलह दुलहिनि कै जोरी। दुहू जगत जो जाय न छोरी॥
बेद पढ़ै पंडित तेहि ठाऊँ। कन्या तुला रासि लै नाऊँ॥
दो०—चाँद सुरिज दोउ निरमल, दुह सँयोग अनूप।
सुरजि चाँद सों भूला, चाँद सुरिज के रूप ॥३१६॥

चौपाई

दुहूँ नाउँ लै गोत उचारा। सेंदुर लीन्ह कुँवरि सिर सारा॥
चाँद के हाथ दीन्ह जैमाला। चाँद आय सूरज गिउँ घाला॥
सूरज लीन्ह चाँद पहिराई। पार नखत[9] नियरहिँ सो पाई॥
पुनि धरि भरि अंजुलि जल लीन्हा। जोबन जनम कंत कह दीन्हा॥
कंत लीन्ह दीन्हों धन हाथा। जोरी गाँठ दुहूँ इक साथा॥
चाँद सुरिज दोउ भाँवरि लेहीं। नखत[9] मोति न्योछावरि देहीं॥
फिरे दोउ सतफेरा टेकै[10]। फेरा सात माँठ पुनि एकै॥

---

१ कै=कि तो, या तो। २ घम मात तस=मस्त की तरह घूमता है। ३ रहस=आनन्द। ४ दूम=अधिकता। ५ खँडवानी (खांड़+पानी) शरबत, मीठा पानी। ६ कुंहकुंह=कुंकुम। ७ इन्द्र=राजा रतनसेन। ८ अपसरा=पदमावती। ९ नखत=सहेलियां। १० टेकै=(टेक) मांड़ौ का खंभा जिसके गिर्द भांवर फिरते हैं।

दो०—भई भाँवरि न्यौछावरि, नेग चार सब कीन्ह।
दाइज कहौं कहाँ लगि, गनि न जाय जत[1] दीन्ह ॥३१७॥

चौपाई

रतनसेन तब दाइज पावा। गँधरबसेन आय कँठ लावा[2] ॥
मानुष चिंत आन कछु कोई। करै गोसाइँ[3] सो पै होई ॥
अब तुम सिंघलदीप गोसाइँ। हम सेवक आहैं सेवकाई ॥
जस तुम्हार चितउरगढ़ देसू। तस तुम यहाँ हमार नरेसू ॥
जंबूदीप दूर का काजू। सिंघलदीप करहु नित राजू ॥
रतनसेन बिनवा कर जोरी। अस्तुति[4] जोग जीभ कहँ मोरी॥
तुम गोसाइँ तन[5] छार छुड़ाई। कै मानुष अति दीन्ह बड़ाई ॥
दो०—जो तुम दीन्ह सो पावा, जिअन जनम सुख भोग।
नाहिँत खेह[6] पायँ कै, हौ जोगी केहि जोग ॥३१८॥

३०—तीसवाँ खंड

धौराहर वर्णन

चौपाई

धौराहर पर दीन्ह अबासू[7]। सात खंड सातौ कविलासू ॥
सखी सहस दस सेवा पाई। जनहु चाँद सँग नखत तराई ॥
होइ मंडल ससि के चहुँ पासा। ससि सूरहिँ लै चढ़ीं अकासा ॥
चलि सूरज दिन अथवै[8] जहाँ। ससि निरमल तब आवै तहाँ ॥
गंध्रब सेन धौराहर कीन्हा। दीन्ह न राजहिँ जोगिहि दीन्हा ॥
मिलीं जाय ससि के चहुँ पाहाँ। सुरिज[9] न चांपे पावै छाँहाँ ॥

---

१ जत=जितना। २ कंठ लावा=गले लगाकर मिला। ३ गोसाइँ=ईश्वर। ४ अस्तुति=प्रशंसा। ५ तन छार छोंड़ाई=जोगी भेष त्यागने का कारण हुए। ६ खेह=राख, धूल। ७ अबासू=वासी। ८ अथवना=अस्त होना। ९ सुरिज...चांहों=सूर्य जिसके निकट तक नहीं पहुंच सकता।

अब जोगी गुरु पावा सोई। उतरा जोग भसम गै धोई॥
दो०—सात खंड धौराहर, सात रंग नग[1] लाग।
मनहु चढ़ा कयलासहि, दिष्टि पाप सब भाग ॥३१६॥

चौपाई

चेरि सहस दस पाई भलीं। धन गोहन[2] धौराहर चलीं॥
सातखंड साजा उपराहीं। रानिहिँ लिहे सो गावत जाहीं॥
औ राजा कहँ बातन लावहिँ[3]। खंड खंड कौतुक दिखरावहिँ॥
पहले खंड जो देखै राजा। फटिक पखान कनक सब साजा॥
जस दरपन महँ देखी देहा। चित्र साज सब कीन्ह उरेहा॥
सावज[4] पंखी कीन्ह चितेरी। और पारधी[5] मिरिग अहेरी॥
औ जाँवत जत त्रिभुवन लिखा। जनु सब ठाढ़ देहिँ आसिखा[6]॥
दो०—देखि सराहा राजा, गंध्रब सेन के राज।
धन्य चक्कवै[7] राजा, जो रे मँदिल अस साज ॥३२०॥

चौपाई

दुसर खंड सब रूप[8] सँवारा। साजे चाँद सुरिज औ तारा॥
तिसर खंड सब कनक जराऊ। नग जो जरे अस दीख न काऊ॥
चौथ खंड सब मानिक जरे। देखि अनूप पाप सब जरे॥
पँचएं हीरा ईँट जरावा। औ सब लाग कपूर गिलावा[9]॥
छुठयें लाग रतन नग मोती। होइ उजियार जगमगै जोती॥
जगत जोति सब खंभै धरे। सब जग जनु दीआ अस बरे॥
तहाँ न दीपक औ मसियारा। सब नग जोति होय उजियारा॥
दो०—अस उजियार होय तहँ, चाँद सुरिज नहिँ पार।
ओहि उजियारे आउ जो, सोउ लखाय उजियार ॥३२१॥

---

१ नग=रत्न। २ धन गोहन मालकिन के साथ साथ। ३ बातन लावहि=बातों में बहलाती हैं। ४ सावज=वन जंतु। ५ पारधी=बधिक, व्याधा। ६ आसिखा=(आशिष) आशिर्वाद। ७ चक्कवे=चक्रवर्ती। ८ रूप=चांदी। ९ गिलावा=गारा।

चौपाई

सातों खंड उपर कयलासू[1]। का बरनौं जस उत्तम बासू॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। मलयागिर चंदन सब लावा॥
चूना कीन्ह औटि गजमोती। मोतिन चाहि अधिक तेहि जोती॥
बिसकरमैं निज हाथ सँवारा। चारों ओर चारि चौबारा[2]॥
अति निरमल नहिं जाय बिसेखा[3]। जस दरपन महँ दरसन देखा॥
भुइँ गच जानहु समुँद हिलोरा। कनक खाँभ जनु रचा हिँडोरा॥
रतन पदारथ[4] होइ उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा॥
दो०—तहाँ अछुर[5] पदमावत, रतन सेन के पास।
सातों सरग[6] हाथ जनु, औ सातों कयलास[7]। ३६२॥

३१—इकतीसवाँ खंड

सेज वर्णन

चौपाई

पुनि तहँ रतनसेन पगु धारा। जहाँ रतन नौ सेज सँवारा॥
पुतरी गढ़ि गढ़ि खंभन काढ़ीं। जनु सजीव सेवा हित ठाढ़ीं॥
काहु हाथ चंदन कै खोरी। कोउ सेंदुर कोउ गहे सेंधौरी[8]॥
कोउ कुँहकुँह केसर ले रहैं। लावैं अंग रहिस जनु चहैं॥
कोऊ लिहे कुमकुमा चोवा। दहुँ कब चहै ठाढ़ि मुख जोवा॥
कोउ बीरी कोउ लीन्हें बीरा। कोउ परिमल[9] अति सुगंध समीरा॥
काहु हाथ कस्तूरी मेदू[10]। भांतिहिं भांति लाग सब भेदू॥

१ कयलास=अमरावती, इन्द्रपुरी। २ चौपारी=चौपाल, बैठक। ३ नहिं जाय बिसेखा=विशेष वर्णन नहीं किया जा सकता। ४ पदारथ=माणिक। ५ अछुर=अप्सरा। ६ सरग=आकाश। ७ कयलास=स्वर्ग, इन्द्रपुरी। ८ सेंधौरी=सेंदुर भरने की डब्बी। ९ परिमल=सुगंध। १० मेद=इत्र।

दो०—पाँतिहिँ पाँति बहूँ दिस, सब सोंधे के हाट।
माँझ रचा इन्द्रासन, पदमावत् कहँ पाट ॥३२३॥

चौपाई

सात खंड ऊपर कयलासू। तहँ सोउनार[1] सेज सुख बासू॥
चारि खाँभ चारिउ दिस धरे। हीरा रतन पदारथ जरे॥
मानिक दिया जरै औ मोती। होइ उजियार रहा तेहि जोती॥
ऊपर राता चँदवा छावा। औ भुइँ सुरँग बिछाव बिछावा॥
तेहिं महँ पलँग सेज सुख डासी[2]। कीन्ह बिछावन फूलहिँ बासी[3]॥
दुहु दिस गेंडुवा[4] औ गलसूई[5]। काची पाट[6] भरी धुनि रूई॥
फूलहिँ[7] भरी ऐस केहि जोगू। को तहँ पौढ़ि मान रस भोगू॥

दो०—अति सुकवारि[8] सेज वह, छुवै न पारै कोइ।
देखत[9] नवै खिनहि खिन, पाँव धरत कस होइ ॥३२४॥

चौपाई

सखी कुतूहल करहिँ धमारी[10]। कोइ हँसै कोइ आखहिँ[11] गारी॥
होइ मनोरा मंगल चारा। कोइ आनि मेलहिँ गिउँ हारा॥
कोउ मुसकाइ उझकि झुकि परहीं। कोउ मुख मोरि मोरि मन हरहीं॥
बोलैं बैन नैन कोउ फेरी। कोउ जुरि संग लेहिँ तिन्ह घेरी॥
अंचल उलटि चलैं कोउ बांकी। कोउ हरखाहिं झरोखन झाँकी॥
कोउ धरि बाँह नाह मुख हेरहिँ। कोउ सुगंध लै अंगन फेरहिं॥
कोउ राजहिँ रसरंग रिझावहिँ। कोउ हँसि हँसि रस पान खवावहिँ॥

---

१ सोउनार = सोने का कमरा। २ डासी = बिछी हुई है। ३ बासी = सुवासित करके। ४ गेंडुवा = तकिया। ५ गलसुई = गालों के नीचे रखने के अत्यन्त मुलायम और छोटे तकिये। ६ काची पाट..... रूई = जिनमें कच्ची रेशम रुई की तरह धुन कर भरी गई थी। ७ फूलहिं भरी = मानो वे तकियां आनन्द से भर कर फूल उठी हैं। ८ सुकुवारि = मुलायम ९ देखत = अत्युक्ति अलंकार। १० कुतूहद = हँसी मज़ाक़। ११ आखहिं = कहती हैं।

दो०—गायन गावहिँ अनँद सों, सेज सबद झनकार ।
पँवरि पँवरि सखि हरिषत, करहिं मंगलाचार ॥३२५॥

चौपाई

कनक थार हीरा भरि हाथू । गावहिँ गीत सखी दस साथू ॥
तिन कर रूप न जाय बखाना । जिन्ह देखा तिनही पै जाना ॥
रतन पदारथ लै लै जोरी । चाँद सुरिज अस कला अँजोरी ॥
इन्द्रराज अछरन ज्यौं पावा । आजु सिँगार होय जस भावा ॥
देखु सखी सब दिष्टि पसारी । एक ते एक काम जनु ढारी ॥
जो आई साजे धज[1] नई । पुनि सो चली अंत[2] कहँ भई ॥
का तिन्ह कहँ झूठै मन दौरा । जो दौरावे मन सो बौरा ॥

दो०—चित्रसारि महँ चित्र सी, छिटकि रहीं छबि छाय ।
जो तिन्ह भूले ते लुटे, जिन्ह चेते सो पाय ॥३२६॥

चौपाई

राजैं तपत सेज जो पाई । गांठि छोरि धन सखिन छिपाई ॥
अहै कुँवर हमरे अस चारू[3] । आजु कुवरि कर करब सिँगारू ॥
हरद उतारि चढ़ाउब रंगू । तब निस चांद सुरिज कर संगू ॥
जस चातक मुख तकै सेवाती । राजा चख जोहै तेहि भांती ॥
जोगि छरा[4] जनु अछरन साथा । जोग हाथ कर भयो बिहाथा ॥
देइ चित्र कर लै अपसई[5] । मित्र अमोल छीन लै गई ॥
बैठा खोय जरी औ बूटी । लाभ न पाउ मूर भइ टूटी ॥

दो०—खाय रहा ठग लाडू, तंत मंत बुधि खोय ।
भा धौराहर बनखँड, ना हँसि आव न रोय ॥३२७॥

---

१ धज=बनाव सिंगार । २ अंत=अन्यत्र, अंत कहँ भई, अन्यत्र को चली गई । ३ चार=चाल, रीति । ४ छरा=छल । ५ अपसई=चली गई ।

चौपाई

अस तप करत गयो दिन भारी । चार पहर बीते जुग चारी ॥
परी साँझ पुनि सखी सो आई । चांद कहा, उपनीं[1] जो तराई ॥
पूँछहिँ गुरू कहाँ रे चेला । बिनु ससि रह कस सूर अकेला ॥
धात[2] कमाय सिखे तू जोगी । कब कस अस निरधात[3] बियोगी॥
कहाँ सो खोयो बीरव[4] लोना[5] । जेहि ते होय रूप औ सोना ॥
कस हरतार पार नहिँ पावा । गंधक कहाँ कुरकटा[6] खावा ॥
कहाँ छिपायहु चाँद हमारा । जेहि बिनु रैनि जगत अँधियारा ॥
दो०—नैन कौड़िया हिय समुँद, गुरू सो तेहि महँ जोति ।
मन मरजिया न होइ परै, हाथ न आवै मोति ॥३२८॥

चौपाई

का पूँछहु तुम धात निछोही । जो गुरु कीन्ह अँतरपट[7] ओही ॥
सिधि गुटका जो मोसों कहा । भयो राँग सत हिये न रहा ॥
सो न रूप जासों दुख खोलों । गयो भरोस ताँब का बोलों ॥
जहँ लोना बिरवा कै जाती । कह को सँदेस आन कै पाती[8] ॥
कै जो पार हरतार करीजै । गंधक देखि अबहिँ जिउ दीजै ॥
तुम जोरा[9] कै सूर मयंकू । पुनि बिछोहि कस लीन्ह कलंकू ॥
जो यहि घरी मिलावै मोही । सीस देउँ बलिहारी ओही ॥
दो०—होइ अबरख इँगुर भया, फेरि अगिन महँ दीन्ह ।
काया पीपर होय कनक, जो तुम चाहौ कीन्ह ॥३२९॥

---

१ उपनी=उत्पन्न हुई अर्थात् प्रगट हुई । २ धात कामना=कीमिया बनाना । ३ निरधात=शक्ति रहित ।

४ बीरव=बीरवा, पौधा । ५ लोना=(क) सुंदर, (ख) लोनिया नामक शाक विशेष । ६ कुरकुटा=टुकड़ा । ७ अंतरपट=परदा । ८ पाती=(क) पत्ती, (ख) चिट्ठी । ९ जोरा करना=(क) मिलाना, (ख) एक रुपया भर चांदी में एक रुपया भर रांगा मिलाकर दो रुपया भर चांदी बना लेने को रसायनी लोग 'जोड़ा करना' कहते हैं ।

चौपाई

का बिसाय[1] जो गुरु अस बूझा। चकाब्यूह[2] अभिमनु ज्यौं जूझा॥
बिष जो दीन्ह अँबिरितु दिखराई। तोहिँ रे निछोहहिँ को पतियाई॥
मरै सु जान होय तन सूना। पीर न जानै पीर-बिहूना॥
पार न पाव जो गंधक पिया। सो हरतार कहौ किमि जिया॥
हम सिधि गुटिका जानैं नाहीं। कौन धात पूंछौ तेहि पाहीं॥
अब तेहिँ बाज[3] राँग[4] भा डोलौं। होय सार[5] तो बरगी[6] बोलौं॥
अबरख कै तन ईंगुर कीन्हा। सो तन फेरि अगिन महँ दीन्हा॥
दो०—मिलि जा पिरीतम बिछुरै, काया अगिन जराय।
कैसो मिले तन-तप बुझै, कै अब[7] मुएहिं बुझाय॥३३०॥

चौपाई

सुनि कै बात सखी सब हँसीं। जनहु रैनि तरईं परगसीं॥
अब सो चाँद गगन महँ छपा। लालच कै कित पावसि तपा॥
हमहुँ न जानैं दहुँ सो कहाँ। करब खोज औ बिनउब तहाँ॥
औ अस कहब आहि परदेसी। करु माया हत्या जनि लेसी॥
पीर तुम्हारि सुनत होइ छोहू। देव मनाउ होइ अस ओहू॥
तू जोगी तप करु मन जथा। जोगिहिँ कौन राज कै कथा॥
वह रानी जहवाँ सुख राजू। बारह अभरन करै सो साजू॥
दो०—जोगी दृढ़ आसन करु, अस्थिर घरु मन ठाउँ।
जो न सुने तौ अब सुनु, बारह अभरन नाउँ॥३३१

चौपाई

प्रथमें मंजन होय सरीरू। पुनि पहिरै तन चंदन चीरू॥
साजि मांग सिर सेंदुर सारा। पुनि ललाट रचि तिलक सँवारा॥

---

१ बिसाना= बश चलना। २ चकाब्यूह=चक्रब्यूह। ३ बाज= बगैर, बिना। ४ रांग=(क) रांगा, (ख) रंक, निर्धन। ५ सार=(क) लोहा, (ख) तत्व वस्तु। ६ बरगी=(क) तिपतिया नामक बूटी, (ख) अपने वर्गवाला। ७ अब मुएहीं बुझाव=मेरे मरने पर बुझैगी।

पुनि अंजन दोउ नैनन करै। पुनि दुउ कानन कुंडल धरै॥
पुनि नासिक भल फूल अमोला। पुनि रातै[1] मुख खाय तमोला[2]॥
गिउँ अभरन पहिरै जहँ ताई। औ पहिरै कर कँगन कलाई॥
कटि छुद्रावलि[3] अभरन पूरा। पायन पहिरै पायल[4] चूरा[5]॥
बारह अभरन यही बखाने। ते धारै बरहौ अस्थाने॥

दो०—पुनि सोरहौ सिंगार जस, चारहु जोग कुलीन।
दीरघ चारि चारि लघु, चारि सुभर[6] चहुँखीन॥३३२॥

चौपाई

पद्मावत जो सँवारै लीन्हीं। जनु रति रूपवती रस भीनी॥
लै मंजन[7] तन कीन्ह अन्हानू। पहिरयो चीर गयो छिपि भानू॥
केस झारि कै काढ़ी मांगा। जानहुँ निकसि खाँड़[8] भा नाँगा॥
जनु गजपंथ[9] गगन निसि देखा। गए रवि किरिन रही इमि लेखा॥
जनहु चंद निकलंक[10] दिखाई। सुरसरि आयसु सीस भराई॥
जो न तरंग दुहूँ दिस देई। मांग गांग जग करवत लेई॥
सरन लीन्ह तीरथ तिरबेनी। माँगै रुहिर माँग जिउ लेनी॥

दो०—बेनी मांग सँवारि कै, दीन्ह पीठि पर मेलि।
मोर भँवर तहँ देखिये, करैं दुहूँ दिस केलि॥३३३॥

---

१ रातै=लाल करै। २ तमोल=पान. ३ छुद्रावलि=क्षुद्रघंटिका, किंकिणी। ४ पायल=पाज़ेब। ५ चूरा कड़े। ६ सुभर=भरे हुए, मांसल। दीरध चारि=केश, करांगुली, नेत्र, कंठरेखा। चारि लघु=दांत, कुच, ललाट, नाभि। चारि सुभर=कपाल, जंघा, भुजदंड। चहुँ खीन=नासिका, अधर, पेट, कटि। ७ मंजन=उबटना। ८ खांड़=खांड़ा (तलवार)। ९ गजपथ=हाथी की राह (आकाशगंगा]। १० चंद निकलंक=द्वितीया का चंद्रमा।

चौपाई

रचि पत्रावलि[१] माँग सेंदूरी। भरि मोतिन औ मानिक पूरी॥
निकसि किरिनि आवा जनु सूरू। ससि औ नखत होयँ सब चूरू॥
चंदन चित्र भये बहु भाँती। मेघ घटा महँ जनु बक पाँती॥
सिर जो रतन मानिक बैसारा। जानहु टूट गगन निसि तारा॥
तिलक जराउ जो दीन्ह लिलारा। बैठ दुइज ससि सोहिल[२] तारा॥
मनि कुँडल पहिराये लोने। जनु कौंधा लपकै दुहुँ कोने॥
तेहि ऊपर खोटिला[३] धुव दोऊ। दिपहिं दीप भूला सब कोऊ॥
दो०—पहिरि जरावा ठाढ़ि भै, कहि न जाय तस भाव।
मानहु दरपन गगन भा, तहँ ससि तार दिखाव॥३३४॥

चौपाई

बाँक नयन औ अंजन रेखा। खंजन जानु सरद रितु देखा॥
जो जो हेर फेर मुख मोरी। लरै चंद महँ खंजन जोरी॥
भौंहैं धनुष धनुष पै हारा। नैनन साधि बान बिष मारा॥
रतन फूल[३] नासिक अति सोभा। ससि मुख आय सूक[४] जनु लोभा॥
सुरँग अधर औ लीन तँबोरा। सोहै पान फूल कर जोरा॥
कुसुम गेंद अस सुरंग कपोला। तेहि पर अलक भुवंगिन डोला॥
तिल कपोल अलि पदुम बईठा। बेधा सोइ जो वह तिल दीठा॥
दो०—देखि सिंगार अनूप सब, बिरह चला तब भागि।
कालकंट[५] जिमि ओनवा,[६] सब मोरे जिय लागि॥३३५॥

---

१ पत्रावलि=पत्रभंग रचना (मरवट की रचना)। २ सोहिल तारा=सुहेल नामक सितारा (जो अरब देश के यमन नामक प्रांत से दिखलाई पड़ता है) यह अरबी साहित्य की उपमा है। उर्दू शायर कहता है—"जो कशका सदल लगा जबीं पर तो पास अबरू के खाल भी है। सिपह खूबी पै बद्र भी है सुहेल भी है हिलाल भी है।"
रतनफूल=बड़ा मोती (बुलाक़ का)। ४ सूक=शुक्र सितारा। ५ काल कंट=कष्ट। ६ ओनवा=उमड़ आया है।

चौपाई

का बरनौं अभरन उर हारा। ससि पहिरे नखतन कै मारा[1]॥
चीर चारु औ चंदन चोला। हीर हार नग लाग अमोला॥
तेहिँ झाँपी रोमावलि कारी। नागिनि रूप डसै हत्यारी॥
कुच कंचन दुइ श्रीफल[2] ऊभे[3]। हुलसहिँ चहैं कंत उर चूभे॥
बाहन बाजु टाड़[4] सलोनी। डोलत बाँह भाव गति लोनी॥
छुद्रघंटिका[5] कञ्चन तागा। चलतहिँ उठैं छतीसौ रागा॥
तरुनी कँवल-कली जनु बाँधे। बसा[6] लंक जानहु दुइ आधे॥

दो०—पायल अनवट[7] बीछिया, पायन परैं बियोग।
लाय[8] हमैं टुक[9] समदहु,[10] तम जानहु रस भोग॥३३६॥

चौपाई

अस बारह सारह धन साजे। छाज न और ओही पै छाजे॥
बिनवहिँ सखी गहर[11] का कीजै। जेइँ जिउ दीन्ह[12] ताहि जिउ दीजै॥
सँवरि सेज धन मन भइ संका। ठाढ़ि तँवाइ[13] टेकि कर लंका॥
अनचिन्ह पिउ काँपौं मन माँहाँ। का मैं कहब गहब जो बाँहाँ॥
बारि बैस गइ प्रीति न जानी। तरुनी भइ मैमंत[14] भुलानी॥
जोबन गरब न कछु मैं चेता। नेह न जानौ स्याम कि सेता॥
अब सो कँत पुछिहैं सब बाता। कस मुहँ होय पीत कै राता॥

दो०—हौं सो बारि औ दुलहिनि, पिय सो तरुन औ तेज।
न जानौ कस होइ है, चढ़त कंत की सेज॥३३७॥

---

१ मारा=माला। २ श्रीफल=बेल के फल। ३ ऊभे=उभड़े हैं। ४ टाड़=बहुँटा, बरा। ५ छुद्र घंटिका=किंकिणी। ६ बसा=बर्र, भिड़। ७ अनवट=पैर के अँगूठों का आभूषण। ८ लाय=पहिन कर। ९ टुक=थोड़ी देर। १० समदहु=मिलो, (पति से) ११ गहर=देर। १२ जी देना=(क) प्राण निछावर करना (ख) जिलाना, जीव दान देना। १३ तँवाना=दुखित होना, कष्ट अनुभव करना। १४ मैमंत=मदमस्त।

चौपाई

सुनु धन डर हिरदै ताईं । जौ लहि रहसि मिला नहिँ साईं ॥
कौन सो करी[1] जो भौंर न राई[2] । डार न टूट पुहुप गरुवाई ॥
मातु पिता जो व्याहै सोई । जनम निवाह कंत सँग होई ॥
भरि जमबार[3] चहै जहँ रहा । जाय न मेटा ताकर कहा ॥
ता कहँ बिलँब न कीजै बारी । जो पिय आयसु मन सो प्यारी ॥
चलहु बेगि आयसु भा जैसे । कंत बोलावै रहै सो कैसे ॥
मान न करु थोरा करु लाड़ू[4] । मान करत रिस मानै चाँड़ू[5] ॥
दो०—साजन[6] लेइ पठाई, आयसु जाय न मेट ।
तन मन जोबन साज सब, देन चली लै भेंट ॥३३८॥

चौपाई

पदुमिनि गवन हंस गये दूरी । हस्ति लाज मेलहि सिर धूरी ॥
बदन देखि घटि चंद छिपाना । दसन देखि कै बीजु लुकाना[7] ॥
खंजन छिपे देखि कै नैना । कोयल छिपी सुनत मुख बैना ॥
गींव देखि कै छिपा मयूरू । लंक देखि कै छिपा सदूरू[8] ॥
भौंहैं देखि धनुष चौफारा[9] । बेनी बासुकि छिपा पतारा ॥
खरग छिपी नासिका बिसेखी । अमिरित छिपा अधर रस देखी ॥
पहुँचनि देखि छिपी पौनारी[10] । जंघ देखि कदली छिपि बारी ॥
दो०—अछरीं[11] रूप छिपानी, जबहिँ चली धन साजि ।
जावँत गरब[12] गहेली, सबै छिपीं मन लाजि ॥३३९॥

---

१ करी=कली । २ राई=राती, अनुरक्त । ३ भरि जमवार=मरते दम तक । ४ लाड़=गुमान, नाज़ नख़रा । ५ चांड़=अधिक । ६ साजन=पति । ७ लुकाना=छिप गया । ८ सदूर=(शार्दूल) सिंह । ९ चौफारा=चार फांक हो गया (इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं । उनमें से चार रंग चटकीले हैं, तीन रंग कुछ हलके होते हैं । इसी से धनुष को चार चटकीले रंगों में विभाजित मान कर 'चौफारा' विशेषण दिया गया है) १० पौनार=कमल दंड । ११ अछरी=अप्सरायें । १२ गरब गहेली=अभिमानी, मग़रूर ।

चौपाई

मिली सो गोहन[1] सखीं तराईं । लिहे चाँद सूरज पहँ आई ॥
सोरह करा दिष्टि ससि कीन्ही । सहसौ करा सुरिज की लीन्ही ॥
अद्भुत रूप चांद दिखराई । देखत सूर गयो मुरझाई ॥
भा रवि अस्त तराईं हँसी । सुरिज न रहा चाँद परगसी ॥
जोगी आहि न भोगी कोई । खाय कुरकुटा[2] गा परि सोई ॥
पदुमावति निरमल जस गंगा । नाहिँ जोग जोगी भिखमंगा ॥
सखो जगावहिँ चेला जागहु । आवा गुरू पावँ उठि लागहु ॥

दो०—बोलहिँ बचन सहेली, कान लागि गहि माथ ।
गोरख आय ठाढ़ भा, उठ रे चेला नाथ[3] ॥३४०॥

चौपाई

सुनि यह सबद अमिय अस लागा । निद्रा छूटि सोय अस जागा ॥
गहो बाँह धन सेजवाँ आनी । अंचल ओट रही छिपि रानी ॥
सकुची डरी मुरी मन बारी । गहु न बाँह रे जोगि भिखारी ॥
ओहट[4] होउ जोगी तोरि चेरी । आवै बास कुरकुटा[5] केरी ॥
देखि भभूती छूति मोहिँ लागा । काँपै चाँद राहु सों भागा ॥
जोगि तोर तपसी कै कया । लागै चहै अंग मोर छया[6] ॥
बार भिखारि न मांगसि भीखा । मांगै आय सरग चढ़ि सीखा ॥

दो०—जोगि भिखारी कोऊ, मँदिर न पैसे पार ।
मांगि लेहु कछु भिच्छा, जाय ठाढ़ हो बार ॥३४१॥

चौपाई

अन[7] तुम कारन पेम पियारी । राज छाँड़ि क भयो भिखारी ॥
नेह तुम्हार जो हिये समाना । चितउरसोंनिसरयों[8] होइ आना ॥

---

१ गोहन=साथ । २ कुरकुटा=रोटी के टुकड़े । ३ नाथ=जोगी ।
४ ओहट होउ=हट जाओ, दूर हो । ५ कुरकुटा=रोटी के टुकड़े ।
६ छया=छिया, मैल । ७ अन=निश्चय, सत्य । ८ निसरयो=निकला ।

जस मालति कहँ भँवर बियोगी। चढ़ा बियोग[1] चला होइ जोगी॥
भँवर खोजि जस पावै केवा[2]। तुम कारन मैं जिउ पर खेवा[3]॥
भयों भिखारि नारि तुम लागी। दीप पतिँग होइ अँगयों[4] आगी॥
एक बार मरि मिलै जो आई। दूसर बार मरै कत जाई॥
कत तेहि मीच जो मरि कै जिया। भँवर कँवल मिलि कै रस पिया॥
दो०—भँवर जो पावै कँवल कहँ, बहु आरति बहु आस।
भँवर होय निउछावरि, कँवल देय हँसि बास॥३४२॥

चौपाई

अपने मुँह न बड़ाई छाजा। जोगी कतहुँ होहिँ नहिँ राजा॥
हौं रानी तू जोगि भिखारी। जोगिहिँ भोगिहिँ कौन चिन्हारी॥
जोगी सबै छंद[5] अस खेला। तू भिखारि केहि माहँ अकेला॥
पवन बाँधि अपसवहिँ[6] अकाशा। मनसहिँ[7] जहाँ जाहिँ तेहि बासा[8]॥
येही भांति सृष्टि बहु छरी। यही भेष रावन सिय हरी॥
भँवरहि मीचु नियर जो आवा। केतकि बास लेइ कहँ धावा॥
दीपक जोति देखि उजियारी। आय पतिँग होइ परा भिखारी॥
दो०—रैनि जो देखै चंदमुख, ससि तन होय अलोप।
तू जोगी तप भूला, मैं राजा की ओप[9]॥३४३॥

चौपाई

अन[10] धन तू निसिअर[11] निसि माँहाँ। हौं दिनअर[12] जेहि कै तू छाँहाँ॥
चाँदहिँ कहाँ जोति औ कला। सुरिज की जोति चाँद निरमला॥
भँवर बास चंपा नहि लेई। मालति जहाँ तहाँ जिउ देई॥

---

१ बियोग=विरह (प्रेम)। २ केवा=कमल। ३ खेवा=कष्ट सहा। ४ अगयों=अंगपर सहना। ५ छंद=छल, धोखा। ६ अपसवहिं=जाते हैं। ७ मनसना=इच्छा करना। ८ बासा=स्थान। ९ ओप=छबि, प्रभा। १० अन=निश्चय। ११ निसिअर=शशि चंद्रमा। १२ दिनअर=दिनकर, सूर्य।

तुम हुत[1] भयों पतिंग[2] की करा। सिंघलदीप आय उड़ि परा॥
सेयों महादेव कर बारू। तजा अन्न भा पवन अहारू॥
तुम सों प्रीति-गाँठ मैं जोरी। कटै न काटी छुटै न छोरी॥
छिया भीख रावन का दीन्हा। तू अस निठुर अंतरपट[3] दीन्हा॥
दो०—रंग तुम्हारे रात्यौं, चढ्यौं गगन होइ सूर।
जहँ ससि सीतल कहँ तपनि, मन इच्छा धन पूर॥३४४॥

चौपाई

जोगि भिखारि करसि बहु बाता। कहसि रंग देखौं नहि राता॥
कापर रँगे रंग नहिँ होई। हियो औटि उपजै रँग सोई॥
चाँद के रंग सूर जो राता। देखै जगत साँझ परभाता॥
दगध बिरह नित होय अँगारू। ओहि की आँच दगधै संसारू॥
जो मजीठ औटै बहु आँचा। सो रँग जनम न डोलै राचा॥
जरै बिरह जो दीपक बाती। भीतर जर ऊपर होइ राती॥
जर परास कोइला के भेसू। तब फूलै राता होइ टेसू॥
दो०—पान सुपारी खैर जिमि, मेरै करै चकचून[4]।
तब लग रंग न राचै, जब लग होय न चून[5]॥३४५॥

चौपाई

धनिया का सुरंग का चूना। जेहि तन नेह दगध तेहि दूना॥
हौं तुम नेह पियर भा पानू। पेड़ी[6] हुत सनरास[7] बखानू॥
सुनि तुम्हार संसार बड़ौना। जोग लीन्ह तन कीन गड़ौना[8]॥

---

१ तुम हुत=तुम्हारे वास्ते। २ भयो पतिंग की करा=पतंग की सी दशा का हो गया हूँ, पतंग रूप हो गया हूँ। ३ अन्तरपट=परदा। ४ चकचून=चकना चूर, चूर्ण (चक्की में पीसा हुआ आटा) ५ चून=चूना। ६ पेंड़ी=पेड़ी का पान (जिस पान की डेंपी के निकट से लता की नवीन शाखा निकलती है) ७ सनरास=लता के मध्य भाग के पान (यह पान उत्तम माने जाते हैं)। ८ गड़ौना=गाड़ा पान (जो लता को जड़ के पास होते हैं। इनमें मिट्टी लगी रहती है)

करहिँ जो किँगिरी लै बैरागी। नौती[1] होय बिरह कै आगी ॥
फेरि फेरि तन कीन भुँजौना[2]। औटि रकत रँग हरदी अवना ॥
सूखि सुपारी भा मन मारा। सीस सरौता करवत सारा ॥
हाड़ चून भये बिरहैं दहा। जानै सो जो दगध इमि सहा ॥
दो०—कै सो जान पर पीरा, जेहि दुख ऐस सरीर।
रकत पियासे जे अहैं, का जानै पर पीर ॥३४६॥

चौपाई

जोगिहिँ बहुत छंद[3] अउराहीं[4]। बूँद सेवाती जैस पराहीं ॥
परहिं पुहुमि पर होइ कचूरू। परहिँ कदलि पर होहिँ कपूरू ॥
परहिँ समुद्र खार जल ओही। परहिँ सीप सब मोती होहीं ॥
परहिँ मेरु फल अमिरित होई। परहिँ नाग मुख विष होइ सोई ॥
जोगी भँवर निठुर ये दोऊ। केहि आपन भए कह सब कोऊ ॥
एक ठाउँ ये थिर न रहाहीं। रस लै खेलि अंत[5] कहँ जाहीं ॥
होइ गिरही[6] पुनि होइँ उदासी। अंतकाल दोनों बिसुवासी[7] ॥
दो०—तासों नेह जो दिढ़ करिय, थिर आछै सहदेस[8]।
जोगी भँवर भिखारी, दूरिहिं ते आदेस[9] ॥

चौपाई

थल थल नग[10] न होहिं जिन्ह जोती। जल जल सीप न उपनहिँ मोती ॥
बन बन बिरिख[11] न चंदन होई। तन तन बिरह[12] न उपनै सोई ॥

---

१ नौती=(१) नित्य नूतन (२) नौती पान जो वर्षा के आरम्भ में तोड़े जाते हैं। ये पान केवल आठ दस रोज तक ठहरते हैं अधिक नहीं। २ पान पकाते समय उनमें आग की आंच दी जाती है तब पीला रंग आता है। आंच देते समय वे बार बार फेरे भी जाते हैं। ३ छंद=छल, धोखा। ४ अउराहीं=आते हैं, विचार में आते हैं। ५ अंत=अन्यत्र। ६ गिरही =(गृही) गृहस्थ। ७ बिसुवासी=विश्वासघाती, छली। ८ सहदेस= एक देस में साथ रहने वाला, सहबासी। ९ आदेस=प्रणाम। १० नग= रत्न। ११ बिरिख=वृक्ष। १२ बिरह=प्रेम।

जहँ उपना सो औटि मरि गयऊ । जनम निरार[1] न कबहूँ भयऊ॥
जल अंबुज रवि रहै अकासा । जो पिरीति जानहु एक पासा ॥
जोगी भँवर जो थिर न रहाहीं । जिनहि खोजि कोउ पावै नाहीं॥
मैं तोहिँ पावा आपन जीऊ । छाँड़ि सेवाति आन नहिँ पीऊ ॥
भँवर मालतिहिँ मिलै जो आई । सो तजि आन फूल कित जाई ॥

दो०—चंपा प्रीति न भँवरहिँ, दिन दिन आकर[2] बास ।
भँवर जो पावै मालती, मुएहु न छांड़ै पास ॥३४८॥

चौपाई

ऐसैं राजकुँवर नहिँ मानौं । खेलु सार पाँसा[3] तब जानौं ॥
कच्चे बारहि बार[4] फिरासी । पक्के पौ[5] पर थिर न रहासी ॥
रहै न आठ अठारह भाखा । सोरस[6] सतरस[7] रहै सो राखा॥
सत पर ढरै सो खेलन हारा । ढारु इग्यारह जासि न मारा ॥
तू लीन्हें आछसि मन दुआ । औ जुग सारि[8] चहस पुनि छुवा ॥
हौं तौ नेह रच्यौं तोहि पाहां । दसौ दाँव[9] तोरे कर माहां॥
तब चौपर खेलौं दै हिया । जो तरहेल[10] होइ सौतिया[11] ॥

दो०—जेहि मिलि बिछुरन औ मरन, अंत तंत होइ मिंत ॥
तेहि मिलि बिछुरन को सहै,बरु बिन मिले निचिंत ॥३४९॥

---

१ निरार=अलग, न्यारा । २ आंकर=कड़ी, अधिकाधिक । ३ सारि-पांसा=पंसासारी, चौपड़ । ४ बारह=(क), बारह (ख) द्वार । ५ पौ=(क) एक, (ख) पैर । ६ सोरस=(क) वह रस, (ख) षोड़स, सोलह । ७ सतरस=(क) सत्य रस, (ख) सत्रह । ८ जुगसारि=(क) गोटयों का जुग, (ख) दोनों कुच । ९ दसौं दावँ=(क) दस का दाव, (ख) मरण (दशमावस्था) । १० तरहेल=नीचे खेलने वाली । ११ सौतिया=(क) सवति (ख) सौ स्त्रियां । जो मेरी सवति मुझसे नीचे दरजे ही पर रहे । पद्मावत राजा से बचन भरा लेना चाहती है कि आप चाहे सैकड़ों रानियां विवाहे, परन्तु सब से अधिक स्नेह मुझ पर ही होना चाहिये ।

चौपाई

बोलौं बचन नारि सुनु साँचा । पुरुषक बोल सत्य औ बाँचा[1] ॥
यह मन लाग्यो तोहि अस नारी । दिन तोहि पासा औ निसिसारी ॥
पौ परि बारहि बार मनाऊँ । सोरस खेलु पैंत जिउ लाऊँ ॥
भली भाँति हियरे रुचि राची । मारेसि तू सब ही कै काची ॥
पाकि उठायो आस करीता । हौं जिय तोहिँ हारा तुम जीता ॥
मिलि कै जुग नहिँ होहु निरारी । कहा बीच दूती देनहारी ॥
अब जिउ जनम जनम होहि पासा । चढ्यौ जोग आयौं कयलासा ॥
दो०—जाकर जिउ बस जेहि सेतीं, तेहि पुनि ताकर टेक ॥
कनक सोहाग न बिछुरहिँ, औटि होंहि मिलि एक ॥३५०॥

चौपाई

बिहँसी धन सुनि कै सत बाता । निहचै तूं मोरे रँग[2] राता ॥
निहचै भँवर कँवल रस रसा[3] । जो जेहि मन सो तेहि मन बसा ॥
जब हीरामनि भयो सँदेसी । तोहि नित[4] मँडप गई परदेसी ॥
तोर रूप तस देखेउँ लोना । जनु जोगी तैं मेलिस टोना ॥
सिध गुटका जो दिष्टि कमाई । पारे मेल रूप बसियाई[5] ॥
भुगुति[6] देइँ कहँ मैं तोहि दीठा । कँवल नयन होइ भँवर बईठा ॥
नैन पुहुप तूं अलि भा सोभी । रहा बेधि तस उड़सि न लोभी ॥
दो०—जाकर आस होइ अस, तेहि पुनि ताकर आस ।
भँवर जो दाधा कँहँ, कस न पाव रस बास ॥३५१॥

चौपाई

कौन मोहनी दहुँ हुत तोही । जो तोहि बिथा सो उपनी[7] मोही ॥
बिनु जल मीन तपै तस जीऊ । चातक भइउँ रटत पिउ पीऊ ॥

---

१ बाचा = प्रतिज्ञा । (नोट) इस चौपाई भर में श्लेष अलंकार से काम लिया गया है । २ रंग = प्रेम, अनुराग । ३ रसना = अनुरक्त होना । ४ नित = निमित्त, वास्ते । ५ बसियाना = (क) बश में कर लेना, (ख) बनाना । ६ भुगुति = भोजन, भिक्षा । ७ उपनो = उत्पन्न हुई ।

जरिउँ बिरह जस दीपक बाती । पथ जोवत भइ सीप सेवाती ॥
डार डार ज्यौं कोयल भई । भइउँ चकोरि नींद निस गई ॥
मोरे पेम पेम तोहि भयऊ । राता हेम अगिन ज्यौं तयऊँ[1] ॥
हीरा दिपहिँ जो सूर उदोती । नाहिँ त कित पाहन कित जोती ॥
रवि परगासे कँवल बिकासा । नाहिँ त कित मधुकर कित बासा ॥

दो०—तासों कौन अँतरपट[2], जो अस प्रीतम पीउ ।
न्यौछावरि करौं आप हौं, तन मन जोवन जीव ॥३५२॥

चौपाई

हँसि पदमावत बोली बाता । सत्य कहौं डर जानु बिधाता ॥
तूं राजा दुहुँ कुल उजियारा । अस कहि चरचेउ[3] मरम तुम्हारा ॥
पै तुम्ह जंबू दीप बसेरो । का जानसि कस सिंघल मेरो ॥
का जानसि सु मानसर केवा । सुनि भा भँवर जीव पर खेवा ॥
ना तूँ सुनि न कबहूँ दीठी । कैसे चित्र होइ चित्त पईठी ॥
जौ लहि अगिनि करै नहिँ भेदू । तौ लहि अवटि चुवै नहिँ मेदू[4]॥
केहि संकर[5] तोहि ऐस लखावा । मिला अलख[6] अस प्रेम जगावा॥

दो०—जेहि कर सत्त सँघाती[7], ताकर डर सोइ मेट ।
सो सत कहु कैसे भा, दुहूँ साथ[8] भइ भेंट ॥३५३॥

चौपाई

सत्य कहौं सुनु पदमावती । जहँ सत पुरुष तहाँ सरसुती ॥
पायौं सवा कही वैं[9] बाता । भा निहचौ देखत मुख राता ॥
रूप तुम्हार सुन्यौं अस नीका । ना[10] जेहिँ चढ़ा काहु कहँ टीका॥

---

१ तयऊ=तपाया गया । २ अंतर पट=परदा । ३ चरचना=पहँचान करना, निश्चित करना । ४ मेद=चोवा, इत्र । ५ संकर=कल्याण कारक देव । ६ अलख=(क) ईश्वर, (ख) बिना देखी हुई वस्तु । ७ संघाती—साथी सहायक, । ८ दुहूँ साथ=परस्पर । ९ वैं=उसने । १० ना जेहिँ··· टीका=जिसका संबन्ध अब तक किसी के साथ स्थिर नहीं हुआ ।

चित्र किहेउँ पुनि लै लै नाऊं । नैनन लागि हिये भा ठाऊं ॥
हौं भा सांच[1] सुनत वहि घरीं । तुम होई रूप[2] आइ चित भरीं ॥
हौं भा काठ-मूर्ति मन-मारे । जहँ जहँ कर[3] सब हाथ तुम्हारे ॥
तुम जो डोलावहु सोई डोला । मवन[4] सांस जो दीन्ह तो बोला ॥

दो०—को सोवै को जागै, अस हौं गयों बिमोहि ।
परगट गुपुत न दूसर, जहँ देखौं तहँ तोहि ॥३५४॥

चौपाई

बिहँसी धन सुनि कै सत भाऊ । हौं रामा तुम रामन राऊ ॥
रहा जो भँवर कमल की आसा । कस न भोग मानै रस बासा ॥
जस सत गहा कुँवर तू मोही । तस मन मोर लाग पुनि तोही ॥
जब तें कहिगा पंखि[5] सँदेसी । सुन्यौं कि आवा है परदेसी ॥
तब तें तुम बिन रहै न जीऊ । चातक भइउँ कहत पिउ पीऊ ॥
भइउँ चकोरि सो पंथ निहारी । समुँद सीप जस नैन पसारी ॥
बिरह भइउँ दहि कोयल कारी । डार डार जमि[6] पीउ पुकारी ॥

दो०—कौन सो दिन जब पिउ मिलै, यह मन राता जासु ।
वह दुख देखै मोर सब, हौं मुख देखौं तासु ॥३५५॥

चौपाई

रहसि[7] सेज चढ़ि बैठी बाला । अधर अमी रस भरे पियाला ॥
अधर कँवल मधि अमृत आनी । लै बैठी पदुमावति रानी ॥
बैठा आइ सेज पर राजा । क्रीड़ा करत सिंह होइ गाजा ।
करत कलोल कंचुकी छूटी । कुच कर गहत कसनिबँद[8] टूटी ॥

---

१ सांच = सांचा । २ रूप = चांदी । ३ कर = कल, संचालन यंत्र । ४ मवन = मौन, चुप । ५ पंखि सँदेसी = सदेश लाने वाला पक्षी, हीरामन सुवा । ६ जमि = बैठकर । ७ रहसि = आनंद से, प्रसन्न होकर । ८ कसनी-बंद = चोली के बंद ।

प्रौढ़[1] कुतूहल कर अस दोऊ। मानहि भोग काम रति सोऊ॥
रहस चाव सों खेलै रानी। बकुल[2] होइ पदुमिनि कुँभिलानी॥
देखि राहु ससि लागा सीऊ[3]। छुटा राहु खुटका[4] गा जीऊ।
दो०—जैसे राहु गरासै, ससिहिँ आय एक ठाँव।
छूटै राहु अँजोर[5] भा, रानिहिँ उपना चाव[6]।३५६॥

चौपाई

पुनि सत भाव भयो कँठ लागू। जनु कंचन औ मिला सोहागू॥
चौरासी आसन बँध जोगा। खटरस बिंदक[7] चतुर सो भोगी॥
कुसुमानी[8] मालति अस पाई। जंगु[9] चापि गहि डार नवाई॥
कटी-बेध जनु भँवर लोभाना। हना राहु अरजुन[10] लै बाना॥
कंचन-करी[11] जरी नग जोती। बरमा सों बेधा जनु मोती॥
नारँग जानि कीर छत दये। अधर आँबरस जानहु लये॥
कौतुक केलि करत दुख नंसा[12]। कूजहिँ कुरलहिँ जनु सर हंसा॥
दो०—रहो बसाय बासना, चोवा चंदन मेद[13]।
जो अस पदुमिनि राचै सो जानै यह भेद॥३५७॥

चौपाई

रतन सेन सो कंत सुजानू। षटरस पंडित सोरह[14] ज्ञानू॥
तस होइ मिले पुरुष औ गोरी। जैसे बिछुरा सारस जोरी॥
रचैं सार[15] दोनों इक पासा। होइ जुग जुग आवहिँ कैलासा॥

---

१ प्रौढ़ कुतूहल=प्रौढ़ावस्था की सी कोक कला। २ बकुल=मौलसिरी। ३ सीउ=शीत, जाड़ा। ४ खुटका=खटका, चिन्ता, भय। ५ अँजोर=उजियाला। ६ चाव=शौक, उत्साह। ७ विंदक=(विद्) जानने वाला। ८ कुसुमानी=फूली हुई, पुष्पिता। ९ चंगु=चंगुल, पंजा। १० हना राहु…बाना=जैसे अर्जुन ने मत्स्यबेध किया था वैसे ही राजा ने भी ठीक निशाने पर वार किया। ११ कंचन करी=सोनेकी अँगूठी। १२ नंसा=नाश हुआ। १३ मेद=इत्र। १४ सोरह=सोलहो सिंगार। १५ सार=चौपड़।

पिय धन गहि दीन्हीं गलबाँहा। धन बिछुरी लागी उर माहाँ॥
ते छकि रस नव केलि करेहीं। चौक[1] लाइ अधरन रस लेही॥
धन नवसात सात औ पांचा। पुरुष दस तेरह किमि बांचा॥
बिरह विधंसि लीन्ह धन साजा। औ सब रचन जीत तेहि राजा॥

दो०—जनहु औटि कै मिरै गे, तस दोनों भये एक।
कञ्चन कसत कसौटी, हाथ न कोऊ टेक॥३५८॥

चौपाई

चतुर नारि चित अधिक चिहूँटै[2]। जहाँ पेम बाढ़ै किमि छूटै॥
कुरलै[3] काम-केलि मन हारी। कुरलै जहँ नहिँ सो न सुनारी॥
कुरलै होय कन्त कर तोषू। कुरलै किहे पाव धन मोखू॥
जाइ कुरलै सो सोहाग सुभागी। चदन जैस पीव कँठ लागी॥
कुसुम गेंद जानहु कर लई। गेंद चाहि धन कोंबर भई॥
दारयो दाख बेल रस चाखा। पिय[4] के खेल धन जोबन राखा॥
भयो बसंत करी मुख खोला। बैन सोहावन कोकिल बोला॥

दो०—पिउ पिउ करत सूखि धन, बोली चातकि भाँति।
परी सो बून्द सीप मुख, भई हिये सुख सांति॥३५९॥

---

१ चौक=(क) चौक का दांव (ख) चौका दांत का। २ चित चिहुटना=चित में चुभना, पसद आना। ३ कुरलना=मधुर स्वर से बोलना (यहां रति समय में 'सी सी' शब्द करना)—तात्पर्य यह कि काम केलि के समय कुरलना हो तो मन हरने वाली क्रिया है। जिस रति में कुरल नहीं वह रति सयानपने की नहीं वरन् अनारी पने की रति है। बिहारी ने कहा है:—

चमक तमक हांसी सिसक मसक झपटि लपटानि।
ये जेहि रति सो रति मुरति और मुकति अति हानि॥

४ पियके······राखा=पति के खेलने ही के लिये स्त्री अपने कुचों को सुरक्षित रखती है।

चौपाई

भयो जूझ जस रावन रामा। बिरह बिधांस[1] सेज सँगरामा॥
लीन्ह लंक[2] कञ्चन गढ़ टूटा। कीन्ह सिंगार अहा सब लूटा॥
औ जोबन मैमंत[3] बिधांसा। बिचला बिरह जीव जेइ नासा॥
लूटे अंग रंग सब भेसा। छूटी मंग[4] भंग भये केसा॥
कंचुकि चूर, चूर भइ तानी[5]। टूटे हार मोति छितरानी॥
बारी टाड़ सलोनी टूटी। बाजू कंगन बलिया[6] फूटी॥
चंदन अंग छूट तस भेंटी। बेसर टूट तिलक गा मेटी॥
दो०—पुहुप सिंगार सँवार सब, जोबन नवल बसंत।
अरगज ज्यों हिय लायकै, मरगज[7] कीन्हो कन्त॥३६०॥

चौपाई

विनय करति पदुमावति बाला। सुधि सो रहै अस पियो पियाला॥
पिय आयसु माथे पर लेऊँ। जो मांगै नै नै सिर देऊँ॥
पै पिय बचन एक सुनु मोरा। चाखौ पिय मद थोरा थोरा॥
पेम सुरा सोई पै पिया। लखै न कोऊ कि काहू दिया॥
चाख दाम मद जो एक बारा। दूसर बार लेत बिसँभारा[8]॥
एक बार जो लै कै रहा। सुख जीवन सुख भोजन लहा॥
पान फूल रस रङ्ग करीजै। अधर अधर सों चाखा कीजै॥
दो०—जो तुम चाहहु सो करहु, ना जानौं भल मंद[9]।
जो भावै सो होइ मोहिं, तुम पिय चहौं अनंद॥३६१॥

चौपाई

सुनु धन पेम सुरा के पिये। मरन ज़िअन डर रहै न हिये॥
जहँ मद तहाँ कहा संसारा। कैसे घुमरि रहै मतवारा॥

---

१ बिधांस=विध्वंस हुआ। २ लंक=कमर। ३ मैमंत=मस्ती। ४ मंग=मांग़। ५ तानी=तनी, बंद। ६ बलियां=चूड़ियां। ७ मरगज़=मलगजी, मीड़ी मसोसी हुई। ८ बिसँभारा=बेसुध, बेहोश। ९ मंद=बुरा।

सो पै जानु पियै जो कोई। पी न अघाय जाय परि सोई ॥
जा कहँ होय बार एक लाहा। रहै न ओहि बिनु ओही चाहा ॥
अरब दरब[1] सब देइ बहाई। कह सब जाय न जाय पिचाई ॥
रातिहु दिवस रहै रस भीजा। लाभ न देख न देखै छीजा[2] ॥
भोर होत तब पैलुह[3] सरीरू। पाय घुमरहा[4] सीतल नीरू ॥
दो०—एक पियाला देहु भरि, बारबार को मांग।
मुहमद कस न पुकारै, ऐस दांव जेहि खांग ॥३६२॥

३२—बत्तीसवाँ खण्ड

सोहाग वर्णन

भयो बिहान उठा रबि साईं। चहुँ दिस आईं नखत तराईं[5] ॥
सब निसि सेज मिले ससि सूरू। हार चीर बलियां[6] भईं चूरू ॥
सोधु[7] न पान चून भइ चोली। रँग रँगीलि बिरँग भइ डोली ॥
जागत रैनि भयो भिनसारा। भै बिसँभार सूत बिकरारा[8] ॥
अलक सुरंगिनि हियरैं परी। नारँग छुइ नागिनि बिष भरी ॥
लरी[9] मुरीं हिय हार लपेटे। सुरसरि जनु कालिन्दी भेंटे ॥
जनु पराग अरयल बिच मिली। बेनी[10] भई मिलि रोमावली ॥
दो०—नाभी लाभे[11] ते गईं कासी कुंड कहाव।
देउता मरैं कलपि सिर[12], आपहिँ दोष न लाव ॥३६३

---

१ दरब=द्रव्य। २ छीज=हानि। ३ पलुहना=पल्लवित होना, नवीन उत्साह पैदा होना। ४ घुमरहा=नशे से चूर। ५ तराईं=(यहां) सखियां। ६ बलियां=चूड़ियां। ७ सोधु=पता। चोली में बने हुए पानवत् बूटों का कहीं पता भी न था क्योंकि चोली चूर चूर हो गई थी। ८ बिकरार=बे अखतियार। ९ कोलरी=दुलरी तिलरी इत्यादि। १० बेनी=त्रिवेनी। ११ लाभे=लाभ करने, प्राप्त करने को। १२ सिर कलपना=सिर देना, सिर चढ़ा देना।

चौपाई

बिहँसि जगावहिँ सखी सयानी। सूर उठा उठु पदुमिनी रानी॥
सुनत सूर जनु कँवल बिकासा। मधुकर आय लीन्ह मधु बासा॥
मनहु[1] माति निसि आये बसे। अति बिसँभार भौंर आरसे॥
नैन कँवल जानहु दुइ खूले। चितबनि मृग सोवत जनु भूले॥
तन बिसँभार केस औ चोली। चित अचेत जनु बारी भोली॥
कँवल माँझ जनु केसर[2] दीठी। जोबन[3] हुत सो गँवाय बईठी॥

दो०—बेलि जो राखी इँद्र कहँ, पवन बास नहिँ देइ।
लाग्यो आय भँवर तेहि, कली बेधि रस लेइ॥३६४॥

चौपाई

हँसि हँसि पूँछहि सखी सरेखी[4]। जनु कमुदिनि चंद मुख देखी॥
रानी तुम ऐसी सुकुवारा। फूल बास भल भोग तुम्हारा॥
सहि न सकौ हिरदै पर हारू। कैसे सहा कंत कर भारू॥
बदन कँवल बिकसित दिन राती। सो कुँम्हिलान कहो केहि भांती॥
अधर कँवल सहि सकत न पानू। कैसे सहा लाग मुख भानू॥
लंक जो पैग देत मुरि जाई। कैसे रही जो रावन[5] राई॥
चंदन चोप पवन कस पीऊ। भइऊ चित्र सम कस भा जीऊ॥

दो०—सब अरगज[6] मरगज[7] भा, लोचन बिंब[8] सरोज।
सत्य कहो पदुमावति, सखी परीं सब खोज॥३६५॥

---

१ मनहु=मुंदी आंखों की पुतलियों पर उत्प्रेक्षा है कि मानो भँवर कमल (चेहरा) की सुगंध से मस्त हो गया है और रात्रि आ जानेपर बेसुध और आलस्य युक्त होकर वहीं बस रहा है। २ केसर=केसर का रंग, पीलापन—पदमावत के कमल सम (लाल) चेहरे पर पीलाई आ गई। ३ जोबन=जवानी का रूप और गर्व। ४ सरेखी=समझदार। ५ रावन राई=रावन के राज्य में (उपद्रवी के अधिकार में पड़कर)। ६ अरगज=सामान। ७ मरगज=मैला। ८ बिंब=लाल (रात भर जगने से)।

चौपाई

कहौं सखी आपन सत भाऊ। हौं जो कहौं कस रावन राऊ ॥
काँपौं भँवर पुहुम पर देखे। जनु ससि गहन तैस मोहिँ लेखे ॥
आजु मरम मैं पावा सोई। जस पियार पिउ और न कोई ॥
डर तब लग हा[1] मिला न पीऊ। भानु की दिष्टि छूटि गा सीऊ[2] ॥
जत खन[3] भानु लीन्ह परगासू। कँवल करी मन कीन्ह बिकासू ॥
हिये छोह उपना गा सीऊ। पिउ न रिसाइ लेइ बरु जीऊ ॥
हुत जो अपार बिरह दुख दोखा। जनहु अगस्त उदधि जल सोखा ॥
दो०—होहु रंग बहु जानति, लहरैं जेत[4] समुंद।
पी पी गए चतुराई, खसी न एकौ बुंद ॥३६६॥

चौपाई

हँसि हँसि बोलै पदुमिनि रानी। निजुकै[5] बात आजु मैं जानी ॥
मैं पिय देखि बहुत डर माना। जो इकठाउँ होय सो जाना ॥
आजु संक मो मन ते गई। जो पिय सँग इकठावहिँ भई ॥
निहचै बचन जो एक सहेली। रंग रँगीलहि रस भरि खेली ॥
जो कछु सुख है यहि कलि माहीं। और कंत तजि दूसर नाहीं ॥
आजु नाह मैं निजुकै चीन्हा। जोबन भोग कंत कहँ दीन्हा ॥
अधर अधर रस लेइ सुजाना। उर सो उर लागे सुख माना ॥
दो०—जो कछु भोग भूमि महँ, दीन्ह बिधाता आनि।
यहि संसार प्रान हितु, कंत समान न जानि ॥३६७॥

चौपाई

कै सिँगार ता पहँ कहँ जाऊं। ओहि कहँ देखौं ठावहिँ ठाऊं ॥
जो जिय महँ तौ ओही पियारा। तन महँ सोइ न होइ निरारा ॥
नैनन महँ तो ओही समाना। देखौं जहाँ न देखौं आना ॥
आपुहिँ रस आपुहिँ पै लेई। लागे अधर सहस रस देई ॥

---

१ हा=था। सीऊ=शीत, जाड़ा। ३ जत खन=(यत्क्षण) जिस समय। ४ जेत=जितनी। ५ निजुकै=निश्चय करके, निश्चित।

हिया थार कुच कंचन लाडू[1]। अगमन[2] भेंट दीन्ह कै चाँडू[3] ॥
हुलसी लंक लंक सों लसी। रावन रहसि कसौटी कसी ॥
जोबन सबै मिला ओहि जाई। हौं रे बिचहुत[4] गइउं हेराई ॥

दो०—जस कछु दीन्हो धरन कहँ, आपन लीन्ह सँभारि।
तससिँगारसबलीन्हेसि, मोहिँकीन्हेसि थतिहारि[5]॥३६८॥

चौपाई

अन[6]री छबीलो तोहि छबि लागो। नेत्र गुलाल कंत संग जागी॥
चंप सुदरसन अस मुख सोई। सोन जरद जस केसर होई ॥
बैठ भँवर कुच नारँग बारी। लागे नख उछरी[7] रँग धारी[8] ॥
अधर अधर सों भीजु तँबोरे[9]। अलकाउरि[10] मुरिगइ मुख मोरे ॥
रायमुनी[11] तुम औ रतमुहीं[12]। अलि मुख लागि भई चुहचुहीं[13] ॥
जस सिंगारहार सो मिलीं। मालति जैस सुंदर होइ खिलीं ॥
पुनि सिँगार रसकरा निवारी। कदम सेवती पियहि पियारी ॥

दो०—कुंदकरी अस बिकसीं, रितु बसंत औ फाग।
फूलहु फरहु सदा मुख, औ सुख सुफल सोहाग ॥३६९॥

चौपाई

कहि यह बात सखी उठि धाईं। चंपावत कहँ जाय सुनाईं ॥
आजु बिरँग[14] पदमावति बारी। जीवन जानौ पवन अधारी ॥
तरकि तरकि गा चंदन चोला। धरकि धरकि उर उठै न बोला ॥
अही[15] जो कँवलकरी रस पूरी। चूर चूर होइ गईं सो चूरी ॥

---

१ लाडू=लड्डू। २ अगमन=सबसे पहिले। ३ चाड=उत्साह, चाव। ४ बिचहुत=बीच में। ५ थतिहारि=थतिहारी, जिसके यहां थाती रक्खी जाय। ६ अन=निश्चय। ७ उछरीं=उभड़ आई हैं। ८ धारी=रेखा। ९ तँबोर=पान। १० अलकाउरि=अलकावली। ११ रायमुनी=रायमुनैयां नामक पक्षी जिसकी चोंच लाल होती है। १२ रतमुहीं=लाल मुख वाली। १३ चुहचुहीं=मैले रंग का एक पक्षी विशेष जो बड़े तड़के चुहँ चुहँ शब्द बोलता है। १४ बिरंग=बेरंग। १५ अही=थी।

देखौ जाय जैस कुम्हिलानी। सुनि सोहाग रानी बिहंसानी॥
लै सँग सबै पद्मिनी नारी। आई जहँ पदुमावति बारी॥
आय रूप सबहीं जो देखा। सोनबरन[1] होइ रही सो रेखा॥

दो०—कुसुम फूल जस मरदी, बिरँग देखि सब अंग।
चंपावत भइ वारीं[2], चूमि केस औ मंग॥३७०॥

चौपाई

सब रनिवास बैठ चहुँ पासा। ससिमंडल जनु बैठ अकासा॥
बोलीं सबै बारि कुम्हिलानी। करहु सिँगार देहु खँड़वानी[3]॥
कँवलकरी कोँवर रँग भीनी। अति सुकुवारि लंक कै खींनी॥
चाँद जैस धन हुत परगासी। सहस करा होइ सूर गरासी॥
तेहि की झार गहन अस गही। भइ बिरंग मुख जोति न रही॥
दरब वारि कछु पुन्य करेहू। और लै बार भिखारिन देहू॥
भरि कै थार नखत गज मोती। वारन कीन्ह चांद की जोती॥

दो०—कीन्ह अरग जा मरदन, और सुख दीन्ह अन्हानु।
पुनि भई चांद जो चौदजि, रूप गयी छिपि भानु॥३७१॥

चौपाई

पटवहि[4] आनि चीर सब छोरे। सारी कंचुकि लहर[5] पटोरे॥
सुरंग चीर भल सिंघल दीपी। कीन्ह जो छापा धनि वह छीपी[6]॥
फँदिया[7] और कंसिया[8] राती। छायल[9] पिँडवाही गुजराती॥
पेमचँदुरियां[10] औ बेंदुरीं[11]। स्याम सेत पीरी औ हरीं॥
सात रंग सों चित्र चितेरीं। भरि कै दिष्टि जायँ नहिँ हेरी॥

---

१ सोनबरन=पीली। २ भइ वारी=बलिहारी गई, कुरबान हुई। ३ खँड़वानी=शरबत। ४ पटवहिं=वस्त्र पहनाने वाली दासी (पटवाहिनी)। ५ लहर पटोर=लहरियादार रेशमी वस्त्र। ६ छीपी=कपड़ा छापने वाला। ७ कँसिया=एक प्रकार की चोली। ९ छायल=छाया हुआ। १० पेम चँदुरियां=एक प्रकार की टिकुली। ११ बेंदुरी=बेंदुली, टिकुली।

चिकुवा[1] चीर मेघोना[2] लोने। मोति लाग औ छापे सोने॥
चँदनौता जो खिरोदक भारी। बांसपूर झिलमिल कै सारी॥
दो०—पुनि अभरन बहु काढ़ा, आनै[3] भाँति जराव।
फेरि फेरि सब पहिरै, जैस जैस मन भाव।३७२॥

चउपाई

रतनसेन गये अपनी सभा। बैठे पाट जहाँ अठखँभा॥
आय मिले चितउर के साथी। सबै बिहँसि कै दीन्हेनि हाथी[4]॥
राजा कर भल मानहु भाई। जेइँ हमका यह पुहुमि दिखाई॥
जो हम कहँ आनत न नरेसू। तौ हम कहां कहां यह देसू॥
धनि राजा तुइँ राज बिसेखा। जेहि की राज सो यह सब देखा॥
भोग बिरास सबै कुछ पावा। कहां जीभ तस अस्तुति आवा॥
अब तुम आय अँतरपट[5] साजा। दरसन कहँ न तपावहु[6] राजा॥
दो०—नैन सिरान भूख गइ, देखि दरस तुम्ह आज।
नव औतार आजु भा, औ सब भे नव काज॥३७३॥

चौपाई

हँसि के राज रजायसु दीन्हा। मैं दरसन कारन तप कीन्हा॥
अपने लागि जोग अस खेला। गुरु भा आप कीन्ह तुम चेला॥
यहि के मोर पुरुखारथ देखेहु। गुरू चीन्ह कै जोग बिसेखेहु॥
जो तुम तप साधा मोहि लागी। अब जिन हिये होहु बैरागी॥
जो जेहि लागि सहै तप जोगू। सो तेहि के सँग मानै भोगू॥
सोरह सहस पद्मिनी मांगी। सबहिँ दीन्ह नहिँ काहुइ खाँगी॥
सब कै धौरहर सोने साजा। सब अपने अपने घर राजा॥
दो०—हस्ति घोर औ कापर, सबहिँ दीन्ह बड़ साज।
भे गृहस्थ सब लखपति, घर घर मानहु राज।३७४॥

---

१ चिकुआ=चीटक नामक रेशमी कपड़ा। २ मेघौना='मेघवर्णा' नामक रेशमी कपड़ा। ३ आनौं भांति=अन्य प्रकार का। ४ हाथी देना=हाथ मिलान। ५ अंतरपट=परदा। ६ तताना=तरसाना, तकलीफ देना।

चौपाई

पदुमावति सब सखी बोलाइ । चीर पटोर[1] हार पहिराईं ॥
सीस सबन के सेंदुर पूरा । सीसपूरि सब अँग सिँदूरा ॥
चंदन अगर चित्र सम भरीं । नये चार[2] जानहु औतरीं ॥
जानु कँवल सँग फूलीं कुईं । औ सो चांद सँग तरईं उईं ॥
धनि पदमावत धनि तोर नाहू । जेहि पहिरत पहिरा सब काहू ॥
बारा अभरन सोर[3] सिँगारा । तोहिँ सोहैसिपिय मसियारा[4] ॥
ससि सो कलंकी रहुहि पूजा । तू निकलंक न कोऊ सरि दूजा ॥

दो०—काहू बीन गहा कर, काहू नाद मृदंग ।
सबदिन अनँद बधावा, रहस कूद एक संग ॥३७५॥

चौपाई

पदुमावति कह सुनौ सहेली । हौं सा कँवल तुम कुमुद नवेली ॥
कलस मानि हौं तेहि दिन आई । पूजा चलौ चढ़ावहिँ जाई ॥
मँझ पदुमावति का जो बिमानू । जनु परभात उठा रथ भानू ॥
आस पास चमकत चौंडोला[5] । दंद[6] मृदंग झांझ डफ ढोला ॥
एक संग सब सोंधे भरी । देव दुवार उतरि भईं खरी ॥
स्वयं सुहाथ देव अन्हवावा । कलस सहस एक घिरित[7] भरावा ॥
पोता मँडप अगर औ चंदन । देव भरा अरगज औ बंदन[8] ॥

दो०—कै प्रनाम आगे भइ, बिनति कीन्ह बहु भाँति ॥
रानी कहा चलौ घर, सखी होति है राति ॥३७६॥

चौपाई

भइनिसि धनजससससिपरगसी[9] । राजैं देखि[10] पुहुमि पर बसी ॥
भइ कटकई[11] सरद ससि उआ । फेरि गगन रवि चहै छुआ ॥

---

१ पटोर = (पाटम्बर) रेशमी कपड़े । २ नये चार = नवीन तौर से । ३ सोर = सोलह । ४ मसियारा = मशाल । ५ चौंडोला = एक प्रकार की पाल की विशेष । ६ दंद = एक बाजा विशेष । ७ घिरित = घृत, घी । ८ बन्दन = रोली, सिन्दूर । ९ परगसी = प्रकाशित हुई । १० देखि = राजा को देख कर भूमि पर बस गई । ११ भइ कटकई······छुआ। = पदमावती को पुनः साज-

सुनि धन भौंह धनुषगुन[1] फेरी। काम कटाच्छ कोर सों हेरी॥
जानहु नहीं पैज[2] पिय खाँचौं। पिता सपथहौं आजु न बाँचौं[3]॥
कालिह न होय सहे सर रामा। आजु करौं रावन सँगरामा॥
सैन सिँगार महूँ है सजा। गज गुन[4] चाल अँचल गुन धजा॥
नैन समंद[5] खरग नासिका। सरमुख[6] जूझि को मो सों टिका॥
दो०—हौं रानी पदुमावति, मैं जीता सुख भोग।
तू सरवरि करु तासों, जो जोगी तोहि जोग॥३७७॥

चौपाई

हौं जस जोगि जान सब कोऊ। बीर सिंगार जिते मैं दोऊ॥
उहाँ तौ हनू बीर घट माहाँ। इहँ तौ काम कटक तुम पाहाँ॥
उहाँ तौ हय चढ़ि कै मवि मँडौं। इहाँ तो अधर अमीरस खंडौं॥
उहाँ तो कोपि नरिंदहिँ मारौं। इहाँ तो बिरह तुम्हार सँघारौं॥
उहाँ तो गज पेलौं होइ केहरि। इहाँ तो कुन्च कामिनि करि हेहरि[7]॥
उहाँ तो लूटौं कटक खँधारू। इहाँ तो जितौं तुम्हार सिँगारू॥
उहाँ तो कुँभी[8] गजहि नवाऊँ। इहाँ तो कुच कलसन कर लाऊँ॥
दो०—परा बीच धरहरिया[9], पेमराज कै टेक।
मानहु भोग छहौं रितु, मिलि दोनों होइ एक॥३७८॥

सामान से तैयार देख कर राजा कहता है) शरद के चन्द्रमा ने उदय होकर चढ़ाई की है, पुनः आसमान पर चढ़ कर सूर्य को छूना चाहता है। व्यंग से संकेत यह है कि आज पुनः रंग महल की अटारी पर रति संग्राम की तैयारी हुई। कटकई होना = चढ़ाई की तैयारी होना। १ धनुष गुन = धनुष की भां । २ पैज खांचना = प्रतिज्ञा करना। ३ न बांचौं = न छोड़ूंगी, रति समर में पराजित करूंगी। ४ गुन = तरह, भांति। ५ समन्द घोड़ा। ६ सरमुख = (सन्मुख) सामने। ७ हेहार = हहर जाय। ८ कुम्भी गज = कुंभ वाला हाथी। ९ धरहरिया = बीच बचाव करने वाला, प्रेमरूपी राजा ने दोनों का बीच बचाव हठ कर के किया (और यह उपदेश दिया कि)।

३३—तैंतीसवाँ खण्ड

षट ऋतु वर्णन

चौपाई

प्रथम बसंत नवल ऋतु आई। सो ऋतु चैत बैसाख सोहाई॥
चंदन चीर पहिरि धन अंगा। सेंदुर दीन्ह बिहँसि भर मंगा॥
कुसुम हार औ परिमल बासू। मलयागिरि[1] छिरका कयलासू॥
सौर[2] सुपेती फूलन डासी। धन औ कंत मिले सुख बासी॥
पिउ सँजोग धन जोबन बारी। भँवर पुहुप मिलि करैं धमारी[3]॥
होय फाग भल चाँचरि[4] जोरी। बिरह जराय दीन्ह जस होरी॥
धन ससि सियर[5] तपै पिउ सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू॥

दो०—जेहि घर कन्ता रितु भली, आव बसंता निच्त।
सुख बहरावैं दिवस निसि, दुःख न जानैं चित्त॥३७६॥

चोपाई

ऋतु ग्रीषम कै तपनि न तहां। जेठ असाढ़ कन्त घर जहां॥
पहिरैं सुरङ्ग चीर धन झीना। परिमल मेद रहै तन भीना॥
पदमावत तन सीर सुबासा। नैहर राज कन्त पुनि पासा॥
औ बड़ जूड़ तहां सोउनारा[6]। अगर पोत सुखनेत[7] ओहारा[8]॥
सेत बिछावन सौर सुपेती। भोग बिरास करहिं सुख सेती॥
अधर तँबोर कपूर भिमसेना। जंदन चरचि लाव तन वेना[9]॥
भा अनंद सिंघल सब कहूँ। भागवन्त कहँ सुख रितु छहूँ॥

---

१ मलयागिरि=चन्दन। २ सौर=चादर। ३ धमार=फाग। ४ चांचरि=होली के स्वांग। ५ सियर=ठंढी। ६ सोउनार=सोने का घर। ७ सुखनेत=सुखद। ८ ओहार=परदे। ९ बेना=खस का पंखा।

दो०—दारयों दाख लेहिं रस, बरसहिं आँव छोहार।
हरियर तन सुवटा[1] कर, जो अस चाखनहार ॥३८०॥

चौपाई

ऋतु पावस बरसै पिय पावा। सावन भादौं अधिक सोहावा ॥
कोकिल बैन पाँति बक छूटी। धन निसरी जनु बीर बहूटी ॥
चमक बीजु बरसै जल सोना। दादुर मोर सबद सुठि लोना ॥
रँग राती पिउ सँग निसि जागी। गरजै गगन चौंकि कँठ लागी ॥
सीतल बून्द ऊँच चौबारा[2]। हरियर सब दीखै संसारा ॥
सियर[3] समीर बास सुख बासी। कामिनि फूलि सेज भल दासी ॥
हरियर पुहुमी धानी चोला। औधन पिउ सँग रचा हिंडोला ॥

दो०—पवन झकोरे हिय हरष, लागै सियर बतास[4]।
धन जानै यह पवन है, पवन सो अपनी आस ॥३८१॥

चौपाई

आई सरद ऋतु अधिक पियारी। आसिन[5] कातिक ऋतु उजियारी ॥
पदमावत भइ पूनो कला। चौदसि चाँद उआ सिंहला ॥
सोरह कला सिंगार बनावा। नखत भरा सूरज ससि पावा ॥
भा निरमल सब धरति अकासू। सेज सँवारि कीन्ह फुल बासू ॥
सेत बिछावन औ उजियारी। हँसि हँसि मिलैं पुरुष औ नारी ॥
सोने[6] फूल पिरथमी फूली। पिय धन सों धन पिउ सों भूली ॥
चख अञ्जन दै खँजन दिखावा। होइ सारस जोरी रस पावा ॥

दो०—यहि ऋतु कंथा पास जेहिं, सुख तिनके मन माहिं।
धन हँसि लागै पिउ गरे, धन गर पिउ कै बाहिं ॥३८२॥

---

१ सुवटा=सुग्गा, शुक। २ चौबारा=चार द्वार का बँगला। ३ सियर=ठंढा। ४ बतास=हवा। ५ आसिन=कुंवार मास। ६ सोने फूल फूलना=धन और सुख से सम्पन्न होना।

चौपाई

आई सिसिर ऋतु तहाँ न सीऊ[1] । अगहन पूस जहाँ घर पोऊ ॥
धन औ पिउ महँ सीउ सोहागा । दुहूँ अंग एकै मिलि लागा ॥
मन सो मन तन सों तन गहा । हिये सों हिय बिच हार न रहा ॥
जानहु चंदन लाग्यो अंगा । चंदन रहे न पावै सङ्गा ॥
भोग करहिँ सुख राजा रानी । उन्ह लेखे सब सृष्टि जुड़ानी ॥
जूझ दुहूँ जोबन सों लागा । बीच ते सीव जीव लै भागा ॥
दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं । ऐस मिलहिँ तबहुं न अघाहीं ॥

दो०—हंसा केलि करहिँ ज्यौं, कूदहिँ कुरलहिँ दोउ ।
सीठ पुकारै पार भा, जस चकवाक बिछोउ ॥ ३८३ ॥

चौपाई

ऋतु हिवंत सँग पियो पियाला । फागुन माघ सिंह सिउ स्याला[2] ॥
सौर[3] सुपेती महँ दिन राती । दगल[4] चीर पहिरहिँ बहु भाँती ॥
घर घर सिंहल होइ सुख भोजू । रहा न कतहुँ दुःख कर खोजू ॥
जहँ धन पुरुष सीव नहिँ लागा । जानहु काग देखि सर भागा ॥
जाइ इन्द्र सों कीन्ह पुकारा । हैां पदुमावति देस निसारा ॥
यहि रितु सदा संग मैं सोवा । अब दरसन ते मोहिँ बिछोवा ॥
अब हँसि क ससि सूरहि भेंटा । अहा जो सीव बीच सो मेटा ॥

दो०—भयौ इन्द्र कर आयसु, उवै सो अथवै आइ ।
नागमती गढ़ चितउर, ताहि सतावौ जाइ ॥ ३८४ ॥

---

१ सीउ=शीत, जाड़ा । २ स्याला=शृगाल, सियार । ३ सौर=लिहाफ । (बुन्देलखंड में 'सौर' बोलते) । ४ दगल=रुईदार ।

पद्मावत

(पूर्वार्द्ध का)

शब्दकोश

(अ)

अँगवाना = अंगपर सहना।

अँजोर = उंजियाला।

अँटना = (१) समाना।
(२) कर सकना।

अंत = (१) छोर, इति।
(२) अन्यत्र।

अंतरपट = परदा, अँतरौटा।

अंतरिख = अंतरिक्ष, आकाश।

अँदोरू = आन्दोलन।

अंबराउ = अमराई, आम्र बाग।

अंस = (ईश्वरांश) भाग्यवान।

अउरना = विचार में आना।

अउसान = होश हवास, धैर्य।

अकाज = (१) हानि (२) व्यर्थ।

अकासी = चील्ह पक्षी।

अकूत = (१) बेअन्दाज, अतुल।
(२) अकस्मात।

अगमन = (१) आगे ही, पहले ही।
(२) भविष्य।

अगाह = अथाह।

अगाह होना = खबर हो जाना।

अच्छर = अप्सरा।

अछत = छत्रहीन, राज्यच्युत।

अजि = (आज्य) घी।

अडार = समूह, ढेर।

अत्र = अस्त्र।

अथवना = अस्त होना।

अदल = न्याय, इन्साफ।

अदेस = प्रणाम, असीस।

अधियान = सुमिरनी।

अन = (१) (अनु) तदनंतर, इसके बाद, तत्पश्चात् (२) निश्चय।

अनभाव = बुरा विचार।

अनवट = अनौटा, पैर के अंगूठे का आभूषण।

अनाना = मंगवाना।

अनेग = अनेक, बहुत से।

अपछर = अप्सरा।

अपसना = जाना, चला जाना, पहुंचना

अपूर = (अपूर्ण) बहुत अधिक ।
अबरन (१) रंग रहित ।
(२) अवरार्य ।
अबास = रहने का स्थान ।
अबिरथा = व्यर्थ, बेफायदा ।
अभाऊ = जो न भावै ।
अभोग = अभुक्त, अछूता ।
अमाना = आम के टकोरा ।
अरंभ = बेग ।
अरकाना = मंत्री, मुसाहेब ।
अरगला = बेंड़ा, रोक ।
अरघान = (आघ्राण) सुगंध ।
अलोपजाना = छिपजाना ।
अवगाह = अथाह ।
अवधान = गर्भ, हमल ।
अवधारना = आरंभ करना ।
अवधूत = साधू, फकीर ।
असाई = (अशास्त्री) शास्त्र की प्रथा से अनभिज्ञ, नादान ।
असूझ = (१) अंधेरा ।
(२) बहुत अधिक ।
अस्वपतिक = घोड़ सवार, शहसवार ।
अस्वासा = आश्वासन, दिलासा ।
अहा = था ।
अहान = (आख्यान) प्रख्याति, कहावत, कहनूत, प्रसिद्ध, शोहरत ।
अहिवात = (आधिपत्य) सोहाग ।
अहुँठ = साढ़े तीन (३॥) ।
अहेर = शिकार ।

(आ)

आंकर = कड़ा, गहरा ।
आंटना = (अंटना) काफ़ी होना ।
आऊ = आयु, उम्र ।
आखना = (१) कहना ।
(२) चलनी में चालना ।
आगर = (१) सुन्दर ।
(२) बढ़कर ।
आछत = मौजूद रहते हुए ।
आछना = होना ।
आछर = अप्सरा ।
आतमभूत = (१) कामदेव ।
(२) कामना, वासना ।
आथी = (अस्ति) नित्यवस्तु ।
आदिल = न्यायवान ।
आदेश = प्रणाम ।
आन = दोहाई, मनादी ।
आनना = लाना (आनयन) ।
आयत = क़ोरान का एक मंत्र ।
आरन = (अरण्य) बन, जंगल ।
आसरम = आश्रय, आशा ।
आसामुखी = आशायुक्त ।
आसिन = कुंवारमास ।

(इ)

इंदु = (१) चंद्रमा । (२) इंद्र ।
इसकंदर = सिकंदर नामक बादशाह ।

(उ)

उंदुर = चूहा, मूसा ।
उछरना = उमड़ आना ।

उघेलना = उघारना, खोलना ।
उतंत = (उत + तंत्र) जो किसी के दबाव में न रह सके अर्थात् नव जवान, उमंग युक्त ।
उतपात = उपद्रव ।
उतायल = शीघ्र, बेग से ।
उथला = कम गहरा ।
उनवना = घुमड़ कर झुक आना ।
उपराजना = (उपार्जन) पैदा करना ।
उपसवां = आस पास, इर्द गिर्द ।
उपाना = पैदा करना, उपजाना ।
उबटना = ठोकर खाना (चलने में) झपटा लगना ।
उबेहे = उभड़े हुए ।
उरेहना = चित्र लिखना ।
उरेहा = चित्र, तसवीर ।
उलथना = उलट पलट करना ।

(ऊ)

ऊभ = विद्रोह ।
ऊभना = उभड़ना ।

(ए)

एत = इतना ।

(ओ)

ओछ = नीच, कमज़ोर ।
ओझा = (उपाध्याय) तांत्रिक, भूतप्रेत झाड़ने वाला ।
ओती = उतनी
ओधना = (किसी काम में) लगजाना, मशगूल हो जाना ।
ओनवना = घुमड़ कर घिर आना ।
ओनाना = सुनना ।
ओहट = ओट ।
ओहटे = दूर, ओट में ।

(औ)

औभाऊ = अवभाव, बुरा भाव ।

(क)

कंट = (कंटक) डंक बिच्छू का ।
कंठसिरी = कंठी (रत्नों की) ।
कंथा = गुदड़ी ।
कंसियां = एक प्रकार की चोली ।
कचपची = कृत्तिका नक्षत्र के तारों का समूह ।
कचोर = छोटी कटोरी ।
कटकई होना = चढ़ाई की तैयारी होना
कदरमस = मारकट, घमासान युद्ध ।
कनक पँखुरी = पीला कमल ।
कनहार = (कर्णधार) केवट, नाव खेने वाला ।
कबि = (काव्य) कविता ।
कयलास = स्वर्ग, अति उच्च स्थान ।
कया = (काया) शरीर ।
करवँट = तकिया ।
करा = सामग्री ।
करना = (१) करनी, (२) नींबू की सुगंध का एक फूल ।

करपल्लव = हथेली।
करवत = आरा।
करबरना = कलरव करना, मनोहर शब्द करना।
करसी = सूखा कंडा, गोहरा।
करा = कला।
करिया = कर्णधार, मल्लाह, केवट।
करी = (१) अँगूठी। (२) कली।
कल = आराम, चैन।
कलपना = काटना।
कसनी = चोली, अँगिया।
कसौंदा = (१) कासमर्द नामक पौधा (२) आंवला।
कसौटी = सुरमा की रेख।
कांठा = (१) कंठा, ग्रीव भूषण। (२) किनारा, तट।
कांदों = (कर्दम) कीचड़।
कांधना = कंदेपरलेना,स्वीकारकरना।
काछू = कछुआ।
काठ = कठपुतली।
कान्ह = (कर्ण) पतवार (नाव का)।
कापर = कपड़ं।
कालकंट = कष्ट, कष्टप्रद वस्तु।
किंगरी = (किन्नरी) छोटी सारंगी।
कित = कहां।
कियाह = वह घोड़ा जिसका रंग ताड़ के पके फल के समान हो।
किरीरा = क्रीड़ा, खेल।
कुँई = कुमोदनी।
कुंवना = कुआं।
कुंकुंह = (१) रोरी, रोचना। (२) कुर्कुम, केसर।
कुरंग = हरिण, मृग।
कुरकुटा = टुकड़ा।
कुररी = टिटि्टभी, टिटिहरी।
कुरलना = क्रीड़ासमयमधुरशब्दकरन
कुराहर = कोलाहल।
कुरुवार करना = पंखों को चोंच से ठीक करना, पंख फड़फड़ाना।
कुसुमाना = मुकुलित होना, फूलना।
कुंदेरा = खराद करने वाला।
कूद = खराद।
कूँदना = खराद पर चढ़ाना।
कूजा = एक प्रकार का गुलाब।
कूट = (१) एक कड़ुई औषध। (२) व्यंग युक्त हंसी।
केवांच = बंदर ल की फलियां। (कपिकच्छुनाम्नी बेलि की फलियां)
केत = (१) केतकी। (२) कितना, बहुत सा।
केवा = कमल का फूल।
कैलास = इन्द्र लोक, स्वर्ग।
कोईं = कुमुदिनी।
कोंच = क्रौंच पक्षी।
कोंरी = कोमल।
कोकाह = सफेद रंग का घोड़ा।
कोरा = गोद।

(ख)

खँड़रा = राजैं।

खँडपानी = (खांड़ पानी) शरबत।

खजहजा = (खाद्यादि) अनेक प्रकार के मेवा वा खाद्य पदार्थ।

खताब = हजरत उमर के पिता।

खरिहान = ढेर, खलियान।

खसना = गिर पड़ना।

खांड़ = शक्कर चीनी।

खाजी = खाद्य, ख़ुराक, भोजन।

खाधू = (खाद्य) भक्ष्य, ख़ुराक।

खिखिंड = (किष्किन्ध) बीहड़ बन।

खिरौरी – (१) लड्डू। (२) खैरोटी खैर की गोली जिसमें सुगन्ध मिली हो।

खीर = (क्षीर) दूध।

खीहना = खीझना।

खुंभी = कान का आभूषण विशेष।

खुटिल = कान का आभूषण विशेष।

खुरी = (खुँदी) घोड़े की एक चाल।

खुरुक = खटका।

खूँट = (१) छोर। (२) दिशा, ओर।

खेम = क्षेम।

खेलना = चलना, जाना।

खेरौरा = लड्डू।

खेवक = खेने वाला।

खेवरा = जैनी साधु विशेष।

खेह = धूल, छार।

खांचा = कंपों का गुच्छा।

खोज = पैर का चिन्ह जो धूल व कीचड़ में बन जाता है।

खोटिला = कर्णाभूषण विशेष।

खोपा = खोपवा, जूड़ा।

खोरा = कटोरा।

खोरी = कटोरी।

(ग)

गजपेल = हाथियों का आक्रमण।

गड़रु = एक पक्षी जो 'तुही तुही' शब्द बोलता है।

गड़ौना = गड़ौता पान।

गथ = धन, पूंजी।

गय = गज, हाथी।

गरर = गर्रे रंग का घोड़ा।

गरियार = वह बैल जो चलते समय बैठ बैठ जाय।

गलसुई = गल तकिया, गालों के नीचे रखने के तकिये।

गरेरना = चारों ओर से घेरना, चारों ओर घूमना।

गवेंजा = बातचीत, शोर गुल।

गहबर = गद्‌गद हृदय।

गहर = देर।

गाढ़ = (१) संकट, विपत्ति।
(२) तंग, संकुचित।
(३) गड्ढा।

गारना = निचोड़ना ।

गारुरू = गारुड़ी, सर्प विष चिकित्सक ।

गारूर = गरुड़ पक्षी ।

गिलावा = गारा (फा० गिल + आब)

गीव = ग्रीव, गला ।

गुन = (१) वास्ते, लिये ।
(२) बजाय ।

गुरीरा = मीठा (प्रेम) ।

गेंडुवा = तकिया ।

गेरा = चौगिर्द ।

गोझा = पिराक, कोसिली ।

गोटा = गोला ।

गोटिका = गुटिका, गोली ।

गोटका = गुटिका गोली ।

गोपोता = (१) गोपी ।
(२) सुरक्षिता ।

गोसांई = (१) मालिक ।
(२) परमेश्वर ।

गोहन = साथ

गौरी = (१) एक राग विशेष ।
(२) गौड़ ब्राह्मणों की स्त्रियां ।
(३) सफ़ेद मल्लिका लता ।

(घ)

घट = शरीर ।

घरी = (१) शुभ मुहूर्त ।
(२) घरिया (सोना पिघलाने की)

घाल = घेलौना, घलुआ ।

घाल न गिनना = कुछ भी न समझना ।

घिरिन परेवा = गिरह बाज कबूतर ।

घरना = (१) कबूतर की भांति बोलना (२) गलना ।

(च)

चक्कवै = चक्रवर्ती ।

चक्र धँधारी = गोरखधंधे का चक्र ।

चखु = नेत्र ।

चतुरदशा = चौदह ।

चरचना = अनुमान कर लेना ।

चरहँटा = घमसान युद्ध ।

चांचरि = फाग के स्वांग ।

चांड़ = अधिक ।

चाल = यात्रा की साइत ।

चालनहार = चलौवा, ले जाने वाला ।

चालना = कहना ।

चाह = (१) खबर समाचार ।
(२) इच्छा ।

चाहना = देखना ।

चाहि = बढ़कर ।

चिकुवा = चीकट नामक रेशमी कपड़ा ।

चिनगी = चिनगारी ।

चियाना = चुप हो जाना ।

चिरकुट = टुकड़ा, फटा पुराना कपड़ा

चिरहँटा = पक्षी पकड़नेवाला बहेलिया

चिरिहार = चिड़ीमार, बहेलिया ।

चीना = चीनिया कपूर ।

चुहचुही = एक पक्षी विशेष जो बड़े प्रातःकाल 'चुह चुह' शब्द करता है ।

चूरा = कड़ा ।
चेटक = (१) जादू ।
(२) चालाकी ।
चाल = कुरता ।
चौंडोल = (चंडुल) पालकी ।
चौक = (१) चार वस्तु का समूह ।
(२) आगे वाले चारो दांत ।
चौबारा = चार द्वार का बँगला, चौपार, बैठक ।
चौमुख = (१) चारो ओर ।
(२) चार मुखका ।

(छ)

छंद = धोखा ।
छत्र = छत्रधारी, राजा ।
छपा = (१) छिपा हुआ ।
(२) रात्रि ।
छरना = (१) छिन्न भिन्न हो जाना ।
(२) छलना ।
छात = छत्राकार कोई वस्तु ।
छाजना = (१) शोभा देना ।
(२) उचित जँचना ।
छावा = बच्चा ।
छायल = गुदड़ा ।
छीज = हानि, नुकसान ।
छीपिनि = छीपी की स्त्री ।

(ज)

जत = जितना ।
जनम = जीवनकाल ।
जपा = जप करनेवाला ।
जमकात = जमदंड, जम राज का अस्त्र ।
जमबार = (यमद्वार) (१) मृत्यु ।
(२) यमपुर ।
जलसुत = मोती ।
जांवत = (यावत) सब ।
जातरा = (यात्रा) दर्शन पूजनादि ।
जार = जाल ।
जियाउर = जी, मन, चित ।
जीना = (संज्ञा) जीवन ।
जुलक़रन = (१) जिसकी कुंडली में दो उच्च ग्रह हों, भाग्यवान ।
(२) जिसने २० वर्ष राज्य किया हो ।
जूड़ = ठंढा, शीतल ।
जेंवन = भोजन ।
जेत = जितना ।
जोहनहार = मुंह जोहनेवाला, सेवक ।
जोहारना = प्रणाम करना ।

(झ)

झंख = दुःख ।
झरक = झलक ।
झाल = बड़ा टोकरा जिसमें पूड़ी पकवान रखते हैं ।
झोंपा = गुच्छा, फुंदना ।

(ट)

टाड़ = बहुटा, बाहुभूषण ।
टेकना = सहारा देना ।

(ठ)

ठाठर = ठाठबाट ।

ठाहर = स्थान ।

ठेघा = पहाड़, टीला ।

ठोर = चोंच ।

(ड)

डग = फाल, कदम, पैग ।

डफार छांड़ना = फूटफूट कर रोना ।

डयन } डैना, बाजू (पक्षी के)
डहन }

डांक = डंका ।

डांड़ = (१) डंडा, चोब ।
(२) सीगा, हद्द ।

डाभ = दाग काला चिन्ह ।

डार = शाखा ।

डिढ़ = दृढ़, मज़बूत ।

डेली = डलिया, टोकरी, झांपी ।

(ढ)

ढांख } = पलास वृक्ष ।
ढाख }

ढुकना = ताक लगाना ।

(त)

तंत = (१) ठीक बराबर, न कम न ज़्यादा । (२) तांत । (३) पूर्ण ।

तंतु = तांत, रोदा, तार ।

तँबोल = पान ।

ततखन = तत्क्षण, फौरन ।

तनु = तनिक, थोड़ा सा ।

तप = तपस्वी, तप करनेवाला ।

तमचुर = (ताम्रचूड़) मुर्गा ।

तयना = तपना ।

तरबोर = (तलबोर) गहराई की तह ।

तरुनापा = जवानी, युवावस्था ।

तलफना = खौलना ।

तहियै = तभी, उसी समय ।

तार = ताड़ वृक्ष ।

तारामंडल = एक प्रकार का कपड़ा जिसमें सोने की कलाबत्तू की बूटियां होती हैं ।

तारी = ताली, कुंजी ।

तालिका = कुंजी ।

तुखार = सफ़ेद घोड़ा ।

तुरी = घोड़ा ।

तुलाना = निकट पहुंचाना ।

तुषार = (१) सफ़ेद रंग का घोड़ा ।
(२) पाला, बर्फ़ ।

तूर = तुरही ।

(थ)

थतिहार = थाती रखने वाला, जिसके यहां थाती रक्खी जाय ।

थिर मारना = स्थिर होना ।

(द)

दंद = सोच, फ़िक्र, संदेह ।

दंद = एक प्रकार का बाजा ।

दई = ईश्वर ।

दगल = रुईदार कपड़ा ।

दगला = लबादा, लंबा जामा ।
दत्त = दान ।
दमन = दमयन्ती (रानी)
दयेता = दैत्य ।
दर = (१) दल, सेना, फौज ।
(२) द्वार, दरवाज़ा ।
दसौं अवस्था = मरण ।
दसौंधी = भाट ।
दस्तगीर = सहायक ।
दहुँ = धौं, न जाने ।
दातार = दानी ।
दादुर = मेढ़क ।
दारुन = कठिन ।
दिन = शुभ मुहूर्त ।
दिनअर = (दिनकर) सूर्य ।
दिपना = चमकना ।
दिव्य = अति सुन्दर ।
दियारा = दीपक समान उज्ज्वल ।
दिसंतर = देशान्तर ।
दीन = मत, सम्प्रदाय ।
दुइज = द्वितिया का चन्द्रमा ।
दुनियाई = संसार, दुनिया ।
दुहेला = दुःख, दुखदाई ।
दूम = अधिकता ।
दूमन = (दोन + मन) दुबिधा ।
दोहाग = (दौर्भाग्य) दुर्भाग्य ।

(ध)

धंधा = काम काज ।
धँओर = धंधर, लपट, ज्वाला ।
धन, धनि, धनिया } (धन्या) सुन्दर स्त्री, स्त्री ।
धमार = वह खेल जिसमें बहुत कुछ उछल कूद और हल्ला होता है ।
धमारि = फाग का गान ।
धरहरिया = बीच बचाव करने वाला ।
धात कमाना = कीमिया बनाना ।
धानुक = धनुष धारी ।
धोती = धोया हुआ वस्त्र ।

(न)

नग = रत्न, (संज्ञा) ।
नग = (विशेषण) सर्वोत्तम ।
नर = नरसल ।
नाउत = तांत्रिक, झाड़ फूंक कर्ता ।
नाका = तंग द्वार, निकास ।
नाठना = नष्ट करना ।
नाथ = (१) जोगी, साधू ।
(२) मालिक ।
(३) पति, खसम.
(४) नाक में पहनाई रस्सी नकेल ।
(५) नथ, नासा भूषण ।
नित = नित्य ।
निंबकौरी = नीम के फल ।
निआन = (निदान) अंत में ।
निकाज = बेकाम का, खराब ।
निछत्र = रंक, धनहीन ?
निजु = निश्चय पूर्वक, निःसंदेह

निजुकै = निश्चय करके ।

निनारा = अलग, न्यारा ।

निबुधी = निर्बुद्धि ।

निमत = जो मता न हो, मद रहित ।

निरमर = निर्मल ।

निरारे = न्यारे, अलग ।

निभरोसी = (निर्बलीयसी) निर्बल ।

निरापन = (अपना नहीं) पराया ।

निसंसइ = निःशंसय ।

निसरना = निकलना ।

निसांस = (१) निःश्वास ।
(२) निःसंशय ।

निसिअर = (निशाकर) चंद्रमा ।

नेगी = (नेग लेने वाले) पौनी, नौकर चाकर ।

नेगे लगना = अच्छे काम में लगना, काम में आना ।

नैहर = मायका, मातृ गृह ।

नौती = एक प्रकार का पान ।

नौशेरवां = फ़ारिस देश का एक प्रसिद्ध राजा ।

(प)

पँखुरी = पुष्पदल, पँखुड़ी फूलकी ।

पडुक = पेंड़की, फ़ाखता ।

पँवारी = टेढ़ी ।

पखाल = बैल की खाल की मशक ।

पटबाहिन = कपड़ा पहनाने वाली दासी ।

पटोर = रेशमी कपड़ा ।

पतार = पाताल ।

पथिक = मुसाफ़िर, यात्री, बटोही ।

पदारथ = रत्न ।

पदुम = हीरा ।

पनवारी = होठों पर पान की लाली की धड़ी ।

परजापति = राजा ।

परबता = सुग्गा ।

परलौ = प्रलय, विनाश ।

परवान = (प्रमाण) सत्य, निश्चित ।

परहेली = निरादृत, अपमानित ।

परगन = परजन, नौकर चाकर ।

परिहसु = खिसी, दुःख, खेद ।

परेवा = कबूतर ।

पलुहना = पल्लवित होना, द्रवित होना, पुनः सतेज होना ।

पवन = जोर, बल, शक्ति ।

पवारना = फेंकना ।

पासार = तैयार ।

पसेव = पसीना ।

पांवरी = (१) सीढ़ी. जीना ।
(२) खड़ाऊँ ।

पाजा = पियादा, पदचर ।

पाट = (१) सिंहासन ।
(२) रेशम ।

पाट परधानी = प्रधान पटरानी ।

पाढ़त = पढ़त, पाठ, शिक्षा ।

पायरा = रकाब (घोड़े के समान की)

पारधी = व्याध, बहेलिया ।

पारथी = पार्थिव पूजन करने वाला ।

पारना=सकना।

पारि=तालाब का भीटा, सरोवर के इर्द गिर्द का बांध

पिंडवाही=

पिल=जाँत का पाट, चक्की का पाट।

पीर=गुरु।

पुछारि=(पिच्छालि) मोर, मयूर।

पुरबिल=(पूर्वकाल) (१) पूर्वकर्मानुसार फल।
(२) आकबत, अगला जन्म।

पुरान=कोरान शरीफ़।

पून्यो=पूर्णमासी।

पूरना=फूँकना, बजाना।

सिंगीपूरी=सिंगी फूंकी व बजाई।

पृथिवी=पृथ्वी, दुनिया, संसार।

पेई=पूँजी, धन।

पेड़ी=एक प्रकार का पान विशेष।

पेम चँदुरियाँ=एक प्रकार की छोटी टिकुलियाँ जिनसे स्त्रियों के भाल पर कुछ रचना की जाती है।

पैंड़=रास्ता, मार्ग।

पैंत=दाँव, बाजी।

पैग=डग, फाल, कदम।

पैसार=पैठारी।

पोढ़ कै=मज़बूती से, पुख़्ता से।

पौनार=कमलनाल।

पौनी=प्रजागण (नाऊ बारी इत्यादि)।

प्रतीहार=(१) तीतर पक्षी।
(२) द्वारपाल।

(फ)

फँदिया=एक प्रकार की चोली।

फुलाइल=फुलेल, सुगंधित तैल।

फेरु=मंडप, मँडवा।

(ब)

बंदन=रोरी, सेंदुर।

बकाउरि=(गुल) बकावली।

बकुचन=बहुत से।

बक्कुर लेना=बोलना।

बखान=(व्याख्यान) वर्णन।

बचा=बाचा, वचन।

बजागि=बज्राग्नि, बिजली।

बतास=वायु।

बनजारा=(वाणिज्यवाला) व्यापारी

बनापति=(बनस्पति) वृक्षलतादि।

बनिज=(१) ब्योपारी।
(२) लेन देन।
(३) सौदा सुलुफ़।

बर=बल।

बरगी=तिपतिया बूटी जो रसायन बनाने में काम आती है।

बरतना=(१) काम में लाना।
(२) बर्ताव करना।

बरनक=वर्णन।

बरना=बन्ना नामक वृक्ष (एक प्रकार का पलास)।

बरमचर्ज=ब्रह्मचर्य्य।

बरम्हाउ=आशिर्वाद।

बरम्हाना = आशिर्वाद देना ।
बराजबा = (ब्रजन) चलना, जाना ।
बरियार = बलवान, जोरावर ।
बरेंड़ी = बड़ा शहतीर ।
बरे = (बलय) चूड़ी, कंकण ।
बरेक = बरेखी, बिवाह सम्बन्ध,नाता ।
बरोक = (१) (बलौक) बली, ज़बरदस्त (२) सैन्य बल ।
बरोक = बरच्छा, फलदान ।
बलय = चूड़ी ।
बलिया = चूड़ियां ।
बसा = (१) बरें, भिड़, बरैया ।
(२) शहद की मक्खी ।
बसाना = सुगंध फैलाना ।
बसियाना = बश में कर लेना ।
बसीठ = दूत, पैग़ंबर ।
बहु = (बधू) बहू ।
बहोरना = लौटाना ।
बाँकना = टेढ़ा होना ।
बाँद = (बंदा) सेवक, चेरा ।
बाँह = हिमायत, आश्रय ।
बाँह देना = हिमायत करना, पक्ष करना ।
बाज = (बर्ज्य) बिना, बगैर छोड़कर ।
बाजना = लड़ना, भिड़ना ।
बाजि = बिना, बगैर ।
बाट = रास्ता, मार्ग ।
बाढ़ो = लाभ ।
बाद मेलना = बाजी लगाना
बादि कै = हठ से ।
बान = (वर्ण) रंग ।
बानि = आदत ।
बार = द्वार, दरवाजा ।
बारह बानी = बारह वर्णी, बारहो सूर्य के रंग का स्वच्छ कंचन, खरा सोना का सा ।
बारा = बालक ।
बासना = सुगंध ।
बिंदक = (विद) जानने वाला ।
बिकरार = दुखित, बेकरार ।
बिछूना = बिछुड़ा हुआ ।
बिछोई = बिछुड़ा हुआ ।
बिजाउरि = बीजों की खीर ।
बिधंसना = बिध्वंस करना,नष्टकरना ।
बिधना = ईश्वर ।
बिधाता = व्यवस्थापक, प्रबन्धक ।
बिधि = ईश्वर ।
बियोगी = दुखी।
बिरवा = वृक्ष, पौधा ।
बिरस = अनबन, मन मोटाव ।
बिरोग = दुःख, संताप ।
बिलग मानना = अप्रसन्न होना ।
बिलोन = (वि + लावण्य) असुंदर, कुरूप ।
बिसंभार = (बेसँभार) बेहोशी ।
बिसमौ = (१) दुःख, सोच ।
(२) (बिस्मय) संदेह ।
बिसरामी = बिश्राम देने वाला ।
बिसवासी = (विश्व + आशी) बहुत खाने वाला, बड़ा दुखदाई ।

बिसहर=(बिषधर) सर्प।
बिसारे=बिषैले।
बिहान=सबेरा।
बिहाना=बीतना (समय का)।
बिहूना=बिहीन।
बीजु=बिजली।
बीनना=चुनकर निकालना।
बीना=खस, उशीर।
बीहर=(१) बीरर, जो बहुत घना न हो। (२) अलग, जुदा, पृथक।
बुक्का=अबीर (गुलाल)।
बूत=बल, जोर।
बेंदुरी=बिंदुली, टिकुली।
बेध=(१) छेद, सूराख। (२) निशाना, लक्ष्य।
बेलि=बेलिया, कटोरी।
बेसाहना=खरीदना, मोल लेना।
बेसाहनी=खरीद।
बैकुण्ठ=ऊपर के सातो लोक।
बैन=बेणु का पुत्र राजा पृथु।
बैसंदर=(वैश्वानर) अग्नि।
बैसारना=बैठालना।
बोल=वचन, प्रतिज्ञा।
बोलाह=वह घोड़ा जिसकी गर्दन और दुम के बाल सोने के समान पीले हों।
बोहित=नाव, जहाज।
ब्यवस्था=दशा, हालत।
ब्यवहरिया=धनी, ऋण दाता।
ब्रह्मंड=आकाश (ऊपर अष्ट भये ब्रह्मंडा)।

(भ)

भख=भोजन, खुराक।
भव=भय, डर।
भांजना=तोड़ना, बिगाड़ना।
भांड़=मिट्टी का पात्र।
भार=बड़ा काम।
भासवती=(भास्वती) ज्योतिष का एक प्रसिद्ध और प्रमाणिक ग्रन्थ।
भिंग=बाधा, अशुभ घटना।
भिनसार=(भानु+सरन) सबेरा।
भीउ=भीमसेन।
भीमसेनी=एक प्रकार का कपूर।
भुइँफरी=भूमिफली नाम्नी एक लता विशेष जिसके फल कड़ू होते हैं।
भूँजना=भोगना, भोग करना।
भृङ्गराज=भुजंगा पक्षी।
भेरीकार=भेरी बजाने वाला।
भोला=अज्ञान, नादान।
भौकस=(भुवौकस) भूमि पर रहनेवाले जीव, थलचर।

(म)

मंजूसा=संदूक, झाँपी।
मकु=शायद, कदाचित।
मखदूम=पूज्य, सेव्य।

मढ़ = घर ।

मतना = (१) सम्मति लेना, सलाह मानना। (२) सलाह करना ।

मधु = (१) मदिरा । (२) चैत मास ।

मनई = मनुष्य ।

मनसना = मनशा करना, इच्छा करना ।

मनसाना = साहस करना ।

मनिमाथा = शिरोमणि ।

मनुहारि = खातिर, सत्कार ।

मनोरा झूमक = एक प्रकार का गान

मयन = मोम ।

माया = (१) दया, कृपा । (२) मोम ।

मयालु = कृपालु ।

मयूर = मोर ।

मरगज = मीड़ी हुई, मलगजी ।

मरजीया = गोता खोर (मोती निकालने वाला) ।

मरम = (१) भेद, असल तत्व ।
(२) कदर, आदर ।

मलयगिरि = (१) घिसा हुआ चंदन ।
(२) चंदन का वृक्ष ।
(३) मलयागिरि पर्वत ।

मष्ठ = मौन, खामोश ।

मसबासी = वह साधु जो एक स्थान पर एक मास ठहरता है ।

मसि = (१) स्याही । (२) दवात ।
(३) कालिख ।

मसियारा = (१) मशाल ।
(२) मशालची ।

महर = दहियर पक्षी ।

माँजरि = हड्डियों की ठठरी ।

माँझी = बीच में पड़ने वाला ।

मात = मता हुआ, मस्त ।

मानाषा = (मानव) मनुष्य, मनई ।

माया = (१) धन । (२) माता । (३) छल, कपट, धोखा ।

मीत = मित्र, दोस्त ।

मुरशिद = पथदर्शक, गुरू ।

मूसना = लूटना ।

मेंजा = मेंढक ।

मेघावरि = मेघावली, मेघ समूह ।

मेद = (१) कस्तूरी । (२) इत्र ।
(३) सुगन्धित द्रव्य ।

मेघौना = (मेघवर्ण) एक रेशमी वस्त्र विशेष ।

मेरवना, मेराना } = मिलाना ।

मेलना = डेरा करना, पड़ाव डालना ।

मेलान = पड़ाव ।

मेहरी = स्त्री ।

मैन = मोम ।

मैमंत = मता हुआ, मस्त ।

मोख = मोक्ष, छुटकारा ।

मोतीचूर = स्वच्छ और निर्मल ।

मोरन = शिखरन (सुगंधित द्रव्य तथा मिसरी युक्त मट्ठा व दही ।)

[र]

रंग = (१) प्रेम (अनुराग)
(२) लुत्फ़, मज़ा, आनन्द ।

रजबार = राजद्वार ।
रतना = प्रेम करना ।
रथवाह = सारथी, रथवान ।
रसना = (१) (क्रि०) अनुरक्त होना ।
(२) (संज्ञा) जबान, जीभ ।
रसा = पृथ्वी ।
रहचह = बातचीत, संभाषण ।
रहस = आनंद ।
रहसना = हँसी मज़ाक करना ।
राँध परोस
राध } = निकट
राकस = (राक्षस) राक्षस ।
राकस = (सं० रक्षस) = रक्षक ।
राता = लाल ।
रामजन = राम भक्त ।
रींसी = (सं० ऋष्या) एक प्रकार की मृगी विशेष जिसकी गर्दन बहुत सुन्दर होती है ।
रुद्र = रुद्राक्ष ।
रुहिर = रुधिर, खून ।
रुं = रोम, बाग ।
रूप = चांदी ।
रेंगना = (सं० रिंगण) चलना ।
रेह = रेहु, शोरा मिट्टी ।
रोक = नगद रुपया, रोकड़ ।
रोज = (रोदन) रोना ।
रोर = हल्ला गुल्ला, शोर गुल ।
रोसन् = प्रसिद्ध, (रोशन) ।
रौताई = ठकुराई, मालिकपन ।

(ल)

लखन = लक्षण ।
लगी = (लग्गी) लंबा बांस ।
लटा = (१) खीन, दुबला पतला ।
(२) खराब, बुरा ।
लाच्छ = लक्ष्मी ।
लहर = एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
लहरि = लू, सूर्यताप की गर्मी ।
लाड़ = प्यार, दुलार ।
लिखनी = कलम, लेखनी ।
लीक = लकीर ।
लूसना = लूटना ।
लेसना = जलाना ।
लोनी = सुन्दर, अच्छी ।
लोवा = लोमड़ी ।
लौकना = (१) चमकना, दमकना ।
(२) दिखाई पड़ना ।

(स)

सँजोइल = साज समान से तैयार, लैस लिबरी बर्ताना से दुरुस्त ।
संजोउ = सामान, सामग्री ।
सँधान = अचार ।
संसौ = संशय, संदेह, खटका ।
सइं = से ।
सऊं = (सौंह) सामने ।
सकेत = (१) तंग । (२) संकोच ।
सचु = सुख, आनंद ।
सतबरग = गेंदा ।

सत्त = सत्य संधता ।
सदूर = (शार्दूल) सिंह, व्याघ्र ।
सनरास = एक प्रकार का पान ।
सबाई = सब कुछ ।
समदना = मिलना, संबंध करना ।
समापति = संपूर्ण, पूर्ण ।
समीर = हवा, वायु ।
सर = सरा, चिता ।
सरवरि = बराबरी, समता ।
सराग = (शलाका) लोहे की सीख ।
सरि = बराबरी, समता ।
सरेख = (श्रेष्ठ) (१) सर्वोत्तम,
(२) समझदार ।
सरेखा = (सलेख) पढ़ा लिखा, शिक्षित
सलिबाहन = मृग ।
सहसँक = भय, डर ।
सहलंगी = साथ लगने वाला ।
सांकर = (१) संकट । (२) जंजीर ।
(३) तंग, संकेत ।
सांठ = (१) ऊख । (२) पूंजी ।
सांधना = (१) सानना, मिश्रित करना ।
(२) सधान करना (धनुष पर बाण) ।
सांबर = (सँबल) राह का खर्च ।
सांवकरन = श्याम कर्ण घोड़ा ।
साउज } = बनजंतु (सिंह, भालु इत्यादि)
सावज }
साउज = (शावज) शिकार, बनजंतु ।
साका = (१) नाम का स्मारक कोई चिन्ह (२) समय, अवधि ।
साखी = (१) वृक्ष । (२) गवाही ।
साजना = साज सामान, सामग्री ।
साध = अभिलाषा ।
सामुद्रिक = अंग लक्षणों से शुभाशुभ
फल कहने का शास्त्र ।
सायर = सागर, समुद्र ।
सारी = (१) चौपर ।
(२) गोटी (चौपड़ की)
(३) स्त्री वस्त्र विशेष ।
सारी = शारिका पक्षी, मैना ।
साल = (१) छेद (२) दुःख ।
सिंगारहाट = वेश्याओं का बाज़ार,
चकला, सराय ।
सिदिक = (अरबी) सत्य, विश्वास,
ईमान ।
सिद्दीक = सत्यवादी, सच्चा ।
सिद्ध = योगी ।
सियर = (शीतल) ठंढा ।
सिरजना = (सं०) सृष्टि ।
सिरमौर = शिरोमणि ।
सिराना = शीतल होना ।
सिरीपंचिमी = (श्रीपंचमी) बसंतपंचमी
सिवलाज लेना = कैलास बासी होना,
मरजाना ।
सिस्ट = ज़ंजीर, साँकर ।
सीउ } = शीत, सरदी, ठंढक ।
सीव }
सुगाना = किसी पर संदेह करना ।
सुठि = बहुत ।
सुपेती = तोशक, बिछावन ।